नालयिरा दिव्य प्रबंधम्

इरान्दाम आयिरम (सहस्रगीति द्वितीय)

संकलन

श्रीकृष्ण प्रपन्नाचारी

समर्पण

श्रीमद्‌भगवतो प्राकुंशाचार्यजी महाराज

श्रीमते रामानुजाय नमः

परिचय

शान्तानन्तमहाविभूति परमं यद्ब्रह्मरूपं हरेः
मूर्तं ब्रह्म ततोऽपि तत्प्रियतरं रूपं यदत्यद्भुतम् ।

श्री वैष्णव दिव्य देश की कुल संख्या 108 मानी गयी है। दिव्य देश के मन्दिरों में नारायण हरि के भिन्न भिन्न अर्चारूप हैं। इन अर्चा विग्रहों की प्रशस्ति 12 आळवार संतों द्वारा स्वतः स्फूर्त हृदयोद्गार से की गयी है और इन सबों के संकलन को दिव्य प्रबंधम् कहते हैं। इसमें कुल चार हजार पाशुर या छंद हैं इसलिये इसे नालयिरा दिव्य प्रबंधम् कहते हैं। मूल पाशुर तमिल में हैं। कालक्रम में इनका लोप हो गया था परंतु श्री नाथमुनि के अथक परिश्रम से नम्माळवार की कृपा हुई और ये पुनः प्राप्त हुए। बोलचाल की भाषा में सुविधा के लिये इस संकलन को चार भागों में बांटा गया है एवं हर भाग को सहस्रगीति कहते हैं।हालांकि नम्माळवार का तिरूवाय्मोळि को भी केवल सहस्रगीति से संबोधित किया जाता है क्योंकि सारे 24 प्रवंधमों में यह सर्वोत्तम महत्व वाला प्रवंध है। दिव्य प्रबंधम् में संकलित सारे 24 प्रवंधमों का एक विहंगम अवलोकन नीचे के वर्णिका से किया जा सकता है।

संकलन	आळवार	प्रबंधम	पाशुरों की संख्या
प्रथम सहस्रगीति मुदल आयिरम	पेरियाळवार (विष्णुचित्त स्वामी)	1 पेरियाळवार तिरूमोळी	1 से 473
	आंडाल	2 तिरूप्पावै	474 से 503
		3 नाच्चियार तिरूमोळी	504 से 646
	कुलशेखराळवार	4 पेरूमाल तिरूमोळी	647 से 751
	तिरूमळिशैयाळवार (भक्तिसार स्वामी)	5 तिरूच्चन्दविरूत्तम	752 से 871
	तोंडरादिप्पोडियाळवार (भक्ताङ्घ्रिरेणु स्वामी)	6 तिरूमालै	872 से 916
		7 तिरूप्पळ्ळियळुच्चि	917 से 926
	तिरूप्पाणाळवार	8 अमलनादिपिरान्	927 से 936
	मधुरकवियाऴवार	9 कण्णिनुण् शिरूत्ताम्बु	937 से 947
द्वितीय सहस्रगीति इरान्दाम आयिरम	तिरूमङ्गैयाळवार	10 पेरिया तिरूमोळि	948 से 2031
		11 तिरूक्कुरून्दाण्डगम्	2032 से 2051

		12 तिरूनेडुन्दाण्डगम्	2052 से 2081
तृतीय सहस्रगीति मून्राम आयिरम (इयर्पा)	पोय्गैयाळवार	13 मुदल् तिरूवन्दादि	2082 से 2181
	भूदत्ताळवार	14 इराण्डाम् तिरूवन्दादि	2182 से 2281
	पेयाळवार	15 मून्राम तिरूवन्दादि	2282 से 2381
	तिरूमळिशैयाळवार (भक्तिसार स्वामी)	16 नान्मूगन तिरूवन्दादि	2382 से 2477
	नम्माळवार	17 तिरूविरूत्तम	2478 से 2577
		18 तिरूवाशिरियम	2578 से 2584
		19 पेरिया तिरूवन्दादि	2585 से 2671
	तिरूमङ्गैयाळवार	20 तिरूवेळुकूट्रिरूक्कै	2672
		21 शिरिय तिरूमडल	2673 से 2710
		22 पेरिय तिरूमडल	2711 से 2790
	तिरूवरङ्गत्तमुदनार	23 इरामानुश नुट्रन्दादि	2791 से 2898
चतुर्थ सहस्रगीति नान्गाम आयिरम	नम्माळवार	24 तिरूवाय्मोळि	2899 से 4000

ऊपर के वर्णिका में एक और ध्यान देने योग्य बात है कि प्रबंध संख्या **23** जो रामानुज नुट्रन्दादि है यह आळवारों की रचना नहीं है और यह रामानुज स्वामी के शिष्य मुदनार की कृति है जिसे सुनकर रामानुज ने अपने जीवनकाल में इसकी स्वीकृति दे दी थी। नित्यानुसंधानम में प्रायः इसका पाठ तिरूवाय्मोळि के बाद किया जाता है।

दिव्य प्रबंधम के प्रथम सहस्रगीति का हिन्दी में सरल भावार्थ श्रीमान् सुन्दर कीदम्बी द्वारा तैयार किया हुआ देवनागरी लिपि के पाशुरों को उपयोग में लाते हुए किया गया है। इसके लिये श्रीमान् के सदा आभारी हैं जिनकी अनुमति इस तरह के कैंकर्य के लिये दास को मिल चुकी है। देवनागरी में उपलब्ध पाशुरों को श्रीमान् के www.prapatti.com से लिया गया है। एक बार फिर अपना आभार श्रीमान् द्वारा किये गये महान कैंकर्य के लिये प्रकट करते हैं कि देवनागरी में पाशुरों को न उपलब्ध रहने पर इस तरह के कैंकर्य की कल्पना करने का साहस नहीं किया जा सकता था। इसके अतिरिक्त श्रीमान् से अन्य महत्वपूर्ण वेब साईट का लिंक भी प्राप्त हुआ जिससे दास का मनोबल बहुत ऊंचा हुआ। श्रीबरदराज स्वामी से श्रीमान् के ऊत्तरोत्तर प्रगति के लिये प्रार्थना है।

तिरूमला तिरूपति देवस्थान द्वारा अंग्रेजी में सात खंडों में प्रकाशित '**108** वैष्णव दिव्य देशम' जो डा॰ सुश्री एम एस रमेश आई ए एस की कृति है को दिव्य देशम के वर्णन के लिये उपयोग में लाया गया है । उपयुक्त जगहों पर इसके खंड एवं पेज का संदर्भ ब्रैकेट में दिया गया है। सुश्री रमेश एवं ति ति देवस्थानम को विनम्र आभार प्रकट करते हैं।

डा॰ एस जगतरक्षण का 'नालयिरा दिव्यप्रबंधम' जिसकी अंग्रेजी टीका श्री राम भारती द्वारा की गयी है हिन्दी के इस कैंकर्य में बड़ा ही सहायक हुआ है। डा॰ एस जगतरक्षण का हृदय से आभार प्रकट करते हैं।

भगवान देवराज वरदराज स्वामी की कृपा से कांचीपुरम में परम विद्वान श्री कोईल अन्नन स्वामी से बड़ा मनोबल बढ़ा और दास आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है। पेरूमाल कोईल कांचीपुरम के श्रीनम्माळवार सन्निधि के स्वामी टी ए भास्यम् ने दिव्य देशम का सद्यः स्वानुभूत ज्ञान से लाभ करा कर इस कैंकर्य को बड़ा सुगम बना दिया। हृदय से आपका आभार प्रकट करते हैं।

दिव्य प्रवंधम् के चार सहस्रगीतियों का यह दूसरा भाग है। प्रथम भाग स्वतंत्र रूप से पूर्व में समर्पित किया जा चुका है। क्रम से अन्य दो भाग भी कैंकर्य पुष्प की तरह शीघ्र समर्पित किये जायेंगे।

विनीत दास

श्रीकृष्ण प्रपन्नाचारी
कांचीपुरम
17 जून **2011**

श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ पॆरिय तिरुमॊऴि त्तनियन्गळ् ॥

तिरुक्कॊट्टियूर् नम्बि अरुळिच्चॆय्ददु

कलयामि कलिध्वंसं कविं लोकदिवाकरम्।
यस्य गोभिः प्रकाशाभिराविद्यं निहतं तमः॥

एम्बॆरुमानार्अरुळिच्चॆय्ददु

वाऴि परकालन् वाऴि कलिगन्रि⋆
वाऴि कुरैयलूर् वाऴ् वेन्धन्⋆ –वाऴियरो
मायोनै वाळ्वलियाल् मन्दिरङ्गॊळ्⋆ मङ्गैयर्कोन्
तूयोन् शुडर्मान वेल्

आळ्वान् अरुळिच्चॆय्ददु

नॆञ्जुक्किरुळ्गडि दीपम् अडङ्गा नॆडुम् पिरवि⋆
नञ्जुक्कु नल्लवमुदम् तमिऴ् नन्नूल् तुरैगळ्⋆
अञ्जु क्किलक्कियम् आरण सारम् परशमय⋆
पञ्जु क्कनलिन् पॊरि परकालन् पनुवल्गळे

एम्बार् अरुळिच्चॆय्ददवै

एङ्गळ् गदिये ! इरामानुज मुनिये !⋆
शङ्गै कॆडुत्ताण्डदवराशा⋆ –पॊङ्गु पुगळ्
मङ्गैयर्कोनीन्द मरैयायिरम् अनैत्तुम्⋆
तङ्गुमनम् नीयॆनक्कु त्ता

मालै त्तनिये वऴि परिक्क वेणुम् एन्रु⋆
कोलि प्पदिविरुन्द कॊट्रवने !⋆ –वेलै
अणैत्तरुळुम् कैयाल् अडियेन् विनैयै⋆
तुणित्तरुळ वेणुम् तुणिन्दु

॥ तिरुमङ्गैयाळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं ॥

1 वाडिनेन् (948 – 957)

अष्टाक्षरत्तिन् पेरूमै

(अष्टाक्षर मंत्र की गौरव गाथा)

वाडिनेन् वाडि वरुन्दिनेन् मनत्ताल्* पेरुन्दुयर् इडुम्बैयिल् पिऱन्दु* कूडिनेन् कूडि इळैयवर् तम्मोडु* अवर् तरुम् कलवियै करुदि* ओडिनेन् ओडि उय्वदोर् पोरुळाल्* उणर्वेनुम् पेरुम्पदन्तेरिन्दु* नाडिनेन् नाडि नान् कण्डु कोण्डेन्* नारायणा एन्नुम् नामम्॥१॥	मैं जानता था एवं अपने निराश हृदय से जान रहा हूं कि काला गर्भ से मेरा जन्म कष्ट के साथ हुआ। मैं घुलमिल गया एवं किशोरियों से घुलमिल कर मैथुन की चाह की जो उनसे मिला। मैं भागा एवं भागते हुए नेक प्रभु की कृपा से अपने मन के स्वभाव को परखा। मैने खोजा एवं खोजते हुए यह पाया कि मेरे लिये नारायण का नाम ही उपयुक्त है। **948**
आविये ! अमुदे ! एन निनैन्दुरुगि* अवर् अवर् पणै मुलै तुणैया* पावियेन् उणरादेत्तनै पगलुम्* पळुदुपोय् ओळिन्दन नाळगळ्* तूवि शेर् अन्नम् तुणैयोडुम् पुणरुम्* शूळ् पुनल् कुडन्दैये तोळुदु* एन् नाविनाल् उय्य नान् कण्डु कोण्डेन्* नारायणा एन्नुम् नामम्॥२॥	मेरा जीवन ! मेरा अमृत ! मैंने उनके गोाल उरोजों से आनंद लिया। यह पापी जीव ! कितना समय व्यर्थ निकल गया। कुडन्दै नगर में शुद्ध जल के हंस की जोड़ी साथ में वसेरा किये। मैंने मंत्र का उच्चारण करते हुए पूजा की 'नारायण उपयुक्त नाम है'। **949** (कुंभकोनम सारंगपाणि का मंदिर ही कुडन्दै या तिरूकुडन्दै है। देखें पाशुर **173** एवं **177**)
शेममे वेण्डि त्तीविनै पेरुक्कि* त्तेरिवैमार् उरुवमे मरुवि* ऊमनार् कण्ड कनविलुम् पळुदाय्* ओळिन्दन कळिन्द अन्नाळगळ्* कामनार् तादै नम्मुडै अडिगळ्* तम् अडैन्दार् मनत्तिरुप्पार्* नामम् नान् उय्य नान् कण्डु कोण्डेन्* नारायणा एन्नुम् नामम्॥३॥	कर्मो के जनक ! हमारे महान प्रभु ! भक्तों के हृदय के प्राण ! मुक्ति का मार्ग मैने उनका मंत्र पा लिया।नारायण उपयुक्त नाम है। अनेकों दुष्कर्मों में लिप्त, अपनी भलाई की चाह रखते हुए मैं सुन्दर नारियों के जाल में रहा। गूंगे के स्वप्न की तरह समय खो दिया। **950**
वेन्ऱिये वेण्डि वीळ् पोरुट्किरङ्गि* वेर्कणार् कलवियै करुदि* निन्ऱवा निल्ला नेञ्जिनै उडैयेन्* एन् शेय्गेन् नेडु विशुम्बणवुम्* पन्ऱियाय् अन्ऱु पारगम् कीण्ड* पाळियान् आळियान् अरुळे* नन्ऱु नान् उय्य नान् कण्डु कोण्डेन्* नारायणा एन्नुम् नामम्॥४॥	सफलता की चाह में निम्न स्तर तक जाकर सुन्दयिों के मैथुन को खोजता रहा। हम भटकते रहे, कोई रोक नहीं सका। हाय ! अब मैं क्या कर सकता हूं ? वराह स्वरूप धारण करने वाले, चक्र के प्रभु ! आपकी शक्तिपूर्ण दया से भंडार भरा है। अच्छा, आपने क्या मेरी रक्षा की ? मैं मंत्र जानता हूं। नारायण उपयुक्त नाम है। **951**
कळ्वनेन् आनेन् पडिऱु शेय्दिरुप्पेन्* कण्डवा तिरि तन्देन् एलुम्* तेळ्ळियेन् आनेन् शेल् कदिक्कमैन्देन्* शिक्केन त्तिरुवरुळ् पेट्रेन्* उळ् एल्लाम् उरुगि क्कुरल् तळुत्तोळिन्देन्* उडम्बेल्लाम् कण्ण नीर् शोर* नळ् इरुळ् अळवुम् पगलुम् नान् अळैप्पन्* नारायणा एन्नुम् नामम्॥५॥	मैं दुष्ट था एवं मेरे रास्ते गलत थे। जैसा चाहा वैसी रास्तों से चला। तब भी मैं निष्कलंक हो गया और प्रभु की कृपा से नया जीवन मिला है। भीतर से द्रवित होकर आवाज मृदु हो गयी और मैं अश्रु पूरित रहा। दिन रात अनवरत मैं जपते रहता हूं 'नारायण उपयुक्त नाम है'। **952**

एम् पिरान् एन्दै एन्नुडै च्चुट्रम्⋆ एनक्करशॆन्नुडै वाणाळ्⋆ अम्बिनाल् अरक्कर् वॆरुक्कॊळ नॆरुक्कि⋆ अवरुयिर् शॆगुत्त एम् अण्णल्⋆ वम्बुलाम् शोलै मा मदिळ्⋆ तञ्जै मामणि क्कोयिले वणङ्गि⋆ नम्बिगाळ् ! उय्य नान् कण्डु कॊण्डेन्⋆ नारायणा एन्नुम् नामम्॥६॥	मेरे प्रभु ! मेरे पिता ! मेरे संबंधी ! मेरे नाथ ! मेरे भविष्य ! आपने वाणों की प्रहार से राक्षस कुल के भार से संसार को मुक्त किया। दीवारों एवं बागों के तंजै मामणि मंदिर में मैंने पूजा की। मित्रों, विश्वास करो, मैं मंत्र जानता हूं। नारायण उपयुक्त नाम है। **953**
इर्पिरप्परियीर् इवर् अवर् एन्नीर्⋆ इन्नदोर् तन्मै एन्रुणरीर्⋆ कर्पगम् पुलवर् कळैगण् एन्रुलगिल्⋆ कण्डवा तॊण्डरै प्पाडुम्⋆ शॊर्पॊरुळ् आळीर् शॊल्लुगेन् वम्मिन्⋆ शूळ् पुनल् कुडन्दैये तॊळुमिन्⋆ नर्पॊरुळ् काण्मिन् पाडि नीर् उय्मिन्⋆ नारायणा एन्नुम् नामम्॥७॥	तुम उनके नाम नहीं जानते और न तो वे कहां से आये हैं ये जानते हो और न उनके स्वभाव को जानते हो। कलपका के वृक्ष ! कवियों के मित्र ! जाओ और उनलोगों का गीत से प्रशंसा करो। चारण गण! यहां आओ मैं बताता हूं। कुडन्दै के प्रभु की पूजा करो। अपना सौभाग्य समझो, गाओ, एवं आनन्द मनाओ। **954**
कट्रिलेन् कलैगळ् ऐम्बुलन् करुदुम्⋆ करुत्तुळे तिरुत्तिनेन् मनत्तै⋆ पॆट्रिलेन् अदनाल् पेदैयेन् नन्मै⋆ पॆरु निलत्तार् उयिर्क्कॆल्लाम्⋆ शॆट्रमे वेण्डि त्तिरि तरुवेन् तविर्न्देन्⋆ शॆल् कदिक्कुय्युम् आरॆण्णि⋆ नट्रुणै आग प्पट्रिनेन् अडियेन्⋆ नारायणा एन्नुम् नामम्॥८॥	मैं पाठशाला नहीं गया। मेरी इन्द्रियों ने मेरे ऊपर शासन किया और मैं सब तरफ घूमता फिरा। मैंने अच्छा जीवन खो दिया। घृणास्पद दरिद्र ! मृत्यु की तरह सब जीवों से व्यवहार किया। मुक्ति का रास्ता खोजते मैंने सब जगह घूमना बंद कर दिया। मैं सुख का पक्का मंत्र जानता हूं। नारायण उपयुक्त नाम है। **955**
कुलम् तरुम् शॆल्वम् तन्दिडुम्⋆ अडियार् पडु तुयर् आयिन एल्लाम्⋆ निलम् तरम् शॆय्युम् नीळ्विशुम्बरुळुम्⋆ अरुळॊडु पॆरुनिलम् अळिक्कुम्⋆ वलम् तरुम् मट्रुम् तन्दिडुम्⋆ पॆट्र तायिनुम् आयिन शॆय्युम्⋆ नलन्दरुम् शॊल्लै नान् कण्डु कॊण्डेन्⋆ नारायणा एन्नुम् नामम्॥९॥	धन एवं परिवार का यह भरा पूरा जीवन देता है तथा भक्तों के सभी दुखों को धराशायी कर देता है। करूणापूर्ण कृपा से आकाश एवं पृथ्वी का राज्य देता है। यह आदमी को शक्ति देता है और अन्य सब कुछ देता है जो मां के स्नेह से भी अधिक है। यह सात्विक कल्याणकारी है। मैं मंत्र जानता हूं। नारायण उपयुक्त नाम है। **956**
मञ्जुलाम् शोलै वण्डरै मानीर्⋆ मङ्गैयार् वाळ् कलिगन्रि⋆ शॆञ्जॊलाल् एडुत्त दॆय्व नल् मालै⋆ इवै कॊण्डु शिक्कॆन त्तॊण्डीर् !⋆ तुञ्जुम्बोदळैमिन् तुयर् वरिल् निनैमिन्⋆ तुयर् इलीर् शॊल्लिनुम् नन्राम्⋆ नञ्जु तान् कण्डीर् नम्मुडै विनैक्कु⋆ नारायणा एन्नुम् नामम्॥१०॥ ॥ तिरुमङ्गैयाळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं॥	महलों, पूर्ण तालों, एवं भौंरों से गुंजायमान अमृतमय बागों वाले, मङ्गै के कलिकन्री के शुद्ध दसक गीत आनन्दप्रदायी सर्वोत्तम शब्दों से पूर्ण हैं। सोते समय, आपद के क्षणों में इस गीत को याद करो, आपदा चली जायेगी ये गीत रहेंगे। सभी रोगों का यह निदान है। भक्तजनों सुनो, नारायण उपयुक्त नाम है। **957** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्

श्रीमते रामानुजाय नमः

2 वालिमावलत्तु (958 - 967)

तिरूप्पिरूदि

(जोशीमठ में नरसिंह भगवान सन्निधि दिव्य देश है। ऐसा कहा जाता है परकाल स्वामी यहां आये नहीं थे इसलिये हर पाशुर में अपने हृदय को भेज रहे हैं। कुछ लोग वर्तमान जोशीमठ को दिव्य देश नहीं मानते हैं क्योंकि पाशुरों में गंगा के बारे में कोई संकेत नहीं है।हो सकता है कोई दूसरा ही स्थल तिरूप्पिरूदि हो। दूसरा कारण एक और सटीक लगता है कि बदरी नारायण जाने में यह स्थान तो मिलता तो फिर क्यों परकाल स्वामी अपने हृदय को यहां भेजते। कदाचित् किसी दूसरे मार्ग से बदरीनाथ गये हों।)

वालिमा वलत्तॊरुवनदुडल्कॆड⋆ वरि शिलै वळैवित्तु⋆ अन्ऱु एलम् नाऱु तण् तडम् पॊळिल् इडम्बॆर्⋆ इरुन्दनल् इमयत्तुळ्⋆ आलि मामुगिल् अदिर्दर अरुवरै⋆ अगडुर् मुगडेऱि⋆ पीलिमा मयिल् नडम् शॆयुम् तडञ्जुनै⋆ प्पिरुदि शॆन्ऱडै नॆञ्जे॥१॥	पूर्व में धनुषधारी प्रभु के बाण से शक्तिवान वाली धराशायी हो गया।हिमवान के शिखरों के निवास के सुगंधित बागों में मधुमक्खी गुंजायमान हैं। काले मेघ ऊंचे पर्वतों के तालों के ऊपर मंड़रा रहे हैं। यहां नाचते मोर पिरीती के ऊपर अपना मेहरावनुमा पंख का विस्तार बनाते हैं। जाओ, हे मेरा हृदय ! **958**
कलङ्ग मा क्कडल् अरिगुलम् पणि शॆय्य⋆ अरुवरै अणैगट्टि⋆ इलङ्गै मा नगर् पॊडि शॆय्द अडिगळ् ताम्⋆ इरुन्दनल् इमयत्तु⋆ विलङ्गल् पोल्वन विऱलिरुम् शिनत्तन⋆ वेळङ्गळ् तुयर्कूर⋆ पिलम् कॊळ् वाळ् एयिट्रि अवै तिरिदरु⋆ पिरुदि शॆन्ऱडै नॆञ्जे॥२॥	बन्दर लोग सहायता के लिये आगे आकर चट्टानों एवं पत्थरों से समुद्र के ऊपर सेतु बनाये।पूर्व में लंका शहर को भस्मीभूत किया आप हिमवान के शिखरों के निवासी हैं।पर्वत के समान मदमत्त हाथी जंगल में एकत्र होते हैं जहां गरजते सिंह पिरीती में शान से चलते हैं। जाओ, हे मेरा हृदय ! **959**
तुडिगॊळ् नुण् इडै शुरि कुळल् तुळङ्गॆयिट्रु⋆ इळङ्गॊडि तिऱत्तु⋆ आयर् इडिगॊळ् वॆम् कुरल् इनविडै अडर्त्तवन्⋆ इरुन्द नल् इमयत्तु⋆ कडिगॊळ् वेङ्गैयिन् नऱुमलर् अमळियिन्⋆ मणि अऱैमिशै वेळम्⋆ पिडियिनोडु वण्डिशै शॊल तुयिल्गॊळुम्⋆ पिरुदि शॆन्ऱडै नॆञ्जे॥३॥	मुग्दर वत कटि, घुंघराले बाल, एवं मुक्तामय मुस्कान वाली नप्पिनाय, जिनके लिये आपने सात शक्तिवान वृषभों को लड़ाई लड़ शमन किया। आप हिमवान शिखर के निवासी हैं। पथरीले रत्नशय्या पर बरसते कोंगे फूलों से बने गद्दा पर हाथी की जोड़ी मधुमक्खियों के गुनगुनाहट बीच पिरीती में सोते हैं। जाओ, हे मेरा हृदय ! **960**

मऱम्गोंळ् आळ् अरि उरु एन वेंरुवर* ऑरुवनदगल् मार्वम् तिऱन्दु* वानवर् मणि मुडि पणिदर* इरुन्द नल् इमयत्तुळ्* इऱङ्गि एनङ्गळ् वळैमरुप्पिडन्दिड* क्किडन्दरुगॊरि वीशुम्* पिऱङ्गु मामणि अरुवियॊडिळिदरु* पिरुदि शॆन्ऱडै नॆञ्जे॥ ४॥	भयानक नरसिंह ने हिरण्य असुर के हृदय में डर का संचार करते हुए उसकी छाती को दो भागों में चीर दिया। आपकी पूजा ऊपर के देवगन करते हैं और आप हिमवान शिखर के निवासी हैं।जंगली सूकर कीचड़ की खुदाई कर चमकते रत्न निकालते हैं। जल स्रोत अपने थपेड़ों से इस पिरीती में रत्न पत्थर विखेरते हैं। जाओ, हे मेरा हृदय ! **961**
करैशॆय् मा क्कडल् किडन्दवन्* कनै कळल् अमरर्गळ् तॊळुदेत्त* अरै शॆय् मेगलै अलर्मगळ् अवळॊडुम्* अमरन्दनल् इमयत्तु* वरैशॆय् मा क्कळिरिळवॆदिर् वळर्मुळै* अळैमिगु तेन् तोयत्तु* पिरश वारि तन् इळम् पिडिक्करुळ् शॆयुम्* पिरुदि शॆन्ऱडै नॆञ्जे॥५॥	गहरे क्षीरसागर में शेषशायी प्रभु के चरण देवों से पूजे जाते हैं।हिमवान शिखर के निवासी वक्षस्थल पर लक्ष्मी को धारण करने वाले प्रभु हैं।पिरीती में, पर्वत समान हाथी, जंगली पौधे बांस के कोमल कोपलों को तोड़कर, पर्वतीय शहद में डुबोकर अपने बच्चों को खिलाते हैं। जाओ, हे मेरा हृदय ! **962**
पणङ्गळ् आयिरम् उडैय नल् अरवणै प्पळ्ळि कॊळ्* परमा एन्ऱु* इणङ्गि वानवर् मणिमुडि पणिदर* इरुन्द नल् इमयत्तु* मणम् कॊळ् मादवि नॆडुङ्गॊडि विशुम्बुऱ* निमिरन्दवै मुगिल् पद्रि* पिणङ्गु पूम् पॊळिल् नुळैन्दु वण्डिशै शॊलुम्* पिरुदि शॆन्ऱडै नॆञ्जे॥६॥	क्षीरसागर में सहस्रों फन के शेष पर शयन करने वाले व्यूह अवस्था वाले हिमवान शिखर के निवासी प्रभु का देवगन नतमस्तक हो अर्चना करते हैं। गगन चुंबी सुगंधित माधवी लतायें बादलों से खेलती हैं। पिरीती के बागों में मधुमक्खियां अमृतसम मधु पीकर गीत गुंजायमान रहती हैं।जाओ, हे मेरा हृदय ! **963**
कार् कॊळ् वेङ्गैगळ् कनवरै तळुविय* करि वळर् कॊडि तुन्नि* पोर् कॊळ् वेङ्गैगळ् पुनवरै तळुविय* पूम् पॊळिल् इमयत्तुळ्* एर् कॊळ् पूञ्जुनै त्तडम् पडिन्दु इनमलर्* एट्टुम् इट्टिमैयोर्गळ्* पेर्गळ् आयिरम् परवि निन्ऱु अडि तॊळुम्* पिरुदि शॆन्ऱडै नॆञ्जे॥७॥	ढ़लानों पर काली मिर्च की लताओं के बीच आकाश से भी ऊंचे वेंगै के वृक्ष पलते हैं। हिमवान शिखर निवासी के गहरे ढ़लानों पर डरावने सिंह भ्रमण करते रहते हैं। आकाश के देवगन पिरीती के तालों में स्नान कर फूलों के साथ सहस्र नामों का जप करते हुए आपके चरणों पर नतमस्तक होते हैं। जाओ, हे मेरा हृदय ! **964**
इरवु कूऱन्दिरुळ् पॆरुगिय वरैमुळै* इरुम् पशि अदु कूर* अरवम् आविक्कुम् अगन् पॊळिल् तळुविय* अरुवरै इमयत्तु* परमन् आदि एम्बनि मुगिल् वण्णन् एन्ऱु* एण्णि निन्ऱिमैयोर्गळ्* पिरमनोडु शॆन्ऱडि तॊळुम् पॆरुन् तगै* प्पिरुदि शॆन्ऱडै नॆञ्जे॥८॥	चंद्रविहीन काली रात की तरह अंधेरी गुफाओं में भूखे एवं कुण्डली मारे सांप पर्वतीय सायों से ऊपर मुंह फाड़े हिमवान शिखर के निवास में छिपे रहते हैं। ब्रह्मा के साथ देवगन समूह में आकर आदि देव ... घनश्याम देव आदि नामों के साथ पिरीती के ऊंचे पर्वतों में पूजा करते हैं। जाओ, हे मेरा हृदय ! **965**

ओदि आयिर नामङ्गळ् उणर्न्दवर्क्कु* उऱु तुयर् अडैयामल्* एदम् इन्ऱि निन्ऱरुळुम् नम् पॆरुन् तगै* इरुन्द नल् इमयत्तु* तादु मल्गिय पिण्डि विण्डलर्गिन्ऱ* तऴल् पुरै एऴिल् नोक्कि* पेदै वण्डुगळ् एरि एन वॆरुवरु* पिरुदि शॆन्ऱडै नॆञ्जे॥९॥	आत्मज्ञान प्राप्त निराशा से रक्षित जीव गन सहस्रों नाम का ऊच्चारण कर हिमवान शिखर के उदारता पूर्ण निवास में दया का स्रोत पाते हैं। रज वर्षाते लाल अशोक के फूल सूर्य की भांति आभा से पूर्ण दिखते हैं। मूर्ख भौंरे उनको आग समझ पिरीती में भाग खड़ा होते हैं। जाओ, हे मेरा हृदय ! **966**
करिय मा मुगिल् पडलङ्गळ् किडन्दु* अवै मुऴङ्गिड* कळिऱॆन्ऱु पॆरिय माशुणम् वरै एन प्पॆयर् तरु* पिरुदि एम् पॆरुमानै* वरिगॊळ् वण्डऱै पैम् पॊऴिल् मङ्गैयर्* कलियनदॊलि मालै* अरिय इन् इशै पाडुम् नल् अडियवर्क्कु* अरुविनै अडैयावे॥१०॥	पर्वतीय आकाश में उमड़ते घुमड़ते बादल बज्र सा गर्जन करते हैं। हमारे प्रभु के पिरीती में वृहत शक्तिशाली सर्पगन इसे हाथी समझ बैठते हैं। सुगंधित बागों के भौंरे वाले तिरूमङ्गै के कलियन के दसक गीत कठिनाई पूर्वक रचे गये हैं क्योंकि प्रभु के बारे में उपयुक्त शब्द का प्रयोग बहुत ही कठिन है। जो इसे कण्ठ कर लेंगे उनके कर्मों की संचिका क्षीण हो जायेगी। **967** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्।

<table>
<tr><td colspan="2">

श्रीमते रामानुजाय नमः

3 मुट्रमूत्तु (968 - 977)

तिरूवदरी

(बद्रीनारायण 1)

</td></tr>
<tr><td>मुढ़मूत्तु क्कोल् तुणैया⋆ मुन् अडि नोक्कि वळैन्दु⋆
इढ़गाल् पोल् तळ्ळि मेंळ्ळ⋆ इरुन्दङ्गिळैया मुन्⋆
पेंढ़ तांय्पोल् वन्द पेय्च्चि⋆ पेंरुमुलै ऊडु⋆ उयिरै
वढ़ वाङ्गि उण्ड वायान्⋆ वदरि वणङ्गुदुमे॥१॥</td><td>बढ़ती उम्र, झुककरके अगला कदम देखना, धीरे से डगमगाते रास्ता समझना, 'क्या तुम इस स्थिति तक आ गये हो ? ' मां के छद्म वेष में राक्षसी आयी। हमारे कृष्ण ने उसके बड़े स्तन से दूध पिया और उसको नरकंकाल बना अपने मुंह से उसके प्राण खींच लिये। आपकी पूजा वदरी में करो। **968**</td></tr>
<tr><td>मुदुगु पढ़ि क्कै त्तलत्ताल्⋆ मुन् ऑरु कोल् ऊन्रि⋆
विदिर् विदिर्त्तु क्कण् शुळन्रु⋆ मेर् किळै कॉण्डिरुमि⋆
इदुवॅन् अप्पर् मूत्त आरॅन्रु⋆ इळैयवर् एशामुन्⋆
मदुवुण् वण्डु पण्गळ् पाडुम्⋆ वदरि वणङ्गुदुमे॥२॥</td><td>एक हाथ से झुके कमर को पकड, दूसरे हाथ से डंडा का सहारा ले, पसीना से तरवतर, नाचती आंखें, जोर लगाकर तेज खांसना। युवती ने तिरस्कार की मुद्रा में कहा ः 'ये बूढ़े आदमी, हमारे पिता हैं। भौंरे पीते एवं पन्न गाते हैं। आपकी पूजा वदरी में करो। **969**</td></tr>
<tr><td>उरिगळ् पोल् मेंय्न् नरम्बॅळुन्दु⋆ ऊन् तळर्न्दुळ्ळम् एळ्गि⋆
नॅरियै नोक्कि क्कण् शुळन्रु⋆ निन्रु नडुङ्गामुन्⋆
अरिदि आगिल् नॅञ्जम् अन्बाल्⋆ आयिर नामम् शॉल्लि⋆
वॅरि कॉळ् वण्डु पण्गळ् पाडुम्⋆ वदरि वणङ्गुदुमे॥३॥</td><td>शरीर का नस मोटी रस्सी की तरह, क्षीण शक्ति, अस्थिर हृदय, रास्ता देखने में आंखें नाच जाना। हे मन ! समझो क्या ठीक है ? यह तो होता है।जहां सुगंधित मधुमक्खियां पन्न गाती हैं एवं हजारों नाम जपती हैं। आपकी पूजा वदरी में करो। **970**</td></tr>
<tr><td>पीळै शोर क्कण् इडुङ्गि⋆ प्पित्तॅळ मूत्तिरुमि⋆
ताळ्गाळ् नोव त्तम्मिल् मुट्टि⋆ त्तळ्ळि नडवामुन्⋆
काळै आगि क्कन्रु मेय्त्तु⋆ क्कुन्रॅडुत्तन्रु निन्रान्⋆
वाळै पायुम् तण् तडम् शूळ्⋆ वदरि वणङ्गुदुमे॥४॥</td><td>धंसी एवं बहती आंखें, वमन, जोर की खांसी, टकराते पैर, तकलीफ से पैर घसीटना ः यह तो होता है। गाय चराते किशोर जो वर्षा से रक्षा हेतु पर्वत को पकड कर खड़े थे, तालों के बीच वलै मछलियों के साथ कूद रहे हैं। आपकी पूजा वदरी में करो। **971**</td></tr>
</table>

पण्डु कामर् आन वारुम्* पावैयर् वाय् अमुदम् उण्ड वारुम्* वाळ्न्द वारुम्* ऑक्क उरैत्तिरुमि* तण्डुगाला ऊन्रि ऊन्रि* त्तळ्ळि नडवामुन्* वण्डु पाडुम् तण् तुळायान्* वदरि वणङ्गुदुमे॥ ५ ॥	प्रेम एवं लघु सुख के क्षणों वाले सफल बीते दिनों को कुतुहल से खांसते एवं कराहते हुए याद करना, शरीर को हाथ के डंडे के सहारे खींचना। यह तो होता है। प्रभु मधुमक्खियों से लिपटी तुलसी की माला पहने हैं। आपकी पूजा वदरी में करो। **972**
एय्त्त शॉल्लोडीळै एङ्गि* इरुमि इळैत्तु* उडलम् पित्तर् पोल च्चित्तम् वेराय्* प्पेशि अयरामुन्* अत्तन् एन्दै आदि मूर्त्ति* आळ् कडलै क्कडैन्द* मैत्त शोदि एम् पेरुमान्* वदरि वणङ्गुदुमे॥ ६ ॥	कफ के साथ धीमी आवाज, खांसी से कमजोर शरीर, पागल की तरह अप्रासंगिक एवं अस्पष्ट बातें। यह तो होता है। समुद्र मंथन करने वाले तेजोमय श्यामल प्रभु ! आदिकारण प्रभु ! मेरे पिता! आपकी पूजा वदरी में करो। **973**
पप्प अप्पर् मूत्त आरु* पाळ्प्पदु शी त्तिरळै ऑप्प* ऐक्कळ् पोद उन्द* उन् तमर् काण्मिन् एन्रु* शॅप्पु नेर् मॅन् कॊङ्गै नल्लार्* ताम् शिरियाद मुन्नम्* वॆप्पुम् नङ्गळ् वाळ्वुम् आनान्* वदरि वणङ्गुदुमे॥ ७ ॥	ताम्रवर्ण की उरोजपूर्णा सुन्दरी बोलेगी 'बुढ़ापा भयानक होता है।कफ थूकते इस आदमी को देखो' और यह कह हंसेगी। यह तो होता है। हमारी संपन्नता एवं जीवन तो हमारे प्रभु हैं। आपकी पूजा वदरी में करो। **974**
ईशि पोमिन् ईङ्गिरेन्मिन्* इरुमि इळैत्तीर्* उळ्ळम् कूशि इट्टीर् एन्रु पेशुम्* कुवळै अम् कण्णियर् पाल्* नाशम् आन पाशम् विट्टु* नल् नॆरि नोक्कल् उरिल्* वाशम् मल्गु तण् तुळायान्* वदरि वणङ्गुदुमे॥ ८ ॥	कमलनयनी युवती बोलेगी 'ये हटो, यहां मत बैठो, तुम्हारे कफ एवं कराहती आवाज हम लोगों को कंपा देती है।' यह तो होता है। अगर नया मार्ग तलाश रहे हो तो अपनी कामनाओं को छोड़ तुलसी धारण किये हुए प्रभु को याद करो। आपकी पूजा वदरी में करो। **975**
पुलन्गळ् नैय मॅय्यिल् मूत्तु* प्पोन्दिरुन्दुळ्ळम् एळ्गि* कलङ्ग ऐक्कळ् पोद उन्दि* क्कण्ड पिदट्रामुन्* अलङ्गल् आय तण् तुळाय् कॊण्डु* आयिर नामम् शॊल्लि* वलङ्गॊळ् तॊण्डर् पाडि आडुम्* वदरि वणङ्गुदुमे॥ ९ ॥	क्षीण संवेदन, जकडता शरीर, अस्थिर शक्ति, गला कफ से अवरूद्ध, अप्रासंगिक बातें। यह तो होता है।प्रभु के भक्तगण तुलसी की माला लिये प्रदक्षिणा करते हैं।हजारों नाम का रट लगाते हुए उत्साहपूर्वक गाते एवं नाचते हैं। आपकी पूजा वदरी में करो। **976**

‡वण्डु तण् तेन् उण्डु वाळुम्⋆ वदरि नॆडु मालै⋆ कण्डल् वेलि मङ्गै वेन्दन्⋆ कलियन् ऑलि मालै⋆ कॊण्डु तॊण्डर् पाडियाड⋆ क्कूडिडिल् नीळ् विशुम्बिल्⋆ अण्डम् अल्लाल् मद्र्वर्क्कु⋆ ओर् आट्चि अरि़योमे॥१०॥ ॥ तिरुमङ्गैयाळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं॥	हमारे प्रभु नेडुमल (यानी वृहत स्वरूप वाले जैसे त्रिविक्रम भगवान) के निवास वदरी में मधुमक्खियां अमृत पीती हैं। भक्तगण कंडल वेलि से घिरे खेतों वाले मङ्गै के राजा कलियन द्वारा विरचित दसक के गीतमाला को गाते हुए नाचते हैं। अगर तुम भी यह करते हो तो निश्चित रूप से अन्यत्र का नहीं विस्तृत गगन के शासक बनोगे। **977** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

4 एनमुनागी (978 - 987)

तिरूवदरियाच्चिरामम्

(बद्रीनारायण 2)

एन मुनागि इरु निलम् इडन्दु⋆ अन्रिणैयडि इमैयवर् वणङ्ग⋆ तानवन् आगम् तरणियिल् पुरळ⋆ त्तडञ्जिलै कुनित्त एन् तलैवन्⋆ तेनमर् शोलै क्कर्पगम् पयन्द⋆ दॆय्व नल् नऱु मलर् कॊणर्न्दु⋆ वानवर् वणङ्गुम् गङ्गैयिन् करैमेल्⋆ वदरि आच्चिरमत्तुळ्ळाने॥१॥	देवों से पूजित पुरा काल में प्रभु ने वराह का रूप धारण कर पृथ्वी को ऊपर उठाया। फिर अपने धनुष से बलवान रावण को धराशायी किया। आप हमारे नाथ हैं।अमृतमय बागों से चयनित अलौकिक सुगंध से भरपूर कलपक के फूल से देवगन गंगा के तट पर वदरी आश्रम में आपकी पूजा करते हैं। **978**
कानिडै उरुवै च्चुडु शरम् तुरन्दु⋆ कण्डु मुन् कॊडुन् तॊळिल् उरवोन्⋆ ऊनुडै अगलत्तडु कणै कुळिप्प⋆ उयिर् कवर्न्दुगन्द एम् ऒरुवन्⋆ तेनुडै क्कमलत्तयनॊडु देवर्⋆ शॆन्ऱु शॆन्ऱिऱैञ्जिड⋆ पॆरुगु वानिडै मुदु नीर् क्कङ्गैयिन् करैमेल्⋆ वदरि आच्चिरमत्तुळ्ळाने॥२॥	माया का हिरन देखकर प्रभु ने बाण छोड़ा और शक्तिशाली वाली का छाती वेधकर उसके प्राण हर लिये। कमलासीन ब्रह्मा एवं सभी देवगन समूह में एकत्र हो गंगा के किनारे वदरी आश्रम में आपकी पूजा करते हैं। **979**
इलङ्गैयुम् कडलुम् अडल् अरुम् तुप्पिन्⋆ इरु निदिक्किऱैवनुम्⋆ अरक्कर् कुलङ्गळुम् कॆडमुन् कॊडुन् तॊळिल् पुरिन्द कॊऱ्ऱवन्⋆ कॊळुञ्जुडर् शुऴन्ऱ⋆ विलङ्गलिल् उरिञ्जिमेल् निन्ऱ विशुम्बिल्⋆ वॆण् तुगिल् कॊडि एन विरिन्दु⋆ वलम् तरु मणि नीर् क्कङ्गैयिन् करैमेल्⋆ वदरि आच्चिरमत्तुळ्ळाने॥३॥	समुद्र को बांधकर घोर युद्ध करके लंका का नाश कर शक्तिशाली रावण को मार दिया एवं उसकी सेना को समाप्त कर विजयश्री पाये। आप निर्मल जल के किनारे वदरी आश्रम में रहते हैं। ऊंचे पर्वतों में सूर्य कैद दिखते हैं। आकाश से उतरते हुए फहराते लंबी पताका की तरह गंगा का प्रवाह दिखता है। **980**
तुणिविनि उनक्कु च्चॊल्लुवन् मनमे !⋆ तॊऴुदॆऴु तॊण्डर्गळ् तमक्कु⋆ पिणि ऒऴित्तमरर् पॆरु विशुम्बरुळुम्⋆ पेर् अरुळाळन् एम् पॆरुमान्⋆ अणि मलर् क्कुऴलार् अरम्बैयर् तुगिलुम्⋆ आरमुम् वारि वन्दु⋆ अणि नीर् मणि कॊऴित्तिऴिन्द गङ्गैयिन् करैमेल्⋆ वदरि आच्चिरमत्तुळ्ळाने॥४॥	हे हृदय तुझको बता दूं।उठो और मेरे उदार नाथ की पूजा करो जो भक्तो के भय को दूर कर शाश्वतों वाले विस्तृत आकाश का राज्य देते हैं।गंगा के तट पर जहां निर्मल जल सुगंधित जूड़ा वाली रंभा के गहनों के रत्न धोते हैं। आप वदरी आश्रम में रहते हैं। **981**

पेय् इडैक्किरुन्दु वन्द मट्वळ् तन्⋆ पॆरु मुलै शुवैत्तिड⋆ पॆट् ताय् इडैक्किरुत्तल् अञ्जुवन् एन्रु तळर्न्दिड⋆ वळर्न्द एन् तलैवन्⋆ शेय् मुगट्टुच्चि अण्डमुम् शुमन्द⋆ शॆम् पॊन् शॆय् विलङ्गलिल् इलङ्गु⋆ वाय् मुगट्टिळिन्द गङ्गैयिन् करैमेल्⋆ वदरि आच्चिरमत्तुळ्ळाने॥५॥	हमारे नाथ चमत्कारिक रूप से पाले पोसे गये। राक्षसी की गोद मे लेटकर उसके वृहत स्तन का पान किया जिसको देखकर नेक यशोदा मां भय से कांपने लगी। दो दिव्य पर्वत शिखरों के बीच से होकर गंगा ऐसे ऊंचे पर्वत पर बहती है जो जगत को संभाले हुए है। इनके तट पर आप वदरी आश्रम में रहते हैं। **982**
तेर् अणङ्गल्गुल् शॆळुङ्गयल् कण्णि तिऱत्तु⋆ ऒरु मऱ् तॊळिल् पुरिन्दु⋆ पार् अणङ्गिमिल् एऱेळु मुन् अडर्त्त⋆ पनि मुगिल् वण्णन् एम् पॆरुमान्⋆ कारणम् तन्नाल् कडुम् पुनल् कयत्त⋆ करु वरै पिळवॆळक्कुत्ति⋆ वारणम् कॊणर्न्द गङ्गैयिन् करैमेल्⋆ वदरि आच्चिरमत्तुळ्ळाने॥६॥	कृश - कटि एवं मीन-नयन नप्पिनाय के लिये श्याम वदन प्रभु ने कोध से लड़कर धूल उड़ाने वाले सात शक्तिशाली वृषभों का शमन किया।भागीरथ के तपस्या से गंगा काले पर्वत चट्टानों को चीरती हुई एवं ढ़लानों पर हाथियों को ठेलते हुए बहती है। आप वदरी आश्रम में रहते हैं। **983**
वॆम् तिऱल् कळिऱुम् वेलैवाय् अमुदुम्⋆ विण्णॊडु विण्णवर्क्करशुम्⋆ इन्दिरर्करुळि एमक्कुम् ईन्दरुळुम्⋆ एन्दै एम् अडिगळ् एम् पॆरुमान्⋆ अन्दरत्तमरर् अडि इणै वणङ्ग⋆ आयिर मुगत्तिनाल् अरुळि⋆ मन्दरत्तिळिन्द गङ्गैयिन् करैमेल्⋆ वदरि आच्चिरमत्तुळ्ळाने॥७॥	महान हाथी ऐरावत, क्षीर सागर का अमृत, वृहत आकाश, एवं देवों का साम्राज्य, ये सब जो आप इन्द्र को दिये हुए हैं, सबकुछ बराबर भाग में अपने भक्तों को भी देते हैं। मेरे नाथ एवं मेरे पिता की अर्चना मंदर गिरी पर्वत से बहने वाली गंगा के तट पर देवगन हजार कंठों से उच्चारण कर करते हैं । आप वदरी आश्रम में रहते हैं। **984**
मान् मुनिन्दॊरु काल् वरि शिलै वळैत्त⋆ मन्नवन् पॊन् निऱत्तुरवोन्⋆ ऊन् मुनिन्दवन् उडल् इरु पिळवा⋆ उगिर् नुदि मडुत्तु⋆ अयन् अरनै त्तान् मुनिन्दिट्ट⋆ वॆम् तिऱल् शापम् तविर्त्तवन्⋆ तवम् पुरिन्दुयर्न्द मा मुनि कॊणर्न्द गङ्गैयिन् करैमेल्⋆ वदरि आच्चिरमत्तुळ्ळाने॥८॥	मेरे प्रभु वनवास भोगते राजा हैं जिन्होंने माया मृग का बध किया। तीक्ष्ण पंजों से आपने महान असुर हिरण्य कशिपु की छाती फाड़ डाली। उदारतापूर्वक आपने खोपड़ी धारी शिव को ब्रह्मा के कोध से दिये गये शाप से मुक्त कराया। भागीरथ के महान तपस्या से लायी गयी गंगा के तट पर आप वदरी आश्रम में रहते हैं। **985**
कॊण्डल् मारुदङ्गळ् कुल वरै तॊगु नीर्⋆ क्कुरै कडल् उलगुडन् अनैत्तुम्⋆ उण्ड मा वयिट्रोन् ऒण् शुडर् एयन्द⋆ उम्बरुम् ऊळियुम् आनान्⋆ अण्डम् ऊडऱुत्तन्ऱन्दरत्तिळिन्दु⋆ अङ्गवनियाळ् अलमर⋆ पॆरुगुम् मण्डु मा मणि नीर् क्कङ्गैयिन् करैमेल्⋆ वदरि आच्चिरमत्तुळ्ळाने॥९॥	बादल, हवा, पर्वत श्रेणी, महान सागर, पृथ्वी एवं सब कुछ आपने अपने वृहत उदर में रख लिया। आपने प्रभा संपन्न आकाश को एवं युग युगान्तर काल को धारण कर रखा है।पुरा काल में गंगा अपने प्रवल प्रवाह से आकाश को चीरती पृथ्वी को कंपाते हुए आयी। गंगा के तट पर आप वदरी आश्रम में रहते हैं। **986**

‡वरुम् तिरै मणि नीर् क्कङ्गैयिन् करैमेल्⋆ वदरि आच्चिरमत्तुळ्ळानै⋆ करुङ्गडल् मुन् नीर् वण्णनै एण्णि⋆ क्कलियन् वाय् ऑलि शॆय्द पनुवल्⋆ वरम् शॆय्द ऐन्दुम् ऐन्दुम् वल्लार्गळ्⋆ वानवर् उलगुडन् मरुवि⋆ इरुङ्गडल् उलगम् आण्डु वॆण् कुडै क्कीळ्⋆ इमैयवर् आगुवर् तामे॥१०॥ ॥ तिरुमङ्गैयाळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं॥	कलियन की यह गीत माला निर्मल जल प्रवाह वाली गंगा तट पर वदरी आश्रम में रहने वाले श्याम वदन प्रभु के बारे में स्मरण कराती है।जो इसे कंठ कर लेंगे वे श्वेत छत्रधारी होकर पृथ्वी पर शासन करेंगे और शाश्वतों के संसार में जाकर देवों की गिनती में आ जायेंगे। **987** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

5 कलैयुम् करियुम् (988 - 997)

तिरूच्वाळक्किरामम् (नेपाल के मुक्तिनारायण का शालिग्राम तीर्थ ः कहा जाता है कि परकाल स्वामी शालग्राम नहीं जा सके थे इसीलिये सभी दस पाशुरों में अपने हृदय को वहां जाने के लिये उत्प्रेरित करते हैं।)

कलैयुम् करियुम् परिमावुम्⋆ तिरियुम् कानम् कडन्दु पोय्⋆ शिलैयुम् कणैयुम् तुणैयाग च्चॅन्ऱान्⋆ वॅन्ऱि च्चॅरुक्कळत्तु⋆ मलै कॉण्डलै नीर् अणै कट्टि⋆ मदिळ् नीर् इलङ्गै वाळ् अरक्कर् तलैवन्⋆ तलै पत्तरुत्तुगन्दान्⋆ शाळक्किरामम् अडै नॅञ्जे॥१॥	वनैले हिरन, हाथी, एवं घोड़ा से विचरण किये जाने वाले वन में प्रभु धनुष बाण लिये घूमे।ज्वारा भाटा वाले समुद्र पर पत्थरों से सेतु का निर्माण किया एवं संरक्षित लंका नगर में प्रवेश किये। युद्धक्षेत्र में खड़ा होकर राक्षस राज के दसों मस्तकों को विजयपूर्वक काट डाले। हे हृदय ! उनके पास शालग्राम में जाओ। **988**
कडल् शूळ् करियुम् परिमावुम्⋆ ऑलि मा त्तेरुम् कालाळुम्⋆ उडन् शूळ्न्दॅळुन्द कडि इलङ्गै⋆ पॉडिया वडि वाय् च्चरम् तुरन्दान्⋆ इडम् शूळ्न्दॅङ्गुम् इरु विशुम्बिल्⋆ इमैयोर् वणङ्ग मणम् कमळुम्⋆ तडम् शूळ्न्दॅङ्गुम् अळगाय⋆ शाळक्किरामम् अडै नॅञ्जे॥२॥	चिग्घाड़ते हाथी, घोड़े,रथ एवं पैदल सेना लंका के किला पर चढाई बोलकर इसे बाणों से धूल में मिला दिये। चारों तरफ सुगंध विखेरते तालों वाले शालग्राम में आप रहते हैं।विस्तृत आकाश से देवगन आपकी अर्चना करने आते हैं। हे हृदय ! उनके पास शालग्राम में जाओ। **989**
उलवु तिरैयुम् कुल वरैयुम्⋆ ऊळि मुदला एण् दिक्कुम्⋆ निलवुम् शुडरुम् इरुळुमाय् निन्ऱान्⋆ वॅन्ऱि विरल् आळि वलवन्⋆ वानोर् तम् पॅरुमान्⋆ मरुवा अरक्कर्क्कॅञ्ञान्ऱुम् शलवन्⋆ शलम् शूळ्न्दळगाय⋆ शाळक्किरामम् अडै नॅञ्जे॥३॥	समुद्र की लहरें, पर्वत श्रेणियां, समय का प्रवाह, दिशायें,सूर्य, चंद्र एवं अंधकार सब आपके स्वरूप हैं। आप तेजोमय चक्र धारण करते हैं तथा देवों के नाथ हैं। अभिमानी राक्षसों के लिये आप दया रहित हैं। हे हृदय !उनके पास शालग्राम में जाओ। **990**
ऊरान् कुडन्दै उत्तमन्⋆ ऑरु काल् इरु काल् शिलै वळैय⋆ तेरा अरक्कर् तेर् वॅळ्ळम् शॅढ़ान्⋆ वढ़ा वरु पुनल् शूळ् पेरान्⋆ पेर् आयिरम् उडैयान्⋆ पिऱङ्गु शिऱै वण्डऱैगिन्ऱ तारान्⋆ तारा वयल् शूळ्न्द⋆ शाळक्किरामम् अडै नॅञ्जे॥४॥	ऊरगम यानी उलगनंदा त्रिविक्रम भगवान कांचीपुरम एवं कुडन्दै कुंभकोनम के सर्वोत्तम प्रभु ने अपने धनुष से राक्षसों का बध किया जो रणक्षेत्र में रथों के समुद्र की दृश्यावली बनाये हुए थे।सदाप्रवाहित जल से आप तिरूपेर में घिरे रहते हैं। आपके हजारों नाम हैं। आप मधुमक्खियों से गुंजते तुलसी की माला पहनते हैं। जल पक्षियों वाले उपजाऊ क्षेत्रों के बीच आप रहते हैं। हे हृदय !उनके पास शालग्राम में जाओ। **991**

अडुत्तार्त्तॆळुन्दाळ् पिल वाय् विट्टलर॒★ अवळ् मूक्कयिल् वाळाल् विडुत्तान्★ विळङ्गु शुडर् आऴि★ विण्णोर् पॆरुमान् नण्णार् मुन्★ कडुत्तार्त्तॆळुन्द पॆरु मऴैयै★ क्कल् ऒन्ऱेन्दि इन निरैक्का– त्तडुत्तान्★ तडम् शूऴ्न्दऴगाय★ शाळक्किरामम् अडै नॆञ्जे॥५॥	चक्रवाले प्रभु देवों के प्रभु हैं। जब कामभावना से वशीभूत राक्षसी आपके पास आयी तो आपने उसका नाक काट लिया जिससे वह चिल्लाते मुंह फाड़े भाग गयी। जब काले बादल गर्जन करते एकत्र हुए तो आपने गोवर्धन पर्वत को उठाकर गायों की रक्षा करते हुए वर्षा बंद करा दी एवं शत्रुओं को पराभूत किया। आप सुन्दर तालों के मध्य रहते हैं। हे हृदय !उनके पास शालग्राम में जाओ। **992**
तायाय् वन्द पेय् उयिरुम्★ तयिरुम् विऴुदुम् उडन् उण्ड वायान्★ तूय वरि उरुविन् कुऱळाय् च्चॆन्ऱु★ मावलियै एयान् इरप्प★ मूवडि मण् इन्ऱे ता एन्ऱु★ उलगेऴुम् तायान्★ काया मलर् वण्णन्★ शाळक्किरामम् अडै नॆञ्जे॥६॥	आया बनकर आनेवाली राक्षसी का आपने प्राण चूस लिया। आप गोप बालाओं के दही एवं मक्खन चट कर गये। आप तीन पग जमीन की भिक्षा मांगते मावली के पास गये और तब सातों लोकों को ऊपर अपना पग रख दिया।आप काया फूल के वर्ण वाले हैं। हे हृदय !उनके पास शालग्राम में जाओ। **993**
एनोर् अञ्ज वॆञ्जमत्तुळ्★ अरियाय् प्परिय इरणियनै★ ऊनार् अगलम् पिळवॆडुत्त★ ऒरुवन् ताने इरु शुडराय्★ वानाय् तीयाय् मारुदमाय्★ मलैयाय् अलै नीर् उलगनैत्तुम् तानाय्★ तानुम् आनान् तन्★ शाळक्किरामम् अडै नॆञ्जे॥७॥	जब लोग भयाक्रांत देख रहे थे आप नरसिंह स्वरूप में आये और हिरण्य की छाती को चीर कर अलग कर दिया। आप दो प्रभा, आकाश, अग्नि, वायु,पर्वत, सागर, जगत, एवं स्वयं के रूप में हैं। हे हृदय !उनके पास शालग्राम में जाओ। **994**
वॆन्दार् एन्बुम् शुडु नीऱुम्★ मॆय्यिल् पूशि क्कैयगत्तु★ ओर् शन्दार् तलै कॊण्डुलगेऴुम् तिरियुम्★ पॆरियोन् तान् शॆन्ऱु★ एन् एन्दाय्! शावम् तीर् एन्न★ इलङ्ग मुदु नीर् त्तिरु मार्विल् तन्दान्★ शन्दार् पॊऴिल् शूऴ्न्द★ शाळक्किरामम् अडै नॆञ्जे॥८॥	शिव जी जले हुए शवों के भस्म लगाये एवं छेदों से भरी खोपड़ी लिये साती लोक घूमते रहते हैं। ये अपने उदार प्रभु के पास जा कर शाप से मुक्ति के लिये प्रार्थना किये। प्रभु ने इनकी खोपड़ी पात्र को अपने हृदय के स्नेह रक्त से भर दिया। आप चंदन के बागों में रहते हैं। हे हृदय ! उनके पास शालग्राम में जाओ। **995**
तॊण्डाम् इनमुम् इमैयोरुम्★ तुणै नूल् मार्बिन् अन्दणरुम्★ अण्डा एमक्के अरुळाय् एन्ऱु★ अणैयुम् कोयिल् अरुगॆल्लाम्★ वण्डार् पॊऴिलिन् पळनत्तु★ वयलिन् अयले कयल् पाय★ तण् तामरैगळ् मुगम् अलर्त्तुम्★ शाळक्किरामम् अडै नॆञ्जे॥९॥	भक्तों का समूह, देवों की जमात, एवं उपवीत धारी वैदिक पंडितों का दल, प्रभु की पूजा करने मंदिर मे आते हैं जो मधुमक्खियों वाले बाग एवं जलाशयों से घिरा है।यहां कयाल मछलियां नृत्य करती हैं एवं कमल के फूल अपने हर्षित मुखमंडलों को उठाये रहते हैं। हे हृदय ! उनके पास शालग्राम में जाओ। **996**

तारा आरुम् वयल् शूऴ्न्द⋆ शाळक्किरामत्तडिगळै⋆ कारार् पुऱविन् मङ्गै वेन्दन्⋆ कलियन् ऑलिशॆय् तमिऴ् माल्लै⋆ आरार् उलगत्तऱिवुडैयार्⋆ अमरर् नल् नाट्टरशाळ⋆ पेरायिरमुम् ओदुमिन्गाळ्⋆ अन्ऱि इवैये पिदट्रुमिने ॥१०॥ ॥ तिरुमङ्गैयाळ्वार तिरुवडिगळे शरणं ॥	श्याम वदन प्रभु के कृपापात्र मङ्गै के राजा कलियन ने ये गीत खेतों एवं जलपक्षियों से घिरे शालग्राम में निवास करने वाले प्रभु के बारे में गाये हैं। जगत के बुद्धिमान लोग ! अगर आप शाश्वतों के लोक का राज्य चाहते हैं तो हजार नामों को जपिये या फिर इन पदों को ही उन्मत्त होकर गाईये। **997** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

6 वाणिला मुरूवल्   (998 - 1007)

नैमिशारणियम्_ (नैमिशारण्य)

वाणिला मुरुवल् शिरु नुदल् पॆरुन् तोळ्⋆ मादरार् वन मुलै प्पयने पेणिनेन्⋆ अदनै प्पिळै एन क्करुदि⋆ प्पेदैयेन् पिरवि नोय् अरुप्पान्⋆ एण् इलेन् इरुन्देन् एणिणनेन् एणिण⋆ इळैयवर् कलवियिन् तिरत्तै नाणिनेन्⋆ वन्दुन् तिरुवडि अडैन्देन्⋆ नैमिशारणियत्तुळ् एन्दाय्॥१॥	चंद्रकिरणों सी हंसी, छोटा ललाट, सुघड़ बाहें, सुन्दर उरोज हमें पकड़े हुए थे। इनके पीछे दौड़ते हुए हमने अपनी गलती महसूस की। शर्मिन्दा हो आपके पास विमुक्ति के लिये आया। मैंने कभी आपके बारे में नही सोंचा था परंतु अब आपको ही याद करना है। कामोत्पादक किशोरयिों की स्मृति क्षीण हो रही है। अफसोस से भरा आपके पावन चरणों तक आया। नैमिशारण्यम जाग्रत प्रभु ! 998
शिलम्बडि उरुविन् करु नॆडुङ्गण्णार्⋆ तिरत्तनाय्! अरत्तैये मरन्दु⋆ पुलम् पडिन्दुण्णुम् बोगमे पॆरुक्कि⋆ प्पोक्किनेन् पॊळुदिनै वाळा⋆ अलम् पुरि तडक्कै आयने! माया!⋆ वानवर्क्करशने!⋆ वानोर् नलम् पुरिन्दिरैञ्जुम् तिरुवडियडैन्देन्⋆ नैमिशारणियत्तुळ् एन्दाय्॥२॥	पाजेव पहने बड़ी बड़ी सुन्दर आंखों वाली सुन्दरियों ने मुझे आकर्षित कर लिया। मैं अपना धर्म तथा आपको भूल गया। इन्द्रियों के क्षणिक सुख में खींचकर मैंने अपना समय व्यर्थ गंवा दिया। गोपवंश के चमत्कारिक प्रभु ! हाथ में हल लिये देवताओं के स्वामी ! चरण जो देवों द्वारा ऊपर पूजित हैं! नैमिशारण्यम जाग्रत प्रभु ! 999
शूदिनै प्पॆरुक्कि क्कळविनै त्तुणिन्दु⋆ शुरि कुळल् मडन्दैयर् तिरत्तु⋆ कादले मिगुत्तु क्कण्डवा⋆ तिरिन्द तॊण्डनेन् नमन्रमर् शॆय्युम्⋆ वेदनैक्कॊडुङ्गि नडुङ्गिनेन्⋆ वेलै वॆण् तिरै अलमर क्कडैन्द नादने⋆ वन्दुन् तिरुवडि अडैन्देन्⋆ नैमिशारणियत्तुळ् एन्दाय्॥३॥	जुआ में लिप्त, घुंघराले लट एवं जूड़े वाली के लिये लूट में निरत, नैतिकता विहीन, बढ़ते कामभावना आदि कर्मों के कारण मैं आपकी पूजा से विमुख रहा। समुद्र मंथन करने वाले प्रभु के पावन चरणों का सहारा खोजते अब आपके पास यमदूतों के डर से आया हूं। नैमिशारण्यम जाग्रत प्रभु ! 1000
वम्बुलाम् कून्दल् मनैवियै त्तुरन्दु⋆ पिरर् पॊरुळ् तारम् एन्रिवट्रै⋆ नम्बिनार् इरन्दाल्⋆ नमन्रमर् पट्रि एट्रिवैत्तु⋆ एरि एळुगिन्र शॆम्बिनाल् इयन्र पावैयै⋆ प्पावी! तळुवॆन मॊळिवदर्कञ्जि⋆ नम्बने! वन्दुन् तिरुवडि अडैन्देन्⋆ नैमिशारणियत्तुळ् एन्दाय्॥४॥	विश्वासी एवं प्यारी पत्नि को छोड़कर जो दूसरे की पत्नियों के पीछे लगे रहते हैं जब वे मरकर दूसरी दुनियां में जाते हैं तो यमदूत पकड़कर इन्हें सजा देते हैं 'आओ पापी, तांबे के इस तपते सुन्दरी का आलिंगन करो'। इन शब्दों के सुनने के डर से मैं आपके चरणों की पूजा में आया हूं। नैमिशारण्यम जाग्रत प्रभु ! 1001

इडुम्बैयाल् अडरप्पुण्डु इडुमिनो तुट्रॅन्रु★ इरन्दवरक्किल्लैये एन्रु★ नॅडुञ्जॉलाल् मरुत्त नीशनेन् अन्दो !★ निनैक्किलेन् विनै प्पयन् तन्नै★ कडुञ्जॉलार् कडियार् कालनार् तमराल्★ पडुवदोर् कॉडु मिरैक्कञ्जि★ नडुङ्गि नान् वन्दुन् तिरुवडि अडैन्देन्★ नैमिशारणियत्तुळ् एन्दाय्॥५॥	भूखे एक कौर भोजन के लिये मेरे पास आये परंतु मैनें उन्हें कुछ नहीं दिया। कठोर हृदय एवं संवेदनहीन नीच यह प्राणी अपने कार्यो के फल को सोचे बिना करता हुआ अब कठोर काल के दुर्वचन के डर से कांपता एवं हांफता आपके चरणों तक आया हूं। नैमिशारण्यम जाग्रत प्रभु ! **1002**
कोडिय मनत्ताल् शिन त्तॉळिल् पुरिन्दु★ तिरिन्दुनाय् इनत्तॉडुम् तिळैत्तिट्टु★ ओडियुम् उळन्रुम् उयिर्गळे कॉन्रेन्★ उणर्विलेन् आदलाल्★ नमनार् पाडियै प्पॅरिदुम् परिशळित्तिट्टेन्★ परमने ! पार्कडल् किडन्दाय् !★ नाडि नान् वन्दुन् तिरुवडि अडैन्देन्★ नैमिशारणियत्तुळ् एन्दाय्॥६॥	कुटिल हृदय तथा गुस्से में कार्य में निरत हो अपने कुत्ते के साथ घूमने को मैंने पसंद किया।डराकर प्राणियों का बध किया। महान समुद्र में सोये प्रभु ! मैंने यम के धर्मो के ढ़ेर को मिटा कर, अपने आप को परखता आपके चरणों में आया हूं। नैमिशारण्यम जाग्रत प्रभु ! **1003**
नॅञ्जिनाल् निनैन्दुम् वायिनाल् मॊळिन्दुम्★ नीदि अल्लादन शॅय्दुम्★ तुञ्जिनार् शॅल्लुम् तॊल् नॅरि केट्टे★ तुळङ्गिनेन् विळङ्गनि मुनिन्दाय् !★ वञ्जनेन् अडियेन् नॅञ्जिनिल् पिरिया★ वानवा ! दानवर्क्कॅन्रुम् नञ्जने !★ वन्दुन् तिरुवडि अडैन्देन्★ नैमिशारणियत्तुळ् एन्दाय्॥७॥	कुटिलता पूर्ण सोंच, तथा कटु वचन आदि अनेक धर्मविरोधी काम किया। मृतकों के डरावने मार्ग के अनुसरण को याद कर मैं पापी कांप जाता हूं। ताड़ पेड़ से असुर संहारने वाले प्रभु ! भक्तों के हृदय में सदा बसने वाले प्रभु ! असुरों के काल प्रभु ! आपके चरणों में आया हूं। नैमिशारण्यम जाग्रत प्रभु ! **1004**
एविनार् कलियार् नलिग एन्रु★ एन्मेल् एङ्गुने वाळुम् आरु★ ऐवर् कोविनार् शॅय्युम् कॊडुमैयै मडित्तेन्★ कुरुङ्गुडि नॅडुङ्गडल् वण्णा !★ पाविनारिन् शॊल् पन्मलर् कॊण्डु★ उन् पादमे परविनान् पणिन्दु★ एन् नाविनाल् वन्दुन् तिरुवडि अडैन्देन्★ नैमिशारणियत्तुळ् एन्दाय्॥८॥	कलि ने पांच कर्मेन्द्रियों को हम पर लगाकर कहा कि वे हमें नितांत रूप से यातना दे। गहरे सागर सा सलोने कुरूगुंदी के प्रभु ! आपने दुष्टों से मेरी रक्षा की। फूलों को आपके चरणों पर अर्पित करते आपके नाम जपते एवं गाते आपकी पूजा की। अब इन पदों से आपकी पूजा करते आपके चरणों में आया हूं। नैमिशारण्यम जाग्रत प्रभु ! **1005**
ऊनिडै च्चुवर् वैत्तॅन्बु तूण् नाट्टि★ उरोमम् वेयन्दॊन्बदु वाशल्★ तानुडै क्कुरम्बै प्पिरियुम्बोदु★ उन् तन् चरणमे शरणम् एन्रिरुन्देन्★ तेनुडै क्कमल त्तिरुविनुक्करशे !★ तिरै कॊळ् मा नॅडुङ्गडल् किडन्दाय् !★ नानुडै त्तवत्ताल् तिरुवडि अडैन्देन्★ नैमिशारणियत्तुळ् एन्दाय्॥९॥	मांस के गारा से घर बनाया एवं हड्डियों की सहतीर से इनको सहारा दिया।नौ खिड़कियों के साथ इनको केशादि से छा दिया। जीव ही इसका निवासी है। अमृतमयी लक्ष्मी के नाथ ! सागर में सोनवाले मेरे आश्रय ! अपनी तपस्या के कारण आपके चरणों में आया हूं। नैमिशारण्यम जाग्रत प्रभु ! **1006**

‡एदम् वन्दणुगा वण्णम् नाम् एण्णि⋆ एळुमिनो तॊळुदुम् एन्रु⋆ इमैयोर् नादन् वन्दिरैञ्जुम्⋆ नैमिशारणियत्तॆन्दैयै च्चिन्दैयुळ् वैत्तु⋆ कादले मिगुत्त कलियन् वाय् ऑलिशॆय्⋆ मालै तान् कट्र वल्लार्गळ्⋆ ओद नीर् वैयम् आण्डु वॆण् कुडै क्कीळ्⋆ उम्बरुम् आगुवर् तामे॥१०॥	अन्य देवताओं के साथ नैमिशारण्य निवासी प्रभु की सेवा के लिये आकर इन्द्र ने कहा 'देवगनों प्रभु की प्रशस्ति गायें एवं नाम जपें। निराशा को कभी अपने पास फटकने न दें।' कलियन का हृदय प्रेम से भरा है। जो इन पदों को याद कर गायेंगे वे पृथ्वी तथा आकाश दोनों के स्वामी होंगे। **1007** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

7 अङ्गण् ञालम् (1008 - 1017)

शिङ्गवेळ् कुन्ऱम्

(अहोविलम के लक्ष्मी नरसिंह प्रभु)

‡अङ्गण् ञालम् अञ्ज* अङ्गोर् आळ् अरियाय्* अवुणन् पोङ्ग आगम् वळ् उगिराल्* पोळ्न्द पुनिदन् इडम्* पैङ्गण् आनै क्कोम्बु कोण्डु* पत्तिमैयाल्* अडिक्कीळ् च्चॆङ्गण् आळि इट्टिरैञ्जुम्* शिङ्गवेळ् कुन्ऱमे॥१॥	जबकि समस्त संसार भयग्रस्त था प्रभु नरसिंह बनकर शिंगवेल कुन्डरम में आये और हिरण्य की छाती को अपने पंजों से चीर डाले। लाल आंखें वाले सिंह हाथी के दांत से आपकी चरण की पूजा बड़े सम्मान से करते हैं। **1008**
अलैत्त पेळ्वाय्* वाळ् एयिट्रोर् कोळरियाय्* अवुणन् कोल्लै क्कैयाळन् नॆञ्जिडन्द* कूर् उगिराळन् इडम्* मलैत्त शॆल् शात्तॆरिन्द पूशल्* वन् तुडिवाय् कडुप्प* शिलै क्कै वेडर् तॆळिप्पराद* शिङ्गवेळ् कुन्ऱमे॥२॥	मुंह फाड़े, श्वेत आक्रामक दांत को दिखाते, शिंगवेल कुन्डरम में आकर आपने हत्यारा हिरण्य की छाती को फाड़ डाला। धनुष लिये बहेलिया दलों में वन में घूमते हैं एवं मुग्दरनुमा उनके वाद्ययंत्र कभी बन्द नहीं होते। **1009**
एयन्द पेळ् वाय्* वाळ् एयिट्रोर् कोळरियाय्* अवुणन् वायन्द आगम् वळ् उगिराल्* वगिरन्द अम्मानदिडम्* ओयन्द मावुम् उडैन्द कुन्ऱुम्* अन्ऱियुम् निन्ऱळलाल्* तेयन्द वेयुम् अल्लदिल्ला* च्चिङ्गवेळ् कुन्ऱमे॥३॥	विशाल मुंह, छुरे की तरह दांतें, तरंगित शक्ति वाले नरसिंह ने असुर हिरण्य की मजबूत छाती को पंजों से चीर डाला।आलस मे उंघते पशु, टूटे पत्थर, एवं गिरे हुए बांस की झाड़ी, ये सब शिंगवेल कुन्डरम में हैं। **1010**
एव्वुम् वॆव्वेल् पॊन्पॆयरोन्* एदलन् इन् उयिरै वव्वि* आगम् वळ् उगिराल्* वगिरन्द अम्मानदिडम्* कव्वुनायुम् कळुगुम्* उच्चिप्पोदॊडु काल् शुळन्ऱु* दॆय्वम् अल्लाल् शॆल्ल ऒण्णा* च्चिङ्गवेळ् कुन्ऱमे॥४॥	भयानक असुर हिरण्य की छाती तीक्ष्ण पंजों से चीरा गया था और वह शिंगवेल कुन्डरम के प्रभु से मारा गया था। यहां कुत्ते, गिद्ध, चिलचिलाती धूप दुर्गम मार्ग में भटकते भक्तों का स्वागत करते हैं। **1011**
मॆन्ऱ् पेळ्वाय्* वाळ् एयिट्रोर् कोळरियाय्* अवुणन् पॊन्ऱ् आगम् वळ् उगिराल्* पोळ्न्द पुनिदन् इडम्* निन्ऱ् शॆन्दी मॊण्डु शूरै* नीळ् विशुम्बूडिरिय* शॆन्ऱु काण्डर्करिय कोयिल्* शिङ्गवेळ् कुन्ऱमे॥५॥	भयानक असुर हिरण्य की विशाल छाती को बड़े मुंह एवं छुरे के समान तीक्ष्ण दांत वाले महान शक्तिशाली नरसिंह ने चीर डाला।आपके पावन निवास शिंगवेल कुन्डरम में है जहां तूफानी हवा जंगल की आग को ऊंचे आकाश मे ले जाकर मंदिर के मार्ग को दुर्गम बना देते हैं। **1012**

एरिन्द पैङ्गण् इलङ्गु पेळ् वाय्⋆ एयिर्रोडिर्देव्वुरुवॅन्रु⋆ इरिन्दु वानोर् कलङ्गि ओड⋆ इरुन्द अम्मानदिडम्⋆ नॅरिन्द वेयिन् मुळैयुळ् निन्रु⋆ नीर्णॅरिवाय् उळुवै⋆ तिरिन्द आनै च्चुवडु पार्क्कुम्⋆ शिङ्गवेळ् कुन्रमे॥६॥	आपकी जलती लाल आंखें, विस्तृत खुला आनन, एवं चमकते तीक्ष्ण दांत को देखकर देवगन यत्र तत्र यह कहते हुए भागने लगे 'यह कैसा दृश्य है ?' प्रभु शिंगवेल कुन्डरम में रहते हैं, जहां बाघ बांस के झुरमुटों से जंगल में जाने वाले हाथी के पदचिह्नों की परख लेते रहता है। **1013**
मुनैत्त शीट्रम् विण्शुड प्पोय्⋆ मूवुलगुम् पिरवुम्⋆ अनैत्तुम् अञ्ज आळ् अरियाय्⋆ इरुन्द अम्मानदिडम्⋆ कनैत्त तीयुम् कल्लुम् अल्ला⋆ विल्लुडै वेडरुमाय्⋆ तिनैत्तनैयुम् शॅल्ल ऑण्णा⋆ च्चिङ्गवेळ् कुन्रमे॥७॥	नरसिंह प्रभु का गगन विस्तृत गुस्सा देखकर तीनों लोक एवं अन्य सभी भयाकांत हो गये। आपका निवास शिंगवेल कुन्डरम में है जहां आग, पत्थर, एवं धनुष लिये शिकारी लोगों का पहुंचना असंभव किये रहते हैं। **1014**
नात्तळुम्ब नान्मुगनुम्⋆ ईशनुमाय् मुरैयाल् एत्त⋆ अङ्गोर् आळ् अरियाय्⋆ इरुन्द अम्मानदिडम्⋆ काय्त्त वागै नॅट्रॉलिप्प⋆ क्कल् अदर् वेय्ङ्गळै पोय्⋆ तेय्त्त तीयाल् विण् शिवक्कुम्⋆ शिङ्गवेळ् कुन्रमे॥८॥	चतुर्मुख ब्रह्मा एवं शिव बारी बारी से प्रभु के नाम का उच्चारण तवतक करते रहते हैं जबतक उनके जीभ सूज नहीं जाते। नरसिंह के रूप वाले प्रभु शिंगवेल कुन्डरम में रहते हैं जहां वागै के झूलते पेड़ एवं बांस की टहनियां पत्थरों से टकराकर आग उत्पन्न करती हैं जिससे आकाश लाल हो जाता है। **1015**
नल्लै नॅञ्जे! नाम् तॉळुदुम्⋆ नम्मुडै नम् पॅरुमान्⋆ अल्लिमादर् पुल्ग निन्र⋆ आयिरम् तोळन् इडम्⋆ नॅल्लि मल्गि क्कल् उडैप्प⋆ प्पुल् इलै आर्त्तु⋆ अदर्वाय् च्चिल्लु शिल् एन्रॉल्लराद⋆ शिङ्गवेळ् कुन्रमे॥९॥	हे नेक हृदय ! आओ उस प्रभु की पूजा करें जो हजारों भुजाओं से कमल वत लक्ष्मी को आलिंगन करने के लिये आतुर हैं। प्रभु शिंगवेल कुन्डरम में रहते हैं जहां फलदायी पेड़ पत्थरों को तोड़ते हैं एवं ताड़ के पेड़ के पतंग की भांति टहनियां रास्ते पर आवाज के साथ गिरते रहते हैं। **1016**
शॅङ्कण् आळि इट्टिरैञ्जुम्⋆ शिङ्गवेळ् कुन्रुडैय⋆ एङ्गळ् ईशन् एम्बिरानै⋆ इरुन् तमिळ् नूल् पुलवन्⋆ मङ्गै याळन् मन्नु तॉल्शीर्⋆ वण्डरै तार् क्कलियन्⋆ शॅङ्गैयाळन् शॅञ्चॉल् मालै⋆ वल्लवर् तीदिलरे॥१०॥	हमारे शिंगवेल कुन्डरम के प्रभु की पूजा लाल आंखों वाले सिंह भेंट समर्पित करत हुये करते हैं। आप हमारे प्रभु एवं नाथ हैं। आपकी प्रशस्ति मंगै क्षेत्र के उदार राजा कलियन के तमिल दसक पदों से की गयी है जो मधुमक्खि गुंजते माला धारण किये रहते हैं। जो इसे कंठ कर लेगा वह दुर्गुणों से मुक्त हो जायेगा। **1017** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

8 कोङ्गलरन्द   (1018 - 1027)

तिरूवेङ्गडम् 1   (तिरूपति तिरूमला)

इडवन्दै महाबलीपुरम रोड पर चेन्नै से 41 कि मी पर है। यहां वराह भगवान खड़े हैं एवं अपनी बाई जांघ पर भूदेवी को रखकर बायें पैर को घुटने की ऊंचाई तक उठाये हैं जो शेषनाग के सिरपर टिका हुआ है।आपका दांया पैर सीधा है एवं जमीन पर टिका हुआ है। तमिल में 'इड' का अर्थ बायां होता है यानी बाई तरफ। अपभ्रंश होकर यह नाम 'तिरूविडवेन्दै' या 'तिरूवेडन्दै' हो गया है। उत्सव मूर्त्ति को श्री नित्यकल्याण पेरूमल कहते हैं। महाबलीपुरम में एक दूसरी जगह के मंदिर में भूदेवी वराह भगवान की दाई जांघ पर है इसलिये यहां मन्दिर को 'तिरूवलवेन्दै' कहते हैं।

कोँङ्गलरन्द मलर् क्कुरुन्दम् ओँशित्त⋆ कोवलन् एम् पिरान्⋆ शङ्गुदङ्गु तडङ्गडल्⋆ तुयिल् कोँण्ड तामरै क्कण्णिनन्⋆ पोँङ्गु पुळ्ळिनै वाय् पिळन्द⋆ पुराणर् तम् इडम्⋆ पोँङ्गु नीर् च्चेँङ्गयल् तिळैक्कुम् शुनै⋆ त्तिरुवेङ्गडम् अडै नेँञ्जमे॥१॥	मेरे प्रभु गोपाल ने खिलते एवं सुगंध विखेरते फूल वाले कुरून्दु पेड़ को तोड़ दिया। राजीवनयन मेरे प्रभु शंख से भरे गहरे समुद्र में शयन करते हैं।केशिन असुर के जवड़ा को तोड़ने वाले पुराण प्रभु आप मछलियों से भरे तड़ागों के बीच तिरूवेंकटम में रहते हैं। उधर मेरे हृदय ! 1018
पळ्ळि आवदु पार्कडल् अरङ्गम्⋆ इरङ्ग वन् पेय् मुलै⋆ पिळ्ळैयाय् उयिर् उण्ड एन्दै⋆ पिरान् अवन् पेँरुगुम् इडम्⋆ वेँळ्ळियान् करियान्⋆ मणि निऱ वण्णन् एन्ऱेँण्णि⋆ नाळ् तोँऱुम् तेँळ्ळियार् वणङ्गुम् मलै⋆ तिरुवेङ्गडम् अडै नेँञ्जमे॥२॥	आप क्षीरसागर में एवं अरंगम में शयन करते हैं। सोते शिशु के रूप में आपने राक्षसी का विषैला स्तन पिया। ऋषियों के मध्य आप 'श्वेत प्रभु ', 'काले प्रभु' एवं 'मणि के वर्ण के प्रभु' कहे जाते हैं, और वे आपकी पूजा तिरूवेंकटम के पर्वत पर करते हैं।उधर मेरे हृदय ! 1019
निन्ऱ मा मरुदिट्टु वीळ⋆ नडन्द निन्मलन् नेमियान्⋆ एन्ऱुम् वानवर् कै तोँळुम्⋆ इणैत्तामरै अडि एम् पिरान्⋆ कन्ऱ मारि पोँळिन्दिड⋆ क्कडिदानिरैक्किडर् नीक्कुवान्⋆ शेँन्ऱु कुन्ऱम् एडुत्तवन्⋆ तिरुवेङ्गडम् अडै नेँञ्जमे॥३॥	सरल शिशु के बीच में आते ही मरूदु के युगल वृक्ष टूट कर गिर गये। देवगन आपका चक्रधारी रूप की पूजा करते हुए आपके चरणों पर नतमस्तक होते हैं। गोवर्धन पर्वत को उठा कर आपने भयंकर तूफान से गायों की रक्षा की। आप तिरूवेंकटम में रहते हैं। उधर मेरे हृदय ! 1020

पार्त्तर्काय् अन्रु बारदम् कै शेय्दिट्टु* वेन्र् परञ्जुडर्* कोत्तङ्गायर् तम् पाडियिल्* कुरवै पिणैन्द एम् कोवलन्* एत्तुवार् तम् मनत्तुळ्ळान्* इडवेन्दै मेविय एम् पिरान्* तीर्त्त नीर् त्तडम् शोलै शूऴ्* तिरुवेङ्गडम् अडै नेञ्जमे॥४॥	अर्जुन के लिये तेजोमय प्रभु ने घोर युद्ध किया। आप गोपवंश के गोपाल हैं, और गोपियों के साथ आपने रास रचाया। आप इडवन्दै में, आपकी पूजा करने वाले भक्तों के हृदय में, एवं तिरूवेंकटम के बागों और जल प्रपातों में रहते हैं। उधर मेरे हृदय ! **1021**
वण् कैयान् अवुणर्क्कु नायगन्* वेळ्वियिल् शेन्रु माणियाय्* मण् कैयाल् इरन्दान्* मरामरम् एळुम् एय्द वलत्तिनान्* एण् कैयान् इमयत्तुळ्ळान्* इरुञ्जोलै मेविय एम् पिरान्* तिण् कै म्मा तुयरि तीर्त्तवन्* तिरुवेङ्गडम् अडै नेञ्जमे॥५॥	आपने उदार असुर राजा मावली के यज्ञ में मणिकन यानी वामन के रूप में जाकर तीन पग जमीन की मांग की।आप शक्तिशाली हैं एवं एक ही बाण से आपने सात वृक्षों को वेध डाला।आप बहुत भुजाओं वाले हैं एवं हिमालय तथा तिरूमलैरूमसलै में रहते हैं। आपने विपत्ति में हाथी की रक्षा की। आप तिरूवेंकटम में रहते हैं।उधर मेरे हृदय ! **1022**
एण् दिशैगळुम् एऴ् उलगमुम् वाङ्गि* प्पोन् वयिद्रिल् पेय्दु* पण्डोराल् इलै प्पळ्ळि कोण्डवन्* पाल् मदिक्किडर् तीर्त्तवन्* ओण् तिरल् अवुणन् उरत्तुगिर् वैत्तवन्* ओळ् एयिद्रोडु* तिण् तिरल् अरियायवन्* तिरुवेङ्गडम् अडै नेञ्जमे॥६॥	आपने आठों दिशाओं एवं सातों लोकों को उदरस्थ कर लिया और एक बट पत्र पर सो गये। आपने क्षीण होते चंद्रमा की आपदा से रक्षा की।भयानक तीक्ष्ण एवं श्वेत दातों वाले नरसिंह के रूप में आपने अपने पंजों को हिरण्य की मजबूत छाती में घुसा दिया।आप तिरूवेंकटम में रहते हैं।उधर मेरे हृदय ! **1023**
पारु नीर् एरि काद्रिनोडु* आगाशमुम् इवै आयिनान्* पेरुम् आयिरम् पेश निन्र्* पिरप्पिलि पेरुगुम् इडम्* कारुम् वार् पनि नीळ् विशुम्बिडै* च्चोरु मा मुगिल् तोय् तर* शेरुम्वार् पोळिल्शूऴ्* एळिल् तिरुवेङ्गडम् अडै नेञ्जमे॥७॥	आपही पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु , एवं आकाश हुए।आप हजार नामों से जाने जाते हैं एवं आपका जन्म नहीं होता। ओस, कुहरा, एवं बागों के अतिरिक्त आप तिरूवेंकटम में अनवरत वृष्टि वाले विस्तृत आकाश के नीचे बढ़े।उधर मेरे हृदय ! **1024**
अम्बरम् अनल् काल् निलम्* शलम् आगि निन्र् अमरर् कोन्* वम्बुला मलर्मेल्* मलि मड मङ्गै तन् कोळुनन् अवन्* कोम्बिन् अन्न इडै मड क्कुर् मादर्* नीळिदणम्दोरुम्* शेम् पुनम् अवै कावल् कोळ्* तिरुवेङ्गडम् अडै नेञ्जमे॥८॥	आपही पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु , एवं आकाश के स्वरूप में हैं। आप देवों के स्वामी एवं मधुमक्खि गुंजते कमल लक्ष्मी के दुलहा हुए।कृश कटि वाली तीर्थयात्री नारियां पेड़ों पर बैठकर तिरूवंकटम की लाल मिट्टी के क्षेत्र को निहारती हैं।उधर मेरे हृदय ! **1025**

पेशुमिन् तिरुनामम् एट्टॆळुत्तुम्⋆ शॊल्लि निन्ऱ् पिन्नरुम्⋆ पेशुवार् तमै उय्य वाङ्गि⋆ प्पिऱप्पऱुक्कुम् पिरान् इडम्⋆ वाश मा मलर् नाऱ् वार् पॊळिल्⋆ शूळ् तरुम् उलगुक्कॆल्लाम्⋆ देशमाय् त्तिगळुम् मलै⋆ त्तिरुवेङ्गडम् अडै नॆञ्जमे॥९॥	जो अष्टाक्षर मंत्र का उच्चारण करते हैं उनलोगों को आप उंचा उठाकर जन्म की आवृति से मुक्त कर देते हैं। आप सुगंधित फूल के वृक्षों की साया में प्रकाश स्तंभ बन अंधकार वाले तिरूवेंकटम के ऊपर रहते हैं।उधर मेरे हृदय ! **1026**
शॆङ्गयल् तिळैक्कुम् शुनै⋆ त्तिरुवेङ्गडत्तुऱै शॆल्वनै⋆ मङ्गैयर् तलैवन् कलिगन्ऱि⋆ वण्डमिळ् च्चॆञ्जॊल् मालैगळ्⋆ शङ्गै इन्ऱित्तरित्तुरैक्कवल्लार्गळ्⋆ तञ्जमदागवे⋆ वङ्ग मा कडल् वैयम् कावलर् आगि⋆ वान् उलगाळ्वरे॥१०॥	तिरूवेंकटम के तड़ागों में लाल मछलियां कूद लगाती हैं। यहां श्रीसंपन्न प्रभु का वास है जिनकी प्रशस्ति मंगै क्षेत्र के राजा कलियन ने अपने तमिल पदों में किया है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि जो इसे कंठ कर लेगे वे सागर से परिवृत्त पृथ्वी एवं आकाश के स्वामी होंगे। **1027** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

9 तोय तन्दै (1028 - 1037)

तिरूवेङ्गडम् 2

(तिरूपति तिरूमला)

ताये तन्दै एन्ऱुम्⋆ तारमे किळै मक्कळ् एन्ऱुम्⋆ नोये पट्टॊळिन्देन्⋆ उन्नै क्काण्बदोर् आशैयिनाल्⋆ वेयेय् पूम् पॊळिल् शूळ्⋆ विरैयार् तिरुवेङ्गडवा !⋆ नायेन् वन्दडैन्देन्⋆ नल्गि आळ् एन्नै क्कॊण्डरुळे॥१॥	घने बांस के झुरमुट एवं सुगंधित बागों से घिरे तिरूवेंकटम के प्रभु ! मां,पिता, पत्नी, कुटुम्ब, एवं मित्रों के लिये मैं द्रवित होते होते ऊब चुका हूं एवं यातना झेलते रहा। यह नीच श्वान आपके दर्शन के लिये आया है। विनती है, अपनी सेवा में ले लीजिये। **1028**
मानेय् कण् मडवार्⋆ मयक्किल् पट्टु मा निलत्तु⋆ नाने नानाविद⋆ नरगम् पुगुम् पावम् शॆय्देन्⋆ तेनेय् पूम् पॊळिल् शूळ्⋆ तिरुवेङ्गड मामलै⋆ एन् आनाय् वन्दडैन्देन्⋆ अडियेनै आट् कॊण्डरुळे॥२॥	मधुमक्खियों से गुंजित पुष्प बागों से घिरे तिरूवेंकटम पर्वत के प्रभु ! मेरे हाथी ! मत्स्य नयना सुन्दरियों के जाल में पड़कर नरकगामी पाप के तुल्य दुष्कर्म किये हैं। आज हम आपके पास आये हैं। विनती है, अपनी सेवा में ले लीजिये। **1029**
कॊन्ऱेन् पल् उयिरै⋆ क्कुरिक्कोळ् ऒन्ऱिलामैयिनाल्⋆ एन्ऱेनुम् इरन्दारक्कु⋆ इनिदाग उरैत्तरियेन्⋆ कुन्ऱेय् मेगम् अदिर्⋆ कुळिर् मा मलै वेङ्गडवा !⋆ अन्ऱे वन्दडैन्देन्⋆ अडियेनै आट् कॊण्डरुळे॥३॥	लोगों की हत्या विना किसी जीवन के लक्ष्य एवं उद्देश्य के करते रहे। जो हमारे पास सहायता मांगने आये उनके लिये मृदु वचनों का प्रयोग करना हम कभी जाने ही नहीं।शीतल तिरूवेंकटम के पर्वतों के ऊपर घने बादल गर्जते हैं।आज हम आपके पास आये हैं। विनती है, अपनी सेवा में ले लीजिये। **1030**
कुलम् तान् एत्तनैयुम्⋆ पिरन्दे इरन्दॆय्त्तॊळिन्देन्⋆ नलम् तान् ऒन्ऱुम् इलेन्⋆ नल्लदोर् अरम् शॆय्दुम् इलेन्⋆ निलन्दोय् नीळ् मुगिल् शेर्⋆ नॆरियार् तिरुवेङ्गडवा !⋆ अलन्देन् वन्दडैन्देन्⋆ अडियेनै आट् कॊण्डरुळे॥४॥	श्रमपूर्वक कितने परिवार में हमारा जन्म एवं मृत्यु हो चुका है। हम बिना नेकनीयती के हैं और हमने नेक कर्म अभी तक किया ही नहीं है। तिरूवेंकटम पर्वत पर के पैदल मार्ग को बादल स्पर्श करते हैं। आज हम आपके पास आये हैं। विनती है, अपनी सेवा में ले लीजिये। **1031**
ए प्पावम् पलवुम्⋆ इवैये शॆय्दिळैत्तॊळिन्देन्⋆ तुप्पा ! निन् अडिये⋆ तॊडरन्देत्तवुम् किर्किन्ऱिलेन्⋆ शॆप्पार् तिण्वरै शूळ्⋆ तिरुवेङ्गड मामलै⋆ एन् अप्पा ! वन्दडैन्देन्⋆ अडियेनै आट् कॊण्डरुळे॥५॥	सदा पापकर्म करते करते हम कमजोर एवं उदास हो गये हैं। हे निष्णात प्रभु ! न तो आपके श्रीचरणों की हमने कभी गाथा गायी। आपके आवास के चारो तरफ ताम्रवर्ण के महान पर्वतों का घेरा है।मेर जनक ! तिरूवेंकटम के प्रभु ! आज हम आपके

<table>
<tr><td></td><td>पास आये हैं। विनती है, अपनी सेवा में ले लीजिये। 1032</td></tr>
<tr><td>मण्णाय् नीर् एरि काल्⋆ मञ्जुलावुम् आगाशमुमाम्⋆
पुण्णार् आक्कै तन्नुळ्⋆ पुलम्बित्तळर्न्दॆय्त्तॊऴिन्देन्⋆
विण्णार् नीळ् शिगर⋆ विरैयार् तिरुवेङ्गडवा!⋆
अण्णा! वन्दडैन्देन्⋆ अडियेनै आट् कॊण्डरुळे॥६॥</td><td>आप भूमि, जल, अग्नि, हवा, एवं बादलों से भरा आकाश हैं। घावों से भरा देह लिये कराहते कमजोर एवं थका आपके पास आया हूं। गगनस्पर्शी तिरूवेंकटम पर्वतों के मेरे वरीय प्रभु ! आज हम आपके पास आये हैं। विनती है, अपनी सेवा में ले लीजिये। 1033</td></tr>
<tr><td>तॆरियेन् पालगनाय्⋆ प्पल तीमैगळ् शॆय्दुमिट्टेन्⋆
पॆरियेन् आयिन पिन्⋆ पिऱर्क्के उऴैत्तुएऴै आनेन्⋆
करि शेर् पूम् पॊऴिल् शूऴ्⋆ कन मा मलै वेङ्गडवा!⋆
अरिये! वन्दडैन्देन्⋆ अडियेनै आट् कॊण्डरुळे॥७॥</td><td>किशोरावस्था में हमने अनजाने में बहुत दुष्टतापूर्ण कार्य किये। जब बड़ा हुआ तो अपने आप को खो चुका था। हाथियों से विचरित तिरूवेंकटम पर्वत के प्रभु ! मेरे नाथ ! आज हम आपके पास आये हैं। विनती है, अपनी सेवा में ले लीजिये। 1034</td></tr>
<tr><td>नोऱ्ऱेन् पल् पिऱवि⋆ नुनै क्काण्बदोर् आशैयिनाल्⋆
एऱ्ऱेन् इ प्पिऱप्पे⋆ इडर् उऱ्ऱनन् एम् पॆरुमान्!⋆
कोल् तेन् पायन्दॊऴुगुम्⋆ कुऴिर् शोलै शूऴ् वेङ्गडवा!⋆
आऱ्ऱेन् वन्दडैन्देन्⋆ अडियेनै आट् कॊण्डरुळे॥८॥</td><td>मैं बहुत सारे जन्मों से गुजर चुका हूं। आपके दर्शन के फलस्वरूप इस जन्म में पूर्व के भारी कर्मों के लिये पश्चात्ताप करने को तैयार हूं। तिरूवेंकटम पर्वत के प्रभु ! जहां टहनियों पर मधुमक्खी के छत्ते मधु स्रवित करते रहते हैं, आज हम आपके पास आये हैं। विनती है, अपनी सेवा में ले लीजिये। 1035</td></tr>
<tr><td>पऱ्ऱेल् ऒन्ऱुम् इलेन्⋆ पावमे शॆय्दु पावि आनेन्⋆
मऱ्ऱेल् ऒन्ऱरियेन्⋆ मायने! एङ्गळ् मादवने!⋆
कल् तेन् पायन्दॊऴुगुम्⋆ कमलच्चुनै वेङ्गडवा!
अऱ्ऱेन् वन्दडैन्देन्⋆ अडियेनै आट् कॊण्डरुळे॥९॥</td><td>मेरा कोई आश्रय नहीं है। सदा कुकर्म करते करते मैं पापी हो गया हूं और कुछ जानता भी नहीं हूं। हमारे माधव, चमत्कारिक प्रभु ! कमल के तड़ागों वाले तिरूवेंकटम के प्रभु ! जहां पत्थरों पर मधुमक्खी के छत्ते मधु स्रवित करते रहते हैं, अपने को मुक्त करते हुए, आज हम आपके पास आये हैं। विनती है, अपनी सेवा में ले लीजिये। 1036</td></tr>
<tr><td>‡कण्णाय् एऴुलगुक्कुयिराय⋆ एङ्गार् वण्णनै⋆
विण्णोर् ताम् परवुम्⋆ पॊऴिल् वेङ्गड वेदियनै⋆
तिण्णार् माडङ्गळ् शूऴ्⋆ तिरु मङ्गैयर् कोन् कलियन्⋆
पण्णार् पाडल् पत्तुम्⋆ पयिल्वार्क्किल्लै पावङ्गळे॥१०॥</td><td>आंखों एवं प्राणवायु की तरह सातों लोकों के प्यारे घनश्याम वदन प्रभु ! आप ही तिरूवेंकटम पर्वत के बागों के मध्य के वैदिक प्रभु हैं जहां देवगन भी आपकी अर्चना करने आते हैं। मजबूत दीवारों वाले तिरूमंगै के राजा कलियन ने आपकी प्रशस्ति में पन्न (यानी वाद्ययंत्रों पर धुन के साथ गाने योग्य) पदों की गीतमालिका की रचना की है। जो इसे कंठ कर लेंगे वे कर्मों से विमुक्त हो जायेंगे। 1037

तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्।</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td colspan="2">

श्रीमते रामानुजाय नमः

10 कण्णार् कडल्शूऴ्   (1038-1047)

तिरूवेङ्गडम् 3 (तिरूपति तिरूमला)

</td></tr>
<tr><td>‡कण्णार् कडल् शूऴ्⋆ इलङ्गैक्किरैवन् तन्⋆
तिण्णागम् पिळक्क⋆ च्चरम् शॆल उय्त्ताय् !⋆
विण्णोर् तॊऴुम्⋆ वेङ्गड मा मलै मेय⋆
अण्णा ! अडियेन्⋆ इडरै क्कळैयाये॥१॥</td><td>वेंकटम पर्वत के वरीय निवासी प्रभु ! जहां देवगन आपकी अर्चना अर्पित करते हैं।आपने बाणों की वर्षा कर सागर आवृत्त लंका के राजा की छाती विदीर्ण कर दिया। मुक्त कीजिये मुझे कष्ट से, आपका सेवक। **1038**</td></tr>
<tr><td>इलङ्गै प्पदिक्कु⋆ अन्रिरैयाय⋆ अरक्कर्
कुलम् कॆट्टवर् माळ⋆ क्कॊडि प्पुळ् तिरित्ताय् !⋆
विलङ्गल् कुडुमि⋆ त्तिरुवेङ्गडम् मेय⋆
अलङ्गल् तुळब मुडियाय् !⋆ अरुळाये॥२॥</td><td>तुलसी की सुन्दर माला पहनें वेंकटम पर्वत के निवासी प्रभु ! जिसके ऊंचे शिखरों का प्रतियोगी नहीं है। आपने गरूड़ की सवारी कर लंका के शासक का कुल सहित नाश किया। विनती है, कृपा कीजिये । **1039**</td></tr>
<tr><td>नीरार् कडलुम्⋆ निलनुम् मुऴुदुण्डु⋆
एर् आलम् इळन् तळिर्मेल्⋆ तुयिल् एन्दाय् !⋆
शीरार्⋆ तिरुवेङ्गड मा मलै मेय⋆
आरा अमुदे !⋆ अडियेर्करुळाये॥३॥</td><td>अतृप्त करने वाले अमृत ! महान श्रीसंपन्न वेंकटम पर्वत के निवासी प्रभु ! आप पृथ्वी, समुद्र, एवं अन्य सबों को निगल कर शिशु रूप में बट पत्र पर सोये। विनती है, कृपा कीजिये, आपका सेवक। **1040**</td></tr>
<tr><td>उण्डाय् उऱिमेल्⋆ नऱु नॆय् अमुदाग⋆
कॊण्डाय् कुऱळाय्⋆ निलम् ईर् अडियाले⋆
विण् तोय् शिगर⋆ त्तिरुवेङ्गडम् मेय
अण्डा !⋆ अडियेनुक्करुळ् पुरियाये॥४॥</td><td>समस्त ब्रह्मांड के नायक ! वेंकटम पर्वत के निवासी प्रभु ! जिसके शिखर आकाश में घुसे हैं। आपने रस्सी की छीका से सुगंधित मक्खन खाया। वामन के रूप में धरती को दो कदमों में मापा। विनती है, कृपा कीजिये, आपका सेवक। **1041**</td></tr>
<tr><td>तूणाय् अदनूडु⋆ अरियाय् वन्दु तोन्ऱि⋆
पेणा अवुणन् उडलम्⋆ पिळन्दिट्टाय् !⋆
शेणार् तिरुवेङ्गड⋆ मा मलै मेय⋆
कोळ् नागणैयाय् !⋆ कुऱिक्कॊळ् एनै नीये॥५॥</td><td>शेषशायी प्रभु ! ऊंचे वेंकटम पर्वत के निवासी प्रभु ! आप नरसिंह के रूप में खंभे से प्रकट हुए एवं शक्तिशाली हिरण्य की छाती फाड़े। विनती है, हमारा ध्यान रखिये। **1042**</td></tr>
</table>

मन्ना॰ इम् मनिश प्पिऱवियै नीक्कि॰ तन्नाक्कि॰ त्तन्निनरुळ् शॅय्युम् तलैवन्॰ मिन्नार् मुगिल् शेर्॰ तिरुवेङ्गडम् मेय॰ एन् आनै एन् अप्पन्॰ एन् नॅञ्जिल् उळाने॥६॥	मेरे हाथी ! मेरे नाथ ! वेंकटम पर्वत के निवासी प्रभु ! जहां बादलों की कड़कती बिजली से प्रकाश है। आप हमारे नाथ हैं। आपने नीच क्षणभंगुर जीवन से हमें मुक्त किया । अपना बनाकर चरणों की सेवा में लिया है। अब आप हमारे हृदय में हैं। **1043**
मानेय् मड नोक्कि॰ तिऱत्तॆदिर् वन्द॰ आनेय् विडै शॅट्ट॰ अणि वरै त्तोळा !॰ तेने !॰ तिरुवेङ्गड मा मलै मेय॰ कोने ! एन् मनम्॰ कुडि कॊण्डिरुन्दाये॥७॥	मधु के समान मधुर मेरे नाथ ! महान वेंकटम पर्वत के निवासी प्रभु ! मृगनयनी नप्पिनाय के लिये आपने अपने पर्वतीय भुजाओं से दुर्दांत वृषभों से युद्ध किया। अब आप हमारे हृदय में बसते हैं। **1044**
शेयन् अणियन्॰ एन् शिन्दैयुळ् निन्ऱ मायन्॰ मणि वाळ् ऑळि॰ वॅण् तरळङ्गळ्॰ वेय् विण्डुदिर्॰ वेङ्गड मा मलै मेय॰ आयन् अडि अल्लदु॰ मट्ऱियेने॥८॥	पास में, दूर में,मेरे मन में बसने वाले प्रभु ! महान वेंकटम पर्वत के निवासी प्रभु ! जहां बांस फटकर दिव्य रत्न एवं चमकीले मोती प्रदान करते हैं।गोपवंश के नाथ के चरण कमल के सिवा मेरा कोई आश्रय नहीं है। **1045**
वन्दाय् एन् मनम् पुगुन्दाय्॰ मन्नि निन्ऱाय्॰ नन्दाद कॊळुञ्जुडरे॰ एङ्गळ् नम्बी !॰ शिन्दामणिये॰ तिरुवेङ्गडम् मेय एन्दाय् !॰ इनि यान् उन्नै॰ एन्ऱुम् विडेने॥९॥	शाश्वत ज्योति के स्रोत, हमारे नाथ, हमारे प्यारे रत्न ! वेंकटम पर्वत के निवासी प्रभु ! आप आये, हमारे हृदय में प्रवेश किया, एवं उस पर विजय प्राप्त किया। अब आपको हम कभी भी जाने नहीं देंगे। **1046**
‡विल्लार् मलि॰ वेङ्गड मा मलै मेय॰ मल्लार् तिरळ् तोळ्॰ मणि वण्णन् अम्मानै॰ कल्लार् तिरळ् तोळ्॰ कलियन् शॊन्न मालै॰ वल्लार् अवर्॰ वानवर् आगुवर् तामे॥१०॥	पत्थर की तरह कठोर भुजाओं वाले कलियन ने इन गीतमालिकाओं को गाया है जिसमें वेंकटम पर्वत के धनुषधारी एवं मणि के समान वर्ण के शक्तिशाली भुजाओं वाले प्रभु की प्रशस्ति है। जो इसका गान कर सकेंगे वे देवता हो जायेंगे। **1047** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ पॆरिय तिरुमॊऴि त्तनियन्गळ् ॥

तिरुक्कोट्टियूर् नम्बि अरुळिच्चॆय्ददु

कलयामि कलिध्वंसं कविं लोकदिवाकरम्।
यस्य गोभिः प्रकाशाभिराविद्यं निहतं तमः॥

एम्बॆरुमानार्अरुळिच्चॆय्ददु

वाळि परकालन् वाळि कलिगन्रि⋆
वाळि कुरैयलूर् वाळ् वेन्धन्⋆ –वाळियरो
मायोनै वाळ्वलियाल् मन्दिरङ्गॊळ्⋆ मङ्गैयर्कोन्
तूयोन् शुडर्मान वेल्

आळ्वान् अरुळिच्चॆय्ददु

नॆञ्जुक्किरुळ्गडि दीपम् अडङ्गा नॆडुम् पिरवि⋆
नञ्जुक्कु नल्लवमुदम् तमिळ् नन्नूल् तुरैगळ्⋆
अञ्जु क्किलक्कियम् आरण सारम् परशमय⋆
पञ्जु क्कनलिन् पॊरि परकालन् पनुवल्गळे

एम्बार् अरुळिच्चॆय्दवै

एङ्गळ् गदिये ! इरामानुज मुनिये !⋆
शङ्गै कॆडुत्ताण्डदवराशा⋆ –पॊङ्गु पुगळ्
मङ्गैयर्कोनीन्द मरैयायिरम् अनैत्तुम्⋆
तङ्गुमनम् नीयॆनक्कु त्ता

मालै त्तनिये वळि परिक्क वेणुम् एन्रु⋆
कोलि प्पदिविरुन्द कॊट्रवने !⋆ –वेलै
अणैत्तरुळुम् कैयाल् अडियेन् विनैयै⋆
तुणित्तरुळ वेणुम् तुणिन्दु

॥ तिरुमङ्गैयाळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं ॥

11 वानवर (1048 – 1057)

तिरूवेंकडम् 4 (तिरूपति तिरूमला)

वानवर् तङ्गळ् शिन्दै पोल्⋆ एन् नॅञ्जमे ! इनिदुवन्दु⋆ मा तव मानवर् तङ्गळ् शिन्दै⋆ अमरन्दुरैगिन्र एन्दै⋆ कानवर् इडु कार् अगिल् पुगै⋆ ओङ्गु वेङ्गडम् मेवि⋆ माण् कुरळ् आन अन्दणर्कु⋆ इन्रडिमै त्तॉळिल् पूण्डाये॥१॥	हे हृदय ! प्रभु साधनारत संतों के हृदय में रहते हैं, और वेंकटम में रहते हैं जहां वनवासियों से जलाये हुए सुगंधित अगिल का धुआं आकाश में ऊंचा उठता है। पूर्व में वे वैदिक किशोर के रूप में आये। देवताओं की चेतना की तरह आज तू भी उनकी सेवा में शांति से प्रवेश कर गये हो। **1048**
उरवु शुट्रम् एन्रॉन्रिला⋆ ऑरुवन् उगन्दवर् तम्मै⋆ मण्मिशै प्पिरवियॆ कॆडुप्पान्⋆ अदु कण्डॆन् नॆञ्जम् एन्बाय्⋆ कुरवर् मादर्गळोडु⋆ वण्डु कुरिञ्जि मरुळ् इशै पाडुम्⋆ वेङ्गड– त्तरव नायगर्कु⋆ इन्रडिमै त्तॉळिल् पूण्डाये॥२॥	हे हृदय ! पृथ्वी पर प्रभु का कोई कुटुम्ब एवं मित्र नहीं है। आप भक्तों को जन्म के चक्कर से सहर्ष मुक्त करते हैं।पूर्ण प्रभु वेंकटम में रहते हैं जहां वनवासी नारियां मधुमक्खी के समूह गान में कुरिंज पन्न पर प्रेम का गीत गाती हैं। आज तू भी प्रभु की सेवा में आ गये हो। **1049**
इण्डैयायिन कॊण्डु⋆ तॊण्डर्गळ् एत्तुवार् उरवोडुम्⋆ वानिडै कॊण्डु पोय् इडवुम्⋆ अदु कण्डॆन् नॆञ्जम् एन्बाय्⋆ वण्डु वाळ् वड वेङ्गड मलै⋆ कोयिल् कॊण्डदनोडुम्⋆ मीमिशै अण्डम् आण्डिरुप्पार्कु⋆ अडिमै त्तॉळिल् पूण्डाये॥३॥	हे हृदय ! प्रभु की पूजा फूलों की माला से जो करता है उसे वे स्वर्ग ले जाते हैं। अपने मंदिर से पृथ्वी का शासन करते हुए प्रभु वेंकटम में रहते हैं जहां मधुमक्खियां गूंजते हुए आपका गौरव गान करती हैं। आज तू भी प्रभु की सेवा में आ गये हो। **1050**
पावियादु शॆय्दाय्⋆ एन् नॆञ्जमे ! पण्डु तॊण्डु शॆय्दारै⋆ मण्मिशै मेवि आट्कॊण्डु पोय्⋆ विशुम्बेर वैक्कुम् एन्दै⋆ कोवि नायगन् कॊण्डल् उन्दुयर्⋆ वेङ्गड मलै आण्डु⋆ वानवर् आवियाय् इरुप्पार्कु⋆ अडिमै त्तॉळिल् पूण्डाये॥४॥	हे हृदय ! तूने ठीक काम किया है। गोपवंश के प्रभु जो भक्तों को स्वीकार कर स्वर्ग में ले जाते हैं वेंकटम में रहते हैं जहां बादल शिखरों को स्पर्श करते हैं। आप देवों के हृदय हैं। आज तू भी प्रभु की सेवा में आ गये हो। **1051**
पॊङ्गु पोदियुम् पिण्डियुमुडै⋆ पुत्तर् नोन्बियर् पळ्ळियुळ् उरै⋆ तङ्गळ् देवरुम् ताङ्गळुमे आग⋆ एन् नॆञ्जम् एन्बाय्⋆ एङ्गुम् वानवर् दानवर् निरै– न्देत्तुम्⋆ वेङ्गडम् मेवि निन्ररुळ्⋆ अङ्गण् नायगर्कु⋆ इन्रडिमै त्तॉळिल् पूण्डाये॥५॥	हे हृदय ! बौद्धों एवं श्रमनों के मंदिर में न्यग्रोध एवं अशोक के वृक्षों की पूजा की जाती है। हमारे सुन्दर आंखों वाले प्रभु उनके भगवान हो गये हैं और उनके अपने हो गये हैं।आप वेंकटम में रहते हैं जहां देव एवं दानव भीड़ करके आपकी पूजा करते हैं। आज तू भी प्रभु की सेवा में आ गये हो। **1052**

तुवरि आडैयर् मट्टैयर्⋆ शमण तोण्डर्गळ् मण्डि उण्डु पिन्नरुम्⋆ तमरुम् ताङ्गळुमे तडिक्क⋆ एन् नेञ्जम् एन्बाय्⋆ कवरि मा क्कणम् शेरुम्⋆ वेङ्गडम् कोयिल् कोण्ड कण् आर् विशुम्बिडै⋆ अमर नायगर्कु⋆ इन्रडिमै त्तोळिल् पूण्डाये॥६॥	हे हृदय ! सिर मुड़ाये गेरूआ वस्त्र धारण किये श्रमन लोग एक दूसरे पर गिरते हुए भोजन लूटते हैं एवं मोटे हो जाते हैं। देवों के देव हमारे प्रभु वेंकटम में रहते हैं जहां कस्तूरी मृग प्रभु के मंदिर के पास घूमते रहते हैं। आज तू भी प्रभु की सेवा में आ गये हो। **1053**
तरुक्किनाल् शमण शेय्दु⋆ शोरु तण तयिर्निनाल् तिरळै⋆ मिडट्रिडै नेरुक्कुवार् अलक्कण⋆ अदु कण्डेन नेञ्जम् एन्बाय्⋆ मरुङ्कळ् वण्डुगळ् पाडुम्⋆ वेङ्गडम् कोयिल् कोण्डदनोडुम्⋆ वानिडै अरुक्कन् मेवि निर्पार्कु⋆ अडिमै तोळिल् पूण्डाये॥७॥	हे हृदय ! शास्त्रार्थ में रत श्रमन जनों की स्थिति देखो जो दही भात अपने कंठ के नीचे ठेलते रहते हैं।प्रभु वेंकटम में रहते हैं जहां मधुमक्खियां मरूल प्रेम गीत मंदिर के चारों ओर गाती हैं। आप आकाश के सूर्य के हृदय हैं। आज तू भी प्रभु की सेवा में आ गये हो। **1054**
शेयन् अणियन् शिरियन् पेरियन् एन्बदुम्⋆ शिलर् पेश क्केट्टिरुन्दे⋆ एन् नेञ्जम् एन्बाय् !⋆ एनक्कोन्रु शोल्लादे⋆ वेय्गाळ् निन्रु वेण् मुत्तमे शोरि⋆ वेङ्गड मलै कोयिल् मेविय⋆ आयर् नायगर्कु⋆ इन्रडिमै त्तोळिल् पूण्डाये॥८॥	हे हृदय ! प्रभु के बारे में सुन चके हो कि वे दूर हैं एवं पास हैं, बड़े हैं एवं छोटे हैं। गोपजन नाथ वेंकटम में रहते हैं जहां प्रभु के मंदिर के आस पास बिना कोई आवाज के बांस की झाड़ियों से श्वेत मोती झरते हैं। आज तू भी प्रभु की सेवा में आ गये हो। **1055**
कूडि आडि उरैत्तदे उरैत्ताय्⋆ एन् नेञ्जम् एन्बाय् ! तुणिन्दु केळ्⋆ पाडि आडि प्पलरुम् पणिन्देत्ति⋆ काण्गिलार्⋆ आडु तामरैयोनुम् ईशनुम्⋆ अमरर् कोनुम् निन्रेत्तुम्⋆ वेङ्गडत्तु आडु कूत्तनुक्कु⋆ इन्रडिमै त्तोळिल् पूण्डाये॥९॥	हे हृदय ! नास्तिकों के दल में हिस्सा बंटाकर तू वही सब दुहराते हो जो वे कहते हैं। वे बहुत सारी सच्चाइयों के बारे में बोलते हैं परंतु किसी ने प्रभु को नहीं देखा है।हमारे पात्रनर्त्तक प्रभु वेंकटम में रहते हैं जहां प्रभु के मंदिर की पूजा ब्रह्मा, शिव, इन्द, एवं अन्य देवगन करते हैं। आज तू भी प्रभु की सेवा में आ गये हो। **1056**
मिन्नु मा मुगिल् मेवु⋆ तण् तिरु- वेङ्गड मलै कोयिल् मेविय⋆ अन्नमाय् निगळन्द⋆ अमरर् पेरुमानै⋆ कन्नि मा मदिळ् मङ्गैयर् कलि- कन्रि⋆ इन् तमिळाल् उरैत्त⋆ इम् मन्नु पाडल् वल्लारक्कु⋆ इडम् आगुम् वान् उलगे॥१०॥	वेदों को प्रकट करने के लिये प्रभु हंस के रूप में आये। देवों के देव वेंकटम पर्वत में रहते हैं जहां प्रभु का मंदिर तड़ित उत्पन्न करने वाले बादलों से स्पर्श किया जाता है। पत्थर की दीवारों से घिरे मंगै के राजा कलिकन्रि ने तमिल के इस मधुर दसक गीतमालिका को प्रभु के लिये गाया है।जो इसे कण्ठ कर लेंगे वे देवताओं के लोक में स्थान पायेंगे। **1057** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्

<table>
<tr><td colspan="2">

श्रीमते रामानुजाय नमः

12 काशै याडै (1058 - 1067)

तिरूवेळ्ळूर

(एव्वुल का शाब्दिक अर्थ है 'मेरा घर कहां है'। तिरूवेल्लूर चेन्नै से **42** कि मी पर अरक्कोनम की ओर है। यहां 'वीरराघव पेरूमाल हैं। Ramesha vol 1 pp 129 ।)

</td></tr>
<tr><td>काशै आडै मूडि ओडि* क्कादल् शेय् दानवन् ऊर्*
नाशम् आग नम्ब वल्ल* नम्बि नम् पॆरुमान्*
वेयिन् अन्न तोळ् मडवार्* वॆण्णॆय् उण्डान् इवन् एन्रु*
एश निन्र एम् पॆरुमान्* एव्वुळ् किडन्दाने॥१॥</td><td>रावण के नगर को नष्ट करने का हमारे प्रभु ने निर्णय ले लिया था जो काषाय धारी भिक्षु के रूप में सीता से प्रेम करने आया था। हमारे यही प्रभु वांस सी सुघड़ वाहों वाली गोपियों के हंसी के पात्र हो गये थे जब ये मक्खन चुराते पकड़े गये थे। आप एव्वुल मे शयन करने वाले प्रभु हैं। **1058**</td></tr>
<tr><td>तैयलाळ् मेल् कादल् शॆय्द* दानवन् वाळ् अरक्कन्*
पॊय् इलाद पॊन् मुडिगळ्* ऑन्बदोडॊन्रुम्* अन्रु
शॆय्द वॆम् पोर् तन्निल्* अङ्गोर् शॆञ्जरत्ताल् उरुळ*
एय्द एन्दै एम् पॆरुमान्* एव्वुळ् किडन्दाने॥२॥</td><td>घोर युद्ध में तलवारधारी राक्षसराज रावण के दस सुवर्ण मुकुटों को प्रभु ने उसके मस्तकों पर तप्त बाणों की वर्षा से गिरा दिया। आप एव्वुल मे शयन करने वाले प्रभु हैं। **1059**</td></tr>
<tr><td>मुन् ओर् तूदु* वानरत्तिन् वायिल् मॊळिन्दु* अरक्कन्
मन् ऊर् तन्नै* वाळियिनाल् माळ मुनिन्दु* अवने
पिन् ओर् तूदु* आगि मन्नर्क्कागि प्पॆरु निलत्तार्*
इन्नार् तूदन् एन निन्रान्* एव्वुळ् किडन्दाने॥३॥</td><td>पहले प्रभु ने हनुमान जी से संवाद भेजा। राक्षसों का किला वाला संरक्षित लंका नगर को तप्त बाणों से नष्ट कर दिया। बाद में प्रभु ने स्वयं पांडवों के संवाद को पहुंचाया और कौरवों ने 'दूत' कह आपका उपहास किया। आप एव्वुल मे शयन करने वाले प्रभु हैं। **1060**</td></tr>
<tr><td>पन्दणैन्द मॆल् विरलाळ्* पावै तन् कारणत्ताल्*
वॆन् तिरलेरेळुम् वॆन्र* वेन्दन् विरि पुगळ् शेर्*
नन्दन् मैन्दन् आग आगुम्* नम्बि नम् पॆरुमान्*
एन्दै तन्दै तम् पॆरुमान्* एव्वुळ् किडन्दाने॥४॥</td><td>गेंद पकड़ती पतली उंगुलियों वाली सुन्दरी नप्पिनाय के लिये आप सात वृषभों से भिड़े। जगप्रसिद्ध नंदगोप के पुत्र के रूप में पालन पोषण किये जाने वाले आप हमारे प्रभु हैं, आप एव्वुल मे शयन करने वाले प्रभु हैं। **1061**</td></tr>
</table>

वाल्नागि ञाल्म् एऴुम् उण्डु* पण्डाल् इलैमेल्* शाल नाळुम् पळ्ळि कॊळ्ळुम्* तामरै क्कण्णन् एण्णिल्* नील्मार् वण्डुण्डु वाऴुम्* नॆय्दलन्दण् कळनि* एल नारुम् पैम् पुरविल्* एव्वुळ् किडन्दाने॥५॥	शिशु के रूप में सातों लोकों को उदरस्थ कर अलौकिक राजीव नयन प्रभु प्रलय काल की बाढ़ में बट पत्र पर सोये हैं। शीतल बागों के बीच कमल से भरे तालाब में भौंरे मधु का स्वाद ले रहे हैं, आप एव्वुल मे शयन करने वाले प्रभु हैं। **1062**
शोत्त नम्बि एन्रु* तॊण्डर् मिण्डि तॊंडर्न्दळैक्कुम्* आत्त नम्बि शॆङ्गणम्बि* आगिलुम् देवर्क्कॆल्लाम्* मूत्त नम्बि मुक्कणम्बि एन्रु* मुनिवर् तॊऴु- देत्तुम्* नम्बि एम् पॆरुमान्* एव्वुळ् किडन्दाने॥६॥	भक्त जन एकत्रित हो प्यारे प्रभु को 'हमारे प्रभु' से सदा संबोधित करते हैं। कमलनयन प्रभु देवों में सबसे वरीय हैं एवं त्रिनेत्र शिव तथा चतुर्मुख ब्रह्मा से पूजित हैं। आप एव्वुल मे शयन करने वाले प्रभु हैं। **1063**
तिङ्गळ् अप्पु वान् एरि काल् आगि* दिशै मुगनार्* तङ्गळ् अप्पन् शामि अप्पन्* पागत्तिरुन्द* वण्डुण् तॊङ्गल् अप्पु नीळ् मुडियान्* शूळ् कळल् शूड निन्र* एङ्गळ् अप्पन् एम् पॆरुमान्* एव्वुळ् किडन्दाने॥७॥	चतुर्मुख ब्रह्मा जो आकाश, वायु, जल, अग्नि एवं चन्द्र को आश्रय प्रदान किये हुए हैं, वैदिक प्रभु को अपने पिता के रूप में पूजते हैं। जटाओं में गंगा को सिर पर धारण करने वाले शिव जो कोनरै के अमृत जैसे फूलों की माला पहने रहते हैं अपने प्रभु के चरण की पूजा करते हैं। आप एव्वुल मे शयन करने वाले प्रभु हैं। **1064**
मुनिवन् मूर्त्ति मूवर् आगि* वेदम् विरित्तुरैत्त पुनिदन्* पूवै वण्णन् अण्णल्* पुण्णियन् विण्णवर् कोन्* तनियन् शेयन् तान् ऒरुवन् आगिलुम्* तन् अडियार्- क्किनियन्* एन्दै एम् पॆरुमान्* एव्वुळ् किडन्दाने॥८॥	आदि प्रभु ने अपने को तीन रूप ब्रह्मा, शिव, एवं इन्द्र में प्रकट किया। आपने वेदों के सार को समझाया, आपके वर्ण कया फूल जैसे हैं। आप पवित्र तुलसी का मुकुट पहनते हैं। आप देवों के नाथ हैं, एवं आप दूरस्थ हैं तथा सभी के लिये अगम्य हैं। फिर भी आप भक्तों के लिये मृदु एवं समीपस्थ हैं। आप एव्वुल मे शयन करने वाले प्रभु हैं। **1065**
पन्दिरुक्कुम् मॆल् विरलाळ्* पावै पनि मलराळ्* वन्दिरुक्कुम् मार्वन्* नील मेनि मणि वण्णन्* अन्दरत्तिल् वाऴुम्* वानोर् नायगनाय् अमैन्द* इन्दिरर्कुम् तम् पॆरुमान्* एव्वुळ् किडन्दाने॥९॥	शीतल द्दष्टि वाली, पतली उंगलियों से गेंद पकड़े, कमल किशोरी लक्ष्मी, नीलधर प्रभु के वक्षस्थल पर विराजती हैं। देवों के नायक इन्द्र बहुत ऊपर से आकर आपकी पूजा करते हैं। आप एव्वुल मे शयन करने वाले हमारे प्रभु हैं। **1066**

इण्डै कॉण्डु तॉण्डर् एत्त* एव्वुळ् किडन्दानै* वण्डु पाडुम् पैम् पुरविन्* मङ्गैयर् कोन् कलियन् कॉण्ड शीरात् तण् तमिळ् शॅय् मालै* ईर् ऐन्दुम् वल्लार्* अण्डम् आळ्वदाणै* अन्रेल् आळ्वर् अमर् उलगे॥१०॥	एव्वुल में शयन करने वाले प्रभु की पूजा भक्तजन माला से करते हैं। मधुमक्खियों से गुंजायमान सुगंधित बागों वाले मङ्गै के राजा कलियन ने ये सौम्य तमिल दसक गीतमालिका को गाया है। यह निश्चित है कि जो इसे कण्ठ कर लेंगे वे पृथ्वी के अलावे शाश्वतों पर भी राज्य करेंगे।**1067** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

13 विऱ्पेरूविळवुम् (1068 - 1077)

तिरूवल्लीक्केणी

(पार्थसारथी भगवान ट्रिप्लिकेन चेन्नै)

विऱ्पॆरु विळवुम् कञ्जनुम् मल्लुम्⋆ वेळमुम् पागनुम् वीळ⋆ शॆट्रवन् तन्नै पुरम् एरि शॆय्द⋆ शिवन् उऱु तुयर् कळै तेवै⋆ पट्रलर् वीय क्कोल् कैयिल् कॊण्डु⋆ पार्त्तन् तन् तेर्मुन् निन्ऱानै⋆ शिट्रवै पणियाल् मुडि तुऱन्दानै⋆ त्तिरुवल्लिक्केणि क्कण्डेने॥१॥	तीन नगरों के विनाशक शिव को शाप से विमुक्त करने वाले प्रभु ने महान धनुष यज्ञ, बलशाली कंस, पहलवानों, एवं महावत के साथ मदमत्त हाथी को नष्ट कर दिया। अर्जुन का सारथी बनकर उसके शत्रु कौरव का नाश किया। विमाता कैकेयी के कहने पर आपने राज पाट छोड़ दिया। हमने ने आपको तिरूवल्लीक्केणी में देखा है। **1068**
वेदत्तै वेदत्तिन् शुवै प्पयनै⋆ विळुमिय मुनिवर् विळुङ्गुम्⋆ कोदिल् इन् कनियै नन्दनार् कळिट्रै⋆ क्कुवलयत्तोर् तॊळुदेत्तुम्⋆ आदियै अमुदै एन्नै आळ् उडै अप्पनै⋆ ऒप्पवर् इल्ला मादर्गळ् वाळुम्⋆ माड मा मयिलै⋆ त्तिरुवल्लिक्केणि क्कण्डेने॥२॥	वेदों के प्रभु,वैदिक यज्ञ के साध्य, संतो के आनन्दकन्द, नंदगोपाल के हाथी, भूमंडल के आदिदेव, मेरे प्रभु एवं नाथ, अलौकिक छवि वाली लक्ष्मी के साथ मयिलै में रहते हैं। हमने ने आपको तिरूवल्लीक्केणी में देखा है। **1069**
वञ्जनै शॆय्य त्ताय् उरुवागि⋆ वन्द पेय् अलऱ मण् शेर⋆ नञ्जमर् मुलैयूडुयिर् शॆगवुण्ड नादनै⋆ त्तानवर् कूट्रै⋆ विञ्जै वानवर् शारणर् शित्तर्⋆ वियन्दुदुदि शॆय्य प्पॆण् उरुवागि⋆ अञ्जुवै अमुदम् अन्ऱळित्तानै⋆ त्तिरुवल्लिक्केणि क्कण्डेने॥३॥	बदनीयत एवं मां के छद्म वेष वाली राक्षसी का विषैले स्तन पी कर के आपने उसके प्राण भी हर लिये और उसे जमीन पर सुला दिया। असुरों के लिये आप मौत हैं।सिद्ध, चारण, एवं विद्याधर आपकी पूजा करते हैं। सुन्दरी के रूप में आपने देवों को अमृत दिया। हमने ने आपको तिरूवल्लीक्केणी में देखा है। **1070**
इन्दिरनुक्कॆन्ऱायर्गळ् एडुत्त⋆ एळिल् विळविल् पळ नडैशॆय्⋆ मन्दिर विदियिल् पूशनै पॆऱादु⋆ मळै पॊळिन्दिड त्तळर्न्दु⋆ आयर् एन्दमोडिन आनिरै तळरामल्⋆ एम् पॆरुमान् अरुळ् एन्न⋆ अन्दम् इल् वरियाल् मळै तडुत्तानै⋆ त्तिरुवल्लिक्केणि क्कण्डेने॥४॥	गोप जनों द्वारा पुरा काल से मंत्रों के साथ होने वाले यज्ञ को बंद होते देख इन्द्र ने ओले की वृष्टि की। डर से गोप लोग कृष्ण की शरण में गये। तब हमारे प्रभु ने अलौकिक गोवर्धन पर्वत को उठाकर वर्षा बन्द करायी। हमने ने आपको तिरूवल्लीक्केणी में देखा है। **1071**

इन् तुणैप्पदु मत्तलर् मगळ् तनक्कुम् इन्वन्* नल् पुवि तनक्किरैवन्* तन् तुणै आयर् पावै नप्पिन्नै तनक्किरै* मट्रैयोरक्कॆल्लाम् वन् तुणै* पञ्ज पाण्डवर्क्कागि* वाय् उरै तूदु शॆन्रियङ्गुम् एन् तुणै* एन्दै तन्दै तम्मानै* त्तिरुवल्लिक्केणि क्कण्डेने॥५॥	कमल वत लक्ष्मी के मधुर साथी, भूदेवी के नाथ, गोप सुन्दरी नप्पिनाय के नाथ, एवं अन्यों के बुरे साथी कहे जाने वाले प्रभु पांच पांडवों के दूत बनकर गये एवं उनकी ओर से संवाद दिया।आप हमारे साथी, नाथ एवं पिता के पिता हैं। हमने ने आपको तिरूवल्लीक्केणी में देखा है।**1072**
अन्दगन् शिरुवन् अरशर् तम् अरशर्किळैयवन्* अणि इळैयै च्चॆन्रु* एन्दमक्कुरिमै शॆय् एन त्तरियादु* एम् पॆरुमान् अरुळ्! एन्न* शन्दमल् कुळलाळ् अलक्कण् नूट्रुवर् तम्* पॆण्डिरुम् एय्दि नूलिळप्प* इन्दिरन् शिरुवन् तेर् मुन् निन्रानै* त्तिरुवल्लिक्केणि क्कण्डेने॥६॥	अंधे राजा धृतराष्ट्र के पुत्र, राजाओं के राजा, दुर्योधन एवं उसका छोटा भाई दुःशासन सुन्दर आभूषणों वाली द्रौपदी के पास जाकर बोले “तू मेरी दासी है”। काली लट वाली से यह नहीं सहा गया एवं उसने प्रार्थना की ‘प्रभु हमारी रक्षा करो’।प्रभु ने उसके दुःख को हरते हुए अन्यों की पत्नियों का सुहाग नष्ट कर दिया। आपने इन्द्रपुत्र अर्जुन का रथ चलाया। हमने ने आपको तिरूवल्लीक्केणी में देखा है। **1073**
‡बरदनुम् तम्बि शत्तुरुक्कननुम्* इलक्कुमनोडु मैदिलियुम्* इरवुम् नन् पगलुम् तुदि शॆय्य निन्र्* इरावणान्दगनै एम्मानै* कुरवमे कमळुम् कुळिर् पॊळिल् ऊडु* कुयिलॊडु मयिल्गळ् निन्राल* इरवियिन् कदिर्गळ् नुळैदल् शॆय्दरिया* त्तिरुवल्लिक्केणि क्कण्डेने॥७॥	भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मण एवं अपनी पत्नी सीता से रात दिन घिरे हुए उनके द्वारा आप पूजित हैं। रावण के विजेता आप शीतल सुगंधित छायेदार बाग में रहते हैं जहां कोयल गाते हैं, मोर नाचते हैं, एवं पत्तेदार छाया को सूर्य की किरणों को पार करना कठिन है। हमने ने आपको तिरूवल्लीक्केणी में देखा है। **1074**
पळ्ळियिल् ओदि वन्द तन् शिरुवन्* वायिल् ओर् आयिर नामम्* ऒळ्ळियवागि प्पोदवाङ्गदनुक्कु* ऒन्रुम् ओर् पॊरुप्पिलन् आगि* पिळ्ळैयै च्चीरि वॆगुण्डु तूण् पुडैप्प* प्पिरै एयिट्रनल् विळि पेळ्वाय्* तॆळ्ळिय शिङ्गम् आगिय देवै* त्तिरुवल्लिक्केणि क्कण्डेने॥८॥	पुत्र प्रह्लाद को पाठशाला से लौटकर आपके हजार नामों को गाते सुन असुर हिरण्य गुस्से से भर गया।बालक को बहुत यातना दे उसने एक खंभे पर लात मारा। आश्चर्य ! मुंह खोले, अंगारे वाली आंखें, एवं कटार नुमा दांतो के साथ एक भयानक नरसिंह प्रकट हुए एवं असुर का बध कर डाले। हमने ने आपको तिरूवल्लीक्केणी में देखा है। **1075**

मीन् अमर् पॅाय्गै नाळ् मलर् कॅाय्वान्* वेट्कैयिनोडु शॅन्रिळिन्द* कान् अमर् वेळम् कैय् एडुत्तलर* क्करा अदन् कालिनै क्कदुव* आनैयिन् तुयरम् तीर प्पुळ् ऊर्न्दु* शॅन्रु निन्राळि तॅाट्टानै तेन् अमर् शोलै माड मा मयिलै* त्तिरुवल्लिक्केणि क्कण्डेने॥९॥	पूजा के लिये नूतन कमल का फूल तोड़ने की ईच्छा से जंगली भक्त हाथी मछली वाले तालाब में घुसा। जब उसका पैर एक ग्राह के जबड़ो से पकड़ लिया गया तब सूंढ़ उठाकर उसने बड़े आर्तभाव से चीख लगायी। कष्ट से मुक्त कराने हेतु आप गरूड़ पर सवार हो पहुंचे एवं आपने चक्र चलाया। आप अमृत टपकते बागों के मध्य ऊंचे भवनो वाले मयिलै में रहते हैं। हमने ने आपको तिरूवल्लीक्केणी में देखा है। **1076**
मन्नुदण् पॅाळिलुम् वावियुम् मदिळुम्* माडमाळिगैयुम् मण्डपमुम्* तॅन्नन् तॅाण्डैयर् कोन् शॅय्द नल् मयिलै* त्तिरुवल्लिक्केणि निन्रानै* कन्नि नल् माड मङ्गैयर् तलैवन्* कामरु शीर् क्कलिगन्रि* शॅान्न शॅाल् मालै पत्तुडन् वल्लार्* शुगम् इनिदाळ्वर् वान् उलगे॥१०॥	तोंडमान राजा ने मयिलै एवं तिरूवल्लीक्केणी नगर को तालाब, बाग, किला, चहारदीवरी, एवं मंडपों से संवारा है। यह गीतमालिका मंगै क्षेत्र के राजा सुन्दर कलिकन्रि द्वारा विरचित हैं एवं तिरूवल्लीक्केणी के मंदिर वाले प्रभु की प्रशस्ति गाते हैं। जो इसे कंठ कर लेंगे वे इस जगत में आनंद उठाते हुए स्वर्ग पर शासन करेंगे। **1077** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

14 अऩ्ऱायर् (1078 - 1087)

तिरूनीर्मलै

(तिरूनीरमलै पल्लावरम से 5 कि मी है जो चेन्नै से 7 कि मी पर है। यहां ‘रंगनाथ पेरूमाल हैं। Ramesha vol 1 pp 139 ।)

<table>
<tr><td>अऩ्ऱायर् कुल क्कॉडियोडु* अणि मा
मलर् मङ्गैयॊडन्बळावि* अवुणर्–
क्कॆन्ऱानुम् इरक्कम् इल्लादवनुक्कु*
उऱैयुम् इडम् आवदु* इरुम् पॊऴिल् शूऴ्
नन्ऱाय पुनल् नऱैयूर् तिरुवालि
कुडन्दै* तडम् तिगऴ् कोवल्नगर्*
निन्ऱान् इरुन्दान् किडन्दान् नडन्दार्–
किडम्* मा मलै आवदु नीर् मलैये॥१॥</td><td>गोपकुमारी नप्पिनाय एवं कमल सी लक्ष्मी के दूल्हा आप असुरों के काल हैं। सिंचित बागों से घिरे नरैयूर (Ramesha vol 3 pp 71) में आप खड़े हैं, तिरूवाली (Ramesha vol 2 pp 225) में बैठे हैं, एवं कुडन्दै (Ramesha vol 2 pp 112) में आप सोये हैं। तलाबों वाले तिरूक्कोवलूर (Ramesha vol 3 pp 201) में आप पग ऊंचे उठाये हैं। अपने महान पर्वतीय आवास तिरूनीर्मलै में आप उपर्युक्त सभी अवस्थाओं में हैं। **1078**</td></tr>
<tr><td>काण्डावनम् एन्बदोर् काडु* अमरर्–
क्करैयन् अदु कण्डवन् निर्क* मुने
मूण्डार् अऴल् उण्ण मुनिन्ददुवुम्
अदुवन्ऱियुम्* मुन् उलगम् पॊऱै तीर्–
ताण्डान्* अवुणन् अवन् मार्वगलम्*
उगिराल् वगिर् आग मुनिन्दरियाय्
नीण्डान्* कुऱळ् आगि निमिर्न्दवनु–
क्किडम्* मा मलै आवदु नीर् मलैये॥२॥</td><td>देवों के राजा इन्द्र का जंगल कन्डावनम भयानक जंगली आग की चपेट में था। उनकी उपस्थिति में हमारे प्रभु ने रोष में आग को निगल लिया। आप ने पृथ्वी का बोझ कम करने के लिये घारे युद्ध किया। नरसिंह के रूप में आकर हिरण्य की छाती फाड़ डाले। वामन बन के आपने पृथ्वी को ढ़क लिया। तिरूनीर्मलै आपका महान पर्वतीय आवास है। **1079**</td></tr>
<tr><td>अल मन्नुम् अडल् शुरि शङ्गम् एडुत्तु*
अडल् आऴियिनाल् अणि आरुरुविन्*
पुल मन्नु वडम्बुनै कॊङ्गैयिनाळ्*
पॊऱैदीर मुनाळ् अडुवाळ् अमरिल्*
पल मन्नर् पड च्चुडर् आऴियिनै*
पगलोन् मऱैय प्पणि कॊण्डु अणि शेर्*
निल मन्ननुम् आय् उलगाण्डवनु–
क्किडम्* मा मलै आवदु नीर् मलैये॥३॥</td><td>अपने सुन्दर शरीर पर आप तेज चक्र, हल, एवं वलयदार शंख धारण करते हैं। पुरा काल में आप भू देवी का भार कम करने के लिये आये। तेजोमय चक्र से आपने सूर्य को छिपा कर युद्ध कराया जिसमें बहुत सारे राजा मारे गये। बहुत युगों तक आपने पृथ्वी के राज्य का मुकुट संभाला। तिरूनीर्मलै आपका महान पर्वतीय आवास है। **1080**</td></tr>
</table>

ताङ्गाददोर् आळ् अरियाय्⋆ अवुणन् तनै वीड मुनिन्दवनाल् अमरुम्⋆ पूङ्गोदैयर् पॊङ्गिरि मूळ्ग विळै- त्तदुवन्रियुम्⋆ वॆन्रि कॊळ् वाळ् अमरिल्⋆ पाङ्गाग मुन् ऐवरॊडन्बळवि⋆ पदिट्टैन्दिरट्टि प्पडै वेन्दर् पड⋆ नीङ्ग च्चॆरुविल् निरै कात्तवनु- क्किडम्⋆ मा मलै आवदु नीर् मलैये॥४॥	आप अप्रतिम क्रोध के साथ भयानक नरसिंह के रूप में आये और गुस्सैल हिरण्य को मारकर फूल से सजी उसकी रानियों को अग्नि को समर्पित कर दिये। विजयी युद्ध में आपने पांचों पाण्डवों को मित्र बनाकर शक्तिशाली सौ जनों का नाश कराया एवं द्रौपदी के नाम की प्रतिष्ठा बचायी। तिरूनीर्मलै आपका महान पर्वतीय आवास है। **1081**
मालुम् कडल् आर मलै क्कुवडिट्टु⋆ अणै कट्टि वरम्बुरुव⋆ मदि शेर् कोलमदिळ् आय इलङ्गै कॆड⋆ पडै तॊट्टॊरु काल् अमरिल् अदिर⋆ कालम् इदुवॆन्रयन् वाळियिनाल्⋆ कदिर् नीळ् मुडि पत्तुम् अरुत्तमरुम्⋆ नीलमुगिल् वण्णर् ऎमक्किरैवर्- क्किडम्⋆ मा मलै आवदु नीर् मलैये॥५॥	एक बार आपने तरंगित समुद्र को पत्थर से भरकर सेतु बनाया और चंद्रमा को छूने वाली चहारदीवारी के लंका में प्रवेश किया। रावण की मृत्यु का निश्चित कर आपने ब्रह्मास्त्र चलाया जिससे उसके दस मुकुट वाले मस्तक धराशायी हो गये। आप श्याम वदन हमारे प्रभु हैं। तिरूनीर्मलै आपका महान पर्वतीय आवास है। **1082**
पार् आर् उलगुम् पनि माल् वरैयुम्⋆ कडलुम् शुडरुम् इवै उण्डुम्⋆ ऎन- क्कारादॆन निन्रवन् ऎम् पॆरुमान्⋆ अलै नीर् उलगुक्करशागिय⋆ अ- प्पेरानै मुनिन्द मुनिक्करैयन्⋆ पिरर् इल्लै नुनक्कॆनुम् ऎल्लैयिनान्⋆ नीर् आर् पेरान् नॆडुमाल् अवनु- क्किडम्⋆ मा मलै आवदु नीर् मलैये॥६॥	पृथ्वी, पर्वत, सागर, आभा एवं अन्य सभी को निगलकर आपने कहा 'मैं भूखा हूं'। आप तपस्वी राजा हैं, और **21** मुकुटधारी राजाओं का नाश कर अपने को अद्वितीय बना दिया। आप सागर सा सलोने आदि-कारण प्रभु हैं। तिरूनीर्मलै आपका महान पर्वतीय आवास है। **1083**
पुगर् आरुरुवागि मुनिन्दवनै⋆ पुगळ् वीड मुनिन्दुयिरुण्डु⋆ अशुरन् नगर् आयिन पाळ् पड नामम् ऎरि- न्ददुवन्रियुम्⋆ वॆन्रि कॊळ् वाळ् अवुणन्⋆ पगरादवन् आयिर् नामम्⋆ अडि प्पणियादवनै प्पणियाल् अमरिल्⋆ निगर् आयवन् नॆञ्जिडन्दान् अवनु- क्किडम्⋆ मा मलै आवदु नीर् मलैये॥७॥	तलवार चलाने वाला आततायी जिसने कभी भी हजार नामों का उच्चारण नहीं किया और कभी पूजा में सिर नहीं झुकाया प्रभु की कभी भी बराबरी नहीं कर सका। जब वह गुस्से में अपने आपे से बाहर हो गया तो नरसिंह के रूप में प्रकट होकर आपने उसकी छाती के टुकड़े टुकड़े कर दिये। उसके नगर को नष्ट कर दिया एवं उसका नामो निशान मिटा दिया। तिरूनीर्मलै आपका महान पर्वतीय आवास है। **1084**

<table>
<tr>
<td>पिच्च च्चिऱ पीलि पिडित्तु⋆ उलगिल्
पिणम् तिन् मडवार् अवर् पोल्⋆ अङ्गे
अच्चम् इलर् नाण् इलर् आदन्मैयाल्⋆
अवर् शॅय्यौ वॅऱुत्तणि मा मलर्तूय्⋆
नच्चि नमनार् अडैयामै⋆ नम–
क्करुळ् शॅय् एन उळ् कुळैन्दार्वमॉडु
निच्चम् निनैवार्क्करुळ् शॅय्युम् अवर्–
किडम्⋆ मा मलै आवदु नीर् मलैये॥८॥</td>
<td>ऐसे लोग हैं जो पृथ्वी पर निर्लज्ज एवं निर्भय घूमते हैं जैसे कि मोर की पांख से सजे शव खाने वाला तांत्रिक घूमता है। उनके पंथ का तिरस्कार कर, वे जो प्रेम से फूल विखेरते हैं, एवं यमदूतों से रक्षा चाहते हैं, ऐसे द्रवित हृदय वाले पर प्रभु बहुत कृपा करते हैं। तिरूनीर्मलै आपका महान पर्वतीय आवास है। 1085</td>
</tr>
<tr>
<td>पेशुम् अळवन्ऱिदु वम्मिन्⋆ नमर्
पिऱर् केट्पदन् मुन् पणिवार् विनैगळ्⋆
नाशम् अदु शॅय्दिडुम् आदन्मैयाल्⋆
अदुवे नमदुय्विडम् नाळ् मलर्मेल्⋆
वाशम् अणि वण्डऱै पैम् पुऱविल्⋆
मनम् ऐन्दॉडु नैन्दुळल्वार्⋆ मदि इल्
नीशर् अवर् शॅन्ऱडैयादवनु–
क्किडम्⋆ मा मलै आवदु नीर् मलैये॥९॥</td>
<td>भक्तगणों ! यह शब्दों से परे हैं। इसके पहले कि दूसरे इस रहस्य को सुनलें, आओ।यह पूजा करने वालों की वेदना को दूर करता है।अतः यह एकमात्र हमारा उद्धार करने वाला है। यहां बुद्धिहीन, एवं पांचो इन्द्रियों के वशीभूत पूजा कभी नहीं अर्पित करेंगे। यह बागों के बीच में है जहां फूल पर मधुमक्खियां दिनरात गूंजती रहती हैं। तिरूनीर्मलै आपका महान पर्वतीय आवास है। 1086</td>
</tr>
<tr>
<td>नॅडु माल् अवन् मेविय नीर् मलैमेल्⋆
निल्वुम् पुगळ् मङ्गैयर् कोन्⋆ अमरिल्
कड मा कळि यानै वल्लान्⋆ कलियन्
ऑलि शॅय् तमिळ् मालै वल्लार्क्कु⋆ उडने
विडु माल् विनै⋆ वेण्डिडिल् मेल् उलगुम्
एळिदायिडुम् अन्ऱि इलङ्गॉलि शेर्⋆
कॉडु मा कडल् वैयगम् आण्डु⋆ मदि–
क्कुडै मन्नवराय् अडि कूडुवरे॥१०॥</td>
<td>संसार प्रसिद्ध मँगै क्षेत्र के राजा जो युद्ध में मदमत्त हाथी का संचालन करते हैं वे कलियन हैं और उन्होंने तिरूनीर्मलै में रहने वाले शाश्वत प्रभु की प्रशस्ति में इस तमिल गीतमाला का गायन किया। जो इसे कंठ कर लेंगे वे कर्मो से मुक्त हो सुविधा से स्वर्ग के अधिकारी होंगे। इतना ही नहीं, चंद्र सा श्वेत छत्र को धारण कर पृथ्वी पर शासन कर, प्रभु के चरणकमल को प्राप्त करेंगे। 1087
तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्।</td>
</tr>
</table>

श्रीमते रामानुजाय नमः

15 पारायदु (1088 - 1097)

तिरूक्कडल्मल्लै 1 (महाबलीपुरम 1 Ramesha vol 1 pp 155)

‡पारायदुण्डुमिऴन्द पवऴ त्तूणै⋆ पडु कडलिल् अमुदत्तै प्परि वाय्कीण्ड शीरानै⋆ एम्मानै त्तॊण्डर् तङ्गऴ् शिन्दैयुळ्ळे⋆ मुळैत्तॆऴुन्द तीङ्ग़रुम्बिनै⋆ पोर् आनै क्कॊम्बॊशित्त पोर् एऱ्ऱिनै⋆ पुणर् मरुदम् इऱ नडन्द पॊन् कुन्ऱिनै⋆ कार् आनै इडर् कडिन्द कर्पगत्तै⋆ कण्डदुनान् कडल् मल्लै त्तल शयनत्ते॥१॥	प्रभु ने पृथ्वी को निगल लिया और पुनः उसे बनाया। आप मूंगा की शाखा हैं, समुद्र के अमृत हैं, मंगलमय हैं, एवं घोड़े के जबड़े को तोड़ने वाले हैं। आप हमारे प्रभु हैं जो भक्तों के हृदय में गन्ने की तरह अंकुरित होते रहते हैं। आप युद्ध हस्ति के दांत तोड़ने वाले युद्ध केशरी हैं। आप दो मरूदु के वृक्षों के बीच घूमने वाले सुवर्ण पर्वत हैं। विपत्ति से काले हाथी की रक्षा करने वाले आप कलपक के प्रभु हैं। हमने आपको कडल्मल्लै में तलशयनम देखा है। **1088**
‡पूण्डवत्तम् पिऱर्क्कडैन्दु तॊण्डु पट्टु⋆ पॊय्न्नूलै मॆय्न्नूल् एन्ऱॆन्ऱुम् ओदि माण्डु⋆ अवत्तम् पोगादे वम्मिन्⋆ एन्दै एन् वणङ्ग़प्पडुवानै⋆ कणङ्गऴ् एत्तुम् नीण्ड वत्तै क्करु मुगिलै एम्मान् तन्नै⋆ निन्ऱ वूर् नित्तिलत्तै त्तॊत्तार् शोलै⋆ काण्डवत्तै क्कनल् एरिवाय् प्पॆय्वित्तानै⋆ कण्डदु नान् कडल् मल्लै त्तल शयनत्ते॥२॥	दूसरों के पास जाकर उनकी चाकरी में रहना, मिथ्या साहित्य को महान सच समझकर पढ़ना, और फिर अपना जीवन उनको दे देना, ऐसे कामों में अपना समय न खराब करो। आओ अपने प्रभु का समूह में प्रशस्ति गान करो, आप शाश्वत हैं, मेघवर्ण के हैं, तिरूनिन्रवूर में खड़े हैं, और खाण्डव वन को जलानेवाले आग को निगल जाने वाले हैं। हमने आपको कडल्मल्लै में तलशयनम देखा है। **1089** (Ramesh vol. 1 / 123 तिरूनिन्रवूर चेन्नै से 30 कि मी पर है एवं भक्तवत्सल पेरूमल के लिये जाना जाता है।)
उडम्बुरुविल् मून्ऱॊन्ऱाय् मूर्त्ति वेऱाय्⋆ उलगुय्य निन्ऱानै⋆ अन्ऱु पेय्च्चि विडम् परुगु वित्तगनै⋆ क्कन्ऱु मेय्त्तु विळैयाड वल्लानै वरैमी कानिल्⋆ तडम् परुगु करु मुगिलै त्तञ्जै क्कोयिल्⋆ तव नॆऱिक्कोर् पॆरु नॆऱियै वैयम् काक्कुम्⋆ कडुम् परिमेल् कर्कियै नान् कण्डु कॊण्डेन्⋆ कडि पॊऴिल् शूऴ् कडल् मल्लै त्तल शयनत्ते॥३॥	तीनो लोकों की रक्षा के लिये आप इन स्वरूपों में आते हैं और उनसे पृथक रहते हैं। पुराकाल में आपने पूतना के विषैले स्तन को चूसा। आप बछड़ों के साथ खेले एवं झील से पानी पीने के लिये सिखाते हुए उन्हें ऊंचे जंगलों में चराया। आप मेघ वर्ण के हैं एवं बागों से घिरे तंजै मामणि (Ramesh vol. 3 / 131 तंजोर में) कोईल में पूजे जाते हैं। आप संसार की रक्षा के लिये घोड़े पर सवार कल्कि बनकर आयेंगे। हमने आपको कडल्मल्लै में तलशयनम देखा है। **1090**

<table>
<tr><td>पेय् त्तायै मुलै उण्ड पिळ्ळै तन्नै⋆
पिणै मरुप्पिल् करुङ्गळिट्टै प्पिणै मान् नोक्किन्⋆
आय् त्तायर् तयिर् वॆण्णॆय् अमरन्द कोवै⋆
अन्दणर् तम् अमुदत्तै क्कुरवै मुन्नै
कोत्तानै⋆ कुडम् आडु कूत्तन् तन्नैक्⋆
गोकुलङ्गळ् तळरामल् कुन्रम् एन्दि
कात्तानै⋆ एम्मानै क्कण्डु कॊण्डेन्⋆
कडि पॊळिल् शूळ् कडल् मल्लै त्तल शयनत्ते॥ ४ ॥</td><td>आप वो शिशु हैं जिसने पूतना का स्तन पिया, वो हस्ति शिशु हैं जिसने मृगनयनी यशोदा के दही मक्खन की चोरी की। आप वैदिक ऋषियों से पूजे जाने वाले राजा हैं। आप गोपी के साथ रास रचाने वाले हैं। आप पात्रों के साथ नाचने वाले हैं। आप ने वर्षा रोकने के लिये पर्वत को धारण कर गऊओं की रक्षा की। शीतल सुगंधित बागों के मध्य हमने आपको कडल्मल्लै में तलशयनम देखा है। **1091**</td></tr>
<tr><td>पायन्दानै त्तिरि शगडम् पारि वीळ⋆
पालगनाय् आल् इलैयिल् पळ्ळि इन्बम्
एय्न्दानै⋆ इलङ्गॊळि शेर् मणि क्कुन्रन्न⋆
ईर् इरण्डु माल्वरै त्तोळ् एम्मान् तन्नै⋆
तोयन्दानै निलमगळ् तोळ् तूदिल् शॆन्रु⋆ अ–
प्पॊय् अरैवाय् प्पुग प्पॆय्द मल्लर् मङ्ग
कायन्दानै⋆ एम्मानै क्कण्डु कॊण्डेन्⋆
कडि पॊळिल् शूळ् कडल् मल्लै त्तल शयनत्ते॥ ५ ॥</td><td>आप ने गाड़ी को ठोकर मार कर तोड़ दिया। शिशु के रूप में बट पत्र पर योग निद्रा में सोये।कमल सी लक्ष्मी को आलिंगन करने के लिये तेजोमय पर्वतनुमा आपकी चार बाहें हैं।आप दुर्योधन के पास दूत बनकर गये और बहुत से बलशाली राजाओं का नाश किया। शीतल सुगंधित बागों के मध्य हमने आपको कडल्मल्लै में तलशयनम देखा है। **1092**</td></tr>
<tr><td>किडन्दानै त्तडङ्गडलुळ् पणङ्गळ् मेवि⋆
किळर् पॊरिय मरि तिरिय अदनिन् पिन्ने
पडर्न्दानै⋆ प्पडुमदत्त कळिट्रिन् कॊम्बु
परित्तानै⋆ प्पार् इडत्तै एयिरु कीर्
इडन्दानै⋆ वळै मरुप्पिन् एनम् आगि⋆
इरुनिलनुम् पॆरुविशुम्बुम् एय्दा वण्णम्
कडन्दानै⋆ एम्मानै क्कण्डु कॊण्डेन्⋆
कडि पॊळिल् शूळ् कडल् मल्लै त्तल शयनत्ते॥ ६ ॥</td><td>आप गहरे सागर में फनवाले नाग पर शयन करते हैं। आप अनजाने बछड़ो के पीछे गये एवं मदमत्त हाथी के दांत उखाड़ लिये। आप वराह के स्वरूप में आये और पृथ्वी को अपने टेंढ़े दांतो पर उठा लिये। आकाश से भी ऊंचा बढ़कर आपने पृथ्वी को माप दिया। शीतल सुगंधित बागों के मध्य हमने आपको कडल्मल्लै में तलशयनम देखा है। **1093**</td></tr>
<tr><td>पेणाद वलि अरक्कर् मॆलिय अन्रु⋆
पॆरुवरै त्तोळ् इर नॆरित्तन्रवुणर् कोनै⋆
पूण् आगम् पिळवॆडुत्त पोर् वल्लोनै⋆
पॊरु कडलुळ् तुयिल् अमरन्द पुळ् ऊर्दियै⋆
ऊण् आग प्पेय् मुलै नञ्जुण्डान् तन्नै⋆
उळ्ळुवार् उळ्ळत्ते उरैगिन्रानै⋆
काणादु तिरि तरुवेन् कण्डु कॊण्डेन्⋆
कडि पॊळिल् शूळ् कडल् मल्लै त्तल शयनत्ते॥ ७ ॥</td><td>आपने बलवान पहलवानों से मल्लयुद्ध करते समय उनको अपनी बाहों में लेकर दबा डाला। हिरण्य राक्षस के आभूषित छाती को आपने चीर कर अलग कर दिया। आप गरूड़ की सवारी करते हैं एवं सागर में सोते हैं। आपने पूतना के स्तन से जहर पिया। आपको जो चाहता है आप उसके हृदय में रहते हैं।शीतल सुगंधित बागों में खोजते हुए हमने आपको कडल्मल्लै में तलशयनम देखा है। **1094**</td></tr>
</table>

पॆण् आगि इन् अमुदम् वञ्जित्तानै⋆ पिऱै एयिट्रन्ऱडल् अरियाय् प्पॆरुगिनानै⋆ तण् आर्न्द वार् पुनल् शूऴ् मॆय्यम् एन्नुम्⋆ तड वरैमेल् किडन्दानै प्पणङ्गळ् मेवि⋆ एण्णानै एण् इऱन्द पुगऴिनानै⋆ इलङ्गॊऴि शेर् अरविन्दम् पोन्ऱ नीण्ड कण्णानै⋆ क्कण् आर क्कण्डु कॊण्डेन्⋆ कडि पॊऴिल् शूऴ् कडल् मल्लै त्तल शयनत्ते॥ ८॥	आपने नारी का रूप धारण कर असुरों को अमृत से वंचित कर दिया। आप अर्द्धचंद्राकार दांत वाले सिंह बनकर आये। आप फनधारी नाग पर मय्यम के शीतल जल में सोते हैं। आप ज्योर्ति मय राजीव नयन हैं और अनंत गुणवाले हैं। शीतल सुगंधित बागों के बीच हमने जी भर के आपको कडल्मल्लै में तलशयनम देखा है। **1095**
तॊण्डायर् ताम् परवुम् अडियिनानै⋆ पडि कडन्द ताळाळर्काळाय् उय्दल् विण्डानै⋆ तॆन् इलङ्ङै अरक्कर् वेन्दै⋆ विलङ्ङ्गुण्ण वलङ्ङैवाय् च्चरङ्गळ् आण्डु⋆ पण्डाय वेदङ्गळ् नान्गुम्⋆ ऐन्दु वेळ्वगळुम् केळ्वियोडङ्गम् आऱुम् कण्डानै⋆ तॊण्डनेन् कण्डु कॊण्डेन्⋆ कडि पॊऴिल् शूऴ् कडल् मल्लै त्तल शयनत्ते॥ ९॥	भक्तलोग पृथ्वी को मापने वाले चरण की पूजा करते हैं। लंका के राजा रावण ने कभी आपकी पूजा अर्चना नहीं की। प्रभु ने तप्त बाणों से उसका बध कर दिया। आप चारों वेद, पांचो अग्नि, एवं छ आगमों के सार हैं, तथा इस भक्त के अपने हैं। शीतल सुगंधित बागों के बीच हमने आपको कडल्मल्लै में तलशयनम देखा है। **1096**
‡पड नागत्तणै क्किडन्दन्ऱवुणर् कोनै⋆ पड वॆगुण्डु मरुदिडै प्पोय् प्पळन वेल्लि⋆ तडम् आर्न्द कडल् मल्लै त्तल शयनत्तु⋆ तामरैक्कण् तुयिल् अमर्न्द तलैवन् तन्नै⋆ कडम् आरुम् करुङ्गळिऱु वल्लान्⋆ वॆल् पोर् कलिगन्ऱि ऑलिशॆय्द इन्ब प्पाडल्⋆ तिडम् आग इवै ऐन्दुम् ऐन्दुम् वल्लार्⋆ तीविनैयै मुदल् अरिय वल्लार् तामे॥ १०॥	प्रभु फनधारी नाग पर सोते हैं। आपने असुर नेरश हिरण्य पर अपना गुस्सा दिखाया। आप दो मरूदु वृक्षों के बीच गये। आप कडल्मल्लै में शयन करते हैं। हाथी चढ़कर रण जीतने वाले कलिकन्रि ने तमिल के इन दस प्रशस्ति पदों को गाया है। जो इसको कंठ कर लेगा वह स्वयं अपने कर्मों से मुक्त हो जायेगा। **1097** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

16 नण्णाद (1098 - 1107)

तिरूक्कडल्मल्लै 2 (महाबलीपुरम 2)

नण्णाद वाळ् अवुणर्⋆ इडै प्पुक्कु⋆ वानवरै प्पॅण्णागि⋆ अमुदूट्टुम् पॅरुमानार्⋆ मरुविनिय तण्णार्न्द कडल् मल्लै⋆ त्तल शयनत्तुरैवारै⋆ एण्णादे इरुप्पारै⋆ इरै प्पॉळुदुम् एण्णोमे ॥१॥	कोई भी समझौता नहीं मानने वाले असुरों के बीच नारी वेश में जाकर प्रभु ने अमृत देवों को दे दिया। आप शीतल सुगंधित बागों के बीच कडल्मल्लै में भूमि पर शयन करने वाले 'तलशयनम' रूप में रहते हैं। **1098**
पार् वण्ण मड मङ्गै⋆ पनि नल् मा मलर् क्किळत्ति⋆ नीर् वण्णन् मार्वत्तिल्⋆ इरुक्कैयै मुन् निनैन्दवन् ऊर्⋆ कार्वण्ण मुदु मुन्नीर्⋆ क्कडल् मल्लै त्तल शयनम्⋆ आर् एण्णुम् नॅञ्जुडैयार्⋆ अवर् एम्मै आळ्वारे ॥२॥	जो सागर सा सलोने वर्ण वाले प्रभु के पार्श्व में भूमि देवी का, एवं मेघ सा श्यामल प्रभु के वक्षस्थल पर ओस से ताजे कमल सी लक्ष्मी का ध्यान करते हुए इनकी उपस्थिति तलशयनम कडल्मल्लै में देखते हैं, वे हमारे स्वामी हैं। **1099**
एनत्तिन् उरुवागि⋆ निल मङ्गै एळिल् कॉण्डान्⋆ वानत्तिल् अवर् मुरैयाल्⋆ मगिळ्न्देत्ति वलम् कॉळ्ळ⋆ कानत्तिन् कडल् मल्लै⋆ त्तल शयनत्तुरैगिन्र⋆ ञानत्तिन् ऑळि उरुवै⋆ निनैवार् एन् नायगरे ॥३॥	आप वराह रूप में आकर सुन्दरी भू देवी को ले गये। देवगन आपकी पूजा एवं परिक्रमा करके आनन्द उठाते हैं। आप ज्ञानज्योति के पुंज होकर जंगलों वाले तलशयनम कडल्मल्लै में रहते हैं, आपका ध्यान करने वाले हमारे स्वामी हैं। **1100**
विण्डारै वॅन्राวि⋆ विलङ्गुण्ण मॅल् इयलार्⋆ कॉण्डाडुम् मल् अगलम्⋆ अळल् एर वॅम् शमत्तु⋆ कण्डारै कडल् मल्लै⋆ त्तल शयनत्तुरैवारै कॉण्डाडुम् नॅञ्जुडैयार्⋆ अवर् एङ्गळ् कुल दॅय्वमे ॥४॥	प्रभु ने शत्रुओं को युद्ध में पराजित किया।सौम्य स्वभाव वाले या तो अपने छाती का ख्याल रखते हुए श्रृगाल के भोजन हो गये या अग्नि को समर्पित हो गये। प्रभु तलशयनम कडल्मल्लै में रहते हैं, यहां आपसे जो आनंद मनाते हैं वे हमारे मान्य देव हैं। **1101**
पिच्च च्चिरु पीलि⋆ च्चमण् कुण्डर् मुदलायोर्⋆ विच्चैक्किरै एन्नुम्⋆ अव्विरैयै प्पणियादे⋆ कच्चि क्किडन्दवन् ऊर्⋆ कडल् मल्लै त्तल शयनम्⋆ नच्चि त्तॉळुवारै⋆ नच्चॅन्रन् नल् नॅञ्जे ! ॥५॥	मोरपंख से हवा करने वाले श्रमन ईश्वर को ज्ञानरूप में देखते हैं। उनलोगों के यहां आपकी पूजा करने से अच्छा है वेक्का यानी यथोक्तकारी भगवान कांचीपुरम या प्रभु तलशयनम कडल्मल्लै की पूजा करो। जो ऐसा करते हैं वे हमारे स्वामी हैं। **1102**

पुल्लन् कॉळ् निदि क्कुवैयोडु* पुळै क्कै मा कळिट्रिनमुम्* नल्लम् कॉळ् नवमणि क्कुवैयुम्* शुमन्दॆङ्गुम् नान्ऱॊशिन्दु* कल्लङ्गळ् इयङ्गुम् मल्लै* क्कडल् मल्लै त्तल शयनम्* वल्लॊङ्गळ् मनत्तार् अवरै* वल्लॊङ्गळ् एन् मड नॆञ्जे ! ॥६॥	आंख को गड़ने वाला सोने का ढ़ेर और हाथी के ढ़ोने भर रत्न लादे भारी नाव कडल्मल्लै के समुद्री किनारे पर लगती है जहां हमारे तलशयनम प्रभु निवास करते हैं। हे मन ! उनकी पूजा करो जो यहां प्रभु की पूजा करते हैं। **1103**
पञ्जि च्चिऱु कूळै* उरुवागि मरुवाद* वञ्ज प्पॆण् नञ्जुण्ड* अण्णल् मुन् नण्णाद* कञ्जै क्कडन्दवन् ऊर्* कडल् मल्लै त्तल शयनम्* नॆञ्जिल् तॊळुवारै* त्तॊळुवाय् एन् तूय् नॆञ्जे ! ॥७॥	छोटे शिशु के रूप में आकर प्रभु ने पूतना राक्षसी के विषैले स्तन का पान किया। आपने कंस का भी बध कर दिया। आप कडल्मल्लै तलशयनम में रहते हैं। हे मन ! अपने हृदय में आपका ध्यान करने वाले हमारे स्वामी हैं। **1104**
शॆळु नीर् मलर् क्कमलम्* तिरै उन्द वन् पगट्टाल्* उळु नीर् वयल् उळवर् उळ* पिन् मुन् पिळैत्तॆळुन्द* कळु नीर् कडि कमळुम्* कडल् मल्लै त्तल शयनम्* तॊळु नीर् मनत्तवरै* त्तॊळुवाय् एन् तूय् नॆञ्जे॥८॥	किसान बैलों से आगे पीछे कर खेत जोतते हैं एवं उसे कमल के तड़ाग के जल से सींचते हैं। कमल का सुगंध कडल्मल्लै तलशयनम में व्याप्त रहता है। हे मन ! उनकी पूजा करो जो यहां प्रभु का ध्यान करने का सोचते हैं। **1105**
पिणङ्गळ् इडु काडदनुळ्* नडमाडु पिञ्ञगनोडु* इणङ्गु तिरु च्चक्करत्तु* एम् पॆरुमानार्क्किडम्* विशुम्बिल् कणङ्गळ् इयङ्गुम् मल्लै* क्कडल् मल्लै त्तल शयनम्* वणङ्गुम् मनत्तार् अवरै* वणङ्गॆन्ऱन् मड नॆञ्जे॥९॥	चक्र वाले हमारे प्रभु पिंगल वर्ण श्मशान में रहने वाले शिव के साथ कडल्मल्लै तलशयनम में रहते हैं जहां देवगन समूह में पूजा करते हैं। हे मन ! उनकी पूजा करो जो यहां प्रभु की पूजा करते हैं। **1106**
कडि कमळु नॆडु मऱुगिल्* कडल् मल्लै त्तल शयनत्तु* अडिगळ् अडिये निनैयुम्* अडियवर्गळ् तम् अडियान्* वडि कॊळ् नॆडु वेल् वलवन्* कलिगन्ऱि ऒलि वल्लार्* मुडि कॊळ् नॆडु मन्नवर् तम्* मुदल्वर् मुदल् आवारे॥१०॥	सुगंधित वीथियों वाले कडल्मल्लै तलशयनम में हमारे प्रभु का निवास है। आपके भक्तों के भक्त एवं सुन्दर भालों से सुसज्जित कलिकन्रि ने तमिल का यह दसक गीतमालिका गाया हैं। जो इन पदों को याद कर लेंगे वे मुकुट धारी राजाओं के राजा बन के राज करेंगे। **1107** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

17 तिवळुम् (1108 - 1117)

तिरूविडवन्दै

खड़े मुद्रा में आदि वराह भगवान की बायीं जंघा पर भूदेवी । Ramesha vol 1 pp 147 । इडवन्दै, महाबलीपुरम रोड पर चेन्नै से **41** कि मी पर है। यहां वराह भगवान खड़े हैं एवं अपनी बाई जांघ पर भूदेवी को रखकर बायें पैर को घुटने की ऊंचाई तक उठाकर शेषनाग के सिरपर टिकाये हुये हैं।आपका दांया पैर सीधा है एवं जमीन पर टिका हुआ है। तमिल में 'इड' का अर्थ बायां होता है यानी बाई तरफ। अपभ्रंश होकर यह नाम 'तिरूविडवेन्दै' या 'तिरूवेडन्दै' हो गया है। उत्सव मूर्त्ति को श्री नित्यकल्याण पेरूमल कहते हैं। महाबलीपुरम में एक दूसरी जगह के मंदिर में वराह भगवान की दाई जांघ पर भूदेवी हैं इसलिये यहां मन्दिर को 'तिरूवलवेन्दै' कहते हैं।

तिवळुम् वॅण् मदिपोल् तिरु मुगत्तरिवै॰ शॅळुङ्कडल् अमुदिनिल् पिरन्द अवळुम्॰ निन् आगत्तिरुप्पदुम् अरिन्दुम्॰ आगिलुम् आशै विडाळाल्॰ कुवळैयङ्गण्णि कॉल्लियम् पावै शॉल्लु॰ निन् ताळ् नयन्दिरुन्द इवळै॰ उन् मनत्ताल् एन् निनैन्दिरुन्दाय्॰ इडवॅन्दै एन्दै पिराने॥१॥	समुद्र मंथन से उत्पन्न चंद्रमा के समान प्रकाशित मुख वाली लक्ष्मी आपके वक्षस्थल पर रहती है। यह सब जानते हुए भी हमारी शीतल कमल की आंख एवं तराशे हुए मुखमंडल वाली बेटी आपकी चाह नहीं छोड़ेगी।उसने आपके चरण को अपना आश्रय बना लिया है। इडवेन्दै इन्दै के मेरे प्रभु ! बताइये आप उसका क्या करेंगे ? **1108**
तुळम् पडु मुरुवल् तोळियरक्करुळाळ्॰ तुणै मुलै शान्दु कॉण्डणियाळ्॰ कुळम् पडु कुवळै क्कण् इणै एळुदाळ्॰ कोल नल् मलर् कुळर्कणियाळ्॰ वळम् पडु मुन्नीर् वैयम् मुन् अळन्द॰ माल् एन्नुम् माल् इन मॉळियाळ्॰ इळम पडि इवळक्कॅन निनैन्दिरुन्दाय॰ इडवॅन्दै एन्दै पिराने॥२॥	उसका अनार जैसा मुखमंडल अब अन्य मित्रों के लिये नहीं चमकता है, और न तो वह अपने उरोजों पर चंदन ही लगाती है। तड़ाग के नूतन कमल सी आंखों में काजल नहीं है, और न तो काली लटों की जूड़ा बांधती है। अपने सदा उन्मत्त अवस्था में "आपने पुरा काल में पृथ्वी एवं संपन्न समुद्र को ले लिया" गुनगुनाते रहती है। इडवेन्दै इन्दै के मेरे प्रभु ! बताइये आप उसका क्या करेंगे ? **1109**
शान्दमुम् पूणुम् शन्दन क्कुळम्बुम्॰ तड मुलैक्कणियिलुम् तळलाम्॰ पोन्दवॅण् तिङ्गळ् कदिर् शुडर् मॅल्लियुम्॰ पॉरु कडल् पुलम्बिलुम् पुलम्बुम्॰ मान्दळिर् मेनि वण्णमुम् पॉन्नाम्॰ वळैगळुम् इरै निल्ला॰ एन्रन् एन्दिळै इवळुक्कॅन् निनैन्दिरुन्दाय्॰ इडवॅन्दै एन्दै पिराने॥३॥	चंदन का लेप, ठंढा मोती, एवं सुगन्धी भी उसके उरोजों पर तप्त सूर्य की तरह काम करते हैं।उदयकालीन चंद्रमा की किरणों की आतप से अभिसप्त हो वह पतली हो गयी है।समुद्र का गर्जन उसे रूलाता है।आम के अरूणाभ नव पल्लव उसके वदन को पीला बना रहे हैं। उसके सुन्दर हाथों के कंगन टिक नहीं रहे हैं। इडवेन्दै इन्दै के मेरे प्रभु ! बताइये आप उसका क्या करेंगे ? **1110**

ऊळियिल् पॆरिदाल् नाळिगै ! एन्नुम्⋆ ऑण् शुडर् तुयिन्ऱदाल् ! एन्नुम्⋆ आळियुम् पुलम्बुम् ! अन्ऱिलुम् उऱङ्गा⋆ तॆन्ऱलुम् तीयिनिल् कॊडिदाम्⋆ तोळियो ! एन्नुम् तुणै मुलै अरक्कुम्⋆ शॊल्लुमिन् एन्शॆय्गेन् एन्नुम्⋆ एळै एन् पॊन्नुक्कॆन् निनैन्दिरुन्दाय्⋆ इडवॆन्दै एन्दै पिराने॥४॥	हर घंटा युग की तरह बड़ा हो रहा है,जैसे कि दिव्य सूर्य भी लंबी निद्रा में चले गये हैं।समुद्र का गर्जन अब हृदय को विदीर्ण नहीं करता है। अनरिल यानी कोयल चिड़िया की आवाज से वेदना होती है।ठंढ़ी हवा अग्नि से भी गर्म है। वह कहती है "सखी ! हमारे उरोज अनियंत्रित हैं।बताओ हमें अब क्या करना है ?" इडवेन्दै इन्दै के मेरे प्रभु ! बताइये आप उसका क्या करेंगे ? **1111**
ओदिलुम् उन् पेर् अन्ऱि मऱ्ोदाळ्⋆ उरुगुम् निन् तिरुवुरु निनैन्दु⋆ कादन्मै पॆरिदु कैयरु उडैयळ्⋆ कयल् नॆडुङ्गण् तुयिल् मरन्दाळ्⋆ पेदैयेन् पेदै पिळ्ळैमै पॆरिदु⋆ तॆळ्ळियळ् वळ्ळि नुण् मरुङ्गुल्⋆ एदलर् मुन्ना एन् निनैन्दिरुन्दाय्⋆ इडवॆन्दै एन्दै पिराने॥५॥	अगर कभी वह कुछ बोलती भी है तो आपका नाम लेती है। द्रवित होती है तो आपके वदन के लिये। उसका प्रेम इतना बढ़ गया है कि वह सबकुछ खोकर पूर्णतया शिथिल हो गयी है।उसकी बड़ी सी मछली जैसी आंखों में नींद नहीं है। दुवली पतली लता की तरह विखरी हुई है और बहुत ही चंचल मना होकर मनमौजी हो गयी है। इडवेन्दै इन्दै के मेरे प्रभु ! बताइये आप उसका क्या करेंगे ? **1112**
तन् कुडिक्केदुम् तक्कवा निनैयाळ्⋆ तडङ्गडल् नुडॆङ्गयिल् इलङ्गै⋆ वन् कुडि मडङ्ग वाळ् अमर् तॊलैत्त⋆ वार्त्तै केट्टिन्बुरुम् मयङ्गुम्⋆ मिन् कॊडि मरुङ्गुल् शुरुङ्ग मेल् नॆरुङ्गि⋆ मॆन् मुलै पॊन् पयन्दिरुन्द⋆ एन् कॊडि इवळुक्कॆन् निनैन्दिरुन्दाय्⋆ इडवॆन्दै एन्दै पिराने॥६॥	अपने परिवारजनों के लिये कभी सोचती भी नहीं। वह केवल ऊंची दीवार वाले लंका के राक्षस कुलों के विनाश की कथा सुनकर उसमें खो जाना चाहती है।तड़ित सी पतली कमर वाली और भी दुवली हो गयी है एवं उसके उरोज पीले पड़ गये हैं। इडवेन्दै इन्दै के मेरे प्रभु ! बताइये आप उसका क्या करेंगे ? **1113**
उळम् कनिन्दिरुक्कुम् उन्नैये पिदट्टुम्⋆ उनक्कन्ऱि एनक्कन्बॊन्ऱिलळाल्⋆ वळङ्गनि प्पॊळिल् शूळ् मालिरुञ्जोलै⋆ मायने ! एन्ऱु वाय्वॆरुवुम्⋆ कळङ्गनि मुरुवल् कारिगै पॆरिदु⋆ कवलैयोडवलम् शेर्न्दिरुन्द⋆ इळङ्गनि इवळुक्कॆन् निनैन्दिरुन्दाय्⋆ इडवॆन्दै एन्दै पिराने॥७॥	इसका मन बड़ा चंचल है और सब जगह आपके बारे में बोलते रहती है। हमें कुछ भी नहीं दी और अपना सबकुछ आप को न्याछावर कर दी है।सदा बड़बड़ाते रहती है "पके बाग के प्रभु, सोलै पर्वत (338 – 348 पाशुर देखिये।यह मदुरै के पास है एवं "अळगर कोईल" तथा तिरूमल ईरूम सोलै नामों से जाना जाता है।) के चमत्कारिक प्रभु!"। फल की तरह कोमल मेरी लाड़ली के होंठ लाल तरबूज की तरह हैं। उन्मत्त होकर सोचते सोचते यह प्रेम दीवानी हो गयी है। इडवेन्दै इन्दै के मेरे प्रभु ! बताइये आप उसका क्या करेंगे ? **1114**
अलम् कॊळु तडक्कै आयन् वाय् आम्बर्कु⋆ अळियुमाल् एन् उळ्ळम् ! एन्नुम्⋆ पुलम् कॊळु पॊरु नीर् प्पुट्कुळि पाडुम्⋆ पोदुमो नीर् मलैक्कॆन्नुम्⋆ कुलम् कॊळु कॊल्लि कोमळ वल्लि⋆ क्कॊडि इडै नॆडु मळै क्कण्णि⋆ इलङ्गॊळिल् तोळिक्कॆन् निनैन्दिरुन्दाय्⋆ इडवॆन्दै एन्दै पिराने॥८॥	शीतल एवं सुगंधित जल से सिंचित पुतकुली (Ramesh vol. 1 / 109 यह कांचीपुरम से 7 कि मी पर विजय राघव पेरूमल के नाम से जाना जाता है जहां भगवान राम ने जटायु का उद्धार किया था।) के निवासियों के लिये गाती है ः "कमल समान होंठ वाले प्रभु से बांसुरी की तान सुनने के लिये हृदय तड़पते रहता है। आपके हल में चलने वाले सांढ़ की तरह चार वलशाली

	भुजायें हैं।" लता सी चित्रलिखित मेरी बेटी कहती है "हमलोग नीरमलै चलें"। (Ramesh vol. 1 / 139 यह चेन्नै के पास पल्लावरम स्टेशन से **5** कि मी पर है और श्री रंगनाथस्वामी पेरूमल कोइल से जाना जाता है।) इडवेन्दै इन्दै के मेरे प्रभु ! बताइये आप उसका क्या करेंगे ? **1115**
पॉन् कुलाम् पयलै पूत्तन मॅन् तोळ्॰ पॉरु कयल् कण् तुयिल् मरन्दाळ्॰ अन्बिनाल् उन्मेल् आदरम् पॅरिदु॰ एन् अणङ्गिनुक्कुट् नोय् अरियेन्॰ मिन् कुला मरुङ्गुल् शुरुङ्ग मेल् नॅरुङ्गि॰ वीङ्गिय वन मुलैयाळुक्कु॰ एन्नॉलाम् कुरिप्पिल् एन् निनैन्दिरुन्दाय्॰ इडवॅन्दै एन्दै पिराने॥१॥	इसने अपने दोनों कंगन खो दिये हैं। पीली हो गयी है एवं अचेत रहती है।इसकी चंचल मछली सी आंखें कभी बन्द नहीं होतीं। आपके प्रति इसका प्रेम बढ़ता जा रहा है और हमारी रत्नाबेटी को क्या हो गया है मेरे शब्द इसका वर्णन नहीं कर सकते। इसके उरोज सूज गये हैं एवं तड़ित कटि वाली और पतली हो गयी है। क्या होने जा रहा है और कैसे इसका अंत होगा? इडवेन्दै इन्दै के मेरे प्रभु ! बताइये आप उसका क्या करेंगे ? **1116**
‡अन्नमुम् मीनुम् आमैयुम् अरियुम् आय॰ एम् मायने ! अरुळाय्॰ एन्नुम् इन् तॉण्डरक्किन् अरुळ् पुरियुम्॰ इडवॅन्दै एन्दै पिरानै॰ मन्नु मा माड मङ्गैयर् तलैवन्॰ मानवेल् कलियन् वाय् ऑलिगळ्॰ पन्निय पनुवल् पाडुवार्॰ नाळुम् पळविनै पट्रुप्पारे॥१०॥	इडवेन्दै प्रभु की प्रशस्ति ऊंची दीवारों वाले मंगै क्षेत्र के भाला धारी राजा कलियन के तमिल दसक पदों से की गयी है जो अपने भक्तों को श्वेत हंस, मत्स्य, कच्छप, एवं भयानक नरसिंह आदि विभिन्न अवतारों से अनुगृहित करते रहे हैं। जो इसे कंठ कर लेगा वह हर दिन के कार्यो के कर्मो के बंधन को तोड़ देगा। **1117** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

18 तिरिपुरम् (1118 - 1127)

तिरूवट्टबुयगरम् (अष्टभुज पेरूमाल कांची। पूर्व के दसक गीत में 1108 से 1117 मां के रूप में तिरूमंगै आळवार अपनी बेटी का पेरूमाल से प्रेम के लिये चिन्तित हैं। इस दसक में पेरूमाल प्रकट होकर अपनी पहचान का संकेत बताते हैं।)

तिरिपुरम् मून्ऱॆरित्तानुम्⋆ मट्रै मलर्मिशै मेल् अयनुम् वियप्प⋆ मुरिदिरै मा कडल् पोल् मुळङ्गि⋆ मूवुलगुम् मुरैयाल् वणङ्ग⋆ एरियन केशर वाळ एयिट्रोडु⋆ इरणियन् आगम् इरण्डु कूरा⋆ अरियुरुवाम् इवर् आर्कॊल् एन्न⋆ अट्टबुयगरत्तेन् एन्रारे॥१॥	तीन नगरों को जलाने वाले शिव एवं कमल पर बैठे ब्रह्मा आश्चर्य से स्तंभित रह गये ః "समुद्र की लहरों की तरह गर्जन करने वाले की तीनो लोक अर्चना कर रहे हैं, सिंह सा स्वरूप है, गर्दन के बाल आग की लपटों की भांति हैं, चमकती तीक्ष्ण दांते हैं।" पता नहीं यह कौन हो सकता है आपने कहा "मैं अट्टाबुयगारम का स्वामी हूं।" **1118**
वॆम् तिरल् वीररिल् वीरर् ऑप्पार्⋆ वेदम् उरैत्तिमैयोर् वणङ्गुम्⋆ शॆन् तमिळ् पाडुवार् ताम् वणङ्गुम्⋆ देवर् इवर्कॊल् तॆरिक्क माट्टेन्⋆ वन्दु कुरळ् उरुवाय् निमिरन्दु⋆ मावलि वेळ्वियिल् मण् अळन्द⋆ अन्दणर् पोन्रिवर् आर्कॊल् एन्न⋆ अट्टबुयगरत्तेन् एन्रारे॥२॥	"वीर योद्धाओं में भी वीर, वैदिक ऋषियों से पूजे जाने वाले, तमिल के पदों के गायकों से पूजे जानेवाले" मैं समझ नहीं सका कि यह कौन हो सकता है ? आप मनिकन के रूप में माबली के यज्ञ में पधारकर शरीर को बढ़ाते हुए पृथ्वी को माप लेने वाले वैदिक वटुक हैं। पता नहीं यह कौन हो सकता है ! आपने कहा "मैं अट्टाबुयगारम का स्वामी हूं।" **1119**
शॆम् पॊन् इलङ्गु वलङ्गै वाळि⋆ तिण् शिलै तण्डॊडु शङ्गम् ऑळ् वाळ्⋆ उम्बर् इरु शुडर् आळियोडु⋆ केडगम् ऑण् मलर् पट्रि एट्रे⋆ वॆम्बु शिनत्तडल् वेळम् वीळ⋆ वॆण् मरुप्पॊन्रु परित्तु⋆ इरुण्ड अम्बुदम् पोन्रिवर् आर्कॊल् एन्न⋆ अट्टबुयगरत्तेन् एन्रारे॥३॥	अहा! आप किस रूप में प्रकट हुए ః दिव्य धनुष, मजबूत बाण, गदा, शंख, खड्ग, तेजोमय चक्र तथा फूल पकड़े हुए। मदमत्त हाथी का सूढ़ उखाड़ने वाले मेघ के वर्णवाले आप प्रभु जैसे दिखते हैं। पता नहीं यह कौन हो सकता है ! आपने कहा "मैं अट्टाबुयगारम का स्वामी हूं।" **1120**
मञ्जुयर् मा मणि क्कुन्रम् एन्दि⋆ मा मळै कात्तॊरु माय आनै अञ्ज⋆ अदन् मरुप्पॊन्रु वाङ्गुम्⋆ आयर्कॊल् मायम् अरिय माट्टेन्⋆ वॆञ्जुडर् आळियुम् शङ्गुम् एन्दि⋆ वेदम् मुन् ओदुवर् नीदि वानत्तु⋆ अञ्जुडर् पोन्रिवर् आर्कॊल् एन्न⋆ अट्टबुयगरत्तेन् एन्रारे॥४॥	बादलों को छूने वाले पर्वत को उठाकर आपने वर्षा बन्द कर दी। मदमत्त हाथी को डराकर आपने उसके दांत निकाल लिये। क्या आप वही गोप किशोर हैं ? आपको अज्ञात समझ हमने ऐसा सोचा। चक्र, शंख, एवं वैदिक उच्चारण के आवाज से आप प्रभु प्रतीत होते हैं। पता नहीं यह कौन हो सकता है ! आपने कहा

	“मैं अट्टाबुयगारम का स्वामी हूं।” **1121**
कलैगळुम् वेदमुम् नीदि नूलुम्⋆ कर्पमुम् शॉल् पॉरुळ् तानुम्⋆ मट्रै निलैगळुम् वानवर्क्कुम् पिर्रक्कुम्⋆ नीर्मैयिनाल् अरुळ् शॅय्दु⋆ नीण्ड मलैगळुम् मा मणियुम्⋆ मलर्मेल् मङ्गैयुम् शङ्गमुम् तङ्गुगिन्र⋆ अलै कडल् पोन्रिवर् आर्कॉल् एन्न⋆ अट्टबुयगरत्तेन् एन्रारे॥५॥	प्रभु ने उदारता पूर्वक वेद, वेदांत, इतिहास, कल्पसूत्र, व्याकरण, मीमांसा तथा अन्य पवित्र साहित्य देवों तथा मनुष्यों को दिया। प्रभु गहरे सागर से सलोने वदन वाले हैं एवं आपके पर्वत सी भुजायों पर शंख एवं चक्र शोभायमान है तथा वक्षस्थल दिव्य मणि एवं लक्ष्मी से सुशोभित है। यह सब देखकर सोचा, पता नहीं यह कौन हो सकता है ! आपने कहा “मैं अट्टाबुयगारम का स्वामी हूं।” **1122**
एङ्गनुम् नाम् इवर् वण्णम् एण्णिल्⋆ एदुम् अरिगिल्म् एन्दिळैयार्⋆ शङ्गुम् मनमुम् निरैवुम् एल्लाम्⋆ तम्मन आग प्पुगुन्दु⋆ तामुम् पॉङ्गु करुङ्गडल् पूवै काया⋆ प्पोदविळ् नीलम् पुनैन्द मेगम्⋆ अङ्गनम् पोन्रिवर् आर्कॉल् एन्न⋆ अट्टबुयगरत्तेन् एन्रारे॥६॥	कितना भी आपको देखा हूं पहचानने में भूल कर ही जाता हूं। आप आये और किशोरियों के आभूषण के अलावे उनका हृदय शांति एवं अन्य बहुत सारे चीज चुरा ले गये। तत्पश्चात् आपने अपना सलोने सागर, पूवै एवं कया फूल, नीला कमल, तथा वर्षा का मेघ जैसे रंग का वदन दिखाया। यह सब देखकर सोचा, पता नहीं यह कौन हो सकता है ! आपने कहा “मैं अट्टाबुयगारम का स्वामी हूं।” **1123**
मुळुशि वण्डाडिय तण् तुळायिन्⋆ मॉय्म् मलर् क्कण्णियुम् मेनियम्⋆ शा- न्दिळिशिय कोलम् इरुन्दवारुम्⋆ एङ्गनञ्जॉल्लुगेन्! ओवि नल्लार्⋆ एळुदिय तामरै अन्न कण्णुम्⋆ एन्दॅळिल् आगमुम् तोळुम् वायुम्⋆ अळगियदाम् इवर् आर्कॉल् एन्न⋆ अट्टबुयगरत्तेन् एन्रारे॥७॥	आपके शीतल तुलसी माला पर गुंजती मधुमक्खियां एवं आपके मुखमंडल पर चन्दन का लेप ...कैसे मैं यह सब वर्णन करूं ! कमल के फूल पर लगता है जैसे आपकी दो आंखें, वक्षस्थल, बाहें एवं मुखमंडल सुंदरता पूर्वक चित्रित किये हुए हैं। सोचा, पता नहीं यह कौन हो सकता है ! आपने कहा “मैं अट्टाबुयगारम का स्वामी हूं।” **1124**

मेवि एप्पालुम् विण्णोर् वणङ्ग* वेदम् उरैप्पर् मुन्नीर् मडन्दै देवि* अप्पाल् अदिर् शङ्गम् इप्पाल् शक्करम्* मट्रिवर् वण्णम् एण्णिल्* कावि ऑप्पार् कडलेयुम् ऑप्पार्* कण्णुम् वडिवुम् नॆडियराय्* एन् आवि ऑप्पार् इवर् आर्कॊल् एन्न* अट्टबुयगरत्तेन् एन्रारे॥८॥	पार्श्व में खड़े होकर देवों ने वैदिक मंत्रों से आपकी पूजा की। समुद्र रत्ना लक्ष्मी आपकी सहभागिनी हैं। आपके उस तरफ शंख है तथा इस तरफ चक्र है। आपके वदन के रंग को देखें ः अरूणाभ कमल जैसा या नीला समुद्र जैसा ? आपकी आंखें एवं स्वरूप मेरे मन में गहरे गड़ गये हैं। सोचा, पता नहीं यह कौन हो सकता है ! आपने कहा "मैं अट्टाबुयगारम का स्वामी हूं।" **1125**
तञ्जम् इवर्क्कॆन् वळैयुम् निल्ला* नॆञ्जमुम् तम्मदे शिन्दित्तेर्कु* वञ्जि मरुङ्गुल् नॆरुङ्ग नोक्कि* वाय् तिरन्दॊन्रु पणित्तदुण्डु* नञ्जम् उडैत्तिवर् नोक्कुम् नोक्कम्* नान् इवर् तम्मै अरियमाट्टेन्* अञ्जुवन् मट्रिवर् आर्कॊल् एन्न* अट्टबुयगरत्तेन् एन्रारे॥९॥	हमारे हाथ से कंगन निकल कर आपके आश्रय में चले गये हैं। मेरा हृदय भी आप ही का हो गया है। हमारी वंजी की तरह कृश कटि पर आपने नजर गड़ा कर देखा और कुछ कहने के लिये मुंह खोला। आपकी कटाक्ष दृष्टि मधुर विष है। मैं नहीं जान सकी आप कौन थे ? सोचा, पता नहीं यह कौन हो सकता है ! आपने कहा "मैं अट्टाबुयगारम का स्वामी हूं।" **1126**
मन्नवन् तॊण्डैयर् कोन् वणङ्गुम्* नीळ् मुडि माल्लै वयिरमेगन्* तन् वलि तन् पुगळ् शूळ्न्द कच्चि* अट्टबुयगरत्तादि तन्नै* कन्नि नल् मा मदिळ् मङ्गै वेन्दन्* कामरु शीर् क्कलिगन्रि* कुन्रा इन् इशैयाल् शॊन्न शॆञ्जॊल् माल्लै* एत्त वल्लार्क्किडम् वैगुन्दमे॥१०॥	तोंडमान के राजा वैरागमेगन अट्टाबुयगारम के स्वामी की कांची में पूजा करने आये जहां राजा का नाम सर्वविदित है। मधुर तमिल की यह गीतमाला ऊंचे दीवारों वाले मंगै क्षेत्र के राजा कलिकन्रि के हैं।जो इसका गान करेंगे वे वैकुंठ में स्थान पायेंगे। **1127** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

19 शोल्लुवन् (1128 - 1137)

परमेच्चुर विण्णगरम्

(कांचीपुरम में अवस्थित श्री वैंकुठ पेरूमल भू खंड में पश्चिम मुख बैठे अवस्था में हैं। ऊपर की मंजिल पर प्रभु शयनावस्था में है जिनका दर्शन वैकुंठ एकादशी के दिन खोला जाता है। अन्य दिन भू खंड वाले प्रभु का ही दर्शन मिलता है। भारत सरकार ने इस मंदिर को संरक्षित परंपरा वाली संरचनाओं में रखा है। कांचीपुरम में इस मंदिर के अतिरिक्त कैलाशनाथ मंदिर का पल्लव वंश की वास्तुसंरचना दर्शनीय है। Ramesh vol. 1 / 90)

शॊल्लु वन्शॊल् पॊरुळ् तान् अवैयाय् च्चुवै ऊरॊलि नाट्रमुम् तोट्रमुमाय् नल्लरन् नान्मुगन् नारणनुक्-किडन् तान् तडम् शूळ्न्दळगाय कच्चि पल्लवन् विल्लवन् एन्रुलगिल् पलराय् प्पल वेन्दर् वणङ्गु कळल् पल्लवन् मल्लैयर् कोन् पणिन्द परमेच्चुर विण्णगरम् अदुवे॥१॥	प्रभु ही वेद, वेद के सार, एवं वेद के नियम हैं। आप ही स्वाद, स्पर्श, शब्द, गंध, एवं दृष्टि हैं तथा इन सबों के नियंत्रण कर्ता स्वामी है। कमल के जलाशयों से घिरे कांचीपुरम में आप ब्रह्मा, शिव, एवं नारायण हैं। जगप्रसिद्ध मल्लायर राजा पल्लवन जिसे संसार "पल्लव महान" एवं "महान धर्नुधर" कहता है जिसको दूसरे राजा लोग सम्मान देते हैं इस परमेच्चुर विण्णगरम् मंदिर में पूजा करते हैं। **1128**
कार्मन्नु नीळ् विशुम्बुम् कडलुम् शुडरुम् निलनुम् मलैयुम् तन् उन्दि त्तार्मन्नु तामरै क्कण्णन् इडम् तड मा मदिळ् शूळ्न्दळगाय कच्चि तेर् मन्नु तॆन्नवनै मुनैयिल् शॆरुविल् तिरल् वाट्टिय तिण् शिलैयोन् पार्मन्नु पल्लवर् कोन्पणिन्द परमेच्चुर विण्णगरम् अदुवे॥२॥	प्रभु के नाभि कमल पर आकाश, समुद्र, प्रभामंडल, पृथ्वी, एवं पर्वत की सृष्टि हुई है। आप ऊंची दीवारों वाले कांची में रहते हैं। रथी राजा पांड्या को धनुर्धारी पल्लव नरेश ने परास्त कर दिया। पल्लव नरेश परमेच्चुर विण्णगरम् मंदिर में पूजा करते हैं। **1129**
उरम् तरु मॆल्लणैप्पळ्ळि कॊण्डान् ऒरुगाल् मुन्नम् मा उरुवाय् क्कडलुळ् वरम् तरु मा मणिवण्णन् इडम् मणि माडङ्गळ् शूळ्न्दळगाय कच्चि निरन्दवर् मण्णैयिल् पुण् नुगर्वेल् नॆडु वायिल् उग च्चॆरुविल् मुन नाळ् परन्दवन् पल्लवर् कोन् पणिन्द परमेच्चुर विण्णगरम् अदुवे॥३॥	पुरा काल में अपने भक्तों की ईच्छा पूरा करने वाले प्रभु गहरे समुद्र में शेष शायी स्वरूप को प्रकट किये। मणि के समान वर्ण वाले प्रभु अटारियों की नगरी कांची में प्रकट हुए। शत्रुओं को अपने भाला के पतले सिरे का शिकार बनाने वाले नेक पल्लव नरेश परमेच्चुर विण्णगरम् मंदिर में पूजा करने आते हैं। **1130**

अण्डमुम् एण् दिशैयुम् निलनुम्* अलै नीरॅाडु वान् एरि काल् मुदला उण्डवन्* एन्दै पिरानदिडम्* ऑळि माडङ्गळ् शूळ्न्दळगाय कच्चि* विण्डवर् इण्डै क्कुळामुडने* विरैन्दार् इरिय च्चॅरुविल् मुनैन्दु* पण्डॅारुगाल् वळैत्तान् पणिन्द* परमेच्चुर विण्णगरम् अदुवे॥४॥	ब्रह्यांड, पृथ्वी, समुद, आकाश, अग्नि, वायु, एवं अन्य सभी को क्षण भर में निगल जाने वाले हमारे प्रभु एवं नाथ दिव्य अट्टालिकाओं से घिरे सुन्दर कांचीपुरम के निवासी हैं। युद्ध में शत्रुओं को अपने धनुष से परास्त करने वाले पल्लव नरेश परमेच्चुर विण्णगरम् मंदिर में पूजा करने आते हैं। **1131**
तूम्बुडै त्तिण् कै वन् ताळ् कळिट्रिन्* तुयर् तीर्त्तरवम् वॅरुव* मुन नाळ् पूम् पुनल् पॅाय्गै पुक्कानवनुक्किडन् तान्* तडम् शूळ्न्दळगाय कच्चि* तेम् पॅाळिल् कुन्रॅयिल् तॅन्नवनै* त्तिशैप्प च्चॅरुमेल् वियन्दन्रु शॅन्र* पाम्बुडै प्पल्लवर् कोन् पणिन्द* परमेच्चुर विण्णगरम् अदुवे॥५॥	झील में प्रवेश करने पर शक्तिशाली हाथी का बड़ा पैर जब ग्राह से पकडा गया तो आपने रक्षा की। नदी में विष वमन करने वाला कालिय नाग को कुचल कर आपने नियंत्रित किया। हमारे प्रभु पानी के तालों से घिरे सुन्दर कांचीपुरम के निवासी हैं। अमृतमय बागों एवं पर्वत जैसी दीवारों से सुरक्षित दक्षिण क्षेत्र के पांड्य राजा को परास्त करने वाले सर्प चिह्न धारी पल्लव नरेश परमेच्चुर विण्णगरम् मंदिर में पूजा करने आते हैं। **1132**
तिण् पडै क्कोळरियिन् उरुवाय्* तिरलोन् अगलम् शॅरुविल् मुन नाळ्* पुण् पड प्पोळ्न्द पिरानदिडम्* पॅारु माडङ्गळ् शूळ्न्द अळगाय कच्चि* वॅण् कुडै नीळल् शॅङ्गोल् नडप्प* विडै वॅल् कॅाडि वेल् पडै मुन् उयर्त्त* पण्बुडै प्पल्लवर् कोन् पणिन्द* परमेच्चुर विण्णगरम् अदुवे॥६॥	अनेको अस्त्रों को धारण करने वाले महान नरसिंह ने असुर हिरण्य की मजबूत छाती को घोर युद्ध में नष्ट कर दिया। आप अट्टालिकाओं से खचाखच सुन्दर कांचीपुरम के निवासी हैं। श्वेत छत्र एवं शाही दंडधारी तथा सर्प चिह्न वाले भाला चलाने में निपुण पल्लव नरेश परमेच्चुर विण्णगरम् मंदिर में पूजा करने आते हैं। **1133**
इलगिय नीळ् मुडि मावलि तन् पॅरु वेळ्वियिल्* माण् उरुवाय् मुन नाळ्* शलमॅाडु मा निलम् कॅाण्डवनुक्किडन् तान्* तडम् शूळ्न्दळगाय कच्चि* उलगुडै मन्नवन् तॅन्नवनै* कन्नि मा मदिळ् शूळ् करुवूर् वॅरुव पल पडै शाय वॅन्रान् पणिन्द* परमेच्चुर विण्णगरम् अदुवे॥७॥	तेजस्वी एवं लंबे मावली राजा के यज्ञ में जाकर पृथ्वी एवं अन्य सभी चीजों को उपहार में प्राप्त करने वाले वामन प्रभु जलाशयों के मध्य सुन्दर कांचीपुरम के निवासी हैं। सशक्त सेना, ऊंची दीवारों से घिरे नगरों एवं विशाल दक्षिण क्षेत्र के पांड्या शासक को परास्त करने वाले हमारे पल्लव नरेश परमेच्चुर विण्णगरम् मंदिर में पूजा करने आते हैं। **1134**
कुडै त्तिरल् मन्नवनाय्* ऑरुकाल् कुरङ्गै प्पडैया* मलैयाल् कडलै अडैत्तवन् एन्दै पिरानदिडम्* मणि माडङ्गळ् शूळ्न्दळगाय कच्चि* विडै त्तिरल् विल्लवन् नॅन्मॅलियिल्* वॅरुव च्चॅरु वेल् वलङ्गै प्पिडित्त पडै त्तिरल् पल्लवर् कोन् पणिन्द* परमेच्चुर विण्णगरम् अदुवे॥८॥	पुराकाल में मुकुटधारी राजा के रूप में बन्दरों की सेना की सहायता से पत्थरों द्वारा समुद्र पर महान सेतु का प्रभु ने निर्माण किया। अट्टालिकाओं वाले सुन्दर कांचीपुरम के निवासी हमारे प्रभु हैं। जब हमारे पल्लव नरेश ने दायें हाथ से भाला से आक्रमण किया तो नेनमेली के विशाल धनुष धारी पांड्या योद्धा घबरा गये। वे परमेच्चुर विण्णगरम् मंदिर में पूजा करने आते हैं। **1135**

पिरैयुडै वाणुदल् पिन्नै तिरत्तु* मुन्ने ऑरुकाल् शॅरुविल् उरुमिन्* मरैयुडै माल्विडै एळडरत्ताकिडन् तान्* तडम् शूळ्न्द अळगाय कच्चि* करै उडै वाळ् मर मन्नर् कॅड* कडल्पोल् मुळङ्गुम् कुरल् कडुवाय्* परै उडै प्पल्लवर कोन पणिन्द* परमेच्चुर विण्णगरम अदवे॥९॥	चंद्रमुखी नप्पिनाय के लिये प्रभु ने सात बलशाली वृषभों से युद्ध किया।आप जलाशयों से घिरे कांची के निवासी हैं। हमारे पल्लव नरेश के युद्ध नगाड़े समुद्र के घोर गर्जन के समतुल्य आवाज करते हैं एवं वे शत्रुओं को अपनी तीक्ष्ण तलवार का शिकार बनाते रहते हैं। वे परमेच्चुर विण्णगरम् मंदिर में पूजा करने आते हैं। **1136**
पार् मन्नु तॉल् पुगळ् प्पल्लवर् कोन् पणिन्द* परमेच्चुर विण्णगर् मेल्* कार् मन्नु नीळ् वयल् मङ्गैयर् तम् तलैवन्* कलिगन्रि कुन्रादुरैत्त* शीर् मन्नु शॅन्तमिळ् मालै वल्लार्* तिरुमामगळ् तन् अरुळाल्* उलगिल् तेर् मन्नराय् ऑलि मा कडल् शूळ्* शॅळु नीर् उलगाण्डु तिगळ्वर्गळे॥१०॥	चिरकालीन यशवाले जगप्रसिद्ध पल्लव नरेश परमेच्चुर विण्णगरम् मंदिर में पूजा करते हैं। उपजाऊ मंगै क्षेत्र के राजा कलिकन्रि ने तमिल गीतमाला में आपकी गाथा को गा कर पिरोया है। जो इसे कंठ कर लेंगे वे लक्ष्मी की कृपा से पृथ्वी के मुकुटधारी राजा होते हुए स्वर्ग का आनन्द उठायेंगे। **1137** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

20 मञ्जाडु (1138-1147)

तिरूक्कोवलूर

(त्रिविक्रम भगवान का प्रसिद्ध कोइल, प्रथम तीन आळवारों पोईगइ, भूत, तथा पेय के एकसाथ मिलन का यह अतिप्रसिद्ध परम पावन स्थान विल्लीपुरम से 40 कि मी एवं कड्डलोर से करीब 75 कि मी पर है।)

मञ्जाडु वरै एळुम् कडल्गाळ् एळुम्⋆ वानगमुम् मण्णगमुम् मट्रुम् एल्लाम्⋆ एञ्जामल् वयिट्रडक्कि आलिन्मेल् ओर्⋆ इळन् तळिरिल् कण्वळरन्द ईशन् तन्नै⋆ तुञ्जा नीर् वळम् शुरक्कुम् पॆण्णै त्तॆन्पाल्⋆ तूय नान् मऱैयाळर् शोमु च्चॆय्य⋆ शॆञ्जालि विळै वयलुळ् तिगऴ्न्दु तोन्ऱुम्⋆ तिरुक्कोवलूर् अदनुळ् कण्डेन् नाने॥१॥	गगनचुंबी सात पर्वतों, सात समुद्र, संपूर्ण आकाश, पृथ्वी एवं अन्य सभी को बिना किसी क्षति के आप उदरस्थ कर कोमल बट पत्र पर सो गये। सदा जल से प्रवाहित पेन्नै नदी के दक्षिणी तट वाले सुनहले धान के खेतों के बीच सोम यज्ञ करने वाले वैदिक ऋषियों के आराध्य हमारे प्रभु हैं। हमने तिरूक्कोवलूर के सुन्दर मंदिर में आपको देखा है। **1138**
कॊन्दलरन्द नऱुन् तुऴाय् शान्दम् दूपम्⋆ दीपम् कॊण्डमरर् तॊऴ प्पणम् कॊळ् पाम्बिल्⋆ शन्दणि मॆन् मुलै मलराळ् तरणि मङ्गै⋆ ताम् इरुवर् अडि वरुडुम् तन्मैयानै⋆ वन्दनै शॆय्दु इशै एऴ् आरङ्गम्⋆ ऐन्दु वळर् वेळ्वि नाल् मऱैगळ् मून्ऱु तीयुम्⋆ शिन्दनै शॆय्दिरुपॊऴुदुम् ऒन्ऱुम्⋆ शॆल्व त्तिरुक्कोवलूर् अदनुळ् कण्डेन् नाने॥२॥	सात स्वर, छः आगम, पांच यज्ञ, चार वेद, एवं तीन अग्नि दिन में दो बार आपकी प्रशस्ति गाते हैं। देवगन तुलसी माला, चंदन लेप, सुंगधित अग्नि, एवं आरती से आपकी अर्चना करते हैं। प्रभु शेष शय्या पर सोये हैं एवं चंदन चर्चित उरोज वाली लक्ष्मी तथा भू देवी आपके चरणों की सेवा करती हैं। हमने तिरूक्कोवलूर के सुन्दर मंदिर में आपको देखा है। **1139**
कॊऴुन्दलरुम् मलर् च्चोलै क्कुळाङ्गॊळ् पॊय्गै⋆ कोळ् मुदलै वाळ् एयिट्रु क्कॊण्डर्कॆळ्ळा⋆ अऴुन्दिय मा कळिट्रिनुक्कन्ऱाऴि एन्दि⋆ अन्दरमे वर त्तोन्ऱि अरुळ् शॆय्दानै⋆ एऴुन्द मलर् क्करु नीलम् इरुन्दिल् काट्ट⋆ इरुम् पुन्नै मुत्तरुम्बि च्चॆम् पॊन् काट्ट⋆ शॆऴुन्दड नीर् क्कमलम् तीविगैपोल् काट्टुम्⋆ तिरुक्कोवलूर् अदनुळ् कण्डेन् नाने॥३॥	सुगंधित बागों के बीच ग्राह ने महान जकड़न भरे जबड़े के बीच हाथी का पैर पकड़ लिया। विपत्तिग्रस्त भक्त की रक्षा के लिये चक्र लिये प्रभु आये और उस पर अपनी दया की वर्षा की। नीला कुमुद आपके श्यामल रंग को दर्शाता है। पुन्नै फूल आपके मोती जैसे दांत एवं सुनहले रंग के प्रतीक हैं। सरोवरों में लाल कमल ज्योति की तरह दिखते हैं। हमने तिरूक्कोवलूर के सुन्दर मंदिर में आपको देखा है। **1140**

ताङ्गरुम् पोर् मालि पड प्पऱवै ऊर्न्दु⋆ तरादलत्तोर् कुऱै मुडित्त तन्मैयानै⋆ आङ्गरुम्बि क्कण् नीर् शोर्न्दन्बु कूरुम्⋆ अडियवर्गट्कार् अमुदम् आनान् तन्नै⋆ कोङ्गरुम्बु शुरपुन्नै कुरवार् शोलै⋆ कुऴा वरिवण्डिशै पाडुम् पाडल् केट्टु⋆ तीङ्गरुम्बु कण्वळरुम् कऴनि शूऴ्न्द⋆ तिरुक्कोवलूर् अदनुळ् कण्डेन् नाने॥ ४॥	गरूड़ पर सवार हो प्रभु ने पृथ्वी से भयानक राक्षसों के भार को हटाया। आप अश्रुपूरित आंखों से अर्चना करने वाले भक्तों के अमृत हैं। कोंगु, शुरपुन्नै, एवं करावु फूलों के बागों में मधुमक्खियां अमृत पीकर एकसाथ गीत गाती हैं। इनके गीत सुनकर खेतों में गन्ना एक पोर ज्यादा लंबा हो जाते हैं। हमने तिरूक्कोवलूर के सुन्दर मंदिर में आपको देखा है। **1141**
कऱै वळर् वेल् करन् मुदला क्कवन्दन् वालि⋆ कणै ऒन्ऱिनाल् मडिय इलङ्गै तन्नुळ्⋆ पिऱै ऎयिट्टु वाळ् अरक्कर् शेनै ऎल्लाम्⋆ पॆरुन् तगैयोडुडन् तुणित्त पॆम्मान् तन्नै⋆ मऱै वळर प्पुगऴ् वळर माडन्दोऱुम्⋆ मण्डपम् ऒण् तॊळि अनैत्तुम् वारम् ओद⋆ शिऱै अणैन्द पॊऴिल् अणैन्द तॆन्ऱल् वीशुम्⋆ तिरुक्कोवलूर् अदनुळ् कण्डेन् नाने॥ ५॥	तेज भालों से लैस खर दूषण, कबंध, वाली एवं अन्य सब बाणों से मारे गये। तब लंका नगर में अर्द्धचंद्राकार दांत वाले राक्षस एवं उनके राजा का प्रभु ने सफाया कर दिया। हर घर में वैदिक यज्ञ एवंअर्चना की गूंज सुनाई पड़ती है। आधे खुले मंडपों में विद्यार्थीगन वैदिक मंत्रोच्चार की विधि सीखते हैं। सिंचित बागों से शीतल हवा नगर में बहती है। हमने तिरूक्कोवलूर के सुन्दर मंदिर में आपको देखा है। **1142**
उऱि आर्न्द नऱु वॆण्णॆय् ऒळियाल् शॆन्ऱु⋆ अं- गुण्डानै क्कण्डाय्च्चि उरलोडार्क्क⋆ तऱि आर्न्द करुङ्गळिऱे पोल निन्ऱु⋆ तडङ्गण्गळ् पनि मल्गुम् तन्मैयानै⋆ वॆऱि आर्न्द मलर् मगळ् ना मङ्गैयोडु⋆ वियन् कलै ऎण् तोळिनाळ् विळङ्गु⋆ शॆल्व च्चॆऱियार्न्द मणि माडम् तिगऴ्न्दु तोन्ऱुम्⋆ तिरुक्कोवलूर् अदनुळ् कण्डेन् नाने॥ ६॥	रस्सी के छीकों पर टंगे सुगंधित मक्खन तक पहुंचकर आप सब खा गये। इसपर गोपनारी यशोदा ने आपको ओखल में बांध दिया। आप एक खंभे से बंधे हाथी की तरह रो रहे थे। सुगंधित कमल वाली लक्ष्मी, वाणी की देवी सरस्वती, एवं हिरन पर सवार आठ भुजाओं वाली पार्वती श्रीसंपन्ना महलों में रहती हैं। हमने तिरूक्कोवलूर के सुन्दर मंदिर में आपको देखा है। **1143**
इरुङ्गै मा करि मुनिन्दु परियै क्कीऱि⋆ इन विडैगळ् ऎऴ् अडर्त्तु मरुदम् शाय्त्तु⋆ वरुम् शगडम् इऱ उदैत्तु मल्लै अट्टु⋆ वञ्जगम् शॆय् कञ्जनुक्कु नञ्जानानै⋆ करुङ्गमुगु पशुम् पाळै वॆण् मुत्तीन्ऱु⋆ कायॆल्लाम् मरगदमाय् प्पवळम् काट्ट⋆ शॆरुन्दि मिग मॊट्टलर्त्तुम् तेन् कॊळ् शोलै⋆ तिरुक्कोवलूर् अदनुळ् कण्डेन् नाने॥ ७॥	मदमत्त हाथी का बध, घोड़े का जबड़ा चीरना, सात वृषभों का शमन करना, मरूदु के पेड़ों को उखाड़ना, दुष्ट गाड़ी को तोड़ना, मल्लयोद्धाओं का वध, एवं धूर्त्त कंश की हत्या ये सब प्रभु ने संपादित किये। अमृतमय बागों में जहां शरून्दि फूल की बहुतायत है, श्यामल अरेका पेड़ हरे पत्ते एवं श्वेत मोती विखेरते हैं, जबकि फल सर्वत्र श्याम एवं मूंगा की तरह लाल हैं। हमने तिरूक्कोवलूर के सुन्दर मंदिर में आपको देखा है। **1144**

पारेरु पॅरुम् पारम् तीर⋆ प्पण्डु बारदत्तु तूदियङ्गि⋆ पार्त्तन् शॅल्व त्तेर् एरु शारदि आय् एदिरन्दार् शेनै⋆ शॅरुक्कळत्तु त्तिरल् अळिय च्चॅट्टान् तन्नै⋆ पोर् एरॅान्रुडैयानुम् अळगै क्कोनुम्⋆ पुरन्दरनुम् नान्मुगनुम् पॉरुन्दुम् ऊर्पोल्⋆ शीर् एरु मरैयाळर् निरैन्द⋆ शॅल्व त्तिरुक्कोवलूर् अदनुळ् कण्डेन् नाने॥८॥	संसार को भारी दुष्टता से मुक्त करने हेतु प्रभु भारत युद्ध में दूत के रूप में प्रवेश किये। तब अर्जुन के लिये आपने रथ हांका एवं युद्ध में राजाओं का अंत किया। बसहा सवार शिव, वैश्रवण कुवेर, इन्द्र, ब्रह्मा एवं दूसरे देवगन वैदिक ऋषियों की उपस्थिति में श्रीसंपन्न नगर में एकत्र हुए हैं। हमने तिरूक्कोवलूर के सुन्दर मंदिर में आपको देखा है। **1145**
तूवडिविन् पार् मगळ् पू मङ्गैयोडु⋆ शुडर् आळि शङ्गिरुपाल् पॉलिन्दु तोन्र⋆ कावडिविन् कर्पगमे पोल निन्रु⋆ कलन्दवर्गट्करुळ् पुरियुम् करुत्तिनानै⋆ शेवडि कै तिरुवाय् कण् शिवन्द आडै⋆ शॅम् पॅान् शॅय् तिरुवुरुवम् आनान् तन्नै⋆ तीवडिविन् शिवन् अयने पोल्वार्⋆ मन्नु तिरुक्कोवलूर् अदनुळ् कण्डेन् नाने॥९॥	भूदेवी एवं श्रीदेवी, तथा तेजोमय शंख एवं चक्र से सुशोभित आपका स्वरूप कल्प वृक्ष का वन है। यह भक्तों को उदारता से लाभान्वित कराते हुए अरूणाभ चरण कमल, हाथ, होंठ एवं आंखें, यहां तक की वस्त्र भी अरूणाभ एवं आभूषण अरूणाभ सोने का बना है। आपका यह गौरवशाली स्वरूप ब्रह्मा, शिव, एवं अन्य देवों से पूजित है। हमने तिरूक्कोवलूर के सुन्दर मंदिर में आपको देखा है। **1146**
‡वारणम् कॉळ् इडर् कडिन्द मालै⋆ नील मरदगत्तै मळै मुगिले पोल्वान् तन्नै⋆ शीर् अणङ्गु मरैयाळर् निरैन्द⋆ शॅल्व त्तिरुक्कोवलूर् अदनुळ् कण्डेन् एन्रु⋆ वार् अणङ्गु मुलै मडवार् मङ्गै वेन्दन्⋆ वाट् कलियन् ऑलि ऐन्दुम् ऐन्दुम् वल्लार्⋆ कारणङ्गळाल् उलगम् कलन्दङ्गत्त⋆ करन्देङ्गुम् परन्दानै क्काण्बर् तामे॥१०॥	जूड़ों वाली सुन्दरियों से लाभान्वित मंगै क्षेत्र के तलवारधारी राजा कलियन ने तमिल के इन दस पदों को “हमने आपको तिरूक्कोवलूर में देखा है” टेक के साथ प्रभु की प्रशस्ति में गाया है जिन्होंने हाथी को विपत्ति से त्राण दिलाया, जिनका शरीर नीले कुमुद, चमकते हरा रत्न, एवं वैदिक संतों को आनन्दित करने वाले वर्षा के मेघ जैसा है। आप श्रीसंपन्न हैं। जो इस गीतमाला को याद कर लेंगे संसार में उनकी पूजा होगी एवं वे प्रभु के स्वरूप का दिग्दर्शन करेंगे। **1147** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळ शरणम्।

21 इरून्दण् (1148 – 1157)

तिरूवयन्दिरपुरम्

(तिरूवंदीपुरम या तिरूवहिन्दपुरम कड्डलोर से 3 कि मी पर है। यहां देवनायकन भगवान हैं एवं औषधगिरी पर श्रीलक्ष्मी हयग्रीव हैं। वेदांत देशिक स्वामी का साधना स्थल रहा है। Ramesh vol. 3 , pp 217)

इरुन्दण् मा निलम् एनम् अदाय्* वळै मरुप्पिनिल् अगत्तोंडुक्कि* करुन्दण्मा कडल्गण् तुयिन्र्वनिडम्* कमल नल् मलरत्तेरल् अरुन्दि* इन् इशै मुरन्रेळुम् अळिगुलम् पॊदुळि* अम् पॊळिलूडे* शेरुन्दि नाण्मलर् शेन्रणैन्दुळिदरु* तिरुवयिन्दिर पुरमे॥१॥	वराह के रूप में पृथ्वी को अपने दांतो पर ऊपर उठाने वाले प्रभु गहरे समुद्र में शयन करते हैं। आप तिरूवयिन्दरपुरम में भी निवास करते हैं जहां मधुमक्खियां कमल के फूलों से अमृत पीकर नाचती गाती और पुनः उड़कर मंदिर के चारो तरफ घने बागों में ऊंचे शरून्दि पेड़ के छत्ते में चली जातीं। **1148**
मिन्नुम् आळि अङ्गैयवन्* शेय्यवळ् उरै तरु तिरु मार्बन्* पन्नु नान्मरै प्पल पॊरुळ् आगिय* परन् इडम् वरै च्चारल्* पिन्नुम् मादवि प्पन्दलिल् पॆडै वर* प्पिणि अविळ् कमलत्तु* तेन्नवॆन्रु वण्डिन् इशै मुरल् तरु* तिरुवयिन्दिर पुरमे॥२॥	तेजोमय चक्र को हाथ में एवं कमल सी लक्ष्मी को वक्षस्थल पर धारण करने वाले प्रभु वेदों के सार हैं। आप तिरूवयिन्दरपुरम में निवास करते हैं जहां भौंरे माधवी की लताओं पर मधुर स्वर में 'तेना तेना' कहकर रात में कमल फूल में बन्द हो जाने वाली अपनी प्रेमिका को लौट कर मिलने की प्रतीक्षा करते हैं। **1149**
वैयम् एळुम् उण्डालिलै* वैगिय मायवन्* अडियवर्क्कु मेय्यन् आगिय दॆय्व नायकन् इडम्* मेय्तगु वरै च्चारल्* मॊय् कॊळ् मादवि शण्बगम् मुयङ्गिय* मुल्लै अम् कॊडि आड* शेय्य तामरै च्चॆळुम् पणै तिगळ् तरु* तिरुवयिन्दिर पुरमे॥३॥	सातों लोक को निगलकर बटपत्र पर सोने वाले देवनायक प्रभु भक्तों को दर्शन देते हैं। आप तिरूवयिन्दरपुरम में निवास करते हैं जहां घने माधवी पहाड़ की तरफ सेनवकम के वृक्षों पर बढ़ती हैं। मुलै लतायें हवा में झूमती हैं एवं कमल जलाशयों में सुन्दर रूप में छाये हुए हैं। **1150**
मारु कॊण्डुडन्रेदिरन्द वल् अवुणन् तन्* मार्वगम् इरु पिळवा* कूरु कॊण्डवन् कुलमगर्कु* इन् अरुळ् कॊडुत्तवनिडम्* मिडैन्दु शारु कॊण्ड मॆन् करुम्बिळङ्गळै तगै* विशुम्बुर मणि नीळल्* शेरु कॊण्ड तण् पळनम् अदॆळिल् तिगळ्* तिरुवयिन्दिर पुरमे॥४॥	असुर राजा हिरण्य गुस्सा एवं घृणा से भरा था। प्रभु ने उसकी छाती को चीरकर उसके पुत्र पर दया की। आप तिरूवयिन्दरपुरम में निवास करते हैं जहां घने गन्ना के पौधे आकाश तक बढ़कर नम जमीन को छाया प्रदान कर सुन्दरता को बढ़ाये हुए हैं। **1151**
आङ्गु मावलि वेळ्वियिल् इरन्दुशेन्रु* अगल् इडम् अळन्दु* आयर् पूङ्गॊडिक्किन विडै पॊरुदवन् इडम्* पॊन् मलर्दिगळ्* वेङ्गै कोङ्गु शेण्बग क्कॊम्बिनिल्* कुदि कॊडु कुरक्किनम् इरैत्तोडि* तेन् कलन्द तण् पलङ्गनि नुगर् तरु* तिरुवयिन्दिर पुरमे॥५॥	मावली के यज्ञ में जाकर पृथ्वी को मापने वाले प्रभु ने गोपकन्या नप्पिनाय के लिये सात वृषभों का शमन किया। आप तिरूवयिन्दरपुरम में निवास करते हैं जहां सुवर्ण फूल वर्षाने वाले वेंगै, कोंगु, एवं शेनबकम के वृक्षों पर उछल कूद मचाते हुए बन्दर मधु टपकते कटहल फलों को खाते हैं। **1152**
कून् उलाविय मडन्दै तन्* कॊडुञ्जॊल्लिन् तिरत्तिळङ्गॊडियोडुम्* कान् उलाविय करु मुगिल् तिरु निरत्तवन् इडम्* कविन् आरुम्* वान् उलाविय मदि तवळ् माल् वरै* मा मदिळ् पुडै शूळ्* तेनुलाविय शॆळुम्बॊळिल् तळुविय* तिरुवयिन्दिर पुरमे॥६॥	कुब्जे की बातों से मेघ वर्ण वाले प्रभु अपनी युवती पत्नी के साथ वनवास में चले गये। आप तिरूवयिन्दरपुरम में निवास करते हैं जहां पर्वत एवं अटारियां आकाश को छूते हैं तथा मधुमक्खियां भींगे उपजाउ खेतों में गुंजती रहती हैं। **1153**

मिन्निन् नुण् इडै मडक्कॊडि कारणम्* विलङ्गलिन्मिशै इलङ्गै मन्नन्* नीळ् मुडि पॊडिशॆय्द मैन्दनदिडम्* मणि वरै नीळल्* अन्न मामलर् अरविन्दत्तमळियिल्* पॆडैयॊडुम् इनिदमर* शॆन्नॆलार् कवरि क्कुलैवीशु* तण् तिरुवयिन्दिर पुरमे॥७॥	तड़ित कटि वाली सीता के लिये प्रभु ने लंका के किले को नष्ट कर दिया। आप तिरूवयिन्दरपुरम में निवास करते हैं जहां पर्वत के छाये में हंसो की जोड़ियां कमल के शय्या पर आराम करती हैं एवं उपजाउ खेतों में धान के पौधे झूमते हैं। **1154**
विरै कमळन्द मॆन् करुङ्गुळल् कारणम्* विल्लिरुत्तु अडल् मळैक्कु* निरै कलङ्गिड वरैकुडै एडुत्तवन्* निलविय इडम् तडम् आर्* वरै वळम् तिगळ् मदगरि मरुप्पॊडु* मलै वळर् अगिल् उन्दि* तिरै कॊणरन्दणै शॆळुनदि वयल्पुगु* तिरुवयिन्दिर पुरमे॥८॥	काली लटों वाली सीता के लिये प्रभु ने धनुष तोड़ा एवं तूफान से गायों की रक्षा के लिये पर्वत को ऊपर उठाया। आप तिरूवयिन्दरपुरम में निवास करते हैं जहां नदियां वनों एवं पर्वतों से गुजरती हुई हाथी के दांत तथा अगिल की सुगंधित लकड़ी पूजा के लिये बहाकर लाती हैं और खेतों को सींचती हैं। **1155**
वेल्गॊळ् कैत्तलत्तरशर् वॆम् पोरिनिल्* विशयनुक्काय्* मणित्तेर् कोल्गॊळ् कैत्तलत्तॆन्दै पॆम्मानिडम्* कुलवु तण् वरै च्चारल्* काल्गॊळ् कण्कॊडि क्कै एळ* क्कमुगिळम् पाळैगळ् कमळ् शारल्* शेल्गाळ्वाय् तरुशॆळु नदिवयल् पुगु* तिरुवयिन्दिर पुरमे॥९॥	अर्जुन के लिये युद्ध में रथ हांकने वाले प्रभु शीतल तिरूवयिन्दरपुरम में निवास करते हैं जहां पान की लतायें एरेका पेड़ों पर छायी रहती हैं तथा खेतों को सिंचित रखने वाली नदियों में मछलियां प्रसन्न होकर नाचती रहती हैं। **1156**
मूवर् आगिय ऑरुवनै* मूवुलगुण्डुमिळ्न्दळन्दानै* देवर् दानवर् शॆन्रु शॆन्रिरैञ्ज* तण् तिरुवयिन्दिर पुरत्तु* मेवु शोदियै वेल् वलवन्* कलिगन्रि विरित्तुरैत्त* पावु तण् तमिळ् पत्तिवै पाडिड* प्पावङ्गळ् पयिल्लावे॥१०॥	पृथ्वी को बनाने, निगलने, एवं मापने वाले प्रभु एक से तीन हो गये। आपको देव एवं असुर बार बार पूजा अर्पित करते हैं। आप तिरूवयिन्दरपुरम में निवास करते हैं। तमिल के इन दसक गीतों में तीक्ष्ण भुजाल वाले कलिकन्रि ने प्रभु का प्रशस्ति गान किया है। जो इसे कण्ठ कर लेंगे वे कर्मों से विमुक्त हो जायेंगे। **1157** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्

श्रीमते रामानुजाय नमः

22 ऊन्वाड (1158 - 1167)

तिल्लै त्तिरूच्चित्तिरकूडम् 1

(यह स्थान चिदंवरम के नाम से जाना जाता है। वैष्णव दिव्य देश के रूप में इसे चित्रकूटम कहा जाता है। यह कड्डलोर से 25 कि मी पर अवस्थित है।गोविन्दराज पेरूमल शयनावस्था में पूर्वाभिमुखी हैं एवं नटराज शिव का स्थान दक्षिणाभिमुखी हैं। मूल मूर्त्ति नटराज स्वयं रथ यात्रा में वर्ष में दो बार बाहर आते हैं। एक परिसर में गोविन्दराज की सब व्यवस्था नटराज के पास होते हुए भी सर्वथा स्वतंत्र एवं अलग है। तायर का मंदिर गोविन्दराज के पास अलग है। । Ramesh vol. 3 , pp 51)

ऊन्वाड उण्णादुयिर् कावल् इट्टु⋆ उडलिल् पिरिया प्पुलन् ऐन्दुम् नॊन्दु⋆ ताम्वाड वाड त्तवम् शॆय्य वेण्डा⋆ तमदा इमैयोर् उलगाळगिर्पीर्⋆ कान् आड मञ्ञै क्कणम् आड माडे⋆ कयल् आड् काल् नीर् प्पळनम् पुडैपोय्⋆ तेन् आड माड क्कॊडि आडु⋆ तिल्लै त्तिरुच्चित्रकूटम् शॆन्ऱु शेर्मिन्गाळे॥१॥	स्वर्ग पर राज्य के इच्छुक लोगों ! शरीर को सुखाना, सांस रोकना, तथा पांचो इन्द्रियों पर नियंत्रण करने वाला तपस्या की कोई आवश्यकता नहीं है। तिल्लै चित्रकूट में जाकर पूजा करो जहां मोर बाग में नाचते हैं, मछलियां जल में नाचती हैं, मधुमक्खियां हवा में नाचती हैं, तथा पताका अटारियों पर आकाश में नाचते हैं। 1158
कायोडु नीडु कनि उण्डु वीशु⋆ कडुङ्गाल् नुगर्न्दु नॆडुङ्गालम्⋆ ऐन्दु तीयोडु निन्ऱु तवम् शॆय्य वेण्डा⋆ तिरु मार्बनै च्चिन्दैयुळ् वैत्तुम् एन्बीर्⋆ वाय् ओदु वेदम् मल्गिगिन्ऱ तॊल् शीर्⋆ मऱैयाळर् नाळुम् मुऱैयाल् वळर्त्त⋆ तीयोङ्ग ओङ्ग प्पुगळ् ओङ्गु⋆ तिल्लै त्तिरुच्चित्रकूटम् शॆन्ऱु शेर्मिन्गाळे॥२॥	प्रभु को अपने हृदय में बसाने के इच्छुक लोगों ! सब्जी एवं फल पर रहना, हवा पर रहना, पंचाग्नि लेना, एवं कठिन तपस्या करना आदि की कोई आवश्यकता नहीं है। तिल्लै चित्रकूट में जाकर पूजा करो, जहां वैदिक ऋषिगण अनवरत मंत्रोच्चार करते रहते हैं तथा निरंतर बढ़ने वाले गौरव के साथ प्रतिदिन यज्ञ करते रहते हैं। 1159
वॆम्बुम् शिनत्तु प्पुन क्केळल् ऒन्राय्⋆ विरि नीर् मुदु वॆळ्ळम् उळ्पुक्कळुन्द⋆ वम्बुण् पॊळिल् शूळ् उलगन्ऱॆडुत्तान्⋆ अडिप्पोदणैवान् विरुप्पोडिरुप्पीर्⋆ पैम्बॊन्नुम् मुत्तुम् मणियुम् कॊणर्न्दु⋆ पडै मन्नवन् पल्लवर् कोन् पणिन्द⋆ शॆम्बॊन् मणि माडङ्गळ् शूळ्न्द⋆ तिल्लै त्तिरुच्चित्रकूटम् शॆन्ऱु शेर्मिन्गाळे॥३॥	गुस्से में प्रभु ने वनैले सूकर का रूप धारण कर सागर में कैद नवसज्जित भू देवी को मुक्त किया। जो प्रभु के चरणकमल को प्राप्त करना चाहते हो तो सुनो ! सुवर्ण एवं रत्नों से सजे हुए अटारियों वाले तिल्लै चित्रकूट में जाओ, जहां किरीटधारी पल्लव नरेश सोना, मणि, एवं मोती समर्पित कर पूजा करते हैं। 1160

अरुमानिलम् अन्ऱळप्पान् कुऱळाय्* अवुणन् पॆरु वेळ्वियिल् शॆन्ऱिरन्द* पॆरुमान् तिरुनामम् पिदट्रि* नुन् तम् पिऱवि त्तुयर् नीङ्गुदुम् एन्नगिर्पीर्* करुमा कडलुळ् किडन्दान् उवन्दु* कवै ना अरविन् अणै प्पळ्ळियिन् मेल्* तिरुमाल् तिरुमङ्गैयॊडाडु* तिल्लै त्तिरुच्चित्रकूटम् शॆन्ऱु शेर्मिन्गळे॥ ४॥	पुरा काल में प्रभु वामन रूप से मावली के यज्ञ में गये और विस्तृत पृथ्वी को माप डाला। भक्तलोग ! अगर प्रभु का नाम जपके जन्म जन्मान्तर के दुःखद कर्मों को काटना चाहते हो तो तिल्लै चित्रकूट में जाओ, जहां प्रभु हर्षपूर्वक लक्ष्मी के साथ शेषशायी हैं। **1161**
को मङ्ग वङ्ग क्कडल् वैयम् उय्य* कुल मन्नर् अङ्गम् मळुविल् तुणिय* ताम् अङ्गमरुळ् पडै तॊट्ट वॆन्ऱि* तव मा मुनियै त्तमक्काक्किगिर्पीर्* पू मङ्गै तङ्गि प्पुल मङ्गै मन्नि* पुगळ् मङ्गै एङ्गुम् तिगळ* प्पुगळ् शेर् शेमम् कॊळ् पैम् पूम् पॊळिल् शूळ्न्द* तिल्लै त्तिरुच्चित्रकूटम् शॆन्ऱु शेर्मिन्गळे॥ ५॥	सागर से घिरे पृथ्वी को अत्याचारी राजाओं से मुक्त कराने के लिये एवं नेक जनों के उद्धार के लिये आपने महान तपस्वी एवं राजाओं पर फरशा भांजने वाले प्रशुराम का रूप धारण किया। जो आपको अपना बनाना चाहते हैं वे तिल्लै चित्रकूट में जायें, जहां चारोतरफ पाावन एवं सुगंधित बाग हैं । वक्षस्थल पर लक्ष्मी, पार्श्व भाग में भूदेवी, एवं आपकी चतुर्दिक ख्याति नारी के रूप में यहां वास करती हैं। **1162**
नॆय् वाय् अळल् अम्बु तुरन्दु* मुन्नीर् तुणिय प्पणिकॊण्डणि आरन्दु* इलङ्गु मैयार् मणि वण्णनै एण्णि* नुम् तम् मनत्ते इरुत्तुम्बडि वाळ वल्लीर्* अव्वाय् इळ मङ्गैयर् पेशवुम् तान्* अरु मा मऱै अन्दणर् शिन्दै पुग* शॆव्वाय् क्किळि नान्मऱै पाडु* तिल्लै त्तिरुच्चित्रकूटम् शॆन्ऱु शेर्मिन्गळे॥ ६॥	अग्नि बाण का प्रयोग करते हुए प्रभु ने सागर को बांट कर सेतु का निर्माण किया।बहुत सारे आभूषणों वाले आप श्याम वदन हैं। अगर सदा के लिये प्रभु को अपने हृदय में रखना चाहते हो तो तिल्लै तिरू चित्रकूट जाओ, जहां अपने पिता के हृदय को प्रसन्न रखने वाली किशोयिां सुग्गों को वेद गान सीखातीं हैं। **1163**
मौवल् कुळल् आयच्चि मॆन् तोळ् नयन्दु* मगरम् शुळल च्चुळल् नीर् पयन्द* दॆय्व त्तिरु मा मलर् मङ्गै तङ्गु* तिरुमार्वनै चिन्दैयुळ् वैत्तुम् एन्बीर्* कौवै क्कळिट्रिन् मरुप्पुम् पॊरुप्पिल्* कमळ् शन्दुम् उन्दि निवा वलङ्गॊळ्* दॆय्व प्पुनल् शूळ्न्दळगाय* तिल्लै त्तिरुच्चित्रकूटम् शॆन्ऱु शेर्मिन्गळे॥ ७॥	फूल का जूड़ा एवं बांस सा सुघड़ बाहों वाली नप्पिनाय का प्रभु ने आलिंगन किया। मकर मछली से भरे समुद्र से उत्पन्न लक्ष्मी आपके वक्षस्थल पर निवास करती हैं।अगर सदा के लिये प्रभु को अपने हृदय में रखना चाहते हो तो तिल्लै तिरू चित्रकूट जाओ, जहां प्रभु निवास करते हैं और वेल्लारू नदी का तेज प्रवाह हाथी का दांत एवं सुगंधित चन्दन बहाकर प्रभु को अर्पित करने के लिये लाता है। **1164**

मा वायिन् अङ्गम् मदियादु कीरि⋆ मळै मा मुदु कुन्रॆडुत्तु⋆ आयर् तङ्गळ् कोवाय् निरै मेय्त्तुलगुण्ड मायन्⋆ कुरै मा कळल् कूडुम् कुरिप्पुडैयीर्⋆ मूवायिरम् नान्मरैयाळर्⋆ नाळुम् मुरैयाल् वणङ्ग अणङ्गाय शोदि⋆ देवादि देवन् तिगळ्गिन्र⋆ तिल्लै त्तिरुच्चित्रकूटम् शॆन्रु शेर्मिन्गळे॥८॥	केशी घोड़ा के जबड़े को प्रभु ने चीर कर अलग कर दिया। आप ने वर्षा रोकने के लिये पर्वत को उठा लिया। आपने गायें चरायीं एवं चमत्कारिक रूप से जगत को निगल लिया। अगर प्रभु के किंकिणि वाले चरण को प्राप्त करना चाहते हो तो तिल्लै तिरू चित्रकूट जाओ, जहां देवाधिदेव तेजोमय प्रभु की पूजा **3000** वैदिक ऋषिगन नित्य करते हैं। **1165**
शॆरु नील वेल् कण् मडवार् तिरत्तु⋆ शिनत्तोडु निन्रु मनत्ताल् वळर्क्कुम्⋆ अरु नील पावम् अगल प्पुगळ् शेर्⋆ अमरर्क्कुम् एय्दाद अण्डत्तिरुप्पीर्⋆ पॆरु नीर् निवावुन्दि मुत्तम् कॊणर्न्दु⋆ एङ्गुम् वित्तुम् वयल्गुळ् कयल् पाय्न्दुगळ⋆ तिरु नीलम् निन्रु तिगळ्गिन्र⋆ तिल्लै त्तिरुच्चित्रकूटम् शॆन्रु शेर्मिन्गळे॥९॥	मत्स्य के समान काली नयनों वाली किशोयिों पर गुस्सा से देखना और उनके सहवास से आनंद उठाने की ईच्छा रखनेवाले प्रतिदिन कुकर्म का भंडार बढ़ाते जा रहे हैं।जो इस दुःख को जड़ से काटकर देवों से पूजित प्रभु के निवास की ओर जाना चाहते हैं वे शीघ्र तिल्लै तिरू चित्रकूट जायें, जहां नीवा वेल्लारू नदी खेतों से बहती हुई मोती विखेरती है, नीले कुमुद झाडियों से मुस्कान विखेरते हैं, और कया मछलियां उमंग मे नाचती हैं। **1166**
‡शीरार् पॊळिल् शूळ्न्दळगाय⋆ तिल्लै त्तिरुचित्रकूटत्तुरै शॆङ्गण् मालुक्कु⋆ आराद उळ्ळत्तवर् केट्टुवप्प⋆ अलै नीर् उलगुक्करुळे पुरियुम्⋆ कारार् पुयल् कै क्कलिगन्रि⋆ कुन्रा ऒलि मालै ओर् ऒन्बदोडॊन्रुम् वल्लार्⋆ पारार् उलगम् अळन्दान् अडिक्कीळ्⋆ पल कालम् निर्कुम्बडि वाळ्वर् तामे॥१०॥	सागर से घिरे पृथ्वी की हमेशा भलाई करने वाले घने मेघ जैसी बाहों के कलिकन्रि ने, ये दसक गीतमालिका,सुन्दर बागों के मध्य स्थित तिल्लै तिरू चित्रकूट वाले प्रभु के असीम प्रेमासिक्त भक्तों की प्रसन्नता के लिये गाया है। जो इसे कण्ठ कर लेंगे वे पृथ्वी पर भूमंडल मापने वाले प्रभु के भक्त बनके दीर्घायु होंगे।**1167** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

23 वाड मरूदिडै (1168 - 1177)

तिल्लै त्तिरूच्चित्तिरकूडम् 2 (चिदंबरम के गोविन्दराज प्रभु ः देखें पूर्व का **1158** से **1167**)

‡वाड मरुदिडै पोगि⋆ मल्लरै क्कॊन्ऱॆक्कलित्तिट्टु⋆ आडल् नल् मावुडैत्तु⋆ आयर् आनिरैक्कन्ऱिडर् तीर्प्पान्⋆ कूडिय मा मळै कात्त⋆ कूत्तन् एन वरुगिन्ऱान्⋆ शेडुयर् पूम् पॊळिल् तिल्लै⋆ च्चित्तिरकूटत्तुळ्ळाने॥१॥	दो मरूदु वृक्षों के बीच से सरकते हुए उसे तोड़ने वाले, केशी घोड़ा का जबड़ा चीरने वाले, पहलवानों का वध करनेवाले, गायों की तूफान में पर्वत से रक्षा करने वाले, एवं पात्र पर नाचने वाले प्रभु लंबे फूल के वृक्षों के साये में तिल्लै तिरू चित्रकूट में रहते हैं। **1168**
पेय् मगळ् कॊङ्गै नञ्जुण्ड⋆ पिळ्ळै परिशिदुवॆन्ऱाल्⋆ मा निल मा मगळ्⋆ मादर् केळ्वन् इवन् एन्ऱुम्⋆ वण्डुण् पू मगळ् नायगन् एन्ऱुम्⋆ पुलन् कॆळु कोवियर् पाडि⋆ ते मलर् तूव वरुवान्⋆ चित्तिरकूटत्तुळ्ळाने॥२॥	सुन्दर गोप किशोयिों ने जब सुना कि आपने पूतना राक्षसी के विषैले स्तन का पान किया है तो उनलोगों ने आपकी पूजा की एवं कहा "आप भूदेवी के पति एवं कमल सी लक्ष्मी के नाथ हैं"। आप तिल्लै तिरू चित्रकूट में रहते हैं। **1169**
पण्डिवन् वॆण्णॆय् उण्डान् एन्ऱु⋆ आय्च्चियर् कूडि इळिप्प⋆ एण् दिशैयोरुम् वणङ्ग⋆ इणै मरुदूडु नडन्दिट्टु⋆ अण्डरुम् वानत्तवरुम्⋆ आयिरनामङ्गळोडु⋆ तिण्दिऱल् पाड वरुवान्⋆ चित्तिरकूडत्तुळ्ळाने॥३॥	गोप किशोरियों ने एकत्र होकर शिकायत की कि आप ने उनका मक्खन खाया है। आठों दिशाओं ने झुककर आपका अभिवादन किया जब आप मरूदु वृक्षों के बीच से सरकते हुए उसे तोड़ डाले। मनुष्यों एवं देवों ने आपके हजार नामों से प्रशस्ति गान किया। आप तिल्लै तिरू चित्रकूट में रहते हैं। **1170**
वळै क्कै नॆडुङ्गण् मडवार्⋆ आय्च्चियर् अञ्जि अळैप्प⋆ तळैत्तविळ् तामरै प्पॊय्गै⋆ त्तण् तडम्बुक्कण्डर् काण⋆ मुळैत्त एयिट्रळल् नागत्तु⋆ उच्चियिल् निन्ऱु अदुवाड⋆ तिळैत्तमर् शॆय्दु वरुवान्⋆ चित्तिरकूटत्तुळ्ळाने॥४॥	सुन्दर कंगन एवं बड़ी आंखों वाली गोप किशोरियों ने चिंता से चीत्कार किया जब आपने शांत कमल ताल के जल में प्रवेश कर विषैले नाग के फन पर नृत्य किया। नटखट प्रभु तिल्लै तिरू चित्रकूट में रहते हैं। **1171**

परुव क्करु मुगिलोत्तु॰ मुत्तुडै मा कडल् ऑत्तु॰ अरुवि त्तिरळ् तिगळिन्र॰ आयिरम् पॉन् मलै ऑत्तु॰ उरुव क्करुङ्गुळल् आय्च्चि तिरत्तु॰ इन माल् विडै शॅट्ट॰ तॅरुविल् तिळैत्तु वरुवान्॰ चित्तिरकूटत्तुळ्ळाने॥५॥	गोप किशोरी नप्पिनाय अपनी काली लटों के कारण वर्षा का मेघ, मोती से जड़ित सागर, एवं प्रपात वाले पर्वत श्रेणी सी दिखती हैं। हमारे प्रभु ने इनका वरण करने के लिये सात वृषभों का शमन किया। आप गलियों में खेलते हैं और तिल्लै तिरू चित्रकूट में रहते हैं। **1172**
एय्य च्चिदैन्ददिलङ्गै मलङ्ग॰ वरु मळै काप्पान्॰ उय्य प्परु वरै ताङ्गि॰ आ निरै कात्तान् एन्रॆत्ति॰ वैयत्तॆवरुम् वणङ्ग॰ अणॅङ्गॆळु मा मलै पोले॰ दॆय्व प्पुळ् एरि वरुवान्॰ चित्तिरकूटत्तुळ्ळाने॥६॥	सबों से पूजित, पर्वत के समान प्रभु, गरूड़ पर सवार होकर सारी पृथ्वी पर घूमते हैं। आपने लंका पर बाणों की वर्षा की, तथा वर्षा रोकने के लिये पर्वत को उठाया एवं गायों की रक्षा की। आप तिल्लै तिरू चित्रकूट में रहते हैं। **1173**
आवर् इवै शॅय्दरिवार्॰ अञ्जन मा मलै पोले॰ मेवु शिनत्तडल् वेळम्॰ वीळ मुनिन्दु॰ अळगाय कावि मलर् नॆडुङ्गण्णार्॰ कै तॊळ वीदि वरुवान्॰ देवर् वणङ्गु तण् तिल्लै॰ च्चित्तिरकूटत्तुळ्ळाने॥७॥	ऐसी चीजें क्या बताती हैं ? आपने काले विशाल पहाड़ के समान भयानक मदमत्त हाथी को धराशायी कर दिया। आपके आगमन पर बड़ी बड़ी कमल सी आंखों वाली नारियां हाथ उठा कर आपकी पूजा करती हैं। आप तिल्लै तिरू चित्रकूट में रहते हैं। **1174**
पॊङ्गि अमरिल् ऑरुगाल्॰ पॊन्पॆयरोनै वॆरुव॰ अङ्गवन् आगम् अळैन्दिट्टु॰ आयिरम् तोळ् एळुन्दाड॰ पैङ्गण् इरण्डॆरि कान्र॰ नीण्ड एयिट्रॊडु पेळ् वाय्॰ शिङ्ग उरुविन् वरुवान्॰ चित्तिरकूटत्तुळ्ळाने॥८॥	एक बार भयानक हिरण्य पर आपने अपना गुस्सा दिखाया। हजारों हाथ, आग वर्षाती आंखें, तीक्ष्ण दांत दर्शाते खुले मुंह से आपने असुर की छाती चीर दिया। आप तिल्लै तिरू चित्रकूट में रहते हैं। **1175**
करु मुगिल् पोल्वदोर् मेनि॰ कैयन आळियुम् शङ्गुम्॰ पॆरुविरल् वानवर् शूळ॰ एळ् उलगुम् तॊळुदेत्त॰ ऑरु मगळ् आयर् मडन्दै॰ ऑरुत्ति निलमगळ्॰ मट्रै त्तिरु मगळोडुम् वरुवान्॰ चित्तिरकूटत्तुळ्ळाने॥९॥	वर्षा के श्याम मेघ के रंग वाले, शंख चक्र धारण किये, देवों से घिरे एवं सातों लोकों से पूजित आप पधारते हैं। जब आप पधारते हैं तब कमल लक्ष्मी, भूदेवी, एवं गोप किशोरी आपके पार्श्व में रहती हैं। आप तिल्लै तिरू चित्रकूट में रहते हैं। **1176**
तेन् अमर् पूम् पॊळिल् तिल्लै॰ च्चित्तिरकूटम् अमरन्द॰ वानवर् तङ्गळ् पिरानै॰ मङ्गैयर् कोन् मरुवार् तम्॰ ऊन् अमर् वेल् कलिगन्रि॰ ऑण् तमिळ् ऑन्बदोडॊन्रुम्॰ तान् इवै कट्र वल्लार्मेल्॰ शारा तीविनै तामे॥१०॥	मधुमक्खी गूंजते फूलों से सजे तिल्लै तिरू चित्रकूट के प्रभु पधारते हैं। यह तमिल गीतमालिका तेज भाला धारण करने वाले मंगै क्षेत्र के राजा कलिकन्रि ने प्रभु की प्रशस्ति में गाया है। जो इसे कंठ कर लेंगे वे कभी भी दूषित कर्मो को प्राप्त नहीं होंगे। **1177** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

24 ओरूकुरळाय् (1178 - 1187)

कालिच्चीराम विण्णगरम्

(यह स्थान शिरकालि रेल स्टेशन से 1 कि मी पर है। प्रभु लोकनाथन के नाम से प्रसिद्ध हैं। मूलावर पूर्वाभिमुख हो खड़े अवस्था में त्रिविक्रम के स्वरूप में हैं एवं उत्सव मूर्त्ति को त्रिविक्रम नारायण कहते हैं। कांचीपुरम में उलगलंद प्रभु वड़े आकार में हैं लेकिन यहां लघु आकार में हैं। इसे तडलन कोइल भी कहते हैं क्योंकि 'ताडु' का अर्थ तीन, एवं 'अलंथन' का अर्थ मापना है।एक बार जब तिरूमंगै आळवार यहां आये तो एक प्रसिद्ध शिव भक्त तिरू ज्ञान समुन्दर यहां विराजमान थे।आळवार की परीक्षा के लिये उन्होंने कोई पद सुनाने को कहा।आळवार ने तुरत एक पद की रचना कर सुना दिया "कालि शिरामा विन्नागरम मूवादि मन वेंडी"। प्रथम दो शब्द यहां के मूल देवता श्रीराम के द्योतक हैं एवं अंतिम तीन शब्द तीन पगों में पृथ्वी मापने वाले प्रभु के बारे में है। इनकी रचना से प्रसन्न हो तिरू ज्ञान समुन्दर ने आळवार को "नाडुकवि पेरूमाल" की उपाधि से विभूषित करते हुए अपना 'वेल' यानी भाला एवं 'गंडसारम' यानी गले का हार इन्हें उपहार स्वरूप दे दिया। मानवला मामुनि यानी श्रीवरवरमुनि ने पदों की रचना कर आळवारश्री की प्रशंसा में इसे बड़ी सुन्दरता से चित्रित किया है। यहां तिरूमंगैआळवार की प्रतिमा इसी तरह से 'भाले' एवं 'हार' से विभूषित भी है। । Ramesh vol. 2 , pp 220)

‡ऑरु कुऱळाय् इरु निलम् मूवडि मण् वेण्डि⋆ उलगनैत्तुम् ईर् अडियाल् ऑडुक्कि⋆ ऑन्ऱुम् तरुगॅना मावलियै च्चिऱैयिल् वैत्त⋆ ताडाळन् ताळ् अणैवीर्⋆ तक्क कीर्त्ति अरु मऱैयिन् तिरळ् नान्गुम् वेळ्वि ऐन्दुम्⋆ अङ्ङङ्ळ् अवै आऱुम् इशैगळ् एळुम्⋆ तॆरुविल् मलि विळा वळमुम् शिऱक्कुम्⋆ काळि च्चीराम विण्णगरे शेर्मिनीरे॥१॥	एक दिन दो पैर वाले वामन ने तीन पग जमीन के बदले पूरी पृथ्वी माप ली। तीसरे पग के बदले आपने उदारता पूर्वक महावली को पाताल का राज्य दे दिया। चार वेद के मंत्रोच्चार, पांच यज्ञ, छः आगम, एवं सात स्वर, के साथ आप आनंद से भरे वीथियों एवं उत्सव वाले कालि शिरामा विण्णगर में रहते हैं। हे लोगों ! वहां जाओ। **1178**
नान्मुगन् नाळ् मिगै त्तरुक्कै इरुक्कु वाय्मै⋆ नलमिगु शीर् उरोमशनाल् नविट्रु⋆ नक्कन् ऊन् मुगमार् तलैयोट्टूण् ऑळित्त एन्दै⋆ ऑळि मलर् च्चेवडि अणैवीर्⋆ उळु शेयोड च्चूल् मुगमार् वळै अळैवाय् उगुत्त मुत्तै⋆ तॊल् कुरुगु शिनै एन्न च्चूळ्न्दियङ्ङ्⋆ एङ्गुम् तेन् मुगमार् कमल वयल् शेल् पाय्⋆ काळि च्चीराम विण्णगरे शेर्मिनीरे॥२॥	आयु के अभिमान में ब्रह्मा ने जप छोड़ा और रोमस के शाप से अपना एक सिर खो दिया। शिव ने उस खोपड़ी को भिक्षा पात्र बना लिया। अहा! हमारे प्रभु ने उस पात्र को रक्त से भर कर शिव को मुक्त किया। आप बड़े वृषभों से जोते जाने वाले उपजाऊ क्षेत्र में रहते हैं जहां कीड़े के सहवास से शंख मोती देते हैं एवं प्रस्फुटित कमल के अमृत से शिरामा विण्णगर में मछलियां खुश रहती हैं। हे लोगों ! वहां जाओ। **1179**

वैयणैन्द नुदि क्कोट्टु वरागम् ऑन्राय्⋆ मण् एल्लाम् इडन्दॆडुत्तु मदङ्गळ शॆय्दु⋆ नॆय् अणैन्द तिगिरियिनाल् वाणन् तिण् तोळ⋆ नॆरन्दवन् ताळ अणैगिर्पीर्⋆ नॆय्दलोडु मै अणैन्द कुवळैगळ तम् कण्गळ एन्ऱुम्⋆ मलर् क्कुमुदम् वाय् एन्ऱुम् कडैशिमार्गळ⋆ शॆय् अणैन्दु कळै कळैयादॆऱुम्⋆ कालि च्चीराम विण्णगरे शॆर्मिनीरे॥३॥	वृहताकार वराह के रूप में भूदेवी को अपने दांतों पर आपने आकाश तक उठाते हुए उनके कानों में वेद पढ़ा। पुरा काल में तीक्ष्ण चक्र से बाणासुर के हजारों हाथों को काट डाला। खेतों में पौधों का प्रत्यार्पण करते समय कुमुद फूल में नारियों ने अपने मुखड़े , आंखें,एवं होठों की प्रतिछाया देखी। तब शिरामा विण्णगर के खेतों में काम बन्द कर दिया। हे लोगों ! वहां जाओ। **1180**
पञ्जियल् मॆल्लडि प्पिन्नै तिरत्तु⋆ मुन्नाळ पाय् विडैगळ एळ अडर्त्तु पॊन्नन् पैम् पूण्⋆ नॆञ्जिडन्दु कुरुदियुग उगिर् वेल् आण्ड⋆ निन्मलन् ताळ अणैगिर्पीर्⋆ नीलमालै त्तञ्जुडैय इरुळ तळैप्प त्तरळम् आङ्गे⋆ तण् मदियिन् निला क्काट्ट प्पवळम् तन्नाल्⋆ शॆञ्जुडर् वॆयिल् विरिक्कुम् अळगार्⋆ कालि च्चीराम विण्णगरे शॆर्मिनीरे॥४॥	नप्पिनाय के लिये आपने सात वृषभों से लड़ाई लड़ी।प्रह्लाद के प्रेम में नरसिंह बनकर हिरण्य के मजबूत छाती को अपने पंजों से चीर दिया। भक्तगन जो सात्विक प्रभु का दर्शन करना चाहते हैं मेरी बात सुनें। शिरामा विण्णगर के अटारियों में जड़े नीलमणि अंधकार का हरण करते हैं मोती चंद्रमा की तरह चमकते हैं एवं मूंगा उदयकालीन लाल सूर्य की तरह दिखते हैं। हे लोगों ! वहां जाओ। **1181**
तॆव्वाय मऱ मन्नर् कुरुदि कॊण्डु⋆ तिरु क्कुलत्तिल् इरन्दोर्क्कु त्तिरुत्ति शॆय्दु⋆ वॆव्वाय मा कीण्डु वेळम् अट्ट⋆ विण्णवर् कोन् ताळ अणैवीर्⋆ विगिर्द मादर् अव्वाय वाळ नॆडुङ्गण् कुवळै काट्ट⋆ अरविन्दम् मुगम् काट्ट अरुगे आम्बल्⋆ शॆव्वायिन् तिरळ काट्टुम् वयल् शूळ⋆ कालि च्चीराम विण्णगरे शॆर्मिनीरे॥५॥	आपने इक्कीस बार शक्तिशाली राजाओं का अपने परसा से वध कर खून से श्रद्धांजली दी। जब घोड़ा असुर आक्रमण करते हुए आया तो आपने उसका जवड़ा चीर कर अलग कर दिया। आप देवों के नाथ हैं। कालि शिरामा विण्णगर के खेतों के जलाशयों के लाल कमल नारियों के मुखड़े, नीला कमल उनकी आंखों के, एवं लाल कुमुद उनके होठों के प्रतीक हैं। हे लोगों ! वहां जाओ। **1182**

पैङ्गण् विरल् शेम्मुगत्तु वालि माळ* पडर्वनत्तु क्कवन्दनोडुम् पडैयार् तिण् कै* वेङ्गण् विरल् विरादन् उग विल् कुनित्त* विण्णवर् कोन् ताळ् अणैवीर्* वेर्पु प्पोलुम् तुङ्गमुग माळिगै मेल् आयम् कूऱ्म्* तुडि इडैयार् मुग क्कमल च्चोदि तन्नाल्* तिङ्गळ् मुगम् पनि पडैक्कुम् अळगार्* काळि च्चीराम विण्णगरे शेर्मिनीरे॥६॥	हरी आंख एवं लाल मुख वाला वाली मारा गया। घोर जंगल में कवंध धराशायी हुआ। देवों के शासक एवं हमारे प्रभु के बाणों का एक आंख वाला असुर विराध शिकार हुआ। काळि शिरामा विण्णगर की अटारियां पर्वतनुमा ऊंची हैं। यहां वरामदों से पूर्णिमा के चांद को लज्जित करते मुखवाली एवं कृश कटि किशोरियां पुकारकर कहती हैं : हे लोगों ! वहां जाओ। **1183**
पोरुविल् वलम्बुरि अरक्कन् मुडिगळ् पत्तुम्* पुट्टु मरिन्दन पोल प्पुविमेल् शिन्द* शेरुविल् वलम्बुरि शिलै क्कै मलै त्तोळ् वेन्दन्* तिरुवडि शेरन्दुय्यिपीर्* तिरै नीर् त्तेळ्ळि मरुवि वलम्बुरि कैदै क्कळियूडाडि* वयल् नण्णि मळै तरु नीर् तवळ् काल् मन्नि* तेरुविल् वलम्बुरि तरळम् ईनुम्* काळि च्चीराम विण्णगरे शेर्मिनीरे॥७॥	दीमक के खाये वस्तुओं की तरह युद्ध क्षेत्र में राक्षसों के मस्तक शक्तिशाली भुजाओं वाले राम के बाणों से गिरते रहे।जो आपके चरणाश्रित होना चाहते हैं वे काळि शिरामा विण्णगर जायें। गहरे सागर से पानी आकास को उठता है, वर्षा के रूप में नीचे आकर नदियों तालाबों को भरते हुए यहां के पेड़ों से घिरे उपजाऊ खेतों से जाता है। हे लोगों ! वहां जाओ। **1184**
पट्टरवेर् अगल् अल्गुल् पवळ च्चेव्वाय्* पणै नेडुन् तोळ् पिणै नेडुङ्गण् पालाम् इन्शोल्* मट्टविळुम् कुळलिक्का वानोर् काविन्* मरम् कोणरन्दान् अडि अणैवीर्* अणिल्गाळ् ताव नेट्टिलैय करुङ्गमुगिन् शेङ्गाय् वीळ* नीळ् पलविन् ताळ् शिनैयिल् नेरुङ्गु* पीन तेट्ट पळम् शिदैन्दु मदुच्चोरियुम्* काळि च्चीराम विण्णगरे शेर्मिनीरे॥८॥	नाग के फन जैसे नितंब, बांस सी पतली बांहें, दूध से मीठे वचन, एवं भीनी महक की चोटी वाली मृगनयनी सत्यभामा ने प्रभु से इन्द्र का अलौकिक वृक्ष मंगवाया।उछलते गिलहरी ऊंचे ताड़ के वृक्षों से लाल फल गिराते हैं। कटहल के फलों से लदी भारी शाखायें टकराकर फलों को दबाते हुए उससे मृदु रस गिराती हैं। काळि शिरामा विण्णगर। हे लोगों ! वहां जाओ। **1185**

पिरैदङ्गु शडैयानै वलत्ते वैत्तु* पिरमनै त्तन् उन्दियिले तोट्रुवित्तु* करैदङ्गु वेल् तडङ्गण् तिरुवै मार्बिल् कलन्दवन् ताळ् अणैगिर्पीर्* कळुनीर् कूडि तुरैदङ्गु कमलत्तु त्तुयिन्ऱु* कैदै त्तोडारुम् पोँदि शोट्र च्चुण्णम् नण्णि* शिरैवण्डु कळि पाडुम् वयल् शूळ्* काळि च्चीराम विण्णगरे शेर्मिनीरे॥९॥	जटाधारी शिव एवं कमलासीन ब्रह्मा को अपने दायीं ओर रखते हुए कटारी सी नयनों एवं कमल सी लक्ष्मी को वक्षस्थल पर बैठाये हैं। इसतरह से प्रभु का दर्शन भक्तगन यहां कर सकते हैं। भौंरे कमल से अमृत पीकर स्कू पाइन के रजों को लिये सो जाते हैं। काळि शिरामा विण्णगर के चतुर्दिक सिंचित खेतों में भौंरे गाते एवं नाचते हैं। हे लोगों ! वहां जाओ। **1186**
शेँङ्गमलत्तयन् अनैय मरैयोर्* काळि च्चीराम विण्णगर् एन् शेँङ्गण् मालै* अङ्गमल त्तड वयल् शूळ् आलि नाडन्* अरुळ् मारि अरट्टमुक्कि अडैयार् शीयम्* कोँङ्गुमलर् क्कुळलियर् वेळ् मङ्गै वेन्दन्* कोँट्र वेल् परगालन् कलियन् शोँन्न* शङ्गमुग त्तमिळ् मालै पत्तुम् वल्लार्* तडङ्गडल् शूळ् उलगुक्कु त्तलैवर् तामे॥१०॥	काळि शिरामा विण्णगर में एकत्रित ब्रह्मा के श्वेत कमल जैसे दिव्य वैदिक ऋषिगण, कमल से भरे जलाशय एवं आलि नाडन के खेत, उदार वर्षा, शत्रुओं को शमन करनेवाले, अरि केशरी, मृदु महक की चोटी वाली के प्यारे, भुजाल धारण किये मंगै क्षेत्र के राजा परकाल कलियन के संगम तमिल की गीतमाला के मधुर दसक ः जो इसे कंठ कर लेंगे वे विस्तृत पृथ्वी एवं सागर के शासक सम्राट होंगे। **1187** टिप्पणीः आलि नाडन शब्द का अर्थ है नगर का मालिक यानी परकाल स्वामी । तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

25 वन्दु (1188 - 1197)

तिरूवालि 1

(यह स्थान शिरकाळि से 7 कि मी पर है। तिरूवालि एवं तिरूनगरी दो नगर आपस में करीब 3 कि मी दूर हैं और दोनों एकसाय तिरूवाली तिरूनगरी के नाम से जाने जाते हैं। Ramesh vol. 2 , pp 220 तिरूवाली में मूलावर श्री लक्ष्मी नरसिंह हैं एवं पांच नरसिंह क्षेत्रों मे से एक हैं। प्रभु वेदराजन एवं व्यालाली मानवलन के नामों से भी जाने जाते हैं। बैठे मुद्रा के मूलावर पश्चिमाभिमुखी हैंक्त यहां तिरूमंगैआळवार को प्रभु का दर्शन मिला था। यहां से 5 कि मी दूर तिरूकुरैयालूर में तिरूमंगैआळवार का जन्म हुआ था। यहां नाथ मुनि, रामानुज, मानवला मामुनि का भी आगमन हो चुका है। तिरूवाली तिरूनगरी से 3 कि मी दूर वेदराजपुरम में परकाल स्वामी ने पेरूमल एवं तायर को लूटा था तथा यहीं पेरूमल ने इन्हें अष्टाक्षर मंत्र की दीक्षा दी थी। इसीलिये यहां कावेरी को अष्टाक्षर गंगै भी कहते हैं। फागुन महीने में यहां ब्रह्मोत्सव मनाया जाता है। नाच्चियार कोईल जो तिरूनरैयूर भी कहा जाता है में तिरूमंगै आळवार को पेरूमल ने अष्टाक्षर मंत्र की विधिवत दीक्षा दी थी और यहां भगवान चार भुजा का न होकर मात्र दो भुजा से चक्र एवं शंख धारण किये हुए दो भुजा के स्वरूप में हीं भगवान हैं ।यह स्वरूप परकाल स्वामी को तिरूमंत्र देने के कारण है। Ramesh vol. 3 , pp 77।

तिरूकन्नापुरम में आळवार को अष्टाक्षर मंत्र की पूरी व्याख्या भगवान सोवरीराजा ने सुनायी थी। Ramesh vol. 2 , pp 65)

<table>
<tr><td>वन्दुनदडियेन् मनम् पुगुन्दाय्⋆
पुगुन्ददन् पिन् वणङ्गुम्⋆ एन्
शिन्दनैक्किनियाय्⋆ तिरुवे ! एन् आरुयिरे⋆
अन्दळिर् अणियार्⋆ अशोगिन् इळन्
तळिर्गळ् कलन्दु⋆ अवैयॆङ्गुम्
शॆन्दळल् पुरैयुम्⋆ तिरुवालि अम्माने ! ॥१॥</td><td>तिरूवाली के प्रभु ! हमारे धन संपत्ति ! सुन्दर अशोक वृक्ष के नये लाल पत्ते सर्वत्र अग्नि लौ की तरह दिख रहे हैं। आप हमारे जीवन एवं सांस हैं।इस नीच के हृदय में आपने स्थान चुना है। मेरा हृदय आपकी पूजा करता है एवं आप हमारे हृदय के चहेते हैं। 1188</td></tr>
<tr><td>नील् त्तड वरै⋆ मा मणि निगळ
किडन्ददु पोल्⋆ अरवणै
वेलैत्तलै क्किडन्दाय्⋆ अडियेन् मनत्तिरुन्दाय्⋆
शोलै त्तलै क्कण् मा मयिल् नडम् आड⋆
मळै मुगिल् पोन्ऱॆळुन्दु⋆ एङ्गुम्
आलै प्पुगै कमळुम्⋆ अणियालि अम्माने॥२॥</td><td>सुन्दर तिरूवाली के प्रभु ! ईख के गुड़ से उठने वाला धुंआ वर्षा के बादल की तरह सुगंधित बागों को ऊपर छाये हुए है जहां भारी संख्या में मोर नृत्य कर रहे हैं। आप गहरे सागर में शेष शय्या पर काले पर्वत पर के प्रदीप्त मणि की तरह सोये हैं। आज आप हमारे हृदय में पधार गये हैं। 1189</td></tr>
</table>

नॆन्नल् पोय् वरुम् एन्ऱॆन्ऱॆण्णि इरामै⋆ एन् मनत्ते पुगुन्ददु⋆ इम्मैक्कॆन्ऱिरुन्देन्⋆ एरि नीर् वळञ्जॆरुविल्⋆ शॆन्नॆल् कॊळै वरम्बॊरी इ⋆ अरिवार् मुगत्तॆळु वाळै पोय्⋆ करुम्बु अन्नर्कॊडणैयुम्⋆ अणियालि अम्माने॥३॥	सुन्दर तिरूवाली के प्रभु ! धान के खेत की वलै मछली शिकारी की बंशी से निकलकर खेत के पानी से बाहर गन्ने की झाड़ी में गिरती है। हमें बिना धोखा दिये "कल चले गये और कल आयेंगे" आप सदा के लिये हमारे हृदय में पधार गये हैं। **1190**
मिन्निल् मन्नु नुडङ्गिडै⋆ मडवार् तम् शिन्दै मरन्दु वन्दु⋆ निन् मन्नु शेवडिक्के⋆ मरवामै वैत्तायाल्⋆ पुन्नै मन्नु शॆरुन्दि⋆ वण् पॊळिल् वाय् अगन् पणैगळ् कलन्दु⋆ एङ्गुम् अन्नम् मन्नुम् वयल्⋆ अणियालि अम्माने॥४॥	सुन्दर तिरूवाली के प्रभु ! पुन्नै एवं शरून्दी पेड़ो से भरे बागों के जलाशयों में हंसों की जोड़ी विराजमान हैं। आपने तड़ित कटि वाली किशोरियों से मेरा मन हटाकर अपने चरणारविंद में बिना किसी त्रुटी के लगा दिया है। क्या आश्चर्य है ! **1191**
नीडु पन्मलर् माल्लैयिट्टु⋆ निन् इणैयडि तॊळुदेत्तुम्⋆ एन् मनम् वाड नी निनैयेल्⋆ मरम् एय्द मामुनिवा !⋆ पाडल् इन् ऒलि शङ्गिन् ओशै परन्दु⋆ पल् पणैयाल् मलिन्दु⋆ एङ्गुम् आडल् ओशैयरा⋆ अणियालि अम्माने॥५॥	सुन्दर तिरूवाली के प्रभु ! शंखनाद, मंत्रोच्चार, वाद्य ध्वनि एवं नृत्य कभी जहां बन्द नहीं होते। हे मुनि ! आपने सात वृक्षों को बाण से बेधा। मेरा हृदय बहुत सारे फूल एवं माला से सदा आपके चरण की पूजा करता है।विनती है, कभी हमें तड़पते नही त्यागियेगा। **1192**
कन्द मामलर् एट्टुम् इट्टु⋆ निन् कामर् शेवडि कै तॊळुदॆळुम्⋆ पुन्दियेन् मनत्ते⋆ पुगुन्दायै प्पोगल्वॊट्टेन्⋆ शन्दि वेळ्वि शडङ्गु नान्मरै⋆ ओदि ओदुवित्तादियाय् वरुम्⋆ अन्दणाळर् अरा⋆ अणियालि अम्माने॥६॥	सुन्दर तिरूवाली के प्रभु ! जहां अनादिकाल से वैदिक ऋषिगन मंत्रोच्चार, यज्ञ एवं पूजा विधि, पढ़ते पढ़ाते रह रहे हैं।मेरा हृदय आपके चरणारविंद की पूजा आठों दिशाओं से लाये गये सुगंधित पुष्पों से करता है।आप हमारे नीच हृदय में पधार गये हैं और मैं आपको कभी नहीं जाने दूंगा। **1193**
उलवु तिरै क्कडल् पळ्ळि कॊण्डु वन्दु⋆ उन् अडियेन् मनम् पुगुन्द⋆ अ– प्पुलव ! पुण्णियने !⋆ पुगुन्दायै प्पोगल्वॊट्टेन्⋆ निलवु मलर् प्पुन्नै नाळल् नीळल्⋆ तण् तामरै मलरिन् मिशै⋆ मलि अलवन् कण् पडुक्कुम्⋆ अणियालि अम्माने॥७॥	सुन्दर तिरूवाली के प्रभु ! जलाशयों के मध्य पुन्नै एवं नालल वृक्षों की छाया में कमल पर नर केंकड़ा आराम करता है। आपने सागर के शेषशय्या का त्याग कर इस नीच हृदय में रहने के लिये आ गये हैं। हमारे पावन कवि ! हम आपको कभी नहीं जाने देंगे। **1194**

शङ्गु तङ्गु तडङ्गडल्⋆ कडल् मल्लैयुळ् किडन्दाय्⋆ अरुळ् पुरि– न्दिङ्ङन्नुळ् पुगुन्दाय्⋆ इनि प्पोयिनाल् अरैयो !⋆ कॊङ्गु शॆण्बग मल्लिगै मलर् पुल्गि⋆ इन्निळ वण्डु पोय्⋆ इळन् तॆङ्गिन् तादळैयुम्⋆ तिरुवालि अम्माने॥८॥	सुन्दर तिरूवाली के प्रभु ! जहां मृदु गुंज वाली मधुमक्खियां सेनवकम एवं चमेली फूलों का अमृत चूसती रहती हैं और तब नारियल कोपलों के रज लपेट लेती हैं। गहरे सागर एवं कडलमल्लै में शयन करने वाले प्रभु ! आज आप हमारे हृदय में गौरव के साथ पधारे हैं। मुझे छोड़ने का प्रयास कीजिये तो मैं चुनौती देता हूं। **1195**
ओदि आयिर नाममुम् पणि– न्देत्ति⋆ निन् अडैन्देर्कु⋆ ऒरु पॊरुळ् वेदिया ! अरैया !⋆ उरैयाय् ऒरु माट्रम् एन्दाय् !⋆ नीदि आगिय वेद मा मुनि– याळर्⋆ तोट्रम् उरैत्तु⋆ मट्रवर्– क्कादियाय् इरुन्दाय् !⋆ अणियालिलम्माने॥९॥	सुन्दर तिरूवाली के प्रभु ! वैदिक ऋषियों से सब विचारों के स्रोत के रूप में जने गये एवं सबों के हृदय में आदि कारण के रूप में विराजमान! वैदिक प्रभु ! नटखट प्रभु ! मेरे प्रभु ! हमारा हृदय आपके हजार नामों से पूजा एवं समर्पण करता है।विनती है, शब्दों एवं उनके अर्थ को स्पष्ट कीजिये। **1196**
पुल्लि वण्डरैयुम् पॊऴिल् पुडै शूऴ्⋆ तॆन्नालि इरुन्द मायनै⋆ कल्लिन् मन्नु तिण् तोळ्⋆ कलियन् ऒलिशॆय्द⋆ नल्ल इन्निशै मालै⋆ नालुम् ओर् ऎन्दुम् ऒन्रुम् नविन्रु⋆ ताम् उडन् वल्लराय् उरैप्पार्क्कु⋆ इडम् आगुम् वान् उलगे॥१०॥ ॥ तिरुमङ्गैयाळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं ॥	मजबूत भुजाओं वाले कलियन के ये मधुर तमिल गीतमाला मधुमक्खी गुंजते सुगंधित बागों से घिरे दक्षिणी तिरूवाली में रहने वाले आश्चर्यमय प्रभु की गौरव गाथा है। जो इसको कंठ कर लेगा वह देवों के लोक में स्थान पायेगा। **1097** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

26 तूविरिय (1198 - 1207)

तिरूवालि 2 (तिरूवाली तिरूनगरी Ramesha vol. 2 । 220)

तूविरिय मलर् उळक्कि⋆ त्तुणैयोडुम् पिरियादे⋆ पूविरिय मदु नुगरुम्⋆ पॅारि वरिय शिरु वण्डे !⋆ तीविरिय मऱैवळर्क्कुम्⋆ पुगऴ् आळर् तिरुवालि⋆ एवरि वॅम् शिलैयानुक्कु⋆ एन् निलैमै उरैयाये॥१॥	प्यारे सहगामिनी को कभी न छोड़ने वाले, प्रस्फुटित कमल पर मंडराते हुये कलियों का रस पीने वाले चित्तकवरा भौंरा ! धनुषधारी प्रभु के पास जाकर मेरी स्थिति बताओ। आप यज्ञाग्नि की रक्षा करते हुए तिरूवाली में रहते हैं। 1198
पिणि अविऴुम् नऱु नील⋆ मलर् किऴिय प्पॅडैयोडुम्⋆ अणिमलर्मेल् मदु नुगरुम्⋆ अऱु काल शिऱु वण्डे !⋆ मणि कॅऴुनीर् मरुङ्गलरुम्⋆ वयल् आलि मणवाळन् पणि अऱियेन्⋆ नी शॅन्ऱु⋆ एन् पयलै नोय् उरैयाये॥२॥	नीले प्रस्फुटित कुमुद के पंखुड़ियों को झकझोरते, सहगामिनी के साथ रसपान करने वाले छः पैरों वाला भौंरा ! कमल के झुरमुट मध्य रहने वाले वयल आली (यह तिरूवाली का दूसरा नाम है) के दूलहे के पास जाओ।उनकी ईच्छा का मुझे कोई ज्ञान नहीं है। उन्हें हमारा पीले होते रोग के बारे में बताओ। 1199
नीर् वानम् मण्ऎरि काल्आय्⋆ निन्ऱ नॅडुमाल्⋆ तन् तार् आय नऱुन् तुळवम्⋆ पॅरुम् तगैयेर्करुळाने⋆ शीर् आरुम् वळर् पॅाऴिल् शूऴ्⋆ तिरुवालि वयल् वाऴुम्⋆ कूर्वाय शिऱु कुरुगे !⋆ कुऱिप्परिन्दु कूऱाये॥३॥	जल, आकाश, पृथ्वी, अग्नि, एवं वायु के रूप में रहने पर भी प्रभु इन सबों से पृथक हैं। रोते हुए मांगने पर भी आपने अपनी तुलसी की माला देने से मना कर दिया। उपजाऊ सिंचित बागों के मध्य आप तिरूवाली में रहते हैं। तीक्ष्ण चोंच वाले बगुला ! पता करो मेरे लिये प्रभु क्या सोचते हैं ? 1200
तानाग निनैयानेल्⋆ तन् निनैन्दु नैवेर्कु⋆ ओर् मीन् आय कॅाडि नॅडु वेळ्⋆ वलि शॅय्य मॅलिवेनो⋆ तेन्वाय वरि वण्डे !⋆ तिरुवालि नगर् आळुम्⋆ आन् आयर्कॅन् उऱुनोय्⋆ अऱिय च्चॅन्ऱुरैयाये॥४॥	स्वयं आप तो हमारे लिये उत्सुक हैं नहीं। अकेली मैं आपके लिये लालायित एवं उदास होती रहती हूं।मत्स्तय चिह्न वाले प्रभु के लिये दुबली होना ठीक है क्या? गोपवंश के नाथ एवं सार्वभौंा प्रभु तिरूवाली में रहते हैं। मधु लिपटे जीभ वाले भौंरे ! प्रभु को हमारी दर्दभरी स्थिति से अवगत कराओ । 1201
वाळ् आय कण् पनिप्प⋆ मॅन् मुलैगळ् पॅान् अरुम्ब⋆ नाळ् नाळुम्⋆ निन् निनैन्दु नैवेर्कु⋆ ओ ! मण् अळन्द ताळाळा ! तण् कुडन्दै नगर् आळा !⋆ वरै एडुत्त तोळाळा⋆ एन् तनक्कोर्⋆ तुणैयाळन् आगाये॥५॥	पृथ्वी के मापने वाले चरण ! कुडण्दे के स्वामी ! पर्वत को ऊंचा उठाने वाली भुजायें !आइये एवं हमारे प्यारे साथी बनिये।मेरी कटारी नयनों से अश्रु बह रहे हैं। मेरे कोमल उरोज के रंग उड़ गये हैं। हर दिन आपके बारे में मैं अकेली सोचती हूं। कब आप हमारी वाहों में आयेंगे ? 1202

तार् आय तण् तुळवम्⋆ वण्डुळुद वरै मार्बन्⋆ पोर् आनै क्कॉम्बॊशित्त⋆ पुळ् पागन् एन् अम्मान्⋆ तेर् आरुम् नॆडु वीदि⋆ त्तिरुवालि नगर् आळुम्⋆ कार् आयन् एन्नुडैय⋆ कन वळैयुम् कवर्वानो॥६॥	पर्वत समान वक्षस्थल पर भौंरे घुसे हुए शीतल तुलसी की माला धारण करने वाले प्रभु ! हाथी के दांत उखाड़ने वाले प्रभु ! गरूड़ की सवारी करने वाले एवं रथ दौड़ने योग्य विस्तृत वीथियों के तिरूवाली पर शासन करने वाले प्रभु !आपके लिये क्या यह उचित है कि आप हमारे कंगनों की लेने की ईच्छा रखते हैं ? **1203**
कॊण्डरव त्तिरै उलवु⋆ कुरै कडल्मेल् कुलवरै पोल्⋆ पण्डरविन् अणै क्किडन्दु⋆ पार् अळन्द पण्वाळा !⋆ वण्डमरुम् वळर् पॊळिल् शूळ्⋆ वयल् आलि मैन्दा !⋆ एन् कण् तुयिल् नी कॊण्डायक्कु⋆ एन् कन वळैयुम् कडवेनो॥७॥	पुरा काल में नाग पर समुद्र में शयन करनेवाले स्वरूप के प्रभु! सुन्दर पृथ्वी को दो लंबे पगों से माप लेने वाले प्रभु ! गुंजायमन भौंरे वाले नूतन पुष्प वृक्षों से घिरे मंदिर तथा वयल आलि के राजकुमार ! आपने हमारी नींद ले ली। क्या हमारी बांह का गहना भी ले लेंगे ? **1204**
कुयिल् आलुम् वळर् पॊळिल् शूळ्⋆ तण् कुडन्दै क्कुडम् आडी⋆ तुयिलाद कण् इणैयेन्⋆ निन् निनैन्दु तुयर्वेनो !⋆ मुयल् आलुम् इळ मदिक्के⋆ वळै इळन्देर्कु⋆ इदु नडुवे वयल् आलि मणवाळा !⋆ कॊळ्वायो मणि निरमे॥८॥	पात्र नर्तक !उपजाऊ एवं कोयेल के बागों से घिरे कुडन्दै के प्रभु ! सदा आपके बारे में सोचते हुए हमारी आंखें सो नहीं पाती। लोमड़ी से अपवित्र बने हुए चांद की शीतल किरणों ने हमारे कंगन चुरा लिये हैं। इन सबों के होते हुए आप क्या हमारा चंदन लेप भी चुरा लेंगे ? उपजाऊ तिरूवाली के दूल्हे राजा! **1205**
निलै आळा ! निन् वणङ्ग⋆ वेण्डाये आगिलुम्⋆ एन् मुलै आळ ऒरुनाळ्⋆ उन् अगलत्ताल् आळाये⋆ शिलै आळा ! मरम् एय्द तिरल् आळा !⋆ तिरुमॆय्य मलैयाळ⋆ नी आळ⋆ वळै आळ माट्टोमे॥९॥	शक्तिशाली निपुण धनुर्धारी ! तिरूमेय्यम (Ramesh vol. 4 pp 254 पुडुकोट्टा एवं कराइकुडी के बीच में रेल स्टेशन से **2** कि मी पर है। पुडुकोट्टा से **20** कि मी रोड से है।यहां मूलावर खड़े अवस्था में पूर्वाभिमुख हैं और सत्यगिरीनाथन या सत्य मूर्त्ति के नाम से जाने जाते हैं) में सोने वाले ! इसके बावजूद भी कि आप हमारे सच्चे प्रेम को तिरस्कृत करने का निर्णय ले चुके हैं तब भी एक दिन आकर अपने विशाल वक्षस्थल को हमारे उभरे उरोजों से स्पर्श कराइये। हमारे खोये कंगन हमें कोई चिंता नहीं देते। **1206**
मैयिलङ्गु करुङ्गुवळै⋆ मरुङ्गलरुम् वयल् आलि⋆ नॆय्यिलङ्गु शुडर् आळि प्पडैयानै⋆ नॆडुमालै⋆ कैयिलङ्गु वेल् कलियन्⋆ कण्डुरैत्त तमिळ् मालै⋆ ऐयिरण्डुम् इवै वल्लार्क्कु⋆ अरु विनैगळ् अडैयावे॥१०॥	नीले कुमुद से भरे जलाशयों एवं उपजाऊ तिरूवाली के भुजाली वाले कलियन राजा ने तीक्ष्ण चक्र को धारन करने वाले प्रभु के दर्शन होने के फलस्वरूप इन तमिल गीतमाला को गाया है। जो इन पदों को याद कर लेंगे वे सभी दुष्कर्मों से मुक्त रहेंगे। **1207** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

27 कळवन्गोल् (1208 - 1217)

तिरूवाली 3

कळ्वन्गोॅल् यान् अरियेन्⋆ करियान् ऑरु काळै वन्दु⋆ वळ्ळि मरुङ्गुल्⋆ एन्रन् मड मानिनै प्पोदवॅन्रु⋆ वॅळ्ळि वळै क्कै प्पट्र प्पॅट्र⋆ तायरै विट्टगन्रु⋆ अळ्ळलम् पूङ्गळनि⋆ अणियालि पुगुवर् कॉलो ! ॥१॥	क्या आप चोर हैं ? मुझे नहीं पता। श्यामल वृषभ सा किशोर हमारी कृश कटि एवं मृगनयनी बेटी के पास आते हुए बोला 'चलो' एवं उसके कंगन वाले हाथ को अपने हाथों में पकड़ लिया। हमें, अपनी मां को त्याग कर वह चली गयी। क्या वे कमल एवं कुमुद से भरे जलाशयों एवं खेतों से घिरे सुन्दर तिरूवाली में प्रवेश कर गये होंगे ? हाय! 1208
पण्डिवन् आयन् नङ्गाय् !⋆ पडिरन् पुगुन्दु⋆ एन् मगळ् तन् तॉण्डैयञ्जॅङ्गनिवाय्⋆ नुगर्न्दानै उगन्दु⋆ अवन् पिन् कॅण्डैयॉण् कण् मिळिर⋆ क्किळिपोल् मिळट्रि नडन्दु⋆ वण्डमर् कानल् मल्गुम्⋆ वयल् आलि पुगुवर् कॉलो॥२॥	महिलाओं ! पहले आप पशु चोर थे। आज आप घुसकर हमारी बेटी के लाल बैर से होंठ के मधु को चूस गये। सरल एवं चमकती आंखों वाली आपके पीछे सुग्गे की तरह पुचकारती गयी। क्या वे मधुमक्खी से गुंजायमान मीठे बागों एवं उपजाऊ तिरूवाली में प्रवेश कर गये होंगे ? हाय! 1209
अञ्जुवन् वॅञ्जॉल् नङ्गाय् !⋆ अरक्कर् कुल प्पावै तन्नै⋆ वॅञ्जिन मूक्करिन्द⋆ विरलोन् तिरम् केट्किल् मॅय्ये⋆ पञ्जियल् मॅल्लडि⋆ एम् पणै तोळि परक्कळिन्दु⋆ वञ्जियन् तण् पणै शूळ्⋆ वयल् आलि पुगुवर् कॉलो॥३॥	महिलाओं ! भयावनी स्थिति है। राक्षसकुल की चहेती नारी ने श्यामल प्रभु के गुस्से में अपनी नाक गंवा बैठी। प्रभु की शक्ति के बारे में सुनकर हमें डर लगता है। रूई के समान कोमल पैर एवं बांस सी पतली बांह वाली मेरी बेटी अपने को प्रभु के लिये न्योछावर कर चुकी है। क्या वे लताओं, वृक्षों एवं बांसवाड़ियों से घिरे उपजाऊ तिरूवाली में प्रवेश कर गये होंगे ? हाय! 1210
एदु अवन् तॉल् पिरप्पु⋆ इळैयवन् वळै ऊदि⋆ मन्नर् तूदुवन् आयवन् ऊर्⋆ शॉल्वीर्गळ् ! शॉलीर् अरियेन्⋆ मादवन् तन् तुणैया नडन्दाळ्⋆ तडम् शूळ् पुरविल्⋆ पोदु वण्डाडु शॅम्मल्⋆ पुनल् आलि पुगुवर् कॉलो॥४॥	हमें आपके पूर्वचरित्र के बारे में कुछ भी पता नहीं है। आप शंख बजाते थे एवं सम्मानीय जनों का संवाद ले जाते थे। अगर कोई जानता है कि आप कहां रहते हैं, तो विनती है, मुझे बताये। मेरी बेटी भगवान पर भरोसा कर आपके साथ निकल गयी।क्या वे जलाशयों वाले एवं जहां कमल फूलों पर मधुमक्खियां गाती नाचती हैं तिरूवाली में प्रवेश कर गये होंगे ? हाय! 1211

ताय् एनै एन्निरङ्गाळ्* तडन् तोळि तनक्कमैन्द* मायनै मादवनै* मदित्तेन्नै अगन्ऱ इवळ्* वेय् अन तोळ् विशिरि* प्पैडै अन्नम् एन नडन्दु* पोयिन पूङ्गोडियाळ्* पुनल् आलि पुगुवर् कोंलो॥५॥	लंबी बाहों वाली मेरी बेटी ने हमें अपनी मां की तरह लिया ही नहीं।नये अजनवी सखा पर विश्वास कर मेरी कृश कटि बेटी ने मेरा त्याग कर दिया एवं बांस सी बाहों को झूलाते हुए हंस की जोड़ी की तरह उनके पीछे चलती चली गयी। क्या वे जलसिंचित तिरूवाली में प्रवेश कर गये होंगे ? हाय! **1212**
एन् तुणै एन्रॆडुत्तेर्कु* इरैयेनुम् इरङ्गिड्ऱिलळ्* तन् तुणैयाय एन्रन्* तनिमैक्कुम् इरङ्गिड्ऱिलळ्* वन् तुणै वानवर्क्काय्* वरम् शॆड्रङ्गत्तुरैयुम्* इन् तुणैवन्नोडुम् पोय्* एळिल् आलि पुगुवर् कोंलो॥६॥	मैंने उसका पालन पोषण साथ देने के लिये किया था। हाय ! यह विचार उसके पास है ही नहीं। मुझे उसका साथ छूट गया उसे इस बात का भी कोई ख्याल नहीं है। देवों को साथ देने वाले प्रभु ने वरदान रक्षित लंका को नष्ट कर दिया। आप अरंगम में रहते हैं। क्या दोनों साथ होकर दिव्य नगर तिरूवाली में प्रवेश कर गये होंगे ? हाय! **1213**
अन्नैयुम् अत्तनुम् एन्ऱु* अडियोमुक्किरङ्गिड्ऱिलळ्* पिन्नै तन् कादलन् तन्* पॆरुन् तोळ् नलम् पेणिनळाल्* मिन्नैयुम् वञ्जियैयुम्* वॆन्ऱिलङ्गुम् इडैयाळ् नडन्दु* पुन्नैयुम् अन्नमुम् शूळ्* पुनल् आलि पुगुवर् कोंलो !॥७॥	हम लोग उसकी मां बाप की तरह थे। हाय ! उसे नप्पिनाय के प्रेमी की लंबी बाहों का आलिंगन पसंद है। तड़ित रेखा एवं लता सी पतली कमर वाली पुन्नै वृक्षों एवं हंसो की जोड़ी वाले स्थान पर चली गयी। क्या वे जल सिंचित तिरूवाली में प्रवेश कर गये होंगे ? हाय! **1214**
मुड्रिलुम् पैङ्गिळियुम्* पन्दुम् ऊशलुम् पेशुगिन्ऱ* शिड्रिल् मॆन् पूवैयुम्* विट्टगन्ऱ शॆळुङ्गोदै तन्नै* पॆड्रिलेन् मुड्रिळैयै* प्पिरप्पिलि पिन्ने नडन्दु* मॆड्रॆल्लाम् कैदॊळ प्पोय्* वयल् आलि पुगुवर् कोंलो॥८॥	पंखा, सुग्गा, गेंद, झूला, एवं पिंजरा में बात करती मैना, सबों को छोड़ चली गयी। मैंने माला एवं गहनों से आभूषित दुल्हन तो नहीं पैदा की थी। संसार से पूजित अज्ञात जन्म वाले के साथ चली गयी। क्या साथ चलते हुए वे उपजाऊ तिरूवाली में प्रवेश कर गये होंगे ? हाय! **1215**
कावियम् कण्णि एण्णिल्* कडि मा मलर् प्पावै ऑप्पाळ्* पावियेन् पॆड्रमैयाल्* पणै त्तोळि परक्कळिन्दु* तूवि शेर् अन्नम् अन्न नडैयाळ्* नॆडुमालोडुम् पोय्* वावियन् तण् पणै शूळ्* वयल् आलि पुगुवर् कोंलो॥९॥	जरा सोचो।मेरी कमलनयनी बेटी कमल सी लक्ष्मी थी। मुझ पापिन के कारण बांस सी पतली बाहों वाली ने अपना नियंत्रण खो दिया है। हंस की सुन्दर चाल वाली अपने चिरकालीन प्रेमी के साथ चली गयी। क्या वे शीतल जलाशयों से घिरे खेतों वाले तिरूवाली में प्रवेश कर गये होंगे ? हाय! **1216**
ताय् मनम् निन्ऱिरङ्ग* त्तनिये नॆडुमाल् तुणैया* पोयिन पूङ्गोडियाळ्* पुनल् आलि पुगुवर् एन्ऱु* काय् शिन वेल् कलियन्* ऑलिशॆय् तमिळ् मालै पत्तुम्* मेविय नॆञ्जुडैयार्* तञ्जम् आवदु विण्णुलगे॥१०॥	दुर्दांत भाला धारी राजा कलियन के तमिल दसक गीतों की यह माला एक मां की व्यथा का है जिसकी बेटी नेडुमल के साथ चली गयी और वे लोग सरोवर वाले तिरूवाली में प्रवेश कर गये होंगे। जो इसे कंठ कर लेगा वह आकाश जगत का शासक होगा। **1217** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

28 नन्दाविळक्कु (1218 - 1227)

तिरूनांङ्गूर मणिमाडक्कोयिल्

(तिरूनांगुर के पास ही तिरूमंगै आळवार का अवतार स्थल तिरूक्कुरैयालुर है। तिरूनांगुर शिरकाळि से 10 कि मी पर है। जैसे कांचीपुरम पल्लव वंश का मंदिर नगर है, तथा आळवार तिरूनगरी पांड्या वंश का मंदिर नगर है, वैसे ही नांगुर चोला वंश का मंदिर नगर है। Ramesh vol. 2 , pp 159 । इस क्षेत्र में 11 विष्णु मंदिर एवं 11 शिव मंदिर हैं।वैष्णवों के बीच साधारण बोलचाल की भाषा में 'कोईल' का मतलब 'श्रीरंगम का मंदिर' होता है, तथा 'तिरूमलय' का मतलब 'तिरूपति' होता है, एवं 'पेरूमाल कोईल' का मतलब 'वरदराज मंदिर कांचीपुरम' होता है। तीनो प्रसिद्ध मंदिरों के भगवान नांगुर के तीन मंदिरों में क्रमशः इस तरह हैं ः 1 तिरूतेतिरियाअंबळम श्रीरंगनाथार, 2 तिरूमणिकूडम कोइल वरदराज पेरूमल, 3 तिरूवेल्लकुळम अन्नन यानी श्रीनिवास पेरूमल। वैष्णवों के तत्वत्रय नांगुर के तीन भिन्न मंदिरों से संबंध रखते हैं। अष्टाक्षर मंत्र तिरूमंगैआळवार को नारायण पेरूमल से, द्वय मंत्र श्वेतराजा को अन्नन पेरूमल से, एवं चरम मंत्र पार्थम पल्ली में अर्जुन को दिया गया था। ऐसी मान्यता है कि नांगुर के 11 दिव्य देश जो पलास वन के नाम से जाने जाते हैं प्रलय काल में ज्यों के त्यों बिना कोई क्षति के स्थित रहते हैं। यह क्षेत्र उत्तर में मणियार, दक्षिण में श्रीरंगम, पूरब में पुम्पुहार समुद्रम, एवं पश्चिम में तरगमपदी के भीतर का है।

नांगुर के दिव्य देशों में से एक दिव्य देश मणिमाड कोईल है जहां के भगवान 'नारायण' तथा 'नंदा विलक्कु' के नाम से जाने जाते हैं, और पूर्वाभिमुख बैठे अवस्था में हैं।)

‡नन्दा विळक्के ! अळत्तर्करियाय् !⋆ नर नारणने ! करु मा मुगिल् पोल् एन्दाय्⋆ एमक्के अरुळाय् एन निन्रु⋆ इमैयोर् परवुम् इडम्⋆ एत्तिशैयुम् कन्दारम् अन्तेन् इशै पाड माडे⋆ कळि वण्डु मिळट्र निळल् तुदैन्दु⋆ मन्दारम् निन्रु मण मल्गु नाङ्गूर्⋆ मणिमाड क्कोयिल् वणङ्ङेन् मनने॥१॥	खड़े देवजन पुकारते हैं 'नन्दा विळक्कु, शाश्वत प्रकाश पुंज, अगम्य, नर नारायण, मेघ वर्ण के प्रभु, कृपा कीजिये'। आपने नांगुर में निवास किया जहां मधुमक्खियां आठों दिशाओं से देवगंधारी राग में गाती हैं एवं भौंरे छाया साथी की तरह अनुकरण करते हुए पीछे पीछे चलते हैं। मंदार वृक्ष चतुर्दिक सुगंध विखेरती हैं। हे मन ! मणिमाड क्कोईल में पूजा अर्पित करो। **1218**

मुदलै त्तनि मा मुरण् तीर अन्रु* मुदु नीर् त्तडत्तु च्चेंङ्गण् वेळम् उय्य* विदलैत्तलै च्चेंन्रदरके उदवि* विनै तीरत्त अम्मान् इडम्* विण्णवुम् पदलै क्कबोदत्तॊळि माड नॆट्टि* पवळ क्कॊळुङ्गाल्ल पैङ्गाल् पुरवम्* मदलै त्तलै मॆन् पॆडै कूडु नाङ्गूर्* मणिमाड क्कोयिल् वणङ्गॆन् मनने ! ॥२॥	पुरा काल में प्रभु उस सरोवर में आये जहां हाथी को ग्राह ने जबड़े में पकड़ रखा था। आपने तत्क्षण व्यथित हाथी की रक्षा कर उसे अपनी सेवा में स्वीकार कर लिया। आप नांगुर में निवास करते हैं जहां कलश शिखर एवं कबूतरों के घोसले से भरे आकाश जैसी ऊंची अटारियां हैं।धीमी आवाज करते, मूंगे जैसे लाल शाखाओं के पैर वाले कबूतर खंभों पर उतरकर शरणागत का संकेत करते हैं। हे मन ! मणिमाड क्कोईल में पूजा अर्पित करो। **1219**
कॊलै प्पुण् तलै क्कुन्रम् ऑन्रुय्य* अन्रु कॊडु मा मुदलैक्किडर् शॆय्दु* कॊङ्गार् इलै प्पुण्डरीगत्तवळ् इन्बम्* अन्बो– डणैन्दिट्ट अम्मान् इडम्* आळ अरियाल् अलैप्पुण्ड यानै मरुप्पुम् अगिल्लुम्* अणि मुत्तुम् वॆण् शामरैयोडु* पॊन्नि मलै प्पण्डम् अण्ड त्तिरै उन्दु नाङ्गूर्* मणिमाड क्कोयिल् वणङ्गॆन् मनने॥३॥	ग्राह को दंड दे भारी पैर वाले यातनाग्रस्त हाथी की रक्षा की। आप कमल जैसी लक्ष्मी का आलिगंन कर आनन्द विखेरते हैं। आप नांगुर में निवास करते हैं जहां पोन्नी एवं कावेरी नदियां प्रभु की अर्चना हेतु अपने प्रवाह में हाथी दांत, सुगंधित अगिल की लकड़ी, श्वेत टहनियां, मोती एवं अनय कीमती पर्वतीय पदार्थ बहा ले आते हैं। हे मन ! मणिमाड क्कोईल में पूजा अर्पित करो। **1220**
शिरैयार् उवण प्पुळ ऑन्रेरि* अन्रु दिशै नान्गुम् नान्गुम् इरिय* शॆरुविल् करैयार् नॆडु वेल् अरक्कर् मडिय* कडल् शूळ इलङ्गै कडन्दान् इडम् तान्* मुरैयाल् वळर्क्किन्र मु त्तीयर् नाल् वेदर्* ऐ वेळ्वि आरङ्गर् एळिन् इशैयोर्* मरैयोर् वणङ्ग प्पुगळ् एय्दु नाङ्गूर्* मणिमाड क्कोयिल् वणङ्गॆन् मनने ! ॥४॥	पुरा काल में प्रभु ने पंखवाले गरूड़ की सवारी पर युद्धक्षेत्र में जाकर भालों से लैस आठों दिशाओं में फैले राक्षसों का अंत किया एवं टापू नगर लंका को घेर लिया। आप नांगुर में निवास करते हैं जहां यशस्वी वैदिक ऋषिगण तीन अग्नि, चार वेद, पांच यज्ञ, छः आगम, एवं सात स्वर की साधना, अर्चना तथा पूजा वैदिक नियमों से करते हैं। हे मन ! मणिमाड क्कोईल में पूजा अर्पित करो। **1221**
इळैयाडु कॊङ्गै त्तलै नञ्जम् उण्डिट्टु* इळङ्गन्रु कॊण्डु विळङ्गाय् एरिन्दु* तळै वाड वन् ताळ कुरुन्दम् ऑशित्तु* तडन् तामरै प्पॊय्गै पुक्कान् इडन्दान्* कुळैयाड वल्लि क्कुलम् आड माडे* कुयिल् कूव नीडु कॊडि माडम् मल्गु* मळैयाडु शोलै मयिल् आलु नाङ्गूर्* मणिमाड क्कोयिल् वणङ्गॆन् मनने॥५॥	प्रभु ने पुरा काल में आभूषित राक्षसी के स्तन से जहर पिया, दुष्ट बछड़े को कूर ताड़ पेड़ पर बजाड़ कर दोनों का नाश किया, मरूदु पेड़ों के बीच सरकते हुए जाकर उनको नष्ट किया, एवं कमल सरोवर में प्रवेश किया। आप नांगुर में निवास करते हैं जहां मजबूत पेड़ों की शाखायें झूमती हैं, तथा उनके ऊपर लतायें झूमती हैं, कोयल गाते हैं, मोर नाचते हैं, बादल नगाड़ा बजाते हैं, एवं अटारियों के शिखर पर फहरती पताकायें समागम का संदेश देती हैं। हे मन ! मणिमाड क्कोईल में पूजा अर्पित करो। **1222**

पण् नेर् मॊळि आयच्चियर् अञ्ज वञ्ज⋆ पगु वाय् क्कळुदुक्किरङ्गादु⋆ अवळ् तन् उण्णा मुलै मट्रवळ् आवियोडुम्⋆ उडने शुवैत्तान् इडम्⋆ ओङ्गु पैन् ताळ् कण्णार् करुम्बिन् कळै तिन्ऱु वैगि⋆ कळुनीरिल् मूळ्गि च्चॆळु नीर् त्तडत्तु⋆ मण् एन्दिळ मेदिगळ् वैगु नाङ्गूर्⋆ मणिमाड क्कोयिल् वणङ्गॆन् मनने॥६॥	पुरा काल में मोटे होंठ एवं विषैले स्तन वाली भयानक राक्षसी पूतना से पाले गये आप एक शिशु थे। जब आपने खतरनाक स्तन से बिना कोई क्षति के दूध पीते हुए उसके प्राण भी चूस लिये तो मृदु भाषी तथा धीमी आवाज में बोलनी वाली सुन्दर गोपियां यह देखकर डर गयी। आप नांगुर में निवास करते हैं जहां भैंस के बछड़े बढ़े हुए गन्ने की कोपलों को तोड़ते कमल ताल मे घुस जाते एवं पंकिल मिट्टी लिपटे वदन बाहर आते। हे मन ! मणिमाड क्कोईल में पूजा अर्पित करो। **1223**
तळै क्कट्टविळ् तामरै वैगु पॊय्गै⋆ तडम् पुक्कडङ्गा विडम् काल् अरवम्⋆ इळैक्क त्तिळैत्तिट्टदन् उच्चि तन्मेल्⋆ अडि वैत्त अम्मान् इडम्⋆ मा मदियम् तिळैक्कुम् कॊडि माळिगै शूळ् तॆरुविल्⋆ शॆळु मुत्तु वॆण्णॆर्क्कॆन च्चॆन्ऱु⋆ मुन्रिल् वळैक्कै नुळै प्पावैयर् माऱु नाङ्गूर्⋆ मणिमाड क्कोयिल् वणङ्गॆन् मनने॥७॥	पुरा काल में कमल ताल में प्रवेश कर प्रभु ने कमल पंखुडियों को खोला एवं अपने चरण को विष वमन करते नाग के फन पर रख दिया। आप नांगुर में निवास करते हैं जहां अटारियों के ऊपर पताकायें चांद से खेलती हैं कंगन वाली नारियां वीथियों में मोतियों को झूलाती चावल बदलने के लिये घूमती हैं। हे मन ! मणिमाड क्कोईल में पूजा अर्पित करो। **1224**
तुळैयार् करु मॆन् कुळल् आयच्चियर् तम्⋆ तुगिल् वारियुम् शिट्रिल् शिदैत्तुम्⋆ मुट्रा इळैयार् विळैयाट्टॊडु कादल् वॆळ्ळम्⋆ विळैवित्त अम्मान् इडम्⋆ वेल् नॆडुङ्गण् मुळै वाळ् एयिट्रु मडवार् पयिट्रु⋆ मॊळि केट्टिरुन्दु मुदिराद इन् शॊल्⋆ वळै वाय किळ्ळै मऱै पाडु नाङ्गूर्⋆ मणिमाड क्कोयिल् वणङ्गॆन् मनने॥८॥	प्रभु ने पुरा काल में काली लटों वाली सुन्दर किशोरियों के वस्त्र चुराकर उनके बालू के कीड़ा भवन को नष्ट कर दिया तथा प्रेम की बाढ़ से भर दिया। आप नांगुर में निवास करते हैं जहां मत्स्य नयना, जगमग दांतों वाली नारियां वैदिक ऋचायें पढती हैं, जिसे सुनकर, घुमावदार चोंच के उनके सुग्गे, मीठे स्वर में उनका अनुकरण करते हैं। हे मन ! मणिमाड क्कोईल में पूजा अर्पित करो। **1225**
विडैयोड वॆन्रायच्चि मॆन् तोळ् नयन्द⋆ विगिर्दा ! विळङ्गु शुडर् आळि एन्नुम्⋆ पडैयोडु शङ्गॊन्रुडैयाय् ! एन निन्ऱु⋆ इमैयोर् परवुम् इडम्⋆ पैन्दडत्तु प्पॆडैयोडु शॆङ्गाल अन्नम् तुगैप्प⋆ तॊगै प्पुण्डरीगत्तिडै च्चॆङ्कळुनीर्⋆ मडैयोड निन्ऱु मदु विम्मु नाङ्गूर्⋆ मणिमाड क्कोयिल् वणङ्गॆन् मनने॥९॥	देवजन कहते हैं कि आप पृथक पृथक हैंः 'प्रभु जिन्होंने नप्पिनाय से आलिंगन के लिये सात वृषभों का शमन किया, तथा प्रभु जो चक शंख धारण करते हैं।' नांगुर में वे आपकी पूजा करते हैं जहां लाल पैर वाले बगुला की जोड़ी कमल से खेलते हैं, तथा लाल कुमुद उनके बीच पंखुड़ियों के झड़ने के बावजूद भी मधु बहाते हैं।हे मन ! मणिमाड क्कोईल में पूजा अर्पित करो। **1226**

<table>
<tr>
<td>वण्डार् पॊंळिल् शूळ्न्दळगाय नाङ्गूर्⋆
मणिमाड क्कोयिल् नॆंडुमालुक्कु⋆ एन्रुम्
तॊंण्डाय तॊंल् शीर् वयल् मङ्गैयर् कोन्⋆
कलियन् ऑलिशॆंय् तमिळ् मालै वल्लार्⋆
कण्डार् वणङ्ग क्कळि यानै मीदे⋆
कडल् शूळ् उलगुक्कॊरु कावलराय्⋆
विण् तोय् नॆंडु वॆंण् कुडै नीळलिन् कीळ्⋆
विरि नीर् उलगाण्डु विरुम्बुवरे॥१०॥</td>
<td>उपजाऊ मंगै क्षेत्र के सदा यशस्वी राजा कलियन के तमिल पदों की यह गीतमालिका मधुमक्खी गूंजते बागों से घिरे नांगुर के मणिमाड क्कोईल के प्रभु की प्रशस्ती गान के लिये है। जो इसका गान करेंगे वे समुद्र से घिरे पृथ्वी का आकाश से ऊंचे चंद्र सा श्वेत छत्र को धारन करने वाले राजा बनकर आनंद उठायेंगे। 1227

तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।</td>
</tr>
</table>

श्रीमते रामानुजाय नमः

29 शलम कोण्ड (1228 - 1237)

तिरूनाङ्गूर् वैगुन्द विण्णगरम्

(तिरूनांगुर के 11 दिव्य देशों में से यह एक है एवं यहां वैकुण्ठनाथन भगवान पार्श्व में दोनों लक्ष्मी के साथ पूर्वाभिमुख हो बैठे हैं। Ramesh vol. 2 / 201)

शलम् कॊण्ड इरणियनदगल् मार्वम् कीण्डु⋆ तडङ्गडलै क्कडैन्दमुदम् कॊण्डुगन्द काळै⋆ नलम् कॊण्ड करु मुगिल् पोल् तिरुमेनि अम्मान्⋆ नाळ्दोऱुम् मगिळ्न्दिनिदु मरुवि उऱै कोयिल्⋆ शलम् कॊण्डु मलर् शॊरियुम् मल्लिगै ऒण् शॆरुन्दि⋆ शण्बगङ्गळ् मण नाऱुम् वण् पॊळिलिनूडे⋆ वलङ्गॊण्डु कयल् ओडि विळैयाडु नाङ्गूर्⋆ वैगुन्द विण्णगरम् वणङ्गु मड नॆञ्जे॥१॥	पुरा काल में प्रभु ने हिरण्य की छाती चीर दी तथा गहरे समुद्र का अमृत के लिये मंथन किया। उदार वर्षा के मेघ की तरह आपका रंग है। आप स्थायी रूप से नांगुर में रहते हैं जहां कयाल मछली जल से भरे चमेली, शेरून्डी, एवं शण्बगम फूलों से सुगंधित बागों में नाचती है। हे मन ! वैकुण्ठ विण्णगरम के मंदिर में प्रभु की पूजा अर्पित करो। **1228**
तिण्णियदोर् अरि उरुवाय् दिशै अनैत्तुम् नडुङ्ग⋆ देवरॊडु दानवर्गळ् तिगैप्प⋆ इरणियनै नण्णि अवन् मार्वगलत्तुगिर् मडुत्त नादन्⋆ नाळ्दोऱुम् मगिळ्न्दिनिदु मरुवि उऱै कोयिल्⋆ एण्णिल् मिगु पॆरुञ्जॆल्वत्तॆळिल् विळङ्गु मऱैयुम्⋆ एळ् इशैयुम् केळ्विगळुम् इयन्ऱ पॆरुङ्गुणत्तोर्⋆ मण्णिल् मिगु मऱैयवर्गळ् मलिवॆय्दु नाङ्गूर्⋆ वैगुन्द विण्णगरम् वणङ्गु मड नॆञ्जे॥२॥	पुरा काल में प्रभु शक्तिशाली नरसिंह रूप में आये। आपको देखकर दिशायें डर गयी। देवों एवं असुरों ने आपकी पूजा की। आपने बलवान हिरण्य को पकड़कर उसकी छाती चीर दी। आप स्थायी रूप से नांगुर में रहते हैं जहां वेदोच्चार की उच्च ध्वनि प्रश्न एवं वाद्यों के सात स्वर हवा में गूंजते हैं। यशस्वी वैदिक ऋषि गन सुमति से साथ रहते हैं। हे मन ! वैकुण्ठ विण्णगरम के मंदिर में प्रभु की पूजा अर्पित करो। **1229**
अण्डमुम् इव्वलै कडलुम् अवनिगळुम् एल्लाम्⋆ अमुदुशॆय्द तिरु वयिट्रन् अरन् कॊण्डु तिरियुम्⋆ मुण्डम् अदुनिऱैत्तवन् कण् शाबम् अदु नीक्कुम्⋆ मुदल्वन् अवन् मगिळ्न्दिनिदु मरुवि उऱै कोयिल्⋆ एण्डिशैयुम् पॆरुञ्जॆन्नॆल् इळन्दॆङ्गु कदलि⋆ इलैक्कॊडियॊण् कुलै क्कमुगॊडिगलि वळम् शॊरिय⋆ वण्डु पल इशै पाड मयिल् आलु नाङ्गूर्⋆ वैगुन्द विण्णगरम् वणङ्गु मड नॆञ्जे॥३॥	पुरा काल में समुद्र महादेश एवं अन्य सबों के साथ ब्रह्मांड को प्रभु एक ही बार में निगल गये। ब्रह्मा की खोपड़ी लिये शिव को शाश्वत शाप से मुक्त किया।आप स्थायी रूप से नांगुर में रहते हैं जहां धान की फसल, नारियल के पेड, केला का बगान, एवं पान की लतायें अरेका पेड़ों के साथ बहुतायत में उपजते हैं। सर्वत्र मधुमक्खियां गाती हैं एवं मोर नाचते हैं। हे मन ! वैकुण्ठ विण्णगरम के मंदिर में प्रभु की पूजा अर्पित करो। **1230**

कलै इलङ्गुम् अगल् अल्गुल् अरक्कर् कुल क्कॉडियै⋆ कादॊडु मूक्कुडन् अरिय क्कदरि अवळ् ओडि⋆ तलैयिल् अङ्ग वैत्तु मलै इलङ्गै पुग च्चॆय्द⋆ तडन् तोळन् मगिळ्न्दिनिदु मरुवि उरै कोयिल्⋆ शिलै इलङ्गु मणि माडत्तुच्चिमिशै च्चूलम्⋆ शॆळुङ्गॊण्डल् अगडिरिय च्चॊरिन्द शॆळु मुत्तम्⋆ मलै इलङ्गु माळिगैमेल् मलिवॆय्दु नाङ्गूर्⋆ वैगुन्द विण्णगरम् वणङ्गु मड नॆञ्जे॥ ४ ॥	पुरा काल में मेघ वर्ण वाले प्रभु ने चौड़ी नितंब वाली राक्षस कुल की सूर्पनखा के नाक कान काट लिये जिससे वह अपने बाहों को सिर पर चढ़ा चीत्कार करती हुई लंका को दौड़ती चली गयी। आप स्थायी रूप से नांगुर में रहते हैं जहां रत्न जड़ित गगन चुंबी अट्टालिकायें के शिखरों के त्रिशूल बादल के पेट फाड़ उससे पर्वत सा ढ़ेर सारा वर्षाबूंदों का मोती निकालते हैं। हे मन ! वैकुण्ठ विण्णगरम के मंदिर में प्रभु की पूजा अर्पित करो। **1231**
मिन्ननैय नुण्मरुङ्गुल् मॆल्लियर्काय्⋆ इलङ्गै वेन्दन् मुडि ऑरुपदुम् तोळ् इरुबदुम् पोय् उदिर⋆ तन् निगर् इल्शिलै वळैत्तन्ऱिलङ्गै पॊडि शॆय्द⋆ तडन् तोळन् मगिळ्न्दिनिदु मरुवि उरै कोयिल् शॆन्नॆल्लॊडु शॆङ्गमलम् शेल् कयल्गळ् वाळै⋆ शॆङ्गळु नीरॊडु मिडैन्दुगळनि तिगळ्न्दॆङ्गुम्⋆ मन्नुपुगळ् वेदियर्गळ् मलिवॆय्दु नाङ्गूर्⋆ वैगुन्द विण्णगरम् वणङ्गु मड नॆञ्जे॥ ५ ॥	पुरा काल में शक्तिशाली भुजाओं वाले प्रभु ने कृशकटि सुकुमारी सीता के लिये लंका नरेश रावण के दस सिर एवं बीस भुजायें काट डाले तथा तप्त बाणों की वर्षा से नगर को नष्ट कर दिया। आप स्थायी रूप से नांगुर में रहते हैं जहां धान के खेत लाल कुमुद के बीच कमल के झुरमट सेल, वलै, एवं कयल मछलियों से भरे हैं।यहां बहुत सारे यशस्वी ऋषिगन रहते हैं। हे मन ! वैकुण्ठ विण्णगरम के मंदिर में प्रभु की पूजा अर्पित करो। **1232**
पॆण्मै मिगु वडिवु कॊडु वन्दवळै⋆ प्पॆरिय पेयिनदुरुवु कॊडु माळ उयिर् उण्डु⋆ तिण्मै मिगु मरुदॊडु नल् शगडम् इरुत्तरुळुम्⋆ देवन् अवन् मगिळ्न्दिनिदु मरुवि उरै कोयिल्⋆ उण्मै मिगु मऱैयॊडु नल् कलैगळ् निऱै पॊऱैगळ्⋆ उदवु कॊडै एन्ऱिवट्ऱिन् ऑळिविल्ला⋆ पॆरिय वण्मै मिगु मऱैयवर्गळ् मलिवॆय्दु नाङ्गूर्⋆ वैगुन्द विण्णगरम् वणङ्गु मड नॆञ्जे॥ ६ ॥	पुरा काल में देवों के प्रभु ने पूतना राक्षसी का स्तन चूस कर उसका नाश कर दिया। सरकते हुए दो मरूदु पेड़ों को तथा कूर गाड़ी को तोड़ दिया। आप स्थायी रूप से नांगुर में रहते हैं जहां चारों वेदों एवं उसके विभिन्न भागों में निष्णात उच्च मेधा के बहुत से वैदिक ऋषिगन सहिष्णुता एवं उदारता दर्शाते तथा दूसरों की सहायता करते हुए रहते हैं।हे मन ! वैकुण्ठ विण्णगरम के मंदिर में प्रभु की पूजा अर्पित करो। **1233**

विळङ्गनियैयिळङ्गन्ऱ कॊण्डुदिरवॆरिन्दु⋆ वेल् नॆडुङ्गण् आयच्चियर्गळ् वैत्त तयिर् वॆण्णॆय्⋆ उळम् कुळिर अमुदु शॆय्दिव्वुलगुण्ड काळै⋆ उगन्दिनिदु नाळ्दोऱुम् मरुवि उऱै कोयिल्⋆ इळम् पडिनल् कमुगु कुलै तॆङ्गु कॊडि च्चॆन्नॆल्⋆ ईन् करुम्बु कण्वळर क्काल् तडवुम् पुनलाल्⋆ वळम् कॊण्ड पॆरुञ्जॆल्वम् वळरुम् अणि नाङ्गूर्⋆ वैगुन्द विण्णगरम् वणङ्गु मड नॆञ्जे॥७॥	पुरा काल में गोप किशोर प्रभु ने दुष्ट बछड़ा को क्रूर ताड़ वृक्ष पर फेंक कर दोनों का नाश किया। आपने गोपियों के दही एवं मक्खन को बहुत चाव से खाया। ब्रह्मांड को निगल कर आप शिशु के रूप में सो गये। आप स्थायी रूप से नांगुर में रहते हैं जहां अरेका के बढ़ते पेड, नारियल लदे पेड़, पान का बगान, गन्ना, एवं सदा प्रवाहित नहरों से सिंचित हरा भरा धान के खेत। हे मन ! वैकुण्ठ विण्णगरम के मंदिर में प्रभु की पूजा अर्पित करो। **1234**
आऱाद शिनत्तिन् मिगुनरगन् उरम् अळित्त⋆ अडल् आळि त्तडक्कैयन् अलर् मगट्कुम् अरर्कुम्⋆ कूऱाग क्कॊडुत्तरुळुम् तिरुवुडम्बन् इमैयोर्⋆ कुल मुदल्वन् मगिळ्न्दिनिदु मरुवि उऱै कोयिल्⋆ माऱाद मलर् क्कमलम् शॆङ्गळुनीर् तदुम्बि⋆ मदुवॆळ्ळम् ऒळुग वयल् उळवर् मडै अडैप्प⋆ माऱाद पॆरुञ्जॆल्वम् वळरुम् अणि नाङ्गूर्⋆ वैगुन्द विण्णगरम् वणङ्गु मड नॆञ्जे॥८॥	पुरा काल में शक्तिशाली भुजाओं वाले प्रभु ने तीक्ष्ण चक्र से गुस्सैल नरकासुर का बध किया। आप अपने शरीर का आनंद लक्ष्मी तथा शिव को बराबर रूप में देते हैं। आप देवों के देव हैं। आप स्थायी रूप से नांगुर की संपन्नता में रहते हैं जहां कभी न मुरझाने वाले कमल एवं लाल कुमुद झुरमुटों में उपजते हैं। इनके उत्प्लावित अमृत की तरंगों से किसान पानी का द्वार बंद रखते हैं। हे मन ! वैकुण्ठ विण्णगरम के मंदिर में प्रभु की पूजा अर्पित करो। **1235**
वङ्ग मलि तडङ्गडलुळ् वानवर्गळोडु⋆ मा मुनिवर् पलर् कूडि मा मलर्गळ् तूवि⋆ एङ्गळ् तनि नायगने ! एमक्करुळाय् एन्नुम्⋆ ईशन् अवन् मगिळ्न्दिनिदु मरुवि उऱै कोयिल्⋆ शॆङ्गयलुम् वाळैगळुम् शॆन्नॆलिडै क्कुदिप्प⋆ शेल् उगळुम् शॆळुम् पणै शूळ् वीदिदॊऱुम् मिडैन्दु⋆ मङ्गुल् मदि अगडुरिञ्जु मणि माड नाङ्गूर्⋆ वैगुन्द विण्णगरम् वणङ्गु मड नॆञ्जे॥९॥	पुरा काल में क्षीर समुद्र में देवों ने सर्वोत्तम फूलों से अर्चना की और गाथा गाते हुए कहा 'हमारे एकमात्र आश्रय प्रभु, कृपा कीजिये'। आप स्थायी रूप से नांगुर की में रहते हैं जहां लाल कयल,वलै, एवं सेल मछलियां, जल तथा खेतों में नाचती हैं। वीथियों के ऊंचे महल चांद को नीचे से आश्रय प्रदान करते हैं। हे मन ! वैकुण्ठ विण्णगरम के मंदिर में प्रभु की पूजा अर्पित करो। **1236**

शङ्गु मल्लि तण्डु मुदल् चक्करम् मुन् एन्दुम्⋆ तामरै क्कण् नॆडिय पिरान् तान् अमरुम् कोयिल्⋆ वङ्गमल्लि कडल् उलगिल् मल्लिवॆय्दु नाङ्गूर्⋆ वैगुन्द विण्णगरमेल् वण्डरैयुम् पॊळिल् शूळ्⋆ मङ्गैयर् तम् तलैवन् मरुवलर् तम् उडल् तुणिय⋆ वाळ् वीशुम् परकालन् कलिगन्रि शॊन्न⋆ शङ्गमल्लि तमिळ् मालै पत्तिवै वल्लार्गळ्⋆ तरणियॊडु विशुम्बाळुम् तन्मै पॆरुवारे॥१०॥	मंगै के राजा परकालन एवं भयानक तलवार वाले कलिकन्रि ने नांगुर के वैकुण्ठ विण्णगरम के मंदिर में स्थायी निवास करने वाले शंख, चक्र एवं धनुष धारण करने वाले राजीव नयन प्रभु की गाथा, मधुर तमिल पदों की माला से गाई है। जो इसे कंठ कर लेंगे वे पृथ्वी एवं स्वर्ग के राजयाधिकारी होंगे। **1237** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

30 तिरूमडन्दै (1238-1247)

तिरूनाङ्गूर् अरिमेय विण्णगरम्

(तिरूनांगुर के 11 दिव्य देशों में से यह एक है एवं इसे कोदामडुम कूदन कोइल भी कहते हैं। यहां मूलावर चतुर्भुज रूप में पूर्वाभिमुख बैठे हैं एवं इन्हें कोदमाडु कूदार कहा जाता है।स्थान शिरकाळी से 5 कि मी पर है। अपनी मां के उद्धार के लिये गरूड़ ने अमृत कलश लाकर कद्रू के सामने रख दिया। मां के साथ गरूड़ वहां से चले गये। कद्रू एवं उसके बच्चे अमृत पान के पूर्व नदी में स्नान करने गये। इसी बीच एक राक्षस आया और अमृत कलश को उठा कर भागा। देवों की पुकार पर भगवान विष्णु ने राक्षस का पीछा करते उस पर बाण मारे जिससे उसका हाथ टूट गया एवं कलश गिर गया। भगवान ने कलश लेकर अमृत पी लिया एवं घड़ा ले खुशी में नृत्य किया।'कुडम' घड़ा को कहते हैं एवं 'कूदम' नर्त्तक को कहते हैं।भगवान यहां एक पैर आज भी घड़े यानी 'कुडम' पर रखकर बैठे दिखायी पड़ते हैं। अगस्त मुनि ने कहा था कि भगवान की लीला देवों की समझ से भी परे है यानी अग्मय है।अतः 'अमेय देव नगरम' यानी ऐसा नगर जिसकी महानता देवां की समझ से भी अगम्य है और यही अमेय या अरिमेय विण्णगरम् हुआ।
Ramesh vol. 2 / 180)

तिरु मडन्दै मण् मडन्दै इरुबालुम् तिगळ⋆ तीविनैगळ् पोय् अगल अडियवर्गट्कॆन्ऱुम् अरुळ्नडन्दु⋆ इव्वेळ् उलगत्तवर् पणिय⋆ वानोर् अमर्न्देत्त इरुन्द इडम्⋆ पॆरुम् पुगऴ् वेदियर् वाऴ्- तरुम् इडङ्गळ् मलर्गळ् मिगु कैदैगळ् शॆङ्गऴुनीर्⋆ तामरैगळ् तडङ्गळ्दॊरुम् इडङ्गळ्दॊरुम् तिगऴ⋆ अरुविडङ्गळ् पॊऴिल् तऴुवि एऴिल् तिगऴु नाङ्गूर्⋆ अरिमेय विण्णगरम् वणङ्गु मड नॆञ्जे॥१॥	पुरा काल में श्रीदेवी एवं भूदेवी के साथ अपनी कृपावृष्टि करते,जगत को दुष्कर्म से मुक्त करते, एवं भक्तों की रक्षा करते पृथ्वी पर प्रभु ने भ्रमण किया। आप देवों से पूजित एवं सातों लोक से सेवित हैं। आप नांगुर में स्थायी रूप से रहते हैं जहां वैदिक ऋषिगन रहते हैं।यहां के सुगंधित बाग एवं सिंचित खेत स्क्रू पाइन के वृक्षों से घिरे हैं। हर दिशा में कमल के सरोवर हैं तथा ऊंचे ऊंचे पेड़ हैं। हे चंचल मन ! अरिमेय विण्णगरम में प्रभु की पूजा अर्पित करो। **1238**
वॆन्ऱि मिगु नरगन् उरम् अदुवऴिय विशिरुम्⋆ विऱल् आऴि त्तड क्कैयन् विण्णवर्गट्कन्ऱु⋆ कुन्ऱु कॊंडु कुरै कडलै क्कडैन्दमुदम् अळिक्कुम्⋆ कुरुमणि एन्नार् अमुदम् कुलवियुरै कोयिल्⋆ एन्ऱु मिगु पॆरुञ्जॆल्वत्तॆऴिल् विळङ्गु मऱैयोर्⋆ एऴ् इशैयुम् केळ्विगळुम् इयन्ऱ पॆरुङ्गुणत्तोर्⋆ अन्ऱुलगम् पडैत्तवने अनैयवर्गळ् नाङ्गूर्⋆ अरिमेय विण्णगरम् वणङ्गु मडनॆञ्जे॥२॥ U	पुरा काल में शक्तिशाली भुजाओं वाले प्रभु ने तीक्ष्ण चक्र अजेय नरकासुर को जीतने के लिये चलाया। आपने पर्वत की मथानी से समुद्र मथकर देवों को अमृत दिया। आप हमारे रत्न एवं अमृत हैं। आप नांगुर में रहते हैं जहां सुन्दर, धनवान, एवं ज्ञानी वैदिक ऋषिगन रहते हैं, जो गान विद्या के सात स्वरों, एवं वेदों के प्रसनास में पारंगत हैं, अच्छे गुणवाले हैं, तथा साक्षात सृष्टिकर्ता ब्रह्मा की तरह दिखते हैं। हे चंचल मन ! अरिमेय विण्णगरम में प्रभु की पूजा अर्पित करो। **1239**

उम्बरुम् इव्वेळ् उलगुम् एळ् कडलुम् एल्लाम्⋆ उण्ड पिरान् अण्डर्गळ् मुन् कण्ड् मगिळ्वॆय्द⋆ कुम्ब मिगु मद यानै मरुप्पॊशित्तु⋆ क्कञ्जन् कुञ्जि पिडित्तडित्त पिरान् कोयिल्⋆ मरुङ्गॆङ्गुम् पैम्बॊनॊडु वॆण् मुत्तम् पल पुन्नै काट्ट⋆ पलङ्गनिगळ् तेन् काट्ट प्पडवरवेर् अल्गुल्⋆ अम्बनैय कण् मडवार् मगिळ्वॆय्दु नाङ्गूर्⋆ अरिमेय विण्णगरम् वणङ्गु मडनॆञ्जे॥३॥	पुरा काल में प्रभु ने सातों लोकों सातों समुद्र एवं अन्य सभी निगल गये। गोपकिशोर ने मदमत्त हाथी को उसके दांतों से नष्ट कर दिया।कंस को उसका केश पकड़ घसीटा एवं उसका बध कर दिया। आप नांगुर में स्थायी रूप से रहते हैं जहां पुन्नै के बाग मोती की कलि एवं सोने का फूल देते हैं, कटहल पेड़ अमृत देते हैं, सांप सी पतली कटि एवं बाण सी तीक्ष्ण नयनों वाली नारियां आनंद देती हैं। हे चंचल मन ! अरिमेय विण्णगरम में प्रभु की पूजा अर्पित करो। **1240**
ओडादवाळ् अरियिन् उरुवम् अदु कॊण्डु⋆ अन्– ऱुलप्पिल् मिगु पॆरु वरत्त इरणियनै प्पट्रि⋆ वाडाद वळ् उगिराल् पिळन्दवन् तन् मगनुक्कु⋆ अरुळ् शॆय्दान् वाळुम् इडम् मल्लिगै शॆङ्गळुनीर्⋆ शेडॆऱु मलर् शॆरुन्दि शॆळुङ्गमुगम् पाळै⋆ शॆण्बगङ्गळ् मण नारुम् वण् पॊळिलिन् ऊडे⋆ आडॆऱु वयल् आलै प्पुगै कमळु नाङ्गूर् अरिमेय विण्णगरम् वणङ्गु मडनॆञ्जे॥४॥	पुरा काल में प्रभु ने अप्रमेय शक्ति वाले नरसिंह रूप में वरदान के अभिमान से चूर हिरण्य को अपनी गोद में लेकर कठोर एवं तीक्ष्ण पंजो से उसकी छाती चीर दी और भक्त पुत्र की रक्षा की। आप नांगुर में स्थायी रूप से रहते हैं जहां चमेली, लाल कुमुद, शेरून्दि के गुच्छे, अरेका के कोपल, एवं सेनबकम फूल के सुगंध गन्ने के जलते धुंआ से मिश्रित हो जाते हैं। हे चंचल मन ! अरिमेय विण्णगरम में प्रभु की पूजा अर्पित करो। **1241**
कण्डवर् तम् मनम् मगिळ मावलि तन् वेळ्वि⋆ कळविल् मिगु शिऱु कुऱळाय् मूवडि एन्ऱिरन्दिट्टु⋆ अण्डमुम् इव्वलै कडलुम् अवनिगळुम् एल्लाम्⋆ अळन्द पिरान् अमरुमिडम् वळङ्गॊळ् पॊळिल् अयले⋆ अण्डम् उऱु मुळवॊलियुम् वण्डिनङ्गळ् ऒलियुम्⋆ अरुमऱैयिन् ऒलियुम् मडवार् शिलम्बिन् ऒलियुम्⋆ अण्डम् उऱुम् अलै कडलिन् ऒलि तिगळुम् नाङ्गूर्⋆ अरिमेय विण्णगरम् वणङ्गु मडनॆञ्जे॥५॥	पुरा काल में देखनेवालों के हृदय को खुश करने वाले सुन्दर एवं सरल दिखने वाले वामन किशोर के रूप में प्रभु मावली के महान यज्ञ में आये। आपने तीन पग जमीन मांगकर अपन स्वरूप फैलाया और पूरी पृथ्वी, सातों समुद्र, सातों महाद्वीप, तथा सबकुछ ले लिया। आप नांगुर में स्थायी रूप से रहते हैं जहां वाद्य यंत्र की आवाज, मधुमक्खी की गूंज, वेदच्चार ध्वनि, पाजेब की रूनझुन, एवं समुद्र का गर्जन हवा में व्याप्त रहते हैं। हे चंचल मन ! अरिमेय विण्णगरम में प्रभु की पूजा अर्पित करो। **1242**

वाणॆडुङ्गण् मलर् क्कून्दल् मैदिलिक्का⋆ इलङ्गै मन्नन् मुडि औरुबदुम् तोळ् इरुबदुम् पोय् उदिर⋆ ताणॆडुन्दिण् शिलै वळैत्त दयरतन् शेय्⋆ एन्रन् तनि च्चरण वानवरक्करश करुदम इडम तडमार⋆ शेण् इडम् कॊळ् मलर् क्कमलम् शेल् कयल्गळ् वाळै⋆ शॆन्नॆल्लॊडुम् अडुत्तरिय⋆ उदिरन्द शॆळु मुत्तम्⋆ वाळ् नॆडुङ्गण् कडैशियर्गळ् वारुम् अणि नाङ्गूर्⋆ अरिमेय विण्णगरम् वणङ्गु मड नॆञ्जे॥६॥	पुरा काल में प्रभु दशरथ के पुत्र के रूप में आये। आपने काली लटों एवं मत्स्य नयना सीता के लिये महान धनुष चलाकर लंकेश के दस सिर एवं बीस भुजाओं को काट गिराया। आप हमारे रक्षक एवं देवों के नाथ हैं। आप नांगुर में स्थायी रूप से रहते हैं जहां सरोवरों में सेल कयल एवं वेलै मछलियां एवं आकाश को छूने की ईच्छा वाले कमल खिलते हैं। यहां कटाक्ष नयना कृषक नारियां धान के खेत से बिना हसुआ से काटे सुवर्ण के ढेर जैसे अन्न जमा करते हैं। हे चंचल मन ! अरिमेय विण्णगरम में प्रभु की पूजा अर्पित करो। **1243**
तीमनत्तान् कञ्जनदु वञ्जनैयिल् तिरियुम्⋆ देनुगनुम् पूदनै तन् आर् उयिरुम् शॆगुत्तान्⋆ काममनैत्तान् पयन्द करु मेनियुडै अम्मान्⋆ करुदुम् इडम् पॊरुदु पुनल् तुरै तुरै मुत्तुन्दि नामनत्ताल् मन्दिरङ्गळ् नाल् वेदम्⋆ ऐन्दु वेळ्वियोडारङ्गम् नविन्रु कलै पयिन्रु⋆ अं- गामनत्तु मरैयवर्गळ् पयिल्लुम् अणि नाङ्गूर्⋆ अरिमेय विण्णगरम् वणङ्गु मड नॆञ्जे॥७॥	पुरा काल में प्रभु ने दुष्ट कंस के भेजे धेनुकासुर एवं पूतना राक्षसी का अंत किया। आप श्याम प्रभु प्रेम के देवता कामदेव के पिता हैं। आप नांगुर में स्थायी रूप से रहते हैं जहां समुद्र की लहरें हर किनारों पर मोती विखेरती हैं, वैदिक ऋषिगन चारों वेद, पांचो यज्ञ, छः आगम, एवं सातों स्वर के मंत्र ज्ञान सीखते, उच्चारण करते, एवं कार्यान्वित करते हैं। हे चंचल मन ! अरिमेय विण्णगरम में प्रभु की पूजा अर्पित करो। **1244**
कन्रदनाल् विळवॆरिन्दु कनियुदिरत्त काळै⋆ कामरु शीर् मुगिल् वण्णन् कालिगळ् मुन् काप्पान्⋆ कुन्रदनाल् मळै तडुत्तु क्कुडम् आडु कूत्तन्⋆ कुलवुम् इडम् कॊडि मदिळ्गळ् माळिगै गोपुरङ्गळ्⋆ तुन्रु मणि मण्डपङ्गळ् शालैगळ्⋆ तू मरैयोर् तॊक्कीण्डि तॊळुदियॊडु मिग प्पयिल्लुम् शोलै⋆ अन्रलवाय् मदुवुण्डङ्गळि मुरल्लुम् नाङ्गूर्⋆ अरिमेय विण्णगरम् वणङ्गु मड नॆञ्जे॥८॥	पुरा काल में प्रभु गोपवंश में पूज्य मेघ श्याम वर्ण में आये।दुष्ट बछड़ा को कठोर ताड़ पेड़ पर पटक कर उसके सारे फलों को गिरा दिया। आपने गोवर्धन को उठाकर तूफान से गायों की रक्षा की।आपने पात्रों के ऊपर नृत्य किया। आप नांगुर में स्थायी रूप से रहते हैं जहां की ध्वज जैसी ऊंची दीवारें एवं अटारियां गोपुर एवं सुन्दर चित्रित मंडपों के चारों ओर बने हैं। वैदिक ऋषिगन यज्ञशाला में समवेत पाठ करते हैं। बागों के नूतन प्रस्फुटित फूल से अमृत पीकर भौंरे गीत गाते हैं। हे चंचल मन ! अरिमेय विण्णगरम में प्रभु की पूजा अर्पित करो। **1245**

वञ्जनैयाल् वन्दवळ् तन् उयिरुण्डु* वायत्त तयिर् उण्डु वॅण्णॅय् अमुदुण्डु* वलि मिक्क कञ्जन् उयिर् अदुवुण्डिव्वुलगुण्ड काळै* करुदुम् इडम् काविरि शन्दगिल् कनगम् उन्दि* मञ्जुलवु पॉळिलूडुम् वयलूडुम् वन्दु* वळम् कॉडुप्प मा मरैयोर् मा मलर्गळ् तूवि* अञ्जलित्तङ्गरि शरण् ऍन्रिरैञ्जुम् अणि नाङ्गूर्* अरिमेय विण्णगरम् वणङ्गु मड नॅञ्जे॥९॥	पुरा काल में प्रभु गोपवंश में आकर पूतना का जहर तथा उसके प्राण पी गये। आप गोपियों के दही एवं मक्खन खा गये। आपने कंस का वध किया। आप समस्त जगत को भी निगल गये। आप नांगुर में स्थायी रूप से रहते हैं जहां कावेरी सुगंधित चंदन, अगिल, एवं सोने को प्रवाहित करती हुई ऊंचे बागों तथा उपजाऊ खेतों से बहकर अकूत धन देती है। महान वैदिक ऋषिगन फूल विखेर कर पूजा करते हुए बोलते हैं 'हरि हमारे आश्रय' । हे चंचल मन ! अरिमेय विण्णगरम में प्रभु की पूजा अर्पित करो। **1246**
शॅन्रु शिन विडैयेळुम् पडवडर्त्तु* प्पिन्नै शॅव्वि त्तोळ् पुणर्न्दुगन्द तिरुमाल् तन् कोयिल्* अन्रयनुम् अरन् शेयुम् अनैयवर्गळ् नाङ्गूर्* अरिमेय विण्णगरम् अमरन्द शॅळुङ्गुन्रै* कन्रि नॅडु वेल् वलवन् मङ्गैयर् तम् कोमान्* कलिगन्रि ऑलि मालै ऍन्दिनॉडु मून्रुम्* ऑन्रिनॉडुम् ऑन्रुम् इवै कट्टु वल्लार्* उलग– त्तुत्तमर्गट्कुत्तमर् आय् उम्बरुम् आवर्गळे॥१०॥	मंगै क्षेत्र के तीक्ष्ण भालाधारी राजा कलकन्रि ने इन तमिल पदों की गीतमाला को तिरूमल प्रभु की प्रशंसा में गाया है जिन्होंने नप्पिनाय के सुकोमल समागम के लिये सात वृषभों को परास्त किया। आप नांगुर के अरिमेय विण्णगरम में तेजोमय ब्रह्मा एवं सुन्दर सुब्रमणियम के समान वैदिक ऋषियों के साथ रहते हैं। जो इसे सीखकर याद कर लेंगे वे अच्छे लोगों के बीच सर्वोत्तम होंगे तथा उनकी गिनती देवों में भी होगी। **1247** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

31 पोदलरन्द (1248 – 1257)

तिरूत्तेवनार् तोगै

(तिरूनांगुर के 11 दिव्य देशों में से यह एक है एवं शिरकाळी से 6 कि मी पर है। खड़े अवस्था में पूर्वाभिमुख मूलावर यहां देव नायकन कहे जाते हैं। इस स्थान को माधव पेरूमल कोइल भी कहते हैं।देवों की यहां सभा हुई करती थी एवं प्रभु ने यहां वशिष्ठ को अपना दर्शन दिया था।Ramesh vol. 2 , pp 218)

पोदलरन्द पॉळिल् शोलै⋆ प्पुरम् एङ्गुम् पॉरु तिरैगळ्⋆ तादुदिर वन्दलैक्कुम्⋆ तड मण्णि त्तॅन् करैमेल्⋆ मादवन् तान् उरैयुम् इडम्⋆ वयल् नाङ्गै⋆ वरि वण्डु तेदॅनवॅन्रिशै पाडुम्⋆ तिरुत्तेवनार् तॉगैये॥१॥	नांगुर के उपजाऊ खेतों में मधुमक्खियां मृदु स्वर में 'तेना तेना' गाती हैं।महान मण्णी नदी के प्रवाह की मार से कमल फूल के रज किनारों पर बिखरते हैं। नदी के दक्षिणी तट पर प्रभु स्थायी रूप से तिरूत्तेवनार तोगै में रहते हैं। **1248**
यावरुमाय् यावैयुमाय्⋆ एऴिल् वेद प्पॉरुळ्गळुमाय्⋆ मूवरुमाय् मुदलाय⋆ मूर्त्ति अमरन्दुरैयुम् इडम्⋆ मा वरुम् तिण् पडै मन्नै⋆ वॅन्रि कॉळ्वार् मन्नु नाङ्गै⋆ देवरुम् शॅन्रिरैञ्जु पॉऴिल्⋆ तिरुत्तेवनार् तॉगैये॥२॥	आप सबचीज एवं सबकोई हैं तथा वेदों के सार हैं। आप आदि कारण हैं तथा तीनों भी हैं। आप नांगुर में स्थायी रूप से रहते हैं जहां चारों तरफ खेत हैं।आप देवों से पूजित एवं वैदिक ऋषियों से सेवित हैं जो तिरूत्तेवनार तोगै में घोड़े पर सवार शक्तिशाली भुजाओं के राजा पर विजय प्राप्त किये हुए हैं।**1249**
वा नाडुम् मण् नाडुम्⋆ मट्रुळ्ळ पल् उयिरुम्⋆ तानाय एम् पॅरुमान्⋆ तलैवन् अमरन्दुरैयुम् इडम्⋆ आनाद पॅरुञ्जॅल्वत्तु⋆ अरु मरैयोर् नाङ्गै तन्नुळ्⋆ तेन् आरुं मलर् पॉऴिल् शूळ्⋆ तिरुत्तेवनार् तॉगैये॥३॥	हमारे प्रभु एवं नाथ, देवों के लोक, भूलोक, आत्मा, एवं अन्य सब कुछ स्वयं हैं। आप नांगुर में स्थायी रूप से रहते हैं जहां वैदिक ऋषियों का सर्वस्व धन वेद ही है। सुगंधित एवं अमृत टपकते बागों के मध्य तिरूत्तेवनार तोगै है। **1250**
इन्दिरनुम् इमैयवरुम्⋆ मुनिवर्गळुम् एऴिल् अमैन्द⋆ शन्द मलर् च्चदुमुगनुम्⋆ कदिरवनुम् चन्दिरनुम्⋆ एन्दै ! एमक्करुळ् एन निन्रु⋆ अरुळुम् इडम् एऴिल् नाङ्गै⋆ शुन्दर नल् पॉऴिल् पुडै शूळ्⋆ तिरुत्तेवनार् तॉगैये॥४॥	इन्द्र एवं देवों का समूह, ब्रह्या, चारण लोग, सूर्य देव, एवं चन्द्र देव सभी खड़ा होकर पूजा करते हैं तथा बोलते हैं 'हम पर कृपा करो'। आप नांगुर में स्थायी रूप से रहते हैं, तिरूत्तेवनार तोगै के सुन्दर बागों के बीच। **1251**
अण्डमुम् इव्वलै कडलुम्⋆ अवनिगळुम् कुल वरैयुम्⋆ उण्ड पिरान् उरैयुम् इडम्⋆ ऑळि मणि शन्दगिल् कनगम्⋆ तॅण् तिरैगळ् वर त्तिरट्टुम्⋆ तिगऴ् मण्णि त्तॅन् करैमेल्⋆ तिण् तिरलार् पयिल् नाङ्गै⋆ त्तिरुत्तेवनार् तॉगैये॥५॥	समुद, द्वीप, पर्वत, एवं अन्य समस्त ब्रह्माण्ड को निगलने वाले प्रभु नांगुर में मण्णि नदी के दक्षिणी तट पर रहते हैं जो चमकते रत्न, सोना, सुगंधित चंदन, एवं अगिल बहाकर लाती है। निष्णात वैदिक ऋषियों के बीच तिरूत्तेवनार तोगै में। **1252**
ञालम् एल्लाम् अमुदु शॅय्दु⋆ नान्मरैयुम् तॉडराद⋆ बालगनाय् आलिलैयिल्⋆ पळ्ळि कॉळ्ळुम् परमन् इडम्⋆ शालि वळम् पॅरुगि वरुम्⋆ तड मण्णि त्तॅन् करैमेल्⋆ शेल उगळं वयल नाङ्गै⋆ त्तिरुत्तेवनार् तॉगैये॥६॥	वेद भी प्रभु को समझने में सफल नहीं होते। आप ब्रह्माण्ड को निगल कर शिशु के रूप में बट पत्र पर सो गये। आप नांगुर में मण्णि नदी के दक्षिणी तट पर रहते हैं जो उपजाऊ खेतों से घिरा हैं एवं तिरूत्तेवनार तोगै में शेल मछली नृत्य करती है। **1253**

ओडाद वाळरियिन्* उरुवागि इरणियनै* वाडाद वळ् उगिराल्* पिळन्दळैन्द मालदिडम्* ऎडेऱु पॆरुञ्जॆल्वत्तु* ऎळिल् मऱैयोर् नाङ्गै तन्नुळ्* शेडेऱु पॊळिल् तळुवु* तिरुत्तेवनार् तॊगैये॥७॥	आश्चर्यमय देव नरसिंह के रूप में आकर हिरण्य असुर की छाती चीर दिये। आप नांगुर में वैदिक ऋषियों के बीच रहते हैं जो ज्ञान धन के धनी हैं। सुगंधित बागों के बीच तिरूत्तेवनार तोगै। **1254**
वार् आरुम् इळङ्गॊङ्गै* मैदिलियै मणम् पुणर्वान्* कार् आर् तिण् शिलै इरुत्त* तनि क्काळै करुदुम् इडम्* ऎर् आरुम् पॆरुञ्जॆल्वत्तु* ऎळिल् मऱैयोर् नाङ्गै तन्नुळ्* शीर् आरुम् मलर् पॊळिल् शूळ्* तिरुत्तेवनार् तॊगैये॥८॥	भारी धनुष को तोड़कर सुकुमारी मैथिली से व्याह करने वाले प्रभु नांगुर में ज्ञान धन वाले वैदिक ऋषियों के साथ सुन्दर सुगंधित बागों के बीच तिरूत्तेवनार तोगै में रहते हैं। **1255**
कुम्ब मिगु मद यानै* पागनॊडुम् कुलैन्दु विळ* कॊम्बदनै प्परित्तॆरिन्द* कूत्तन् अमर्न्दुऱैयुम् इडम्* वम्बविळुम् शॆण्बगत्तिन्* मणम् कमळुम् नाङ्गै तन्नुळ्* शॆम्पॊन् मदिळ् पॊळिल् पुडै शूळ्* तिरुत्तेवनार् तॊगैये॥९॥	पात्र नृत्य वाले प्रभु ने मदमत्त हाथी का दांत तोड़कर महावत के साथ उसका बध कर दिया।आप स्थायी रूप से बागों से घिरे नांगुर में रहते हैं जहां शनवकम का नवीन पुष्प प्रस्फुटित होता है। ऊंचे सुनहले दीवारों एवं बागों से घिरे तिरूत्तेवनार तोगै। **1256**
कार् आरन्द तिरुमेनि* क्कण्णन् अमर्न्दुऱैयुम् इडम्* शीर् आरन्द पॊळिल् नाङ्गै* त्तिरुत्तेवनार् तॊगैमेल्* कूर् आरन्द वेल् कलियन्* कूऱु तमिळ् पत्तुम् वल्लार्* ऎर् आरन्द वैगुन्दत्तु* इमैयवरोडिरुप्पारे॥१०॥	तमिल के इन दसक गीतों में तीक्ष्ण भुजाल वाले कलिकन्रि ने श्याम वर्ण कृष्ण प्रभु की प्रशस्ति गाया है जो बागों से घिरे नांगुर के तिरूत्तेवनार तोगै में स्थायी रूप से रहते हैं। जो इसे कण्ठ कर लेंगे वे वैकुण्ठ में जाकर देवों के साथ रहेंगे। **1257** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्

<table>
<tr><td colspan="2">

श्रीमते रामानुजाय नमः

32 कम्बमा (1258 - 1267)

त्तिरूवण्पुरूटोत्तमम्

(तिरूनांगुर के 11 दिव्य देशों में से यह एक है एवं शिरकाळी से 8 कि मी पर है। खड़े अवस्था में पूर्वाभिमुख मूलावर यहां पुरूषोत्तम कहे जाते हैं। तमिल नाडु में पुरूषोत्तम नाम से यह अकेला स्थल है। Ramesh vol. 2 , pp 197)

</td></tr>
<tr><td>कम्ब मा कडल् अडैत्तिलङ्गैक्कु मन्* कदिर् मुडि अवै पत्तुम्
अम्बिनालरुत्तु* अरशुअवन् तम्बिक्कु* अळित्तवनुरै कोयिल्*
शॆम् पला निरै शॆण्बगम् मादवि* शूदगम् वाळैगळ् शूळ्*
वम्बुलाम् कमुगोङ्गिय नाङ्गूर्* वण् पुरुडोत्तममे॥१॥</td><td>प्रभु ने समुद्र पर सेतु बनाकर लंका में प्रवेश किया। राक्षसराज के सिर को काटकर राज्य उसके छोटे भाई को दे दिया। आप नांगुर के वण पुरूषोत्तम मंदिर में रहते हैं जो लाल कटहल, आम, केला, एरेका, शनबकम, माधवी के बाग से घिरा है एवं इनके सुगंध हवा मे व्याप्त रहते हैं। **1258**</td></tr>
<tr><td>पल्लवम् तिगळ् पूङ्गडम्बेरि* अक्कालियन् पणवरङ्गिल्*
ऑल्लै वन्दुर प्पायन्दरु नडम् शॆय्द* उम्बर् कोन् उरै कोयिल्*
नल्ल वॆम् तळल् मून्रु नाल् वेदम्* ऐवेळ्वियोडारङ्गम्*
वल्ल अन्दणर् मल्गिय नाङ्गूर्* वण् पुरुडोत्तममे॥२॥</td><td>देवों के देव गोपकिशोर के रूप में आये। आप कदंब वृक्ष पर चढ़कर कालिय नाग के फन पर कूद गये एवं मन भर नृत्य किया। आप नांगुर के वण पुरूषोत्तम मंदिर में रहते हैं जहां वैदिक ऋषिगन तीन अग्नि प्रज्वलित करते हैं, चारों वेद पढ़ते हैं,पांच यज्ञ करते हैं, एवं छ आगम के ज्ञाता हैं। **1259**</td></tr>
<tr><td>अण्डर् आनवर् वानवर् कोनुक्कॆन्रु* अमैत्त शोरदुवॆल्लाम्
उण्डु* को निरै मेयत्तवै कात्तवन्* उगन्दिनिदुरै कोयिल्*
कॊण्डलार् मुळविल् कुळिर् वार् पॊळिल्* कुल मयिल् नडम् आड*
वण्डु तान् इशै पाडिडु नाङ्गूर्* वण् पुरुडोत्तममे॥३॥</td><td>इन्द्र के लिये गोपजनों द्वारा तैयार किया हुआ सारा भोजन आप खा गये एवं पर्वत को उठाकर गायों की रक्षा की। आप नांगुर के वण पुरूषोत्तम मंदिर में रहते हैं जहां चारो तरफ बाग हैं।बादल का गर्जन सुन यहां मधुमक्खियां गाती हैं एवं मोर नाचते हैं। **1260**</td></tr>
<tr><td>परुङ्ग यानैयिन् कॊम्बिनै प्परित्तु* अदन् पागनै च्चाडि प्पुक्कु*
ऑरुङ्ग मल्लरै क्कॊन्रु* पिन्नाञ्जनै उदैत्तवन् उरै कोयिल्*
करुम्बिनूडुयर् शालिगळ् विळै तरु* कळनियिल् मलि वावि*
मरुङ्गॆल्लाम् पॊळिलोङ्गिय नाङ्गूर्* वण्बुरुडोत्तममे॥४॥</td><td>प्रभु ने मदमत्त हाथी के दांत उखाडकर उसका, उसके महावत का, मल्लयोद्धाओं का, एवं कंश का नाश कर दिया। आप नांगुर के वण पुरूषोत्तम मंदिर में रहते हैं जहां कुओं से सिंचित खेतों में धान एवं गन्ना लंबे वढ़ते हैं तथा बाग आकाश छूते हैं। **1261**</td></tr>
</table>

शाडु पोय् विळ ताळ् निमिरत्तु* ईशन् तन् पडैयॊडुम् किळैयोडुम् ओड* वाणनै आयिरम् तोळ्गळुम्* तुणित्तवन् उरै कोयिल्* आडु वान् कॊडि अगल् विशुम्बणवि प्पोय्* प्पगलवन् ऒळि मरैक्कुम्* माड माळिगै शूळ्दरु नाङ्गूर्* वण् पुरुडोत्तममे ॥५॥	प्रभु ने अपने पैरों से दुष्ट गाड़ी को तोड़ डाला। आपने ही बाणासुर के हजारों हाथों को काटकर उसकी सेना का पलायन करा दिया। आप नांगुर के वण पुरूषोत्तम मंदिर में रहते हैं जहां अटारियों के ध्वज आकाश में चढ़कर सूर्य के मार्ग को अवरूद्ध करते हैं। **1262**
अङ्गैयाल् अडि मून्रु नीर् एट्रु* अयन् अलर् कॊडु तॊळुदेत्त* गङ्गै पोदर क्काल् निमिरत्तरुळिय* कण्णन् वन्दुरै कोयिल्* कॊङ्गै कोङ्गवै काट्ट वाय् कुमुदङ्गळ् काट्ट* मा पदुमङ्गळ्* मङ्गैमार् मुगम् काट्टिडु नाङ्गूर्* वण् पुरुडोत्तममे ॥६॥	प्रभु को उपहार में तीन पग जमीन मिली। जब आपने स्वरूप का विस्तााार कर एक पग आकाश में रखा तो ब्रह्मा ने उसकी जल से पूजा की जिससे गंगा नदी निकली। आप नांगुर के वण पुरूषोत्तम मंदिर में रहते हैं जो उपजाऊ खेतों एवं बागों से घिरा है,जहां कोंगै की कलियां किशोरियों के स्तन के समान हैं, लाल कुमुद उनके होंठ जैसे हैं, एवं उज्जवल कमल उनके मुखमंडल जैसे हैं। **1263**
उळैय ऒण् तिरल् पॊन् पॆयरोन्* तनदुरम् पिळन्दुदिरत्तै अळैयुम्* वॆम् शिनत्तरि परि कीरिय* अप्पन् वन्दुरै कोयिल्* इळैय मङ्गैयर् इणैयडिच्चिलम्बिनोडु* एळिल् कॊळ् पन्दडिप्पोर्* कै वळैयिन् निन्रॊलि मल्गिय नाङ्गूर्* वण पुरुडोत्तममे ॥७॥	भयानक नरसिंह रूप में आकर हिरण्य असुर की छाती को अपने खून से लथपथ पंजों से चीर दिया।आप हमारे पिता हैं एवं आपने ही घोड़ा के जबड़ा को फाड़ डाला। आप नांगुर के वण पुरूषोत्तम मंदिर में रहते हैं जहां गेंद खेलती किशोरियों के कंगन एवं नुपुर की आवाज कभी बन्द नहीं होती। **1264**
वाळैयार् तडङ्गण् उमै पङ्गन्* वन् शाप मट्रदु नीङ्ग* मूळैयार् शिरत्तैय मुन्नळित्त* एम् मुगिल् वण्णनन् उरै कोयिल्* पाळै वान् कमुगुडुयर् तॆङ्गिन्* वण् पळम् विळ वॆरुवि प्पोय्* वाळै पाय् तडम् शूळ्दरु नाङ्गूर्* वण् पुरुडोत्तममे ॥८॥	शिव जो बड़ी आंखों वाली पार्वती को अपने आधे शरीर में रखते हैं को ब्रह्मा की खोपड़ी को भिक्षा पात्र की तरह हाथ में रखने का शाप मिला। हमारे उदार प्रभु ने अपने हृदय रस के खून से पात्र को भर दिया एवं उनको शाप से मुक्त किया। आप नांगुर के वण पुरूषोत्तम मंदिर में रहते हैं जहां लंबे अरेका पेड़ के बीच बीच में नारियल के पेड़ हैं। नारियल फल जब सरोवर में गिरते हैं तो मछलियां चकित हो उछलती हैं एवं नाचती हैं। **1265**
इन्दु वार् शडै ईशनै प्पयन्द* नान् मुगनै त्तन् एळिल् आरुम्* उन्दि मा मलर् मीमिशै प्पडैत्तवन्* उगन्दिनिदुरै कोयिल्* कुन्दि वाळैयिन् कॊळुङ्गनि नुगर्न्दु* तन् कुरुळैयै त्तळुवि प्पोय्* मन्दि माम्बणै मेल् वैगुम् नाङ्गूर्* वण् पुरुडोत्तममे ॥९॥	चंद्र भूषित जटाधारी शिव कमलासीन ब्रह्मा से उत्पन्न हुए जबकि ब्रह्मा प्रभु की नाभि से निकले। आप नांगुर के वण पुरूषोत्तम मंदिर में रहते हैं जहां बंदर केला के पेड़ से बैठ कर केला खाते हैं। तब अपने बच्चों को कंठ से लगा वे आम की घनी टहनियों पर सोने चले जाते हैं। **1266**

‡मण्णुळार् पुगळ् वेदियर् नाङ्गूर्* वण् पुरुडोत्तमत्तुळ्* अण्णल् शेवडि क्कीळ् अडैन्दुयन्दवन्* आलि मन् अरुळ् मारि* पण्णुळार् तर प्पाडिय पाडल्* इप्पत्तुम् वल्लार्* उलगिल् एण्णिल्लाद पेर् इन्बम् उद्* इमैयवरोडुम् कूडुवरे॥१०॥	संसार प्रसिद्ध वैदिक ऋषि नांगुर के वण पुरूषोत्तम मंदिर में रहते हैं जहां तिरूवाली के राजा ने पन्न आधारित मृदु तमिल संगीत की माला से पूजा अर्पित की। जो इसे कण्ठ कर लेंगे वे पृथ्वी पर बड़े आनंद से रहते हुए देवों के साथ हो जायेंगे। **1267** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

33 पेरणिन्दु (1268 - 1277)

तिरूनाङ्गूर् च्वेम्पोन् शेय्कोयिल्

(यह स्थान नांगुर के 11 दिव्य देशों में से एक है। प्रभु विभिन्न नामों से जाने जाते हैं ः हेमा रंगार, शेमपोन अरंगार, पेर अरूलालन, एवं दामोदरन। मूलावर चतुर्भुज रूप में पूर्वाभिमुख खड़े अवस्था में हैं।यह स्थान नांगुर में ही है।कहते हैं शिव को ब्रह्म हत्या के पाप से मुक्त होने के लिये प्रभु ने इन्हें 11 रूप में अश्वमेध यज्ञ करने को कहा था।शिव ने ऐसा ही किया इसीलिये यहां शिव के 11 मंदिर पाये जाते हैं। शिव की प्रार्थना पर प्रभु ने 11 स्थलों पर अपना अर्चा रूप दिखाया इसीलिये 11 दिव्य देश हैं। एक और कथा के अनुसार कांचीपुरम के एक गरीब ब्राह्मण को 32000 बार तिरूमंत्र का यहां जप करने से सोने का एक भंडार मिला था। स्थल का नाम इसलिये हेमा रंगार कहा जाता है। Ramesh vol. 2 , pp 205)

पेर् अणिन्दु उलगत्तवर् तॊऴुदेत्तुम्⋆ पेर् अरुळाळन् एम् पिरानै⋆ वार् अणि मुलैयाळ् मलर् मगळोडु⋆ मण् मगळुम् उडन् निर्प⋆ शीर् अणि माड नाङ्गै नल् नडुवुळ्⋆ शॆम्पॊन्शॆय् कोयिलिनुळ्ळे⋆ कार् अणि मेगम् निन्रदॊप्पानै⋆ क्कण्डु कॊण्डुय्न्दॊऴिन्देने॥१॥	सारा जगत भारी संख्या में मेरे प्रभु पेर अरूळाळन की पूजा करने आते हैं। कंचुकी से सुसज्जित कमल पर बैठी श्री देवी एवं भू देवी आपके पार्श्व में हैं। नांगुर के चतुर्दिक अटारियों में शेमपोनशेयी कोयिल मध्य में है।मेघ के वर्ण वाले प्रभु को देखकर मेरी आध्यात्मिक उन्नति हुई है। **1268**
पिर्प्पॊडु मूप्पॊन्रिल्लवन् तन्नै⋆ प्पेदिया इन्ब वॆळ्ळत्तै⋆ इर्प्पॆदिर् कालम् कऴिवुम् आनानै⋆ एऴ् इशैयिन् शुवै तन्नै⋆ शिर्प्पुडै मरैयोर् नाङ्गै नल् नडुवुळ्⋆ शॆम्पॊन्शॆय् कोयिलिनुळ्ळे⋆ मरै प्पॆरुम् पॊरुळै वानवर् कोनै⋆ क्कण्डु नान् वाऴ्न्दॊऴिन्देने॥२॥	अपनी सत्ता के एक समान आनंद में रहते हुए आप कभी जन्म,मरण एवं जीर्णावस्था से ग्रस्त नहीं होते। पहले भी थे, भविष्य में भी रहेंगे,एवं वर्तमान में हैं, तथा खगोल मंडल के आनन्दमयी ध्वनि में उपस्थित हैं। नांगुर के वैदिक ऋषियों के मध्य में शेमपोनशेयी कोयिल है।देवों के देव एवं वैदिक प्रभु को देखकर मेरी आध्यात्मिक उन्नति हुई है। **1269**
तिड विशुम्बॆरि नीर् तिङ्गळुम् शुडरुम्⋆ शॆऴु निलत्तुयिर्गळुम् मट्रुम्⋆ पडर् पॊरुळ्गळुमाय् निन्रवन् तन्नै⋆ पङ्गयत्तयन् अवन् अनैय⋆ तिड मॊऴि मरैयोर् नाङ्गै नल् नडुवुळ्⋆ शॆम्पॊन्शॆय् कोयिलिनुळ्ळे⋆ कडल् निर वण्णन् तन्नै नान् अडियेन्⋆ कण्डु कॊण्डुय्न्दॊऴिन्देने॥३॥	आकाश, अग्नि, जल, चंद्र, सूर्य, पृथ्वी एवं सारे जीवित प्राणी तथा अन्य सब कुछ में आप हैं। ब्रह्मा समान अचल वाणी वाले वैदिक ऋषियों के बीच नांगुर के शेमपोनशेयी कोयिल में आप हैं।सागर से वर्ण वाले नारी वेष के प्रभु को देखकर मेरी आध्यात्मिक उन्नति हुई है। **1270**

वशैयरु कुरळाय् मावलि वेळ्वि* मण् अळविट्टवन् तन्नै* अशैवरुम् अमरर् अडियिणै वणङ्ग* अलै कडल् तुयिन्र अम्मानै* तिशैमुगन् अनैयोर् नाङ्गै नल् नडुवुळ* शॆम्पॊन्शॆय् कोयिलिनुळ्ळे* उयर् मणि मगुडम् शूडि निन्रानै* क्कण्डु कॊण्डुयन्दॊंळिन्देने॥ ४॥	बली के यज्ञ में वामन के रूप में आपने पृथ्वी को दो पग में ले लिया। ऊपर आकाश के देवगन गहरे सागर वाले शीतल आरामागार में आपकी पूजा करते हैं। ब्रह्मा के समान ऋषिगन वाले नांगुर के शेमपोनशेयी कोयिल में आप हैं। ऊंचा मुकुट धारण किये सौम्य प्रभु को देखकर मेरी आध्यात्मिक उन्नति हुई है। **1271**
तीमनत्तरक्कर् तिरल् अळित्तवने! एन्रु* शॆन्रडैन्दवर् तमक्कु* ताय् मनत्तिरङ्गि अरुळिनै क्कॊडुक्कुम्* तयरदन् मदलैयै च्चयमे* तेमलर् प्पॊळिल् शूळ् नाङ्गै नल् नडुवुळ* शॆम्पॊन्शॆय् कोयिलिनुळ्ळे* कामनै प्पयन्दान् तन्नै नान् अडियेन्* कण्डु कॊण्डुयन्दॊंळिन्देने॥ ५॥	'असुरों के विजेता, शक्तिशाली प्रभु' ऐसा कह जो आपकी पूजा करेगा वह मातृवत स्नेह वाले दशरथनन्दन श्रीराम का कृपापात्र होगा। मधु टपकाते बाग वाले नांगुर के शेमपोनशेयी कोयिल में आप हैं। कामदेव के पिता, सौम्य प्रभु को देखकर मेरी आध्यात्मिक उन्नति हुई है। **1272**
मल्लैमा मुन्नीर् अदर्पड* मलैयाल् अणैशॆय्दु मगिळन्दवन् तन्नै* कल्लिनन् मीदियन्र कडि मदिळ इलङ्गै कलङ्ग* ओर् वाळि तॊट्टानै* शॆल्व नान् मरैयोर् नाङ्गै नल् नडुवुळ* शॆम्पॊन्शॆय् कोयिलिनुळ्ळे* अल्लिमा मलराळ् तन्नॊडुम् अडियेन्* कण्डु कॊण्डल्लल् तीरन्देने॥ ६॥	पुराकाल में उफनते समुद्र के ऊपर पत्थर का सेतु बनाकर प्रभु ने आनंद पाया एवं मजबूत दीवार वाले टापू नगर लंका के राजा पर भीषण बाण मारे। संपन्न ऋषि वाले नांगुर के शेमपोनशेयी कोयिल में आप हैं। कमल लक्ष्मी के साथ अपने अमूल्य प्रभु को देखकर मेरी आध्यात्मिक उन्नति हुई है। **1273**
वॆञ्जिन क्कळिरुम् विल्लॊडु मल्लुम्* वॆगुण्डिरुत्तडर्त्तवन् तन्नै* कञ्जनै क्कायन्द काळै अम्मानै* क्करु मुगिल् तिरु निरत्तवनै* शॆञ्जॊल् नान् मरैयोर् नाङ्गै नल् नडुवुळ* शॆम्पॊन्शॆय् कोयिलिनुळ्ळे* अञ्जन क्कुन्रम् निन्रदॊप्पानै* क्कण्डु कॊण्डल्लल् तीरन्देने॥ ७॥	हमारे श्याम प्रभु ने शक्तिशाली हाथी, धनुष, एवं मल्लयोद्धा का अंत कर दिया। भयानक कंस भी हमारे श्याम एवं सौम्य प्रभु के गुस्से का शिकार हो गया। मृदु भाषी ऋषि वाले नांगुर के शेमपोनशेयी कोयिल में आप हैं। पर्वत की तरह श्याम अपने अमूल्य प्रभु को देखकर मेरी आध्यात्मिक उन्नति हुई है। **1274**
अन्रिय वाणन् आयिरम् तोळुम् तुणिय* अन्राळि तॊट्टानै* मिन् तिगळ् कुडुमि वेङ्गड मलै मेल्* मेविय वेद नल् विळक्कै* तॆन् तिशैत्तिलदम् अनैयवर् नाङ्गै* च्चॆम्पॊन्शॆय् कोयिलिनुळ्ळे* मन्रदु पॊलिय मगिळन्दु निन्रानै* वणङ्गि नान् वाळन्दॊंळिन्देने॥ ८॥	पुरा काल में हजारभुजा वाले बाणासुर पर विजय पाने के लिये प्रभु ने स्वर्णिम चक्र का संधान किया। वेंकटम के निवासी प्रभु आप वैदिक गाथाओं में प्रकाशस्तंभ की तरह चमकते हैं। 'दक्षिण के चमकते तारा' ऋषि वाले नांगुर के शेमपोनशेयी कोयिल में आप हैं। विकास प्रदान करने वाले अमूल्य प्रभु को देखकर मेरी आध्यात्मिक उन्नति हुई है। **1275**

कळङ्गनि वण्णा ! कण्णणे ! एन्रन्* कार् मुगिले ! एन निनैन्दिट्टु* उळम् कनिन्दिरुक्कुम् अडियवर् तङ्गळ्* उळ्ळत्तुळ् ऊरिय तेनै* तॆळिन्द नान्मरैयोर् नाङ्गै नल् नडुवुळ्* शॆम्पॊन्शॆय् कोयिलिनुळ्ळे* वळङ्गॊळ् पेर् इन्वम् मन्नि निन्रानै* वणङ्गि नान् वाऴ्न्दॊऴिन्देने॥९॥	'तरबूज के वर्णवाले,अमूल्य कृष्ण, मेघ सा श्याम प्रभु' ऐसा कहकर जो पूजा अर्पित करते हुए अपने हृदय में द्रवित होता है उसके हृदय में प्रभु अमृत की भांति बस जाते हैं। अचल द्दष्टि के ऋषि वाले नांगुर के शेमपोनशेयी कोयिल में आप हैं।शाश्वत आनंद के स्रोत वाले अमूल्य प्रभु की प्रशंसा से मेरी आध्यात्मिक उन्नति हुई है। **1276**
तेन् अमर् शोलै नाङ्गै नल् नडुवुळ्* शॆम्पॊन्शॆय् कोयिलिनुळ्ळे* वानवर् कोनै क्कण्डमै शॊल्लुम्* मङ्गैयार् वाळ् कलिगन्रि* ऊनम् इल् पाडल् ऒन्बदोडॊन्रुम्* ऒळिविन्रि क्कट्र् वल्लार्गळ्* मानवॆण् कुडै क्कीऴ् वैयगम् आण्डु* वानवर् आगुवर् मगिऴ्न्दे॥१०॥	अमृत टपकते बागों वाले नांगुर के शेमपोनशेयी कोयिल के देवों के देव प्रभु की यशगाथा मंगै क्षेत्र के राजा कलिकन्रि ने की है। तमिल पन्न गीत की इस माला को जो कण्ठ कर लेंगे वे पृथ्वी के छत्रधारी राजा बनकर आकाश में देवता बन जायेंगे। **1277** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

34 माट्ररशर (1278 - 1287)

तिरूनाङ्गूर् तिरूत्तेट्रियम्बलम

(यह स्थान नांगुर के 11 दिव्य देशों में से एक है एवं तिरूतेवनार तोगै से करीब 2 कि मी दक्षिण में है। प्रभु शेंकनमल रंगनाथार या लक्ष्मी रंगन के नाम से प्रसिद्ध हैं। मूलावर चतुर्भुज रूप में आदिशेष पर पूर्वाभिमुख शयनावस्था यानी भुजंग शयनम अवस्था में हैं। Ramesh vol. 2 , pp 193)

माट्रर्शर् मणि मुडियुम् तिर्लुम् तेशुम्⋆ मट्रवर् तम् कादल्लिमार् कुळैयुम्⋆ तन्दै काल् तळैयुम् उडन् कळल वन्दु तोन्रि⋆ कद नागम् कात्तळित्त कण्णर् कण्डीर्⋆ नूट्रिदळ् कॊळ् अरविन्दम् नुळैन्द पळ्ळत्तु⋆ इळङ्गमुगिन् मुदु पाळै पगु वाय् नण्डिन्⋆ शेट्रळैयिल् वॆण् मुत्तम् शिन्दु नाङ्गूर्⋆ तिरुत्तॆट्रियम्बलत्तॆन् शॆङ्गण् माल्ले॥१॥	देखो, हाथी के रक्षक ने कृष्ण के रूप में अवतार लेकर शत्रु राजाओं के मुकुट को गिराया ः गिर गयी उनकी शक्ति, गिर गया उनका गौरव, गिरे उनकी पत्नियों के गहने,एवं गिर गये आपके पिता के पैर की बेड़ी।आप नांगुर के तिरूतेत्री अम्वलम में रहने वाले हमारे शेंकनमल (लाल आंखोंवाले विष्णु) हैं जहां सरोवर के सौ पंखुड़ियों वाले कमल में नरकेंकड़े घुसे रहते हैं एवं अरेका वृक्ष कलियों के मोती विखेरते हैं। **1278**
पॊट्रॊडि त्तोळ् मड मगळ् तन् वडिवु कॊण्ड⋆ पॊल्लाद वन् पेय्च्चि कॊङ्गै वाङ्गि⋆ पॆट्रॆडुत्त ताय् पोल मडुप्प⋆ आरुम् पेणा नञ्जुण्डुगन्द पिळ्ळै कण्डीर्⋆ नॆट्रॊडुत्त मलर् नीलम् निरैन्द शूळल्⋆ इरुञ्जिरैय वण्डॊलियुम् नॆडुङ्गणार् तम्⋆ शिट्रडिमेल् शिलम्बॊलियुम् मिळट्रु नाङ्गूर्⋆ तिरुत्तॆट्रियम्बलत्तॆन् शॆङ्गण् माल्ले॥२॥	देखो, शिशु रूप में सुन्दर छद्म वेषवाली राक्षसी के त्याज्य विषैले स्तन में रूचि दिखाने वाले आप नांगुर के तिरूतेत्री अम्बलम में रहने वाले हमारे शेंकनमल (लाल आंखोंवाले विष्णु) हैं जहां धान की बाली एवं नीले कमल के ऊपर मंड़राते मधुमक्खियों की गूंज मत्स्य नयना किशोरियों के नुपूर की रूनझुन में मिश्रित हो रही है। **1279**
पडल् अडैन्द शिरु कुरम्बै नुळैन्दु पुक्कु⋆ पशु वॆण्णॆय् पदम् आर प्पण्णै मुट्रम्⋆ अडल् अडरत्त वेल् कण्णार् तोक्कै पट्रि⋆ अलन्दलैमै शॆय्तुळलुम् ऐयन् कण्डीर्⋆ मडल् एडुत्त नॆडुन् तॆङ्गिन् पळङ्गळ् वीळ⋆ माङ्गनिगळ् तिरट्टुरुट्टा वरु नीर् प्पॊन्नि⋆ तिडल् एडुत्तु मलर् शुमन्दङ्गिळियुम् नाङ्गूर्⋆ तिरुत्तॆट्रियम्बलत्तॆन् शॆङ्गण् माल्ले॥३॥	देखो, गोपियों के झोपड़ियों में घुसकर सारे मक्खन खा गये एवं नटखट काम करते हुए मत्स्य नयना किशोरियों के साड़ी पल्लू को खींचते घूमने वाले आप नांगुर के तिरूतेत्री अम्बलम में रहने वाले हमारे शेंकनमल (लाल आंखोंवाले विष्णु) हैं जहां नारियल पेड़ के कोपल फटकर पके नारियल आम के पेड़ो पर गिरते हैं। पोन्नै नदी की तरंगे पके फलों को प्रवाहित कर कमल के झुरमुट वाले सरोवर में ले जाती है। **1280**

वाराऱुम् मुलै मडवाळ् पिन्नैक्कागि⋆ वळै मरुप्पिल् कडुञ्जिनत्तु वन् ताळार्न्द⋆ कारार् तिण् विडै अडरत्तु वदुवै आण्ड⋆ करु मुगिल् पोल् तिरु निरत्तॅन् कण्णर् कण्डीर्⋆ एराऱुम् मलर् प्पॊळिल्गळ् तळुवि एङ्गुम्⋆ एळिल् मदियै क्काल् तॊडर विळङ्गु शोदि⋆ शीराऱु मणि माडम् तिगऴुम् नाङ्गूर्⋆ तिरुत्तॆट्रियम्बलत्तॆन् शॆङ्गण् माले॥ ४ ॥	देखो, मेघ सा श्यामल कृष्ण ने मजबूत सिंगो एवं पैरों वाले सात वृषभों से युद्ध कर नप्पिनाय किशोरी से व्याह रचा। आप नांगुर के तिरूतेत्री अम्वलम में रहने वाले हमारे शेंकनमल (लाल आंखोंवाले विष्णु) हैं जहां मन्द वायु सुगंधित पेड़ों की सुगंधि विखेरती है एवं चांद को सुसज्जित महलों के ऊपर रोक लेती है। **1281**
कलै इलङ्गुम् अगल् अल्गुल् कमल प्पावै⋆ कदिर् मुत्त वॆण् नगैयाळ् करुङ्गण् आय्च्चि⋆ मुलै इलङ्गुम् ऑळि मणि प्पूण् वडमुम् तेय्प्प⋆ मूवाद वरै नॆडुन् तोळ् मूर्त्ति कण्डीर्⋆ मलै इलङ्गु निरै च्चन्दि माड वीदि⋆ आडवरै मड मॊळियार् मुगत्तु⋆ इरण्डु शिलै विलङ्गि मनञ्जिरै कॊण्डिरुक्कुम् नाङ्गूर्⋆ तिरुत्तॆट्रियम्बलत्तॆन् शॆङ्गण् माले॥ ५ ॥	देखो, लंबी पर्वत सी भुजाओं वाले प्रभु, आभूषित उरोजों, गले में मोती की हार, कृश कटि, कमल नयनी लक्ष्मी, एवं मुक्ता मुस्कान, नीली आंखों वाली गोप किशोरी नप्पिनाय का बिना थके आलिंगन करते हैं। आप नांगुर के तिरूतेत्री अम्वलम में रहने वाले हमारे शेंकनमल (लाल आंखोंवाले विष्णु) हैं जहां वीथियों के दोंनो ओर पर्वत सी ऊंची अटारियां हैं, एवं नर लोग किशोरियों के धनुषाकृति सुन्दर भौंहों की सुन्दरता से आकर्षित रहते हैं। **1282**
तान् पोलुम् एन्रॆळुन्दान् तरणियाळन्⋆ अदु कण्डु तरित्तिरुप्पान् अरक्कर् तङ्गळ्⋆ कोन् पोलुम् एन्रॆळुन्दान् कुन्रम् अन्न⋆ इरुबदु तोळुडन् तुणित्त ऑरुवन् कण्डीर्⋆ मान् पोलुम् मॆन् नोक्किन् शॆय्य वायार्⋆ मरगदम् पोल् मडक्किळियै क्कैमेल् कॊण्डु⋆ तेन् पोलुम् मॆन् मऴलै पयिट्रुम् नाङ्गूर्⋆ तिरुत्तॆट्रियम्बलत्तॆन् शॆङ्गण् माले॥ ६ ॥	'क्या तुम हमारी बराबरी कर सकते हो ?' शक्तिशाली राक्षस की चुनौती सुनकर भूमंडल के शासक प्रभु ने उसकी बीस भुजाओं को नष्ट करते हुए सारे राक्षसों का अंत कर दिया। देखो, आप नांगुर के तिरूतेत्री अम्वलम में रहने वाले हमारे शेंकनमल (लाल आंखोंवाले विष्णु) हैं जहां मृगनयनी लाल होंठों वाली नारियां अपने रत्न से सुन्दर सुग्गों को हाथ में लेकर मधु सा मृदु आकर्षक शब्दों का पाठ पढ़ाती हैं **1283**

पॊङ्गिलङ्गु पुरि नूलुम् तोलुम् ताऴ⋆ पॊल्लाद कुरऴ् उरुवाय् प्पॊरुन्दा वाणन्⋆ मङ्गलम् शेर् मरै वेळ्वि अदनुळ् पुक्कु⋆ मण् अगलम् कुरै इरन्द मैन्दन् कण्डीर्⋆ कॊङ्गलरन्द मलर् क्कुऴलार् कॊङ्गै तोयन्द⋆ कुङ्गुमत्तिन् कुळम्बळैन्द कोलम् तन्नाल्⋆ शॆङ्गलङ्गल् वॆण् मणल्मेल् तवऴुम् नाङ्गूर्⋆ तिरुत्तॆट्रियम्बलत्तॆन् शॆङ्गण् माले॥ ७॥	दिव्य वैदिक उपवीत एवं कंधे पर लटकते मृगचर्म वाले सुन्दर वामन प्रभु मंगलमय वैदिक यज्ञ में पधारकर बली से पृथ्वी का उपहार ले लिया। देखो, आप नांगुर के तिरूतेत्री अम्बलम में रहने वाले हमारे राजकुमार शेंकनमल (लाल आंखोंवाले विष्णु) हैं जहां सुगंधित फूलों के जूड़ों वाली नारियों के उरोज के लाल कुमकुम लहरों से प्रवाहित होकर सुनहले बालू के ढेर पर जमा होते हैं। **1284**
शिलम्बिन् इडै च्चिरु परल् पोल् पॆरिय मेरु⋆ तिरु क्कुळम्बिल् कणगणप्प त्तिरुवागारम् कुलुङ्ग⋆ निल मडन्दै तनै इडन्दु पुल्गि⋆ कोट्टिडै वैत्तरुळिय एम् कोमान् कण्डीर्⋆ इलङ्गिय नान् मरै अनैत्तुम् अङ्गम् आरुम्⋆ एऴ् इशैयुम् केळ्विगळुम् एण् तिक्केङ्गुम्⋆ शिलम्बिय नल् पॆरुञ्जॆल्वम् तिगऴुम् नाङ्गूर्⋆ तिरुत्तॆट्रियम्बलत्तॆन् शॆण् कण् माले॥ ८॥	प्रभु ने वराह का रूप धारण कर जब भूदेवी को अपने दांतो पर उठाया उस समय मेरू पर्वत उनके खूर पर एक ऐसे छोटे पत्थर की तरह दिख रहा था जो नुपूरों में पैरों की गति के साथ ध्वनि उत्पन्न करने के लिये जड़े जाते हैं। देखो, आप नांगुर के तिरूतेत्री अम्बलम में रहने वाले हमारे शेंकनमल (लाल आंखोंवाले विष्णु) हैं जहां चार वेद, छ आगम, एवं सात स्वर के धुन संपन्न नगर में धीमे धीमे प्रतिध्वनित होते रहते हैं। **1285**
एऴ् उलगुम् ताऴ् वरैयुम् एङ्गुम् मूडि⋆ एण् दिशैयुम् मण्डलमुम् मण्डि⋆ अण्डम् मोळै एऴुन्दाऴि मिगुम् ऊऴि वॆळ्ळम्⋆ मुन् अगट्टिल् ऒडुक्किय एम् मूर्त्ति कन्डीर्⋆ ऊऴिदोरुम् ऊऴिदोरुम् उयरन्द शॆल्वत्तु⋆ ओङ्गिय नान्मरै अनैत्तुम् ताङ्गु नावर्⋆ शेऴ् उयरन्द मणि माडम् तिगऴुम् नाङ्गूर्⋆ तिरुत्तॆट्रियम्बलत्तॆन् शॆङ्गण् माले॥ ९॥	नांगुर के चतुर्दिक रत्न जड़ित अटारियों में वैदिक ऋषिगण वेद को अपने होठों पर युगों युगों से धारण किये हुए हैं। देखो, प्रभु जो सात लोक, सात पर्वत, सात द्वीप, आठ दिशाओं एवं अन्य सबकुछ अपने होठों के भीतर धारण किये हुए हैं तिरूतेत्री अम्बलम के मंदिर में रहते हैं। **1286**

<table>
<tr>
<td>
शीर् अणिन्द मणि माडम् तिगळुम् नाङ्गूर्*
तिरुत्तेद्दियम्बलत्तन् शेङ्गण् माल्लै*
कूर् अणिन्द वेल् वलवन् आलि नाडन्*
कोंडि माड मङ्गैयर् कोन् कुरैयल् आळि*
पार् अणिन्द तोल् पुगळान् कलियन् शोन्न*
पामाल्लै इवै ऐन्दुम् ऐन्दुम् वल्लार्*
शीर् अणिन्द उलगत्तु मन्नर् आगि*
शेण् विशुम्बिल् वानवर् आय् त्तिगळ्वर् तामे॥१०॥
</td>
<td>
तीक्ष्ण भुजाल धारण किये तिरूवाली के राजा, मंगै क्षेत्र के राजा, एवं कुरैयालूर के राजा, चिरयशस्वी कलियन ने तमिल की यह मधुर गीतमाला नांगुर के तिरूतेत्री अम्बलम मंदिर के निवासी शेंकनमल की प्रशस्ति में गाये हैं। जो इसे कंठ कर लेंगे वे पृथ्वी पर राजा के रूप में शासन करेंगे एवं देवता के रूप में विस्तृत आकाश में चमकेंगे। **1287**

तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।
</td>
</tr>
</table>

श्रीमते रामानुजाय नमः

35 तूम्बुडै (1288 - 1297)

तिरूनाङ्गूर् त्तिरूमणिक्कूडम्

(यह स्थान नांगुर के 11 दिव्य देशों में से एक है एवं नांगुर से करीब 1 कि मी पर स्थित है। मूलावर 'वरदराज पेरूमल' या 'मणि कूड नायकन' कहे जाते हैं जो पूर्वाभिमुख खड़े अवस्था में हैं।चंद्रमा को दक्ष के शाप से राजयक्ष्मा से मुक्ति यहीं मिली थी। अश्विनी से लेकर रेवती तक सभी 27 बेटियों को दक्ष ने चंद्रमा से व्याह दिया था। अपनी सुन्दरता के समान रोहिणी को पाकर चंद्रमा रोहिणी से ही अत्यधिक प्रेम करते थे। बाकी सबों की शिकायत पर दक्ष ने चंद्रमा को राजयक्ष्मा की बीमारी का शाप दे दिया था। मणि कूड नायकन की पुष्करिणी में चंद्रमा को त्राण मिला था। Ramesh vol. 2 , pp 211)

तूम्बुडै प्पनै क्कै वेळम्⋆ तुयर् कॆडुत्तरुळि⋆ मन्नु कामबुडै क्कुन्रम् एन्दि⋆ क्कडु मळै कात्त एन्दै⋆ पूम् पुनल् पॊन्नि मुट्रम्⋆ पुगुन्दु पॊन् वरण्ड⋆ एङ्गुम् तेम् पॊळिल् कमळुम् नाङ्गूर्⋆ त्तिरुमणिक्कूडत्ताने॥१॥	आपदा ग्रस्त हाथी की रक्षा करने वाले एवं वर्षा से गायों की रक्षा के लिये पर्वत उठाने वाले प्रभु नांगुर के तिरूमणिक कूडम में रहते हैं जहां कावेरी सुगंधित बागों से बहती हुई सोने के दानों को विखेरती है। **1288**
कव्वै वाळ् एयिट्रु वन् पेय्⋆ क्कदिर् मुलै शुवैत्तु⋆ इलङ्गै वव्विय इडुम्बै कूर⋆ क्कडुङ्गणै तुरन्द एन्दै⋆ कॊव्वै वाय् मगळिर् कॊङ्गै⋆ क्कुङ्गुमम् कळुवि प्पोन्द⋆ दॆय्व नीर् कमळुम् नाङ्गूर्⋆ त्तिरुमणिक्कूडत्ताने॥२॥	पूतना के स्तन से जहर पीने वाले एवं बाणों की भारी वर्षा कर संसार को लंका की यातना से मुक्त कराने वाले प्रभु नांगुर के तिरूमणिक कूडम में रहते हैं जहां पवित्र कावेरी नदी मूंगा वाली होंठों के किशोरियों के उरोजों के कुमकुम को प्रक्षालित करती हुइ बहती है। **1289**
मा तॊळिल् मडङ्ग च्चॆट्रु⋆ मरुदिर् नडन्दु⋆ वन् ताळ् शेत्तॊळिल् शिदैत्तु⋆ पिन्नै शॆव्वि तोळ् पुणर्न्द एन्दै⋆ ना तॊळिल् मरै वल्लार्गळ्⋆ नयन्दरम् पयन्द वण्कै⋆ ती तॊळिल् पयिलुम् नाङ्गूर्⋆ त्तिरुमणिक्कूडत्ताने॥३॥	केशी घोड़ा के जबड़ा फाड़ने वाले, मरूदु के पेड़ों के बीच सरकने वाले, एवं नप्पिनाय से आलिंगन के लिये सात वृषभों का शमन करने वाले प्रभु नांगुर के तिरूमणिक कूडम में रहते हैं जहां सुप्रशिक्षित वैदिक ऋषिगन धर्म एवं उदारता से अग्नि को प्रज्वलित रखते हैं। **1290**
ताङ्गरुम् शिनत्तु वन् ताळ्⋆ तड क्कै मा मरुप्पु वाङ्गि⋆ पूङ्गुरुन्दॊशित्तु प्पुळ् वाय् पिळन्दु⋆ एरुदडर्त्त एन्दै⋆ माङ्गनि नुगर्न्द मन्दि⋆ वन्दु वण्डिरिय⋆ वाळै तीङ्गनि नुगरुम् नाङ्गूर्⋆ त्तिरुमणिक्कूडत्ताने॥४॥	मदमत्त हाथी के दांत तोड़ने वाले, कुरून्दु पेड़ों को तोड़ने वाले, बकासुर के चोंच फाड़ने वाले,एवं सात बलवान बैलों को शांत करने वाले प्रभु नांगुर के तिरूमणिक कूडम में रहते हैं जहां चतुर्दिक बागों में बन्दर पेड़ों से मीठे आम खाते हैं एवं केला के लिये छलांग लगाने में मधु छत्ता को क्षति पहंचाते हैं। **1291**

करु मगळ् इलङ्गैयाट्टि* पिलङ्गोळ् वाय् तिऱन्दु* तन्मेल् वरुम् अवळ् शॅवियुम् मूक्कुम्* वाळिनाल् तडिन्द एन्दै* पॅरु मगळ् पेदै मङ्गै* तन्नोडुम् पिरिविलाद* तिरुमगळ् मरुवुम् नाङ्गूर्* त्तिरुमणिक्कूडत्तने ॥ ५ ॥	आपके लिये लालायित विशाल मुंह वाली लंका की राजकुमारी सूर्पनखा का नाक एवं कान काटने वाले प्रभु नांगुर के तिरूमणिक कूडम में पार्श्ववर्ती गुणवती भू देवी एवं सदा साथ वाली लक्ष्मी के साथ रहते हैं। **1292**
कॅण्डैयुम् कुऱळुम् पुळ्ळुम्* केळलुम् अरियुम् मावुम्* अण्डमुम् शुडरुम् अल्ला* आट्रलुम् आय एन्दै* ऑण् तिऱल् तॅन्नन् ओड* वडवरशोट्टम् कण्ड* तिण् तिऱलाळर् नाङ्गूर्* त्तिरुमणिक्कूडत्तने ॥ ६ ॥	मछली, वामन, हंस, सूकर, नरसिंह, घुड़ सवार, ब्रह्मांड एवं उसकी आभा तथा अन्य सबकुछ के रूप में आनेवाले हमारे नाथ नांगुर के तिरूमणिक कूडम में रहते हैं जहां वीर योद्धागन दक्षिणी पांड्या एवं पश्चिमी चेरा राजाओं से युद्ध कराते हैं। **1293**
कुन्ऱमुम् वानुम् मण्णुम्* कुळिर् पुनल् तिङ्गळोडु* निन्ऱ वॅम् शुडरुम् अल्ला* निलैगळुम् आय एन्दै* मन्ऱमुम् वयलुम् कावुम्* माडमुम् मणङ्गॊण्डु* एङ्गुम् तॅन्ऱल् वन्दुलवुम् नाङ्गूर्* त्तिरुमणिक्कूडत्ताने ॥ ७ ॥	पर्वतों, आकाश, पृथ्वी, शीतल जल, चांद, सूर्य, एवं अन्य सब कुछ के रूप में रहने वाले प्रभु नांगुर के तिरूमणिक कूडम में रहते हैं जहां चौड़ी सड़कें, उपजाऊ खेत, बागें, अटारियां हैं, तथा मन्द हवा सर्वत्र सुगंध विखेरती है। **1294**
शङ्गैयुम् तुणिवुम् पॉय्युम्* मॅय्युम् इ त्तरणि ओम्बुम्* पॉङ्गिय मुगिलुम् अल्ला* प्पॉरुळ्गळुम् आय एन्दै* पङ्गय मुगुत्त तेऱल्* परुगिय वाळै पाय* शॅङ्गयल् उगळुम् नाङ्गूर्* त्तिरुमणिक्कूडत्ताने ॥ ८ ॥	अनिश्चित एवं निश्चित, सत्य एवं झूठ, पृथ्वी पर स्वरूपों की आत्मा एवं स्वरूप स्वयं, सभी हमारे प्रभु हैं जो नांगुर के तिरूमणिक कूडम में रहते हैं जहां वलै मछली तथा लाल कयल मछली कमल से निकले अमृत पीकर खुशी में नाचते हैं। **1295**
पावमुम् अऱमुम् वीडुम्* इन्बमुम् तुन्बम् तानुम्* कोवमुम् अरुळुम् अल्ला* क्कुणङ्गळुम् आय एन्दै* मूवरिल् एङ्गळ् मूर्त्ति* इवन् एन मुनिवरोडु* देवर् वन्दिऱैञ्जुम् नाङ्गूर्* त्तिरुमणिक्कूडत्तने ॥ ९ ॥	अच्छे एवं बुरे कर्म, स्वतंत्रता एवं आनन्द, क्षमा एवं कोध, एवं अन्य सभी गुण एवं तीनों स्वरूप में सबसे अच्छा हमारे प्रभु हैं। देवों एवं चारण से पूजित आप नांगुर के तिरूमणिक कूडम में रहते हैं। **1296**

‡तिङ्गळ् तोय् माड नाङ्गूर्⋆ त्तिरुमणिक्कूडत्तानै⋆ मङ्गैयर् तलैवन् वण्दार्⋆ क्कलियन् वाय् ऑलिगळ् वल्लार्⋆ पॊङ्गु नीर् उलग माण्डु⋆ पॊन् उलगाण्डु⋆ पिन्नुम् वॆङ्गदिर् प्परिदि वट्टत्तूडु पोय्⋆ विळङ्गुवारे॥१०॥	मंगै के राजा कलियन ने चांद को छूते अटारी वाले तिरूमणिक कूडम नांगुर के प्रभु की प्रशस्ति इन सुगंधित तमिल दसक गीतों से की है। जो इसको कंठ कर लेगा वह पृथ्वी एवं सुनहले आकाश का शासक होगा एवं सूर्य की आभा में प्रवेश कर सदा के लिये चमकते रहेगा। **1297** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

36 तावळन्दु (1298 - 1307)

तिरूनाङ्गूर् क्कावळम्बाडी

(यह स्थान नांगुर के 11 दिव्य देशों में से एक है एवं शिरकाळी से 11 कि मी पर स्थित है। मूलावर 'गोपालकृष्णन' कहे जाते हैं जो पूर्वाभिमुख खड़े अवस्था में रूक्मिणी एवं सत्यभामा के साथ हैं।एक हाथ से ये समीप में गाय को पकड़े हैं तथा दाहिने हाथ में गाय चराने वाली छड़ी है। Ramesh vol. 2 , pp 190)

तावळन्दुलग मुट्टम्⋆ तड मलर् प्पॉय्गै पुक्कु⋆ ना वळम् नविन्ऱङ्गत्त⋆ नागत्तिन् नडुक्कम् तीर्त्ताय्⋆ मा वळम् पॆरुगि मन्नु⋆ मऱैयवर् वाळुम् नाङ्गै⋆ कावळम् पाडि मेय⋆ कण्णने ! कळैगण् नीये॥१॥	हे कृष्ण ! आपने समूची पृथ्वी को एक पग में ले लिया। कमल सरोवर में प्रवेश कर आपने प्रशस्ति गाते हाथी को बचाया। ज्ञान के धनी वैदिक ऋषियों के साथ आप नांगुर के कावलम पाडि में रहते हैं। आप हमारे एक मात्र आश्रय हैं। **1298**
मण् इडन्देनम् आगि⋆ मावलि वलि तॊलैप्पान्⋆ विण्णवर् वेण्ड च्चॆन्ऱु⋆ वेळ्वियिल् कुऱै इरन्दाय् !⋆ तुण्णॆन माट्रार् तम्मै⋆ तॊलैत्तवर् नाङ्गै मेय⋆ कण्णने ! कावळन् तण् पाडियाय् !⋆ कळैगण् नीये॥२॥	हे कृष्ण ! सूकर के रूप में आकर आपने पृथ्वी का उद्धार किया। मावली के यज्ञ में जाकर आपने याचना की तथा देवों के खातिर उसका शमन किया। सरलता से विजेता बनन वाले ऋषियों के साथ आप नांगुर के कावलम पाडि में रहते हैं। आप हमारे एक मात्र आश्रय हैं। **1299**
उरुत्तॆळु वालि मार्विल्⋆ ओरु कणै उरुववोट्टि⋆ करुत्तुडै त्तम्बिक्कु⋆ इन्ब क्कदिर् मुडि अरशळित्ताय्⋆ परुत्तॆळु पलवुम् मावुम्⋆ पळम् विळुन्दॊळुगुम् नाङ्गै⋆ करुत्तने ! कावळम् तण् पाडियाय् !⋆ कळैगण् नीये॥३॥	हे कृष्ण ! वाली की छाती से बाण बेधकर राजमुकुट का अमृत उसके छोटे भाई को दे दिया। आप नांगुर के कावलम पाडि के बागों मे रहते हैं जहां अमृत समान कटहल एवं आम के फल वृक्षों से गिरते हैं। आप हमारे एक मात्र आश्रय हैं। **1300**
मुनै मुगत्तरक्कन् माळ⋆ मुडिगळ् पत्तऱुत्तु वीळ्त्तु⋆ आं- गनैयवर्किळैयवर्के⋆ अरशळित्तरुळिनाने⋆ शुनैगळिल् कयल्गळ् पाय⋆ च्चुरुम्बुदेन् नुगरुम् नाङ्गै⋆ कनै कळल् कावळम् तण् पाडियाय् !⋆ कळैगण् नीये॥४॥	हे कृष्ण ! राक्षसराज के दस सिर काटकर आपने राज्य उसके छोटे भाई विभीषण को दे दिया। आप नांगुर के कावलम पाडि के आनन्द में रहते हैं जहां मछलियां पीती एवं नाचती हैं जबकि मधुमक्खियां भी मधु के उन्माद में गाती हैं। आप हमारे एक मात्र आश्रय हैं। **1301**
पडवरवुच्चि तन्मेल्⋆ पायन्दु पल् नडङ्गळ् शॆय्दु⋆ मडवरल् मङ्गै तन्नै⋆ मार्वगत्तिरुत्तिनाने !⋆ तडवरै तङ्गु माड⋆ त्तगु पुगळ् नाङ्गै मेय⋆ कडवुळे ! कावळम् तण् पाडियाय् !⋆ कळैगण् नीये॥५॥	हे कृष्ण! आपने कालिय के फनों पर नृत्य किया एवं लज्जाशील शांत लक्ष्मी को अपने बाहों में बांध लिया। आप पर्वत समान महलों वाले चिर प्रसिद्ध नांगुर के कावलम पाडि में रहते हैं। आप हमारे एक मात्र आश्रय हैं। **1302**

<table>
<tr><td>मल्लरै अट्टु माळ⋆ क्कञ्जनै मलैन्दु कॊन्ऱु⋆
पल्लरशविन्दु वीळ⋆ प्पारद प्पोर् मुडित्ताय्⋆
नल्लरण् काविन् नीळल्⋆ नरै कमळ् नाङ्गै मेय⋆
कल्लरण् कावळम् तण् पाडियाय्!⋆ कळैगण् नीये॥६॥</td><td>हे कृष्ण! आपने पहलवानों को कुस्ती में मारा, अत्याचारी राजा कंस की हत्या की, और भारत के युद्ध में बहुत सारे राजाओं का नाश किया। आप नांगुर के कावलम पाडि के सुगंधित बागों एवं महलों में रहकर हमलोंगो की शक्ति के गढ़ हैं। आप हमारे एक मात्र आश्रय हैं। **1303**</td></tr>
<tr><td>मूत्तवर्करशु वेण्डि⋆ मुन्बुदूदेळुन्दरुळि⋆
मात्तमर् पागन् वीळ⋆ मद करि मरुप्पॊशित्ताय्⋆
पूत्तमर् शोलै ओङ्गि⋆ प्पुनल् परन्दॊळुगुम् नाङ्गै⋆
कात्तने! कावळम् तण् पाडियाय्!⋆ कळैगण् नीये॥७॥</td><td>हे कृष्ण! आपने बड़े भाई के गद्दी के अधिकार का समर्थन किया एवं दूत के रूप में काम किया।अपने मदमत्त हाथी एवं महावत का बध किया। आप नांगुर के कावलम पाडि में रहते हैं जहां तेज चक्राकार जल बागों को बढ़ने में सहायता करता हैं। आप हमारे एक मात्र आश्रय हैं। **1304**</td></tr>
<tr><td>एविळङ्गन्निक्कागि⋆ इमैयवर् कोनै च्चॆट्टु⋆
कावळम् कडिदिरुत्तु⋆ क्कर्पगम् कॊण्डु पोन्दाय्!⋆
पू वळम् पॊळिल्गळ् शूळ्न्द⋆ पुरन्दरन् शॆय्द नाङ्गै⋆
कावळम् पाडि मेय⋆ कण्णने! कळैगण् नीये॥८॥</td><td>हे कृष्ण! नवयुवती सत्यभामा के लिये आपने इन्द्र का शमन कर उसके बाग की शोभा एवं मनचाहे वस्तु देनवाले कल्प वृक्ष को सत्यभामा के बाग में स्थानान्तरित किया। आप नांगुर के कावलम पाडि में रहते हैं जहां के बाग पुरन्दर इन्द्र द्वारा लगाये गये सुगंधवाले वृक्षों से भरे हैं। आप हमारे एक मात्र आश्रय हैं। **1305**</td></tr>
<tr><td>शन्दमाय् शमयम् आगि⋆ च्चमयवैम् पूदम् आगि⋆
अन्दम् आय् आदि आगि⋆ अरु मरै अवैयुम् आनाय्⋆
मन्दम् आर् पॊळिल्गळ्दोरुम्⋆ मड मयिल् आलुम् नाङ्गै⋆
कन्दम् आर् कावळम् तण् पाडियाय्!⋆ कळैगण् नीये॥९॥</td><td>हे कृष्ण! आप मंत्रोच्चार एवं उसके नियम हैं, पांच तत्व हैं, प्रारंभ एवं अंत हैं, तथा चारों वेद हैं।आप नांगुर के कावलम पाडि में सुगंधित मंदार वृक्ष के बागों में रहते हैं। आप हमारे एक मात्र आश्रय हैं। **1306**</td></tr>
<tr><td>मा वळम् पॆरुगि मन्नु⋆ मरैयवर् वाळुम्⋆ नाङ्गै
कावळम् पाडि मेय⋆ कण्णनै क्कलियन् शॊन्न⋆
पा वळम् पत्तुम् वल्लार्⋆ पार्मिशै अरशर् आगि⋆
कोविळ मन्नर् ताळ⋆ क्कुडै निळल् पॊलिवर् तामे॥१०॥</td><td>वैदिक ऋषियों से भरपूर कावलम पाडि वाले कृष्ण पर यह गीत की माला कलियन द्वारा अर्पित हैं। जो इन पदों को याद कर लेंगे वे क्षत्रधारी राजा बनकर वशवर्ती राजाओं से पूजित होंगे। **1307**
तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।</td></tr>
</table>

श्रीमते रामानुजाय नमः

37 कण्णार् कडल् (1308 - 1317)

तिरूनाङ्गूर् त्तिरूवेळळक्कुळम्

(यह स्थान नांगुर के 11 दिव्य देशों में से एक है एवं शिरकाळी से 11 कि मी पर दक्षिण पूर्व में अवस्थित है।इसे अन्नन कोइल भी कहते हैं तथा मूलावर श्रीनिवास पेरूमल या अन्नन पेरूमल के नाम से विदित हैं। ‘अन्नन’ का तमिल अर्थ ‘बड़ा भाई‘ है।इसीलिये आपको तिरूपति वाले श्रीनिवास का बड़ा भाई भी माना जाता है। प्रभु यहां पूर्वाभिमुखी हो खड़े अवस्था में हैं। तायर यहां अलमेर मंगै कही जाती हैं। इस स्थान को दक्षिण का तिरूपति ‘तेन तिरूपति’ भी कहते हैं। तिरूवेंकटम जाने में जो असमर्थ हैं वे अपनी अर्चना यहां करते हैं। तिरूमंगै आळवार एवं नम्माळवार ने तिरूवेंकटम एवं तिरूवेल्लकुलम दोनों की एक तरह की बंदना की है। Ramesh vol. 2 , pp 185)

‡कण्णार् कडल् पोल्⋆ तिरुमेनि करियाय्⋆ नण्णार् मुनै⋆ वॅन्ऱ् कॊळ्वार् मन्नु नाङ्गूर्⋆ तिण्णार् मदिळ् शूळ्⋆ तिरुवॆळ्ळ क्कुळत्तुळ् अण्णा⋆ अडियेन् इडरै क्कळैयाये॥१॥	समुद्र सा सलोने प्रभु ! आप विजयपूर्वक जीते हुए नांगुर मे रहते हैं।ऊंची दीवालों वाले तिरूवेल्लुकुलम के अग्रज प्रभु ! विनती है, हमें कर्म की यातना से मुक्त कर दीजिये। **1308**
कॊन्दार् तुळव⋆ मलर् कॊण्डणिवाने⋆ नन्दाद पॆरुम् पुगळ्⋆ वेदियर् नाङ्गूर्⋆ शॆन् तामरै नीर्⋆ त्तिरुवॆळ्ळ क्कुळत्तुळ् एन्दाय्⋆ अडियेन् इडरै क्कळैयाये॥२॥	शीतल तुलसी माला वाले प्रभु ! आप वैदिक ऋषियों से प्रशंसित नांगुर मे रहते हैं।लाल कमल जल वाले तिरूवेल्लुकुलम के स्वामी ! विनती है, हमें कर्म की यातना से मुक्त कर दीजिये। **1309**
कुन्ऱाल् कुळिर् मारि⋆ तडुत्तुगन्दाने⋆ नन्ऱाय पॆरुम् पुगळ्⋆ वेदियर् नाङ्गूर्⋆ शॆन्ऱार् वणङ्गुम्⋆ तिरुवॆळ्ळ क्कुळत्तुळ् निन्ऱाय्⋆ नॆडियाय् ! अडियेन् इडर् नीक्के॥३॥	वर्षा रोकने के लिये पर्वत उठाने वाले प्रभु ! आप प्रसिद्ध वैदिक ऋषियों के बीच नांगुर मे रहते हैं।तीर्थस्थल तिरूवेल्लुकुलम के स्वामी ! पुराकाल वाले ! हमें कर्म की यातना से मुक्त कर दीजिये। **1310**
कान् आर् करि क्कॊम्बु⋆ अदॊशित्त कळिऱे !⋆ नानावगै⋆ नल्लवर् मन्निय नाङ्गूर्⋆ तेनार् पॊळिल् शूळ्⋆ तिरुवॆळ्ळ क्कुळत्तुळ् आनाय्⋆ अडियेनुक्करुळ् पुरियाये॥४॥	हाथी के दांत उखाड़ने वाले प्रभु ! आप बहुत से ज्ञानियों के बीच नांगुर मे रहते हैं।अमृतजैसे फल वाले तिरूवेल्लुकुलम के स्वामी ! हाथी ! हमें कर्म की यातना से मुक्त कर दीजिये। **1311**

वेडार् तिरुवेङ्गडम् मेय विळक्के नाडार् पुगळ् वेदियर् मन्निय नाङ्गूर् शेडार् पॊळिल् शूळ् तिरुवॆळ्ळ क्कुळत्ताय् पाडा वरुवेन् विनै आयिन पाट्रे॥५॥	वेंकटम पर प्रकाश स्तंभ जैसे प्रभु ! सौम्य संतो से संचालित नांगुर मे रहते हैं। फूल प्रस्फुटित वागवाले तिरूवेल्लुकुलम के स्वामी ! आपकी प्रशस्ति गान करने आया ! हमें कर्म की यातना से मुक्त कर दीजिये। **1312**
कल्लाल् कडलै अणै कट्टि उगन्दाय् नल्लार् पलर् वेदियर् मन्निय नाङ्गूर् शॆल्वा तिरुवॆळ्ळ क्कुळत्तुरैवाने एल्ला इडरुम् कॆडुमारुरुळाये॥६॥	बालू एवं पत्थर से समुद्र को दो भाग में बांटने वाले प्रभु ! दैविक विद्वान संतो से धनी नांगुर मे रहते हैं। तिरूवेल्लुकुलम के स्वामी ! कृपा कीजिये कि हम कर्म की यातना से मुक्त हों। **1313**
कोलाल् निरै मेय्त्त एङ्गोवलर् कोवे नाल् आगिय वेदियर् मन्निय नाङ्गूर् शेलार् वयल् शूळ् तिरुवॆळ्ळ क्कुळत्तुळ् माले एन वल् विनै तीर्त्तरुळाये॥७॥	गाय चराने वाली छड़ी वाले गोप किशोर ! वैदिक ऋषियों के साथ नांगुर मे रहते हैं। सरोवर एवं उपजाऊ खेतों वाले तिरूवेल्लुकुलम के स्वामी ! हमारे लाड़ले ! विनती है, हमें कर्म की यातना से मुक्त कीजिये। **1314**
वरागम् अदागि इम्मण्णै इडन्दाय् नारायणणे ! नल्ल वेदियर् नाङ्गूर् शीरार् पॊळिल् शूळ् तिरुवॆळ्ळ क्कुळत्तुळ् आरावमुदे अडियेर्करुळाये॥८॥	सूकर के रूप में पृथ्वी को उठाने वाले प्रभु ! 'नमो नारायण' नांगुर मे रहते हैं। सुगंधित फूल बाग वाले तिरूवेल्लुकुलम के स्वामी ! अमृत ! कृपा कीजिये इस नीच सेवक पर। **1315**
पूवार् तिरु मामगळ् पुल्लिय मार्बा ! नावार् पुगळ् वेदियर् मन्निय नाङ्गूर् देवा ! तिरुवॆळ्ळ क्कुळत्तुरैवाने आवा ! अडियान् इवन् एन्ररुळाये॥९॥	कमल लक्ष्मी के आलिंगन से आनंदित होने वाले प्रभु ! वैदिक ऋषियों के गौरव नांगुर मे रहते हैं। देवाधिदेव तिरूवेल्लुकुलम के स्वामी ! 'यह मेरा दास है' कहते हुए कृपा कीजिये। **1316**
नल्लन्बुडै वेदियर् मन्निय नाङ्गूर् शॆल्वन् तिरुवॆळ्ळ क्कुळत्तुरैवानै कल्लिन् मलि तोळ् कलियन् शॊन्न माल्लै वल्लर् एन वल्लवर् वानवर् तामे॥१०॥	पर्वत की तरह मजबूत कलकन्रि के ये गीत दैविक उदार वैदिक ऋषियों के धन नांगुर के तिरूवेल्लुकुलम स्वामी की प्रशस्ति है। इसके कंठ करने वाले देवों की तरह रहेंगे। **1317** तिरुमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

38 कवळयानै (1318 - 1327)

तिरूनांङ्गूर प्पारत्तन्पळ्ळि

(नांगुर के दिव्य देशों में से एक दिव्य देश पार्त्तन पल्ली है जहां भगवान पश्चिमामुखी हो खड़े हैं। मूलावर 'तामरयल केल्वन' हैं तथा उत्स्व मूर्त्ति 'पार्थसारथी' कहे जाते हैं। Ramesh vol. 2 , pp 214 ।सभी **108** दिव्य देशों में से केवल इसी स्थल पर अर्जुन का अलग सन्निधि है जो उत्तारिभिमुखी हो हाथ में तलवार लिये हैं। कहा जाता है युद्ध के पहले मोह होने पर भगवान ने उन्हें दर्शन दे युद्ध के लिये उत्प्रेरित करते हुए चरम मंत्र 'सर्वधर्मान परित्येज्य मामेकं शरणं व्रज ......माशुच" दिया था। चेन्ने शहर के ट्रिप्लीकेन या तिरूवल्लीक्केणी वाले पार्थसारथी मंदिर मे भगवान दो हाथ से हैं एवं शंखवादन मुद्रा मे जाने जाते हैं। दाहिना हाथ में शंख एवं बायां हाथ कमर पर। परंतु इस मंदिर में भगवान चतुर्भज हैं।)

कवळ यानै क्कॊम्बॊशित्त॰ कण्णन् एन्रुम् कामरु शीर्॰ कुवळै मेगम् अन्न मेनि॰ कॊण्ड कोन् एन्नानै एन्रुम्॰ तवळ माड नीडु नाङ्गै॰ त्तामरैयाळ् केळ्वन् एन्रुम्॰ पवळ वायाळ् एन् मडन्दै॰ पार्त्तन् पळ्ळि पाडुवाळे॥१॥	भूखे हाथी के दांत उखाड़ने वाले! कण्णन, परमपूज्य प्रभु ! कमल का वर्ण ! घनघोर मेघ का वर्ण ! राजा एवं हाथी के नाथ हैं आप ! ऊंचे उठते महलों के नंगै कमल लक्ष्मी के नाथ आप ! मूंगे रंग के होंठवाली मेरी सुकुमारी बेटी गाती है 'हे ! पार्त्तन पल्लि।' **1318**
कञ्जन् विट्ट वॆञ्जिनत्त॰ कळिरडर्त्त काळै एन्रुम्॰ वञ्ज मेवि वन्द पेयिन्॰ उयिरै उण्ड मायन् एन्रुम्॰ शॆञ्जॊल्लाळर् नीडु नाङ्गै॰ त्तेवदेवन् एन्रॆन्रोदि॰ पञ्जियन्न मॆल्लडियाळ्॰ पार्त्तन् पळ्ळि पाडुवाळे॥२॥	निष्ठुर कंस एवं हाथी का बध करने वाले प्रभु! हे ! उत्साही वृषभ ! सुन्दर आश्चर्य मय प्रभु राक्षसी का दूध पीया एवं प्राण हर लिया। वैदिक ऋषियों के बीच रहने वाले नंगै के देव देव! हमारी रूई के समान सुकुमारी बेटी कैसे गाती है 'हे ! पार्त्तन पल्लि।' **1319**
अण्डर् कोन् एन्नानै एन्रुम्॰ आयर् मादर् कॊङ्गै पुल्गु शॆण्डन् एन्रुम्॰ नान्मरैगळ् तेडि ओडुम्॰ शॆल्वन् एन्रुम्॰ वण्डुलवु पॊऴिल् कॊऴ् नाङ्गै॰ मन्नु मायन् एन्रॆन्रोदि॰ पण्डुपोल् अन्रॆन् मडन्दै॰ पार्त्तन् पळ्ळि पाडुवाळे॥३॥	पृथ्वी के नाथ !पूज्य किशोरियों के बीच हाथी वृषभ !चारों वेद का उच्चारण सुनने के लिये उन्मत्त सा दौड़ते प्रभु! मधुमक्खी की बहुतायत वाले नंगै, आपके पुराकाल का अर्चास्थल ! हमारी बेटी गाती है 'हे ! पार्त्तन पल्लि।' **1320**
कॊल्लै आनाळ् परिशळिन्दाळ्॰ कोल् वळैयार् तम् मुगप्पे॰ मल्लै मुन्नीर् तट्टिलङ्गै॰ कट्टळित्त मायन् एन्रुम्॰ शॆल्वम् मल्गु मरैयोर् नाङ्गै॰ त्तेव देवन् एन्रॆन्रोदि॰ पल् वळैयाळ् एन् मडन्दै॰ पार्त्तन् पळ्ळि पाडुवाळे॥४॥	कंगनवाली सखियों से निष्कासित होकर अपनी आभा खो बैठी।अजनवी प्रभु ! आपने समुद्र से घिरे लंका का सर्वनाश कर दिया। ऋषियों के साथ वाले नंगै में, देव देवा विकसित हो रहे। तोते की तरह सुवर्ण कंगन वाली हमारी बेटी गाती है 'हे ! पार्त्तन पल्लि।' **1321**

अरक्कर् आवि माळ अन्ऱु* आऴ् कडल् शूऴ् इलङ्गै शॆट्रु* कुरक्करशन् एन्ऱुम्* कोल विल्लि एन्ऱुम्* मा मदियै नॆरुक्कु माड नीडु नाङ्गै* निन्मलन् तान् एन्ऱॆन्ऱोदि* परक्कऴिन्दाळ् एन् मडन्दै* पार्त्तन् पळ्ळि पाडुवाळे॥५॥	महान बंदरों की सेना के नायक! महान धनुष बाण चलाते हुए सेतु के ऊपर से पार होकर राक्षसकुल का विनाश किया। चांद को रोकते अटारियों के नंगै के निर्मल प्रभु ! आकर्षण एवं गौरव खोकर हमारी बेटी गाती है 'हे ! पार्त्तन पल्लि।' **1322**
ञाल मुट्रुम् उण्डुमिऴिन्द* नादन् एन्ऱुम् नानिलम् शूऴ्* वेलै अन्न कोल मेनि* वण्णन् एन्ऱुम्* मेल् एऴुन्दु शेल् उगळुम् वयल् कॊऴ् नाङ्गै* त्तेव देवन् एन्ऱॆन्ऱोदि* पालिन् नल्ल मॆन् मॊऴियाळ्* पार्त्तन् पळ्ळि पाडुवाळे॥६॥	समस्त जगत को निगलकर समय से बाहर निकालने प्रभु ! सागर सा सलोने वर्ण वाले गहरे समुद्र में सोये पूज्य प्रभु! सेल मछलियों के खेलते खेत वाले, देवदेवा का स्वर्ग, नंगै के प्रभु ! दूध एवं मधु के मधुरता के समान मृदु भाषी हमारी बेटी गाती है 'हे ! पार्त्तन पल्लि।' **1323**
नाडि एन् तन् उळ्ळम् कॊण्ड* नादन् एन्ऱुम् नान् मऱैगळ्* तेडि एन्ऱुम् काण माट्टा* च्चॆल्वन् एन्ऱुम्* शिऱै कॊऴ् वण्डु शेडुलवु पॊऴिल् कॊऴ् नाङ्गै* त्तेव देवन् एन्ऱॆन्ऱोदि* पाडगम् शेर् मॆल् अडियाळ्* पार्त्तन् पळ्ळि पाडुवाळे॥७॥	आपने हमें खोजा एवं पा लिया। हमारा मन चुराकर दासी बना लिया। पवित्र ऋचाओं से वेद आपको प्राप्त करना चाहते हैं लेकिन नहीं पा सके। मधुमक्खियों की बहुतायत वाले नंगै के निवासी देवदेवा प्रभु ! नुपूर पहने कोमल पैरवाली हमारी बेटी गाती है 'हे ! पार्त्तन पल्लि।' **1324**
उलगम् एत्तुम् ऒरुवन् एन्ऱुम्* ऒण् शुडरोडुम्बर् एय्दा* निलवुम् आऴि प्पडैयन् एन्ऱुम्* नेशन् एन्ऱुम्* तॆन् दिशैक्कु त्तिलदम् अन्न मऱैयोर् नाङ्गै* त्तेव देवन् एन्ऱॆन्ऱोदि* पलरुम् एश एन् मडन्दै* पार्त्तन् पळ्ळि पाडुवाळे॥८॥	जगत पूज्य एवं चक्रधारी प्रभु ! सभी तेजोमय देव भी पूज्य प्रभु को नहीं पाते। नंगै के निवासी ऋषियों के दक्षिण के तिलक एवं देवदेवा प्रभु ! जगत की सारी भर्त्सनाओं का पात्र बनकर भी हमारी बेटी गाती है 'हे ! पार्त्तन पल्लि।' **1325**
कण्णन् एन्ऱुम् वानवर्गळ्* कादलित्तु मलर्गळ् तूवुम्* एण्णन् एन्ऱुम् इन्बन् एन्ऱुम्* एऴ् उलगुक्कादि एन्ऱुम्* तिण्ण माड नीडु नाङ्गै* त्तेव देवन् एन्ऱॆन्ऱोदि* पण्णिन् अन्न मॆन् मॊऴियाळ्* पार्त्तन् पळ्ळि पाडुवाळे॥९॥	'कृष्ण' कहकर देवगन फूल से आपकी पूजा करते हैं।चार एवं तीन लोकों के हृदय में प्रभु आनंद से रहते हैं। मजबूत दीवालों से घिरे नंगै के देवदेवा प्रभु आप ! पन्न संगीत की मधुर ध्वनि की तरह हमारी बेटी गाती है 'हे ! पार्त्तन पल्लि।' **1326**
‡पारुळ् नल्ल मऱैयोर् नाङ्गै* प्पार्त्तन् पळ्ळि शॆङ्गण् मालै* वार्गॊऴ् नल्लमुलै मडवाळ् पाडलै* ताय्मॊऴिन्द माट्रम्* कूर् कॊऴ् नल्ल वेल् कलियन्* कूरु तमिऴ् पत्तुम् वल्लार्* एर् कॊऴ् नल्ल वैगुन्दत्तुळ्* इन्बम् नाळुम् एय्दुवारे॥१०॥	तेजधार वाली भुजाली धारण किये राजा कलियन का तमिल गीत की माला अपने मां के मुंह से कंचुकी धारण किये किशोरी का वैदिक ऋषियों से प्रशंसित नंगै पार्त्तन पल्लि के शेंकमाल प्रभु के प्रति उदगार का बखान करते हैं। जो इसको कंठ कर लेंगे वे वैकुंठ मे प्रवेश करेंगे एवं जीवन में और आनंद उठायेंगे। **1327** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

39 नुम्मै त्तोळुदोम (1328 - 1337)

तिरूविन्दळूर

(तिरूइंदुलूर मायावरम के पास है एवं मूलावर यहां वीर शयनम की अवस्था में हैं जिन्हें परिमाल रंगनाथार कहते हैं। सुगंधनाथार एवं वेदमोदन के नामों से भी आप जाने जाते हैं। इंदलूर का शाब्दिक तमिल अर्थ है 'सुगंधी जलाने का पात्र'। इस क्षेत्र को सुगंधारण्यम क्षेत्र कहते हैं। भगवान के मुखमंडल के पास सूर्य हाथ जोड़े पूजा कर रहे हैं। चरण के पास चंद्र हाथ जोड़े पूजा कर रहे हैं। ब्रह्मा नाभि से निकलकर कमल पर बैठे हैं। गर्भगृह में एक तरफ कावेरी तायर हैं तथा दूसरी तरफ गंगा तायर हैं। कावेरी नदी के किनारे वाले रंगनाथ के पांच दिव्य देश हैं : **1** तिरूवरंग पत्तिनम यानी श्रीरंग पत्तनम **2** तिरू अरंगम यानी श्रीरंगम **3** अप्पा अरंगम यानी कोइलाडी कल्लनै के नजदीक यानी पत्थर का बांध **4** मध्य अरंगम कुंभकोणम **5** इन्दलूर यानी परिमाल रंगम । लगता है तिरूमंगै आळवार को शुरू में पट बंद रहने से दर्शन नहीं मिला है। प्रभु के साथ उनके नोंक झोंक को प्रतिबिम्बित किया गया है। पासुर **1331** में आळवार ने प्रभु को चुनौती एवं अभिशाप की तरह कहते हैं कि क्या दर्शन नहीं देने से आपकी प्रगति हो जायेगी एवं आप बहुत बड़े हो जायेंगे। Ramesh vol. 2 / 239)

नुम्मै त्तॊळुदोम्⋆ नुन् तम् पणि शॆय्दिरुक्कुम् नुम्मडियोम्⋆ इम्मैक्किन्बम् पॆट्रोम्⋆ एन्दाय् इन्दळूरीरे⋆ एम्मै क्कडिदा क्करुमम् अरुळि⋆ आवा! एन्रिरङ्गि⋆ नम्मै ऒरुगाल् काट्टि नडन्दाल्⋆ नाङ्गळ् उय्योमे॥१॥	इन्दलूर के प्रभु ! हम लोग आपकी पूजा करते हैं। आपके चरणारविन्द की सेवा में आपके भक्त हैं। हमलोग अच्छे एवं प्रसन्न हैं तब जबकि आप हमारी आवश्यकताओं के प्रति जागरूक होकर हमारा ख्याल करें, आप प्रकट होकर हमारे सामने कुछ कदम चलें। क्या इससे हमारी मनोवृत्ति ऊंची नहीं होगी ? **1328**
शिन्दै तन्नुळ् नीङ्गादिरुन्द तिरुवे!⋆ मरुविनिय मैन्दा⋆ अन्दण् आलि माले!⋆ शोलै मळ कळिरे!⋆ नन्दा विळक्किन् शुडरे!⋆ नरैयूर् निन्र नम्बी⋆ एन्दाय्! इन्दळूराय्!⋆ अडियेर्किरैयुम् इरङ्गाये! ॥२॥	इन्दलूर के प्रभु ! हमारे हृदय में बसने वाले अमूल्य निधि! सुलभ मृदु राजकुमार! तिरूवली के पूज्य प्रभु! तिरूमालिरूमसोलै के भ्रमणशील हाथी! मणिमडकोइल के शाश्वत दीप! नरैयूर के खड़े प्रभु! मेरे अपने मधुर प्रभु ! हमारे लिये आपको कोइ दया नहीं है। **1329**

पेशुगिन्ऱदिदुवे⋆ वैयम् ईर् अडियाल् अळन्द⋆ मूशि वण्डु मुरल्लुम्⋆ कण्णि मुडियीर्⋆ उम्मै क्काणुम् आशै एन्नुम् कडलिल् वीळ्न्दु⋆ इङ्ङयरन्दोम्⋆ अयलारुम् एशुगिन्ऱदिदुवे काणुम्⋆ इन्दळूरीरे ! ॥३॥	इन्दलूर के प्रभु ! पृथ्वी को आप दो कदमों में नाप कर तुलसी की माला धारण किये। आपके दर्शन की इच्छा के सागर में हम गिरे एवं निराश हैं। दूसरे भी यही शिकायत कर रहे हैं। हमें इतना ही कहना है। **1330**
आशै वळुवादेत्तुम्⋆ एमक्किङ्ङिळुक्कायत्तु⋆ अडियोरक्कु तेशम् अऱिय⋆ उमक्के आळाय् त्तिरिगिन्ऱोमुक्कु⋆ काशिन् ऑळियिल् तिगळुम् वण्णम्⋆ काट्टीर् एम् पॆरुमान्⋆ वाशि वल्लीर् ! इन्दळूरीर् !⋆ वाळ्न्दे पोम् नीरे ! ॥४॥	इन्दलूर के प्रभु ! भक्तगण जितनी भी प्रशस्ति गाये हैं सब बेकार हो गये। सारा जगत जानता है कि हम मात्र आपकी पूजा करते हैं फिर भी सुवर्ण से भी जाजवल्यमान मुखड़ा हम अभी तक नहीं देख पाये हैं। क्या ठीक है आप ही जानते हैं। क्या इस तरह से आप की प्रगति होगी ? **1331**
तीयॆम् पॆरुमान् नीरॆम् पॆरुमान्⋆ तिशैयुम् इरु निलनु– माय्⋆ एम् पॆरुमान् आगि निन्ऱाल्⋆ अडियोम् काणोमाल्⋆ तायॆम् पॆरुमान्⋆ तन्दै तन्दै आवीर्⋆ अडियेमुक्के एम् पॆरुमान् अल्लीरो नीर्⋆ इन्दळूरीरे ! ॥५॥	इन्दलूर के प्रभु ! आप हमारे अग्नि प्रभु, जल प्रभु, पृथ्वी एवं दिशाओं के प्रभु हैं, फिर भी आपको हमलोग अपने सामने कहीं देखते नहीं हैं। आप मां हैं, प्रभु ! हमारे पिता के भी पिता हैं। क्या आप भक्तों के प्रभु नहीं हैं ? **1332**
ऑल्लादॊळियगिल्लेन्⋆ अऱिन्द ऑल्लिल्⋆ नुम्मडियार् एल्लारोडुम् ऑक्क⋆ एण्णियिरुन्दीर् अडियेनै⋆ नल्लर् अऱिवीर् तीयार् अऱिवीर्⋆ नमक्किव्वुलगत्तिल्⋆ एल्लाम् अऱिवीर् ईदे अऱियीर्⋆ इन्दळूरीरे ! ॥६॥	इन्दलूर के प्रभु ! मैं कुछ कहने से अपने को रोक नहीं सकता। हमें कहने दें जो हम कहना चाहते हैं। आप हमें अन्य भक्त की तरह समझ रहे हैं। क्या अच्छा एवं क्या खराब है आप इस संसार के बारे में सब कुछ जानते हैं। हमारे ऊपर कृपा कैसे होगी केवल यही आप नहीं जानते हैं। **1333**
माट्टीर् आनीर् पणि नीर् कॊळ्ळ⋆ एम्मै प्पणि अऱिया विट्टीर्⋆ इदनै वेऱे ऑन्नोम्⋆ इन्दळूरीरे !⋆ काट्टीर् आनीर्⋆ नुम् तम् अडिक्कळ् काट्टिल्⋆ उमक्किन्द नाट्टे वन्दु तॊण्डर् आन⋆ नाङ्गळ् उय्योमे॥७॥	इन्दलूर के प्रभु ! आपने हमारी सेवा को अस्वीकर कर हमें आनंद से वंचित रखे हुए हैं।हम यह खुलेयाम कहेंगे। आपने अपना चरणारविन्द दिखाने से मना कर दिया है।क्या आपने अगर ऐसा किया तो इस विस्तृत जगत में भक्तों की ऊन्नति हो जायेगी ? **1334**

मुन्नै वण्णम् पालिन् वण्णम्⋆ मुळुदुम् निलै निन्ऱ⋆ पिन्नै वण्णम् कॊण्डल् वण्णम्⋆ वण्णम् एण्णुङ्गाल्⋆ पॊन्निन् वण्णम् मणियिन् वण्णम्⋆ पुरैयुम् तिरुमेनि⋆ इन्न वण्णम् एन्ऱु काट्टीर्⋆ इन्दळूरीरे ! ॥८॥	इन्दलूर के प्रभु ! प्रारंभ में आप श्वेत हैं एवं अंत में काले हैं।बीच में आप लाल एवं पीले हैं। हाय ! अभी आपका क्या रंग है हमें नहीं देखने दे रहे हैं। **1335**
एन्दै तन्दै तम्मान् एन्ऱेन्ऱु⋆ एमर् एळ् एळळवुम्⋆ वन्दु निन्ऱ तॊण्डरोर्क्के⋆ वाशि वल्लीराल्⋆ शिन्दै तन्नुळ् मुन्दि निद्रिर्⋆ शिरिदुम् तिरुमेनि⋆ इन्द वण्णम् एन्ऱु काट्टीर्⋆ इन्दळूरीरे॥९॥	इन्दलूर के प्रभु ! मेरे पिता एवं उनके पितामह सात पीढ़ियों से विश्वासपूर्वक केवल आपको नाथ मानकर सेवा करते रहे हैं। हाय ! आप हमारी खबर भी नहीं लेते और न तो आप हमारे मन में टिकते हैं और न ही अपने वदन के वर्ण की कोई झांकी मिलने दे रहे हैं। **1336**
‡एर् आर् पॊळिल् शूळ्⋆ इन्दळूरिल् एन्दै पॆरुमानै⋆ कार् आर् पुरविल् मङ्गै वेन्दन्⋆ कलियन् ऑलि शॆय्द⋆ शीर् आर् इन् शॊल् मालै⋆ कट्टित्तिरिवार् उलगत्तिल्⋆ आर् आर् अवरे⋆ अमरर्क्कॆन्ऱुम् अमरर् आवारे॥१०॥	मंगै के राजा कलियन का यह मीठे पदों की गीतमाला उपजाऊ बागों से घिरे इन्दलूर प्रभु की प्रशस्ति में है। जो इसे कंठ कर लेंगे वे भक्तों के मधुर अमुत हो जायेंगे तथा देवों पर उनके देव की तरह राज्य करेंगे। **1337** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

40 आयच्चियर (1338-1347)

तिरूवेळिळयङ्गुडी

(यह मायावरम स्टेशन से **5** कि मी दूर है। मूलावर भुजंग शयनम के रूप में पूर्वाभिमुखी हैं और कोलाविल रमन के नाम से जाने जाते हैं। उत्सव मूर्त्ति को श्रृंगार सुन्दरन कहते हैं। इसका महत्व इससे आंका जा सकता है कि तिरूमंगै आळवार ने इस मंदिर एवं तिरूमलैरूनसोलै को 'कोइल' से संबोधित किया है। हालांकि वैष्णवों के बीच 'कोइल' का मतलब केवल 'श्रीरंगम' होता है। पेरी वचन पिल्लै का जन्मस्थान शेंगानाथुर यहां से पास में ही है। पेरूमल के अलावे तंजोर क्षेत्र में नवग्रहों का मंदिर भी प्रसिद्ध है। यहां तिरूवेळिलयङ्गुडी में शुक्र का मंदिर है। शुक्र श्वेत चांदी के रंग के हैं और 'वेल्लि' का अर्थ तमिल में चांदी होता है। अतः वेल्लियन कुडी का अर्थ हुआ जहां शुक्र का निवास है।
Ramesh vol. 3 / 124)

आयच्चियर् अळैप्प वॆण्णॆय् उण्डॊरु काल्* आल् इलै वळर्न्द ऎम् पॆरुमान् पेयच्चियै मुलयुण्डिणै मरुदिरुत्तु* प्पॆरु निलम् अळन्दवन् कोयिल्* कायत्त नीळ् कमुगुम् कदलियुम् तॆङ्गुम्* ऎङ्गुमाम् पॊळिल्गळिन् नडुवे* वायत्त नीर् पायुम् मण्णियिन् तॆन्बाल्* तिरुवॆळ्ळियङ्गुडि अदुवे॥१॥	प्रभु ने गोप किशोरियों का मक्खन चुराया, बटपत्र पर पानी में सोया, पूतना का स्तन पिया, दोनों मरूदु को तोड़ा, समस्त पृथ्वी को ले लिया। आप तिरूवेळिळगुंडि के मन्दिर के चारों ओर फैले अरेका, केला, एवं नारियल के बागों से बहने वाली मण्णि नदी के दक्षिण तट पर रहते हैं। यह वही है। **1338**
आनिरै मेयत्तन्रलै कडल् अडैत्तिट्टु* अरक्कर् तम् शिरङ्गळै उरुट्टि* कार् निरै मेगम् कलन्ददोरुरुव* क्कण्णनार् करुदिय कोयिल्* पू नीरै च्चॆरुन्दि पुन्नै मुत्तरुम्बि* पॊदुम्बिडै वरिवण्डु मिण्डि* तेन् इरैत्तुण्डङ्गिन् इशै मुरलुम्* तिरुवॆळ्ळियङ्गुडि अदुवे॥२॥	गाय चराने वाले प्रभु ने समुद्र पर सेतु बनाकर राक्षस कुल का नाश किया। आप मेघ वर्ण के कृष्ण हैं, एवं पंखुड़ियां विखेरती पुन्नै, अमृत पीकर गाने वाले भौंरे के शेरून्दि पुष्प वृक्षों से घिरे तिरूवेळिळगुंडि के मन्दिर में रहते हैं। यह वही है। **1339**
कडुविडम् उडैय काळियन् तडत्तै* क्कलक्कि मुन् अलक्कळित्तु* अवन् तन् पडम् इरप्पायन्दु पल् मणि शिन्द प्पल् नडम् पयिन्रवन् कोयिल्* पडवरवल्गुल् पावै नल्लार्गळ्* पयिढ़िय नाडगत्तॊलि पोय्* अडैपुडै तळुवि अण्डम् निन्रदिरुम्* तिरुवॆळ्ळियङ्गुडि अदुवे॥३॥	पुरा काल में आप विष वमन करने वाले कालिय के जलागार में व्यवधान उत्पन्नकर उसके मस्तकों पर उछलत हुए अपने पैरों से नृत्य किया एवं उससे मणि प्राप्त किया। आप तिरूवेळिळगुंडि में रहते हैं जहां सांप सी पतली कमर वाली नारियां नृत्य का अभ्यास करती हैं एवं उनकी मंडली की आवाज गूंजती है। यह वही है। **1340**

करवै मुन् कात्तु क्कञ्जनै क्कायन्द* काळमेग त्तिरुवुरुवन्* परवै मुन्नुयरत्तु पार् कडल् तुयिन्र्* परमनार् पळ्ळिगोंळ् कोयिल्* तुरैदुरैदोरुम् पॊन् मणि शिदरुम्* तोंगु तिरै मण्णियिन् तेंन्वाल्* शेरि मणि माड क्कोंडि कदिर् अणवुम्* तिरुवेंळ्ळियङ्गुडि अदुवे॥८॥	पुरा काल में आपने गायें चरायी एवं कंस का वध किया। मेघ से श्याम वर्ण वाले आप उदार एवं गरूड़ ध्वजधारी हैं। आप तिरूवेळिळगुंडि में सोये हैं जो मण्णि नदी के दक्षिणी तट पर है एवं उसकी बाढ़ के तरंगों से सब जगह सोना जमा होता है। यहां की रत्नजटित महलें ऊपर सूर्य से खेलती हैं। यह वही है। **1341**
पारिनै उण्डु पारिनै उमिळ्न्दु* बारदम् कैयॆरिन्दु* ऑरुगाल् तेरिनै ऊरन्दु तेरिनै तुरन्द* शेङ्गण् माल् शेन्रुरै कोयिल्* एर् निरै वयल्लुळ् वाळैगळ् मरुगि* एमक्किडम् अन्रिदेंन्रेंण्णि* शीर् मलि पॊय्गै शेन्रणैगिन्र्* तिरुवेंळ्ळियङ्गुडि अदुवे॥५॥	पुरा काल में आपने पृथ्वी को निगलकर उसे फिर बाहर कर दिया। महाभारत का युद्ध किया एवं रथों का पीछा करते हुए रथ हांके। आप शेगंनमाल प्रभु हैं एवं तिरूवेळिळगुंडि के मंदिर में रहते हैं जो चारो ओर से ठीक से जोते गये खेतों से घिरा है। खेतों से वलै मछलियां यह कहते हुए कि ‘हमारे लिये यहां जगह नही’ भय से कूदकर सरोवरों में भाग जाती है। यह वही है। **1342**
काढ़िडै प्पूळै करन्दन अरन्दै उर्* क्कडल् अरक्कर् तम् शेनै* कूढ़िडै च्चेंल्ल क्कोंडुङ्गणै तुरन्द* कोल विल् इरामन् तन् कोयिल्* ऊढ़िडै निन्र् वाळैयिन् कनिगळ्* ऊळ्त्तुवीळ्न्दन उण्डु मण्डि* शेढ़िडै क्कयल्गाळुळ् तिगळ् वयल् शूळ्* तिरुवेंळ्ळियङ्गुडि अदुवे॥६॥	पुलै के फूल जैसे हवा में उड़ जाते हैं वैसे ही राम के तप्त बाणों से टापू के राक्षसराजा की सेना तितर वितर हो गयी और नष्ट होकर काल के गाल में चली गयी। आप तिरूवेळिळगुंडि के मंदिर में रहते हैं जहां चारो ओर हरा भरा केला का बगान है। पका केला जब नीचे गिरता है तो कयल मछलियां उसे लेकर खाती है एवं धान के खेतों में नृत्य करती है। यह वही है। **1343**
ऑळ्ळिय करुमम् शेय्वन् एन्रुणरन्द* मावलि वेळ्वियिल् पुक्कु* तेंळ्ळिय कुरळाय् मूवडि कोंण्डु* तिक्कुर् वळरन्दवन् कोयिल्* अळ्ळियम् पॊळिल् वाय् इरुन्दुवाळ् कुयिल्गाळ्* अरियरि एन्रवै अळैप्प* वेंळ्ळियार् वणङ्ग विरैन्दरुळ् शेय्वान्* तिरुवेंळ्ळियङ्गुडि अदुवे॥७॥	अच्छे कार्यों से मावली पुण्य बटोरने का इच्छुक था। सुन्दर वामन के रूप में उसके यज्ञ में जाकर आपने तीन पग भूमि मांगी एवं सभी आठों दिशाओं में अपने को फैला दिया। आप तिरूवेळिळगुंडि के मंदिर में रहते हैं जहां के उपजाऊ बागों में कोयल ‘हरि हरि’ रटते हैं एवं पुण्यात्मा आपकी पूजा करते हैं तथा आप उनपर अपनी कृपा वर्षाते हैं। यह वही है। **1344**

<table>
<tr><td>मुडियुडै अमरर्क्किडर् शॆय्युम्⋆ अशुरर् तम् पॆरुमानै⋆ अन्ऱरियाय्
मडियिडै वैत्तु मार्वैमुन् कीण्ड⋆ मायनार् मन्निय कोयिल्⋆
पडियिडै माडत्तडियिडै तूणिल्⋆ पदित्त पन् मणिगळिन् ऒळियाल्⋆
विडि पगल् इरवॆन्ऱरिविरिदाय⋆ तिरुवॆळ्ळियङ्गुडि अदुवे॥८॥</td><td>आश्चर्यमय प्रभु ने नरसिंह का रूप धारण किया एवं देवताओं पर अत्याचार करने वाले असुरों के राजा को अपने गोद में रखकर उसकी छाती चीर दिया। आप तिरूवेळिळगुंडि के मंदिर में रहते हैं जहां चारों ओर रत्न जटित महलों एवं खंभों को देखकर यह कहना कठिन है कि दिन है या रात। यह वही है। **1345**</td></tr>
<tr><td>कुडि कुडियाग क्कूडि निन्ऱमरर्⋆ कुणङ्गळे पिदट्रि निन्ऱेत्त⋆
अडियवर्क्करुळि अरवणै त्तुयिन्ऱ⋆ आळियान् अमरन्दुऱै कोयिल्⋆
कडियुडै क्कमलम् अडियिडै मलर⋆ क्करुम्बॊडु पॆरुञ्जॆन्नॆल् अशैय⋆
वडिवुडै अन्नम् पॆडैयॊडुम् शेरुम्⋆ वयल् वॆळ्ळियङ्गुडि अदुवे॥९॥</td><td>समूह में देवतागन आकर भगवान की पूजा करते हैं जो भक्तों पर अनुग्रह वश चक्र धारण किये शेषशायी हैं। आप तिरूवेळिळगुंडि के मंदिर में रहते हैं जहां गन्ने एवं धान की फसलों के बीच हवा में झूमते कमल उपजते हैं। हंसों की जोड़ी सरोवरों में वसेरा किये हुए हैं। यह वही है। **1346**</td></tr>
<tr><td>पण्डु मुन् एनम् आगि अन्ऱॊरुगाल्⋆ पार् इडन्दॆयिट्रिनिल् कॊण्डु⋆
तॆण् तिरै वरुड प्पार्कडल् तुयिन्ऱ⋆ तिरुवॆळ्ळियङ्गुडियानै⋆
वण्डऱै शोलै मङ्गैयर् तलैवन्⋆ मान वेल् कलियन् वाय् ऒलिगळ्⋆
कॊण्डिवै पाडुम् तवम् उडैयार्गळ्⋆ आळ्वर् इक्कुरै कडल् उलगे॥१०॥</td><td>मधुमक्खी से गूंजते मंगै क्षेत्र के भालाधारी राजा कलियन ने इन तमिल पदों की गीतमाला को प्रभु की प्रशंसा में गाया है जो सूकर बनकर आये एवं पृथ्वी को अपने दाढ़ों पर उठा लिया, एवं लहरों से प्रताड़ित क्षीर समुद्र में सोये। आप तिरूवेळिळगुंडि के मंदिर में रहते हैं। जो इसे सीखकर याद कर लेंगे वे समुद्र से घिरे पृथ्वी के राजा होंगे। **1247**
तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।</td></tr>
</table>

41 अऱिवदु (1348 – 1357)

तिरूप्पुळळम्बुदङ्गुडि

(तिरूप्पुळळम्बुदङ्गुडि प्रसिद्ध सुब्रमणियम का तीर्थ स्थान स्वामीमलै से **5** कि मी पर है। भुजंगशयनम अवस्था में मूलावर पूर्वाभिमुख हैं एवं 'वलविल रामन' नाम से जाने जाते हैं। यह भगवान राम का मंदिर है जहां राम ने तिरूमंगै अळवार को चर्तुभुज रूप में दर्शन दिया था। कथा इस तरह से है कि यह स्थान जटायु की अंत्येष्टि क्रिया से संबंधित है और भगवान राम जब पक्षीराज को अंतिम श्रद्धांजली देनेवाले थे तो सीता की कमी महसूस हुई। भूदेवी प्रकट हुई एवं दंपति के साथ राम ने अंत्येष्टि का कार्यकलाप संपादित किया।तत्पश्चात थके राम लक्ष्मण के साथ पेड़ के नीचे सो गये थे। जब तिरूमंगै आळवार वहां से गुजरे तो उनकी नजर से राम लक्ष्मण बच गये परंतु कुछ ही दूर जाने पर आळवार की द्दष्टि कमजोर होने लगी। आळवार लौट पड़े तो राम ने उन्हें चर्तुभुज रूप में दर्शन दिया। मूलमूर्त्ति यहां **10** फीट लंबी हैं एवं आपको भू देवी का साथ है। जटायु की अंत्येष्टि से संबंधित एक और दिव्य देश कांचीपुरम से **7** कि मी पर तिरूपुटकुळी के नाम से जाना जाता है। तिरूपुळम्बुदमगुडी से **2** कि मी पर मंडनगुडी है जो भक्तांघ्रिरेणु यानी तोंडरादिपोडि आळवार का अवतार स्थल है। Ramesh vol. 3 , pp 157)

अऱिवदरियान् अनैत्तुलगुम् उडैयान्⋆ एन्नै आळ् उडैयान्⋆ कुऱिय माणियुरुवाय⋆ कूत्तन् मन्नि अमरुम् इडम्⋆ नऱिय मलर्मेल् शुरुम्बार्क्क⋆ एऴिल् आर् मञ्ञै नडम् आड⋆ पॊऱि कॊळ् शिऱै वण्डिशै पाडुम्⋆ पुळ्ळम् पूदङ्गुडिदाने॥१॥	समझने में दुष्कर, समस्त संसार को धारण करने वाले, जिन्होंने हमें अपनी सेवा में लिया वही प्रभु वामन रूप में पधारे तथा समस्त संसार के ऊपर नृत्य किया। आप स्थायी रूप से पुळळम बुदंगुदी में रहते हैं जो चारो ओर से बागों से घिरा है, जहां छोटी मधुमक्खी भौंरे को साथ देती है जब वह सुन्दर मोर के नृत्य के लिये गाता है। हां, हमेशा। **1348**
कळ्ळ क्कुऱळाय् मावलियै वञ्जित्तु⋆ उलगम् कैप्पडुत्तु⋆ पॊळ्ळै क्करत्त पोदगत्तिन्⋆ तुन्बम् तविर्त्त पुनिदन् इडम्⋆ पळ्ळ च्चॆऱुविल् कयल् उगळ⋆ प्पळन क्कळनि अदनुळ् पोय्⋆ पुळ्ळु प्पिळ्ळैक्किरै तेडुम्⋆ पुळ्ळम् पूदङ्गुडिदाने॥२॥	जादूगर की तरह आप मावली के पास आये और सारा जगत ले लिया। रोते हाथी के पास जाकर उसकी यातना का अंत किया। आप पुळळम बुदंगुदी में रहते हैं जो चारो ओर से सरोवरों एवं सिंचित खेतों से घिरा है जहां पक्षीगन मछलियों पर आक्रमण कर उन्हें उठाकर अपने बच्चों को खिलाने के लिये ले जाते हैं। हां, हमेशा। **1349**
मेवावरक्कर् तॆन् इलङ्गै⋆ वेन्दन् वीय च्चरम् तुरन्दु⋆ मावाय् पिळन्दु मल्लडर्त्तु⋆ मरुदम् शाय्त्त माल्दिडम्⋆ कावार् तॆङ्गिन् पऴम् वीऴ⋆ क्कयल्गाळ् पाय क्कुरुगिरियुम्⋆ पूवार् कळनि एऴिल् आरुम्⋆ पुळ्ळम् पूदङ्गुडिदाने॥३॥	आपने हठी राक्षसराज पर बाणों की बौछार कर उसके मस्तक काट डाले। आपने घोड़ा के जबड़ा को फाड़कर पहलवानों को मार डाला तथा मरूदु को तोड़ दिया। आप पुळळम बुदंगुदी में रहते हैं जो चारो ओर से फूलवाले सरोवरों एवं खेतों से घिरा है जहां पका नारियल जमीन पर गिरकर उछलता है। पक्षीगन इसकी आवाज से डरकर उड़ भागते हैं। हां, हमेशा। **1350**

वॆर्पाल् मारि पळुदाक्कि* विऱल् वाळ् अरक्कर् तलैवन् तन्* वर्पार् तिरळ् तोळ् ऐन्नान्गुम्* तुणित्त वल्विल् इरामन् इडम्* कर्पार् पुरिशैशॆय् कुन्ऱम्* कविन् आर् कूडम् माळिगैगळ्* पॊर्पार् माडम् एळिल् आरुम्* पुळ्ळम् पूदङ्गुडिदाने॥४॥	आपने पर्वत से वर्षा को शक्तिहीन कर दिया एवं लंका के शक्तिशाली राजा की बीस भुजाओं को काट डाला। आप पुळळम बुदंगुदी में रहते हैं जो पर्वत की तरह महलों, घरों एवं मडपों से भरा है। हां, हमेशा। **1351**
मैयार् तडङ्गण् करुङ्गून्दल्* आयच्चि मऱैय वैत्त तयिर्* नॆय्यार् पालोडमुदु शॆय्द* नेमियङ्गै मायन् इडम्* शॆय्यार् आरल् इरै करुदि* च्चॆङ्गाल् नारै शॆन्ऱणैयुम्* पॊय्या नाविन् मऱैयाळर्* पुळ्ळम् पूदङ्गुडिदाने॥५॥	कजरारे नयना एवं काली लटों वाली यशोदा ने दूध, दही एवं घी छिपा दिये परंतु तेजामय चक्र धारण करने वाले आश्चर्यमय प्रभु ने उसे खोज निकाला एवं सब खा गये। आप पुळळम बुदंगुदी में रहते हैं जहां लाल चंगुलों वाले बगुला आरल मछली की खोज में आरपार दिखने वाले जल में प्रतीक्षारत खड़े रहते हैं एवं स्पष्ट बुद्धिवाले वैदिक ऋषिगन वेदों का सार समझने में लगे रहते हैं। हां, हमेशा। **1352**
मिन्निन् अन्न नुण् मरुङ्गुल्* वेयेय् तडन्दोळ् मॆल्लियर्का* मन्नु शिनत्त मळविडैगळ्* एळ् अन्ऱडर्त्त मालदिडम्* मन्नु मुदु नीर् अरविन्द मलर्मेल्* वरि वण्डिशै पाड* पुन्नै पॊन्नेय् तादुदिर्क्कुम्* पुळ्ळम् पूदङ्गुडिदाने॥६॥	बांस जैसी वाहों एवं विजली रेखा जैसी पतली कमरवाली नप्पिनाय के आलिंगन के आनंद हेतु आपने सात गुस्सैल वृषभों का शमन किया। आप पुळळम बुदंगुदी में रहते हैं जहां निरंतर पानी वाले खेतों में कमल खिलते हैं जिस पर बैठकर सुवर्णमयी रेखा से चिह्नित काले भौंरे अमृत पीते हैं जबकि पुन्नै के पेंड़ सुवर्णमयी हल्दी के समान रज विखेरते हैं। हां, हमेशा। **1353**
कुडैया विलङ्गल् कॊण्डेन्दि* मारि पळुदा निरै कात्तु* शडैयान् ओड अडल् वाणन्* तडन्दोळ् तुणित्त तलैवन् इडम्* कुडिया वण्डु कळ् उण्ण* क्कोल नीलम् मट्टुगुक्कुम्* पुडैयार् कळनि एळिल् आरुम्* पुळ्ळम् पूदङ्गुडिदाने॥७॥	पर्वत को छाता की तरह धारण कर प्रभु ने वर्षा से गायों की रक्षा की। बानासुर की बाहों को नष्ट कर आपने शिव को सेना के साथ भागने में सहायता की। आप पुळळम बुदंगुदी में रहते हैं जहां भौंरे पानी से भरे जलाशयों के नीले कुमुद का अमृत रस पीते हैं । हां, हमेशा। **1354**
करैयार् नॆडु वेल् मऱ मन्नर् वीय* विशयन् तेर् कडवि* इरैयान् कैयिल् निरैयाद* मुण्डम् निरैत्त एन्दै इडम्* मऱैयाल् मूत्ती अवै वळर्क्कुम्* मन्नु पुगळाल् वण्मैयाल्* पॊऱैयाल् मिक्क अन्दणर् वाळ्* पुळ्ळम् पूदङ्गुडिदाने॥८॥	विजय हेतु प्रभु ने रथ चलाया एवं गुस्सैल अस्त्रधारी राजाओं का अंत किया। शिव के नहीं भरने वाले भिक्षा पात्र को भरा। आप पुळळम बुदंगुदी में रहते हैं जहां चिरप्रसिद्ध क्षमाशील एवं धैर्यवान वैदिक ऋषिगन तीन अग्नि को वेद की मंत्रों के साथ प्रज्वलित रखते हैं। हां, हमेशा। **1355**
तुन्नि मण्णुम् विण् नाडुम्* तोन्ऱादिरुळाय् मूडिय नाळ्* अन्नम् आगि अरु मऱैगळ्* अरुळिच्चॆय्द अमलन् इडम्* मिन्नु शोदि नवमणियुम्* वेयिन् मुत्तुम् चामरैयुम्* पॊन्नुम् पॊन्नि कॊणर्न्दलैक्कुम्* पुळ्ळम् पूदङ्गुडिदाने॥९॥	जब पृथ्वी एवं आकाश बने नहीं थे एवं सर्वत्र घोर अंधेरा था प्रभु हंस के रूप में आकर वेदों की मणि से जगत को प्रदीप्त किया। आप पुळळम बुदंगुदी में रहते हैं जहां पोन्नै नदी अपनी तरंगों से तेजोमय रत्न, वांस के मोती, सोना एवं चंवर के गुच्छे धोती है। हां, हमेशा। **1356**

कद़ा मरित्तु काळियन् तन्⋆ शॆन्नि नडुङ्ग नडम्पयिन्र⋆ पॊट्ऱामरैयाळ् तन् केळ्वन्⋆ पुळ्ळम् पूदङ्गुडि तन्मेल्⋆ कट्ऱार् परवुम् मङ्गैयर् कोन्⋆ कार् आर् पुयर्कै क्कलिगन्रि⋆ शॊल् तानीर् ऐन्दिवै पाड⋆ च्चोर निल्ला तुयर् तामे॥१०॥	तमिल के इन दसक गीतों की माला में वर्षा के बादल जैसे उदार मंगै क्षेत्र के राजा कलिकन्रि ने गाय चराने वाले, कालिय के कांपते फन पर नृत्य करने वाले, सुनहले कमल लक्ष्मी के पति, तथा विद्वानों से प्रशंसित पुळळम बुदंगुदी में रहने वाले प्रभु की प्रशस्ति गाया है। जो इसे कण्ठ कर लेंगे वे यातना से मुक्त हो जायेंगे। **1357** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्

श्रीमते रामानुजाय नमः

42 तान्दम् (1358 - 1367)

तिरूक्कूडलूर

(यह तिरूवैयारू कुंभकोनम रोड पर तिरूवैयारू से 12 कि मी दूर कावेरी नदी के किनारे है। मूलावर को 'वैयम कथा पेरूमल' या 'जगत रक्षकन' भी कहते हैं। यह अदुतुरै पेरूमल कोइल भी कहा जाता है। तिरूमंगै आळवार ने दो दिव्य देशों की गाथा गायी है जो कूडल कहे जाते हैं। एक है दक्षिण का 'तेनकूडळ' यानी मदुरै एवं दूसरा यह उत्तर का 'वडाकूडल' है। Ramesh vol. 3, pp 102)

ताम्⋆ तम् पॆरुमै अऱियार्⋆ तूदु वेन्दरक्काय⋆ वेन्दर् ऊर्पोल्⋆ कान्दळ् विरल्⋆ मॆन् कलै नल् मडवार्⋆ कून्दल् कमळुम्⋆ कूडलूरे॥१॥	अपने आप राजा होते हुए भी प्रभु अपनी प्रभुता को भुलाकर राजाओं के लिये दूत बनकर गये। कुमुद की पंखुड़ी की तरह पतली उंगलियों वाली कोमल कपड़े पहने जूड़ों की सुगंध विखेरती किशोरियां प्रभु के अपने कूडलूर में घूमती हैं। **1358**
शॆऱुम् तिण्⋆ तिमिल् एऱुडैय⋆ पिन्नै पॆऱुम् तण् कोलम्⋆ पॆट्रार् ऊर्पोल्⋆ नऱुम् तण् तीम्⋆ तेन् उण्ड वण्डु⋆ कुऱिञ्जि पाडुम्⋆ कूडलूरे॥२॥	सात बैलों पर विजय प्राप्त करने के लिये कृष्ण को नप्पिनाय का पुरस्कार मिला। आप कूडलूर में रहते हैं जहां मधुमक्खियां शहद पीकर कुरिन्जी पन्न (एक प्रकार का आकर्षक तमिल गान शैली) गाती हैं। **1359**
पिळ्ळै उरुवाय्⋆ त्तयिर् उण्डु⋆ अडियेन् उळ्ळम् पुगुन्द⋆ ऑरुवर् ऊर्पोल्⋆ कळ्ळ नारै⋆ वयलुळ्⋆ कयल्मीन् कॊळ्ळै कॊळ्ळुम्⋆ कूडलूरे॥३॥	शिशु के रूप में प्रभु दही खागये एवं हमारे हृदय को चुरा ले गये। आप कूडलूर में रहते हैं जहां खेतों से बगुला कयल मछलियां चुराते हैं। **1360**
कूट्रेर् उरुविन्⋆ कुऱळाय्⋆ निलम् नीर् एट्रान् एन्दै⋆ पॆरुमान् ऊर्पोल्⋆ शेट्रेर् उळुवर्⋆ कोदै प्पोदूण्⋆ कोल् तेन् मुरलुम्⋆ कूडलूरे॥४॥	हमारे प्रभु एवं स्वामी एक सुन्दर किशोर के रूप में आकर पृथ्वी तथा सबकुछ ले गये। आप कूडलूर में रहते हैं जहां मधुमक्खियां खेत जोतते नारियों के जूड़ों के फूल से अमृत पीती हैं। **1361**

तॊण्डर् परव⋆ च्चुडर् शॆन्ऱणव⋆ अण्डत्तमरुम्⋆ अडिगळ् ऊर्पोल्⋆ वण्डल् अलैयुळ्⋆ कॆण्डै मिळिर⋆ कॊण्डल् अदिरुम्⋆ कूडलूरे॥५॥	भक्तों से पूजे जाने वाले सूर्य को छूते हुए आप सर्वत्र आकाश में विद्यमान हैं। आप कूडलूर में रहते हैं जहां चमकीले केण्डै मछलियों को उछलते देख बादल को बिजली चमकने का भ्रम हो जाता है और वे गरजना शुरू कर देते हैं। **1362**
तक्कन् वेळ्वि⋆ तगर्त्त तलैवन्⋆ तुक्कम् तुडैत्त⋆ तुणैवर् ऊर्पोल्⋆ एक्कल् इडु⋆ नुण् मणल्मेल्⋆ एङ्गुम् कॊक्किन् पळम् वीळ्⋆ कूडलूरे॥६॥	दक्ष के यज्ञ को नष्ट करने वाले शिव को भी प्रभु की वरीयता मान्य है। आप कूडलूर में रहते हैं जहां कच्चा आम पेड़ से गिरकर नदी के बालू के ढ़ेर में पक जाते हैं। **1363**
करुन् तण् कडलुम्⋆ मलैयुम् उलगुम्⋆ अरुन्दुम् अडिगळ्⋆ अमरुम् ऊर्पोल्⋆ पॆरुन् तण् मुल्लै⋆ प्पिळ्ळै ओडि⋆ कुरुन्दम् तळुवुम्⋆ कूडलूरे॥७॥	गहरे समुद्र पर्वत एवं अन्य सभी को लेने वाले प्रभु कूडलूर में रहते हैं जहां शीतल सुगंधित मुल्लै लता की शाखायें मोटे कुरून्दु वृक्ष पर सर्वत्र चढ़े हुए दिखते हैं। **1364**
कलै वाळ्⋆ पिणैयोडणैयुम्⋆ तिरुनीर् मलै वाळ् एन्दै⋆ मरुवुम् ऊर्पोल्⋆ इलै ताळ् तॆङ्गिन्⋆ मेल्निन्ऱु⋆ इळनीर् कुलै ताळ् किडङ्गिन्⋆ कूडलूरे॥८॥	तिरूनिर्मलै में रहने वाले प्रभु जहां मृगा की जोड़ी साथ दिखती है कूडलूर में रहते हैं जहां नारियल फल के गुच्छे पेड़ पर चढ़े हुए पान की लता तक नीचे लटकते हैं। **1365**
पॆरुगु कादल् अडियेन्⋆ उळ्ळम् उरुग प्पुगुन्द⋆ ऒरुवर् ऊर्पोल्⋆ अरुगु कैदै मलर⋆ कॆण्डै कुरुगॆन्ऱञ्जुम्⋆ कूडलूरे॥९॥	हमारे हृदय में बढ़ते हुए प्रेम से प्रभु कूडलूर में रहने आये हैं जहां खजूर के पेड़ को प्रस्फुटित देख केन्डै मछली उन्हें बगुला समझ डरे रहते हैं। **1366**
काविप्पॆरुनीर् वण्णन्⋆ कण्णन् मेवि त्तिगळुम्⋆ कूडलूर् मेल्⋆ कोवै त्तमिळाल्⋆ कलियन् शॊन्न⋆ पावै प्पाड⋆ प्पावम् पोमे॥१०॥	कुमुद के रंग वाले कूडलूर में रहने वाले कृष्ण की प्रशस्ति में गाये हुए कलियन का यह मृदु तमिल गीत की माला का जो गान करेंगे उनके कर्म का क्षय हो जायेगा। **1367** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

<table>
<tr><td colspan="2">

श्रीमते रामानुजाय नमः

43 वेन्रिमा (1368 - 1377)

तिरूवेळळरै

(देखें **192** से **201** पेरिया आळवार तिरूमोळी Ramesh vol. 3 , pp 175)

</td></tr>
<tr><td>वॆन्रि मामळुवेन्दि मुन् मण्मिशै मन्नरै⋆ मूवॆळुगाल्
कॊन्रदेव⋆ निन् कुरैगळल् तॊळुवदॊवगै⋆ एनक्करुळपुरियेय⋆
मन्रिल् माम् पॊळिल् नुळैदन्दु⋆ मल्लिगै मौवलिन् पोदलरत्ति⋆
तॆन्रल् मा मणम् कमळ तर वरु⋆ तिरुवॆळ्ळरै निन्राने॥१॥</td><td>तिरूवेळळरै में रहने वाले प्रभु ! जहां शीतल वायु आम के बगानों से चलकर चमेली एवं मुल्लै के कलियों पर होती हुई सर्वत्र सुगंध विखेरती है। पुरा काल में फरशा धारण कर पृथ्वी पर शासन करने वाले इक्कीस राजाओं को आपने धराशायी किया। आपके चरण की प्राप्ति हो सके कृपया इसका मार्ग बताइये, विनती है। **1368**</td></tr>
<tr><td>वशैयिल् नान्मरै कॆडुत्त अम्मलरयर्करुळि⋆ मुन्वरि मुगमाय्⋆
इशैगॊळ वेदनूल् एन्रिवै पयन्दवने !⋆ एनक्करुळ पुरियेय⋆
उयरगॊळ मादवि प्पोदॊडुलाविय⋆ मारुदम् वीदियिन्वाय्⋆
दिशै एल्लाम् कमळुम् पॊळिल् शूळ⋆ तिरुवॆळ्ळरै निन्राने॥२॥</td><td>तिरूवेळळरै में रहने वाले प्रभु ! जहां माधवी वड़ी होकर फूल की सुगंध सभी दिशाओं में फैलाती है। पुरा काल में आप हयग्रीव होकर आये और फूल से उत्पन्न ब्रह्मा को वेद की ऋचायें वापस कराये जो वे असुरों को गंवा बैठे थे। कृपा कीजिये, विनती है। **1369**</td></tr>
<tr><td>वॆय्यनाय् उलगेळ उडन् नलिन्दवन्⋆ उडलगम् इरु पिळवा⋆
कैयिल् नीळुगिर् प्पडैयदु वाय्त्तवने !⋆ एनक्करुळ पुरियेय
मैयिन् आर्तरु वराल् इनम् पाय⋆ वण्तडत्तिडै क्कमलङ्गळ⋆
दॆय्व नारुम् ऒण् पॊय्गैगळ शूळ⋆ तिरुवॆळ्ळरै निन्राने॥३॥</td><td>तिरूवेळळरै में रहने वाले प्रभु ! जहां जलाशयों में वराल मछलियां तैरती हैं एवं कमल दिव्य सुगंध फैलाते हैं। पुरा काल में आप तीक्ष्ण पंजों के साथ आकर सातों लोकों के अत्याचारी असुर की अंतड़ी बाहर निकाल दी। कृपा कीजिये, विनती है। **1370**</td></tr>
<tr><td>वाम्बरियुग मन्नर् तम् उयिर् शॆग⋆ ऐवर्गट्करशळित्त⋆
काम्बिन् आर् तिरु वेङ्गड प्पॊरुप्प !⋆ निन् कादलै अरुळ एनक्कु⋆
माम्बॊळिल् तळिर् कोदिय मडक्कुयिल्⋆ वायदु तुवर्प्पॆय्द⋆
तीम्बलङ्गनि त्तेन् अदु नुगर्⋆ तिरुवॆळ्ळरै निन्राने॥४॥</td><td>तिरूवेळळरै में रहने वाले प्रभु ! जहां कोयल आम के पल्लवों पर चोंच चलाकर कटहल के अमृत मय फल खाते हैं। बांसवाड़ी वाले वेंकटम के प्रभु ! घोड़े एवं योद्धा राजाओं का नाश राज्य पांच पांडवों को दे दिया। कृपा कीजिये, विनती है। **1371**</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td>मान वेर्लोंण्गण् मडवरल्* मण्मगळ् अळुङ्ग मुन्नीर् प्परप्पिल्*
एनम् आगि अन्रिरु निलम् इडन्दवने !* एनक्करुळ् पुरिये*
कान मा मुल्लै कळै क्करुम्बेरि* वेंण्मुरुवल् शेय्दलर्गिन्र*
तेनिन् वाय् मलर् मुरुगुगुक्कुम्* तिरुवेंळ्ळरै निन्राने॥५॥</td><td>तिरूवेळळरै में रहने वाले प्रभु ! जहां मुल्लै लता का जंगल गन्ने की शिखर तक फैला है। मन खुशकरने वाले सुगंध के फूल मधुमक्खी के मुंह में अमृत देते हैं। पुराकाल में वराह के रूप में आकर दुखी पृथ्वी को प्रलय के जल से बाहर निकाले। कृपा कीजिये, विनती है। **1372**</td></tr>
<tr><td>पोंङ्गु नीळ् मुडि अमरर्गळ् तोंळुदेंळ* अमुदिनै क्कोंडुत्तळिप्पान्*
अङ्गोर् आमै अदागिय आदि !* निन् अडिमैयै अरुळ् एनक्कु*
तङ्गु पेडैयोंडूडिय मदुगरम्* तैयलार् कुळल् अणैवान्*
तिङ्गळ् तोय् शेंन्नि माडम् शेंन्रणै* तिरुवेंळ्ळरै निन्राने॥६॥</td><td>तिरूवेळळरै में रहने वाले प्रभु ! जहां किशोरियों के फूल वाले जूड़ों से प्रेमी मधुमक्खियां बाहर गिर कर एक दूसरे पर कूदते हुए चांद छूती अटारियों के ऊपर अपने छत्ते में चले जाते हैं।पुराकाल में कच्छप के रूप में आपने देवों को अमृत दिया जिससे वे जीवित रहकर आपकी पूजा कर सकें। सेवा करने की कृपा कीजिये, विनती है। **1373**</td></tr>
<tr><td>आरिनोडोंरु नान्गुडै नेंडु मुडि* अरक्कन् तन् शिरम् एल्लाम्*
वेरु वेरुग विल्लदु वळैत्तवने !* एनक्करुळ् पुरिये*
मारिल् शोदिय मरदग प्पाशडैद्* तामरै मलर् वारन्द*
तेरल् मान्दि वण्डिन् इशै मुरल्* तिरुवेंळ्ळरै निन्राने॥७॥</td><td>तिरूवेळळरै में रहने वाले प्रभु ! जहां हरे भरे सरोवरों में खिले कमल पर भौंरे अमृत पीते हैं एवं बैठकर मधुर गीत गाते हैं। पुराकाल में धर्नुधारी बनकर आपने राक्षस राज के दस मस्तक काट डाले।कृपा कीजिये, विनती है।**1374**</td></tr>
<tr><td>मुन्निव्वेंळुलगुणर्विन्रि* इरुळ् मिग उम्बर्गळ् तोंळुदेत्त*
अन्नम् आगियन्ररु मरै पयन्दवने !* एनक्करुळ् पुरिये
मन्नु केदगै शूदगम् एन्रिवै* वनत्तिडै च्चुरुम्बिनङ्गळ्*
तेंन्नवेंन्न वण्डिन् इशै मुरल्* तिरुवेंळ्ळरै निन्राने॥८॥</td><td>तिरूवेळळरै में रहने वाले प्रभु ! जहां आम एवं खजूर के बागों में मधुमक्खियां ‘तेना तेना’ गाती हैं तथा उनके संग में भौंरे वाद्य गान करते हैं।पुराकाल में सातों लोक अविद्या के अंधकार में थे तब हंस बनकर एवं देवों से पूजित होकर आपने अमूल्य वेद दिया। कृपा कीजिये, विनती है।**1375**</td></tr>
<tr><td>आङ्गु मावलि वेंळ्वियिल् इरन्दु शेंन्रु* अगल् इडम् मुळुदिनैयुम्*
पाङ्गिनाल् कोंण्डवरम ! निन् पणिन्देंळुवेन्* एनक्करुळ् पुरिये*
ओङ्गुपिण्डियिन् शेंम् मलर् एरि* वण्डुळिदर* मावेरि
त्तीङ्गुयिल् मिळट्रुम् पडप्पै* त्तिरुवेंळ्ळरै निन्राने॥९॥</td><td>तिरूवेळळरै में रहने वाले प्रभु ! जहां अशोक वृक्ष के लाल फूलों पर मधुमक्खियां मंड़राती हैं एवं कोयल आम के पेड़ पर बैठकर मृदु गीत गाते हैं। पुराकाल में आप मावली के यज्ञ में गये एवं पूरे जगत को दो पगों में ले लिया। अपनी पूजा का अवसर देनें की कृपा कीजिये, विनती है।**1376**</td></tr>
</table>

मञ्जुला मणि माडङ्गळ् शूळ्⋆ तिरुवॆळ्ळरै अदन् मेय⋆ अञ्जनम् पुरैयुम् तिरुवुरुवनै⋆ आदियै अमुदत्तै⋆ नञ्जुलाविय वेल् वलवन्⋆ कलिगन्रि शॊल् ऐयिरण्डुम्⋆ एञ्जल् इन्रि निन्रेत्त वल्लार्⋆ इमैयोर्क्करशावर्गळे॥१०॥	ऊंचे महलों के तिरूवेळळरै वाले आदि कारण, अमृत, एवं सलोने श्याम वर्ण के प्रभु की यशगाथा तीक्ष्ण भालाधारी राजा कलिकन्रि ने मधुर तमिल पदों की माला से की है। जो कण्ठ कर लेंगे वे देवों के राजा बनकर रहेंगे। **1377** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

44 उन्दिमेल् (1378 - 1387)

तिरूवरंगम 1

(मूलावर चतुर्भुज रूप में आदिशेष पर दक्षिणाभिमुख शयनावस्था यानी भुजंग शयनम अवस्था में हैं। आपका सिर पूरब में है तथा चरण पश्चिम में है। Ramesh vol. 2 , pp 20)

उन्दिमेल् नान्मुगनै प्पडैत्तान्⋆ उलगुण्डवन् एन्दै पेम्मान्⋆ इमैयोर्गळ् तादैक्कु⋆ इडम् एन्बराल्⋆ शन्दिनोडु मणियुम् कोळिक्कुम्⋆ पुनल् काविरि⋆ अन्दिपोलुम् निरत्तार् वयल् शूळ्⋆ तेन् अरङ्गमे॥१॥	अहा ! लोग इसे दक्षिणी अरंगम कहते हैं जो सुनहले अस्ताचलगामी सूर्य के रंग वाले खेतों से घिरा है एवं जहां कावेरी का तेज प्रवाहित जल चंदन तथा रत्न का ढ़ेर जमा करता है। यहां आप प्रभु का निवास है जो नाभि पर जगत के स्रष्टा के स्रष्टा हैं, लोकों को निगलने वाले हैं, देवों के पितामह हैं, एवं हमारे आराध्य आदेशदाता हैं। **1378**
वैयम् उण्डाल् इलै मेवुम् मायन्⋆ मणि नीळ् मुडि⋆ पै कोळ् नागत्तणैयान्⋆ पयिलुम् इडम् एन्बराल्⋆ तैयल् नल्लार् कुळल् मालैयुम्⋆ मट्वर् तड मुलै⋆ शेय्य शान्दुम् कलन्दिळि पुनल् शूळ्⋆ तेन् अरङ्गमे॥२॥	अहा ! लोग इसे दक्षिणी अरंगम कहते हैं। यह तेज प्रवाह वाले जल से घिरा है जो सुन्दरियों के जूड़ों के फूल एवं उनके उरोजों के चंदन को बहाकर लाता है। यहां आश्चर्यमय प्रभु का निवास है जो समस्त जगत को निगल कर बट पत्र पर सो गये। प्रभु ! ऊंचे मुकुट धारण कर फणधारी शेष पर लेटे हैं। **1379**
पण्डुइव् वैयम् अळप्पान् शेन्रु⋆ मावलि कैयिल् नीर् कोण्ड⋆ आळि त्तड क्कै⋆ क्कुरळन् इडम् एन्बराल्⋆ वण्डु पाडुम् मदु वार् पुनल्⋆ वन्दिळि काविरि⋆ अण्ड नारुम् पोळिल् शूळ्न्दु⋆ अळगार् तेन् अरङ्गमे॥३॥	अहा ! लोग इसे दक्षिणी अरंगम कहते हैं। यह तेज प्रवाह वाले जल से घिरा है जो सुन्दर बागों से गुजरता है जहां अमृत पीती मधुमक्खियां गूंजती एवं गाती हैं तथा सर्वत्र सुगंध प्रसारित होते रहता है। यहां प्रभु का निवास है जो चक्रधारी हैं एवं वामन के रूप में मावली के यज्ञ में जाकर उससे पृथ्वी उपहार में ले लिये। **1380**
विळैत्त वेम् पोर् विरल् वाळ् अरक्कन्⋆ नगर् पाळ्पड⋆ वळैत्त वल् विल् तडक्कै अवनुक्कु⋆ इडम् एन्बराल्⋆ तुळै क्कै यानै मरुप्पुम् अगिलुम्⋆ कोणर्न्दुन्दि⋆ मुन् तिळैक्कुम् शेल्व प्पुनल् काविरि शूळ्⋆ तेन् अरङ्गमे॥४॥	अहा ! लोग इसे दक्षिणी अरंगम कहते हैं। यह तेज प्रवाह वाले जल से घिरा है जो मूल्यवान हाथी के दांत एवं सुगंधित अगिल की लकड़ी बहा कर लाता है। यहां प्रभु का निवास है जिन्होंने भारी धनुष चलाकर राक्षसों के नगर का नाश किया। **1381**

वम्बुलाम् कून्दल् मण्डोदरि कादलन्* वान् पुग* अम्बु तन्नाल् मुनिन्द* अळगन् इडम् एन्बराल्* उम्बर् कोनुम् उलगेळुम्* वन्दीण्डि वणङ्गुम्* नल् शेम् पोनारम् मदिळ् शूळ्न्दु* अळगार् तेन् अरङ्गमे॥५॥	अहा ! लोग इसे दक्षिणी अरंगम कहते हैं। यह सुनहले दीवालों से घिरा है जहां देवों के राजा इन्द्र देवताओं की अगुआई कर पूजा करते हैं। यहां प्रभु का निवास है जिन्होंने बाणों की वर्षा कर सुन्दर मंदोदरी के पति को स्वर्गवासी बना दिया। **1382**
कलै उडुत्त अगलल्गुल्* वन् पेय् मगळ् ताय् एन* मुलै कोडुत्ताळ् उयिर् उण्डवन्* वाळुम् इडम् एन्बराल्* कुलैयेडुत्त कदलि* प्पोळिलूडुम् वन्दुन्दि* मुन् अलै एडुक्कुम् पुनल् काविरि शूळ्* तेन् अरङ्गमे॥६॥	अहा ! लोग इसे दक्षिणी अरंगम कहते हैं। यह तेज प्रवाह वाली कावेरी से घिरा है जो केला के बगानों से गुजरती हुई अपनी धार में फलों को ले जाती है। यहां प्रभु का निवास है जिन्होंने सुन्दरी आया के रूप में आकर विषैले स्तन पिलाने वाली राक्षसी का प्राण हर लिया। **1383**
कञ्जन् नेञ्जुम् कडु मल्लरुम्* शगडमुम् कालिनाल्* तुञ्ज वेन्र् शुडर् आळियान्* वाळुम् इडम् एन्बराल्* मञ्जु शेर् माळिगै* नीडगिल् पुगैयुम् मा मरैयोर्* शेञ्जोल् वेळ्वि प्पुगैयुम् कमळुम्* तेन् अरङ्गमे॥७॥	अहा ! लोग इसे दक्षिणी अरंगम कहते हैं। यह बादलों को छूते महलों से भरा है। यहां सुगंधित अगिल का धुंआ एवं वैदिक ऋषियों की यज्ञाग्नि की महक छायी रहती है।यहां प्रभु का निवास है जो चक्रधारी हैं एवं आपने कंस एवं पहलवानों का नाश किया तथा पैर से कूर गाड़ी को तोड़ डाला। **1384**
एन मीन् आमैयोडु* अरियुम् शिरु कुरळुमाय्* तानुमाय* त्तरणि त्तलैवन् इडम् एन्बराल्* वानुम् मण्णुम् निरैय* प्पुगुन्दीण्डि वणङ्गुम्* नल् तेनुम् पालुम् कलन्दन्नवर् शेर्* तेन् अरङ्गमे॥८।	अहा ! लोग इसे दक्षिणी अरंगम कहते हैं। यह सभी जगह पृथ्वी एवं आकाश से आकर पूजा करने वाले दूध एवं शहद से मधुर भक्तों से भरा रहता है। यहां प्रभु का निवास है जो वराह मत्स्य नरसिंह वामन एवं स्वयं के वर्तमान रूप में आये। **1385**
शेयन् एन्रुम् मिग प्पेरियन्* नुण् नेमैयिन् आय* इम् मायैयारुम् अरिया* वगैयान् इडम् एन्बराल्* वेयिन् मुत्तुम् मणियुम् कोणरन्दु* आर् पुनल् काविरि* आय पोन् मा मदिळ् शूळ्न्दु* अळगार् तेन् अरङ्गमे॥९॥	अहा ! लोग इसे दक्षिणी अरंगम कहते हैं। यह कावेरी के भंवर वाले जल से घिरा है जो यहां के मंदिर की सुनहली दीवालों पर मोती एवं रत्न धोता है।यहां प्रभु का निवास है जो दूरस्थ हैं, सर्वे सर्वा हैं, हर स्थान में रहते हैं, एवं ऐसे आश्चर्य हैं जो कोई कभी भी नहीं समझ पायेगा। **1386**

‡अल्लि मादर् अमरुम्⋆ तिरु मार्वन् अरङ्गत्तै⋆ कल्लिन् मन्नु मदिळ्⋆ मङ्गैयर् कोन् कलिगन्रि शॊल्⋆ नल्लिशै मालैगळ्⋆ नाल् इरण्डुम् इरण्डुम् उडन्⋆ वल्लवर् ताम् उलगाण्डु⋆ पिन् वान् उलगाळ्वरे॥१०॥	सुरक्षित दीवालों के मंगै क्षेत्र के राजा कलिकन्रि का यह मधुर तमिल गीतमाला अरंगम के प्रभु की प्रशस्ति है जो कमल सी लक्ष्मी को अपने वक्षस्थल पर धारण किये हुए हैं।जो इसे कंठ कर लेगा वह पृथ्वी का शासक होते हुए आकाश पर भी राज्य करेगा। **1387** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः **45 वेरूवादाळ् (1388 - 1397)** **तिरूवरंगम 2** (परकाल नायकी की मां के रूप में)	
वेॅरुवादाळ् वाय्वेॅरुवि* वेङ्गडमे ! वेङ्गडमे ! एन्गिन्राळाल्* मरुवाळाळेॅन् कुडङ्गाल्* वाळ् नेॅडुङ्गण् तुयिल् मरन्दाळ्* वण्डार् कॉण्डल् उरुवाळन् वानवर् तम् उयिराळन्* ऑलि तिरै नीर् प्पौवम् कॉण्ड तिरुवाळन्* एन् मगळै च्चेॅय्दनगळ्* एङ्ङनम् नान् शिन्दिक्केने॥१॥	हे वेंकटम! हे वेंकटम! मेरी बेटी सारा दिन प्रलापरत रहती है। हमारी गोद में भी नहीं रहती एवं उसकी बड़ी आंखों की नींद चली गयी। मेघ के वर्ण वाले, मधुमक्खी मंड़राते, देवों के नाथ प्राण एवं सांस, श्रीपति ! कैसे मैं स्वीकार करूं जो आपने हमारी बेचारी बेटी के साथ किया है ? **1388**
कलैयाळा अगल् अल्गुल्* कनवळैयुम् कैयाळा एन् शेॅय्गोन् नान्* विलैयाळा अडियेनै* वेण्डुदियो वेण्डायो एन्नुम्* मेॅय्य मलैयाळन् वानवर् तम् तलैयाळन्* मरामरम् एळेॅय्द वेॅन्रि च्चिलैयाळन्* एन् मगळै च्चेॅय्दनगळ्* एङ्ङनम् नान् शिन्दिक्केने॥२॥	उसने अपना कंगन एवं कमरधनी खो दिया है, मैं क्या करूं ? वह खुलेआम पूछती है 'हे खरीदार! क्या तुम इस दासी को चाहते हो ?' तिरूमेय्यम ! देवों के प्रभु ! एक पंक्ति के सात वृक्षों को वेधने वाले धनुर्धारी ! कैसे मैं स्वीकार करूं जो आपने हमारी बेचारी बेटी के साथ किया है ? **1389**
मान् आय मेॅन् नोक्कि* वाळ् नेॅडुङ्गण् नीर् मल्गुम् वळैयुम् शोरुम्* तेन् आय नरुन् तुळाय् अलङ्गलिन्* तिरम् पेशि उरङ्गाळ् काण्मिन्* कान् आयन् कडि मनैयिल् तयिर् उण्डु नेॅय् परुग* नन्दन् पेॅट्र आन् आयन्* एन् मगळै च्चेॅय्दनगळ्* अम्मनैमीर् ! अरिगिल्लेने॥३॥	देखिये, मृगनयनी की आंखें अश्रुपूर्ण है एवं उसके कंगन टिकते नहीं हैं। सारी रात वह शीतल अमृतमयी तुलसी की बात करती है और नींद गंवा चुकी है। वनवासी ! गोपियों के बन्द घरों से दही एवं घी चुराने वाले नन्द के लाल ! कैसे मैं स्वीकार करूं जो आपने हमारी बेचारी बेटी के साथ किया है ? **1390**
ताय् वायिल् शॉल् केळाळ्* तन् आयत्तोडणैयाळ् तड मेॅन् कॉङ्गैये* आर च्चान्दणियाळ्* एम् पेॅरुमान् तिरुवरङ्गम् एङ्गे एन्नुम्* पेय्माय मुलैयुण्डिव्वुलगुण्ड पेॅरु वयिट्रन्* पेशिल् नङ्गाय्* मा मायन् एन् मगळै च्चेॅय्दनगळ्* मङ्गैमीर् ! मदिक्किल्लेने॥४॥	हमारी बात नहीं सुनती और न अपनी सखियों से बात करती है एवं अपने ऊंचे उरोजों में चंदन भी नहीं लगाती। केवल यही पूछती है 'हमारे प्रभु का घर तिरूवरंगम कहां है? राक्षसी के स्तन पीने वाले, समस्त जगत को एक ही कवल में निगल जाने वाले आश्चर्य मय प्रभु ! कैसे मैं स्वीकार करूं जो आपने हमारी बेचारी बेटी के साथ किया है ? **1391**

पूण् मुलैमेल् शान्दणियाळ्⋆ पॊरु कयल् कण् मै ऎळुदाळ् पूवै पेणाळ्⋆ ऎण् अरियाळ् ऎत्तनैयुम्⋆ ऎम् पॆरुमान् तिरुवरङ्गम् ऎङ्गे ऎन्नुम्⋆ नाण्मलराळ् नायगनाय्⋆ नाम् अरिय आयप्पाडि वळर्न्द नम्बि⋆ आण्मगनाय् ऎन् मगळै च्चॆय्दनगळ्⋆ अम्मनैमीर्! अऱिगिलेने॥५॥	न तो अपने उरोजों को सजाती है, न आंखों में काजल करती है, और न गुड़ियों से खेलती है। रूक रूक कर पूछती है 'हमारे प्रभु का घर तिरूवरंगम कहां है ? कमलवाली लक्ष्मी के पतिदेव, नर गाय चराने वाले पुरूष ! हम लोग सब जानते हैं कि आप का गोकुल में लालन पालन कैसे हुआ। कैसे मैं स्वीकार करूं जो आपने हमारी बेचारी बेटी के साथ किया है ? **1392**
तादाडु वनमालै⋆ तारानो ऎन्ऱॆन्ऱे तळर्न्दाळ् काण्मिन्⋆ यादानुम् ऒन्ऱुरैक्किल्⋆ ऎम् पॆरुमान् तिरुवरङ्गम् ऎन्नुम्⋆ पूमेल् मादाळन् कुडम् आडि मदुशूदन्⋆ मन्नर्क्काय् मुन्नम् शॆन्ऱ तूदाळन्⋆ ऎन्मगळै च्चॆय्दनगळ्⋆ ऎङ्ङनम् नान् शॊल्लुगेने॥६॥	देखिये, मंजर के साथ आपकी तुलसी की माला की प्रतीक्षा में है। कुछ उससे बात कीजिये।लंबी उसांसें भरते हए बोलती है 'मेरे अरंगम के प्रभु!' कमल लक्ष्मी के दूलहा, पांडव के दूत, पात्र नर्त्तक, मधुसूदन ! कैसे मैं स्वीकार करूं जो आपने हमारी बेचारी बेटी के साथ किया है ? **1393**
वार् आळुम् इळङ्गॊङ्गै⋆ वण्णम् वेऱायिनवाॅण्णाळ्⋆ ऎण्णिल् पेराळन् पेर् अल्लाल् पेशाळ्⋆ इ प्पॆण् पॆट्रेन् ऎन् शॆय्गेन् नान्⋆ ताराळन् तण् कुडन्दै नगर् आळन्⋆ ऐवर्क्काय् अमरिल् उय्त्त तेर् आळन्⋆ ऎन् मगळै च्चॆय्दनगळ्⋆ ऎङ्ङनम् नान् शॆप्पुगेने॥७॥	यह भी नहीं देखती कि उसकी कंचुकी का लाल रंग उड़ गया है।अगर कुछ बोलती है तो केवल प्रभु का नाम, यह तो हमारी बेटी की स्थिति है। हे नारियों !तुलसी की माला, कुडन्दै के प्रभु! आपने पांच राजाओं का रथ चलाया। कैसे मैं स्वीकार करूं जो आपने हमारी बेचारी बेटी के साथ किया है ? **1394**
उऱवादुम् इलळ् ऎन्ऱॆन्ऱु⋆ ऒऴियादु पलर् ऎशुम् अलर् आयिट्राल्⋆ मऱवादे ऎप्पॊऴुदुम्⋆ मायवने! मादवने! ऎन्गिन्ऱाळाल्⋆ पिऱवाद पेराळन् पॆण् आळन् मण् आळन्⋆ विण्णोर् तङ्गळ् अऱवाळन्⋆ ऎन् मगळै च्चॆय्दनगळ्⋆ अम्मनैमीर्! अऱिगिलेने॥८॥	'उसका कोई पारिवारिक बंधन नहीं है' इस तरह से सभी उसे दोष लगाते रहते हैं। हे नारियों ! हर समय निरंतर वह यह बोलती है 'माधव ! आश्चर्य मय प्रभु ! वराह ! अजन्मा प्रभु ! हजारों नाम वाले ! श्रीदेवी के! भू देवी के ! आकाश के नाथ ! कैसे मैं स्वीकार करूं जो आपने हमारी बेचारी बेटी के साथ किया है ? **1395**
पन्दोडु कऴल् मरुवाळ्⋆ पैङ्गिळियुम् पाल् ऊट्टाळ् पावै पेणाळ्⋆ वन्दानो तिरुवरङ्गन्⋆ वारानो ऎन्ऱॆन्ऱे वळैयुम् शोरुम्⋆ शन्दोगन् पौऴियन्⋆ ऐन् तऴल् ओम्बु तैत्तिरियन् शामवेदि⋆ अन्दो! वन्दॆन् मगळै च्चॆय्दनगळ्⋆ अम्मनैमीर्! अऱिगिलेने॥९॥	अपने डंडे एवं गेंद से, गुड़ियों से, एवं सुन्दर सुग्गा से, अब कभी नहीं खेलती। 'श्रीरंगम प्रभु ! आ रहे हैं ? नहीं आ रहे हैं। कंगन गिर जाते हैं। 'छान्दोग्य, तैत्तिरीय, कौशितकी, अग्नि वेदी, साम वेद, हे वैदिक प्रभु ! कैसे मैं स्वीकार करूं जो आपने हमारी बेचारी बेटी के साथ किया है ? **1396**

शेल् उगळुम् वयल् पुडै शूळ्* तिरुवरङ्गत्तम्मानै च्चिन्दै शेय्द* नील मलर् क्कण् मडवाळ् निरै अळिवै* ताय् मोळिन्द अदनै* नेरार् काल वेल् परकालन्* कलिगन्रि ऑलि मालै कट्टु वल्लार्* मालै शेर् वेण् कुडैक्कीळ् मन्नवराय्* प्पोन् उलगिल् वाळ्वर् तामे॥१०॥	परकालन कलकन्रि के ये मधुर तमिल गीतमालिका मां की वेदना को चित्रित करते हैं जिसकी गहरे रंग की आंखों वाली बेटी अपना मन अरंगम के प्रभु को दे चुकी है जहां के खेतों में सेल मछलियां उछलती है। जो इसको कंठ कर लेगा वह श्वेत मोती से बने छत्र का धारण करने वाला आकाश का शासक होगा। **1397** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

46 कैमानम (1398 - 1407)

तिरूवरंगम 3

कैम् मान मळ कळिट्रै⋆ क्कडल् किडन्द करुमणियै⋆ मैम् मान मरगदत्तै⋆ मरैयुरैत्त तिरुमालै⋆ एम्मानै एनक्केन्रुम् इनियानै⋆ प्पनि कात्त अम्मानै⋆ यान् कण्डदु⋆ अणि नीर् त्तेन् अरङ्गत्ते॥१॥	हस्ति शावक, सागर में सोने वाले गहरे रंग के रत्न, गहरे रंग के पन्ना, वैदिक प्रभु, हमारे नाथ, हमसे हमेशा मृदु रहने वाले प्रभु, तूफान रोकने वाले प्रभु ! हमने आपको शीतल जल वाले दक्षिण अरंगम में देखा है। **1398**
पेरानै⋆ क्कुरुङ्गुडि एम् पेरुमानै⋆ तिरुत्तण्गाल् ऊरानै⋆ क्करम्बनूर् उत्तमनै⋆ मुत्तिलङ्गु कार् आर् तिण् कडल् एळुम्⋆ मलैयेळ् इव्वुलगेळ् उण्डुम्⋆ आरादेन्रिरुन्दानै⋆ क्कण्डदु तेन् अरङ्गत्ते॥२॥	तिरूप्पेर के प्रभु ! तिरूक्कुरूंगुडी के प्रभु ! तिरूत्तनकल के निवासी ! करंबनूर के निष्णात प्रभु ! सात समुद्रों, सात पहाड़ों, सात द्वीपों एवं अन्य सभी को खा जाने वाले प्रभु ! हमने आपको शीतल जल वाले दक्षिण अरंगम में देखा है। **1399**
एन् आगि उलगिडन्दु⋆ अन्रिरु निलनुम् पेरु विशुम्बुम्⋆ तान् आय पेरुमानै⋆ त्तन् अडियार् मनत्तेन्रुम्⋆ तेन् आगि अमुदागि⋆ त्तिगळ्न्दानै मगिळ्न्दोरुगाल्⋆ आन् आयन् आनानै⋆ क्कण्डदु तेन् अरङ्गत्ते॥३॥	वराह रूप में प्रभु ने पृथ्वी एवं आकाश को अपना बना लिया।सदा के लिये भक्तों के अमृत, पुरा काल में प्रसन्न मन से गाय चराने वाले प्रभु! हमने आपको शीतल जल वाले दक्षिण अरंगम में देखा है। **1400**
वळर्न्दवनै त्तडङ्गडलुळ्⋆ वलि उरुविल् तिरि शगडम्⋆ तळर्न्दुदिर उदैत्तवनै⋆ त्तरियादन्रिरणियनै प्पिळन्दवनै⋆ पेरु निलम् ईर् अडि नीट्टि⋆ प्पण्डोरुनाळ् अळन्दवनै⋆ यान् कण्डदु⋆ अणि नीर् त्तेन् अरङ्गत्ते॥४॥	सागर में सोने वाले प्रभु ! क्रूर गाड़ी को चकनाचूर करने वाले प्रभु ! हिरण्य की छाती चीरने वाले, वामन की तरह आए आकाश तक विस्तरित हुए एवं पृथ्वी को अपना लिया। हमने आपको शीतल जल वाले दक्षिण अरंगम में देखा है। **1401**
नीर् अळलाय्⋆ नेडु निलनाय् निन्रानै⋆ अन्ररक्कन् ऊर् अळलाल् उण्डानै⋆ क्कण्डार् पिन् काणामे⋆ पेर् अळलाय् प्पेरु विशुम्बाय्⋆ प्पिन् मरैयोर् मन्दिरत्तिन्⋆ आर् अळलाल् उण्डानै⋆ क्कण्डदु तेन् अरङ्गत्ते॥५॥	जल, अग्नि एवं विस्तृत आकाश की तरह दिखने वाले प्रभु ! आपने पुरा काल में अग्नि वमन करने वाले बाणों से लंका को जलाकर क्षार कर दिया। यज्ञाग्नि से प्राप्त होने वाले प्रभु ! स्वर्ग प्रदान करने वाले प्रभु ! हमने आपको शीतल जल वाले दक्षिण अरंगम में देखा है। **1402**

तञ्शिनत्तै त्तविरत्तडैन्दार्⋆ तव नॆंरियै⋆ तरियादु कञ्जनै क्कॊंन्रु⋆ अन्रुलगम् उण्डुमिळन्द कर्पगत्तै⋆ वॆंञ्जिनत्त कॊंडुन् तॊंळिलोन्⋆ विशैयुरुवै अशैवित्त⋆ अञ्जिरै प्पुळ् पागनै⋆ यान् कण्डदु तॆंन् अरङ्गत्ते॥६॥	कोध का त्याग करने जैसा कठिन पथ पर चलने से प्राप्त होने वाले प्रभु, कंस को मारने वाले प्रभु, जगत को निगल कर बाहर कर देने वाले प्रभु, कल्प वृक्ष, गरूड़ की सवारी करने वाले जो भयानक कर्मो में रत एवं तेज भागने वाले शिव को भगाने वाले हैं। हमने आपको शीतल जल वाले दक्षिण अरंगम में देखा है। **1403**
शिन्दनैयै त्तवनॆंरियै⋆ त्तिरुमालै⋆ पिरियादु वन्दॆंनदु मनत्तिरुन्द⋆ वडमलैयै⋆ वरि वण्डार् कॊंन्दणैन्द पॊंळिल् कोवल्⋆ उलगळप्पान् अडि निमिर्त्त अन्दणनै⋆ यान् कण्डदु⋆ अणि नीर् त्तॆंन् अरङ्गत्ते॥७॥	विचार के स्रोत, तपस्या के मार्ग, श्रीपति, उत्तरदिशा के वेंकटम पर्वत के निवासी, हमारे हृदय के चोर, पृथ्वी मापने वाले वैदिक बटु, मधुमक्खी मंडराते सुगंधित बाग वाले तिरूकोव्लूर के प्रभु ! हमने आपको शीतल जल वाले दक्षिण अरंगम में देखा है। **1404**
तुवरित्त उडैयवर्क्कुम्⋆ तूय्मै इल्ला च्चमणर्क्कुम्⋆ अवर्गट्कङ्गरुळ् इल्ला⋆ अरुळानै⋆ तन् अडैन्द एमर्गट्कुम् अडियेर्कुम्⋆ एम्मार्कुम् एम् अनैक्कुम्⋆ अमरर्क्कुम् पिरानारै⋆ क्कण्डदु तॆंन् अरङ्गत्ते॥८॥	गौरवशाली प्रभु जो काषाय वस्त्र वाले बौद्ध एवं दुर्गंध से भरे श्रमनों को कोई गौरव नहीं देते। नीच जन अडियन के नाथ, हमारे पिता, माता, संबंधियों एवं देवों के नाथ ! हमने आपको शीतल जल वाले दक्षिण अरंगम में देखा है। **1405**
पॊंय् वण्णम् मनत्तगट्रि⋆ प्पुलन् ऐन्दुम् शॆंल वैत्तु⋆ मॆंय् वण्णम् निनैन्दवर्क्कु⋆ मॆंय्न् निन्र वित्तगनै⋆ मै वण्णम् करु मुगिल् पोल्⋆ तिगळ् वण्ण मरदगत्तिन्⋆ अव्वण्ण वण्णनै⋆ यान् कण्डदु तॆंन् अरङ्गत्ते॥९॥	सच्चे प्रभु ! हमारी मिथ्या धारणाओं से मुक्त करने वाले, इन्द्रियों को नियंत्रित कर हमारे हृदय में राजकुमार की तरह स्थापित । वर्षा का मेघ की तरह चमकने वाले, गहरे रंग के रत्न एवं पन्ना के समान हैं। आप हमारे एक मात्र आश्रय हैं। **1406**
आ मरुवि निरै मेय्त्त⋆ अणि अरङ्गत्तम्मानै⋆ कामरु शीर् क्कलिगन्रि⋆ ऑंलि शॆंय्द मलि पुगळ् शेर्⋆ ना मरुवु तमिळ् मालै⋆ नाल् इरण्डोडिरण्डिनैयुम्⋆ नामरुवि वल्लार् मेल्⋆ शारा तीविनै तामे॥१०॥	यह मधुर तमिल पदों की माला गायों की रक्षा करने वाले एवं अरंगम के सुन्दर प्रभु की प्रशस्ति में चिरप्रसिद्ध पूज्य कवि कलकन्रि ने रचा है। जो इन पदों को याद कर लेंगे वे दुष्कर्मो से बचा लिये जायेंगे। **1407** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

47 पण्डै (1408 - 1417)

तिरूवरंगम 4

पण्डै नान्मरैयुम् वेळ्वियुम् केळ्वि प्पदङ्गळुम्* पदङ्गळिन् पॊरुळुम्* पिण्डमाय् विरित्त पिरङ्गॊळि अनलुम्* पॆरुगिय पुनलॊडु निलनुम्* कॊण्डल् मारुदमुम् कुरै कडल् एळुम्* एळु मा मलैगळुम् विशुम्बुम्* अण्डमुम् तानाय् निन्र एम् पॆरुमान्* अरङ्ग मा नगर् अमर्न्दाने॥१॥	शाश्वत वेद, यज्ञ, प्रशना, व्याकरण, एवं उनके अर्थ, इन सबों के कारण। पवित्र अग्नि वेदी, नदियों के पवित्र जल, पृथ्वी, मेघ, वायु, सात समुद्र, सात पर्वत श्रेणी, आकाश एवं ब्रह्मांड, प्रभु इन सब रूपों में हैं, और आप अरंगम नगर के निवासी हैं। **1408**
इन्दिरन् पिरमन् ईशन् एन्रिवर्गळ्* एण्णिल् पल् गुणङ्गळे इयट्* तन्दैयुम् तायुम् मक्कळुम् मिक्क शुट्रमुम्* शुट्रि निन्रगला प्पन्दमुम्* पन्दम् अरुप्पदोर् मरुन्दुम् पान्मैयुम्* पल् उयिर्क्कॆल्लाम्* अन्दमुम् वाळ्वुमाय एम् पॆरुमान्* अरङ्ग मा नगर् अमर्न्दाने॥२॥	आप इन्द्र ब्रह्मा एवं शिव आदि अन्य देवों से पूजित हैं।आप माता पिता बच्चे संबंधियों के संबध हैं तथा इनसे लगाव की मुक्ति की औषधि भी आप ही है। आप साध्य साधन एवं जीवन हैं। आप अरंगम नगर के निवासी हैं। **1409**
मन्नु मा निलनुम् मलैगळुम् कडलुम्* वानमुम् दानवर् उलगुम्* तुन्नु मा इरुळाय् तुलङ्गॊळि शुरुङ्गि* तॊल्लै नान्मरैगळुम् मरैय* पिन्नुम् वानवर्क्कुम् मुनिवर्क्कुम् नल्गि* प्पिरङ्गिरुळ् निरम् कॆड* ऒरुनाळ् अन्नमाय् अन्रङ्गरु मरै पयन्दान्* अरङ्ग मा नगर् अमर्न्दाने॥३॥	जब पृथ्वी, पर्वत, समुद्र, एवं आकाश असुरों के शासन में चले गये तथा चारों वेद अंधकार में पड़ गये तब आपने हंस रूप से संसार को प्रकाशित किया, और देवों एवं ऋषियों को फिर से एक बार वेद प्रदान किया। आप अरंगम नगर के निवासी हैं। **1410**
मा इरुङ्गुन्रम् ऒन्रु मत्ताग* माशुणम् अदनॊडुम् अळवि* पा इरुम् पौवम् पगडु विण्डलर* प्पडु तिरै विशुम्बिडै प्पडर* शेयिरु विशुम्बुम् तिङ्गळुम् शुडरुम्* देवरुम् ताम् उडन् तिशैप्प* आयिरम् तोळाल् अलै कडल् कडैन्दान्* अरङ्ग मा नगर् अमर्न्दाने॥४॥	महान वासुकी नाग को महान मंदर पर्वत के चारों ओर लपेट कर हजारों हाथ से आपने समुद्र मंथन किया। समुद्र अपने मुंह को खोलकर भारी गर्जन किया तथा उसकी लहरें आकाश तक ऊंची चली गयी।इस आश्चर्य को स्वर्ग, सूर्य, चांद, देवगन तथा अन्य जीवों ने देखा। आप अरंगम नगर के निवासी हैं। **1411**
एट्टुने उय्वर् दानवर् निनैन्दाल्* इरणियन् इलङ्गु पूण् अगलम्* पॊङ्गु वॆङ्गुरुदि पॊन् मलै पिळन्दु* पॊळिदरुम् अरुवि ऒत्तिळिय* वॆङ्गण् वाळ् एयिट्रोर् वॆळ्ळि मा विलङ्गल्* विण्णुर क्कनल् विळित्तॆळुन्ददु* अङ्गनेयॊक्क अरियुरुवानान्* अरङ्ग मा नगर् अमर्न्दाने॥५॥	जब भयानक रक्तिम आंखों वाले नरसिंह चांदी के पर्वत की तरह चलकर असुर का बध किये तब हिरण्य के चमकते आभूषणों वाली छाती से निकलते रक्त सुनहले पर्वत के लाल नाले जैसे दिख रहे थे। असुर ने सोंचा 'हम कैसे बच निकलें' तब प्रभु नरसिंह के रूप में आये। आप अरंगम नगर के निवासी हैं। **1412**

आयिरम् कुन्रम् शॅन्र् तॉक्कनैय॰ अडल् पुरै एळिल् तिगळ् तिरळ् तोळ्॰ आयिरम् तुणिय अडल् मळु प्पढि॰ मढ्वन् अगल् विशुम्बणैय॰ आयिरम् पॅयराल् अमरर् शॅन्रिरैञ्ज॰ अरिदुयिल् अलै कडल् नडुवे॰ आयिरम् शुडर् वाय् अरवणै तुयिन्रान्॰ अरङ्ग मा नगर् अमरन्दाने॥६॥	शिखरों के समान भुजाओं वाला वीर योद्धा राजा कृतवीर्य अर्जुन जब परशुराम के फरशे के शिकार हुआ तब उसकी हजारों भुजायें कट गयी और वह आकाश को चला गया। तब देवताओं से प्रशंसित होकर प्रभु क्षीर समुद्र के अपने आवास में हजारों फनवाले शेषशय्या पर सोने चले गये। आप अरंगम नगर के निवासी हैं। **1413**
शुरि कुळल् कनिवाय् त्तिरुविनै प्पिरित्त॰ कॉडुमैयिन् कडु विशै अरक्कन्॰ एरिविळित्तिलङ्गु मणि मुडि पॉडि शॅय्दु॰ इलङ्गै पाळ्पडुप्पदर्कॅण्णि॰ वरि शिलै वळैय अडुशरम् तुरन्दु॰ मरि कडल् नॅरिवड॰ मलैयाल् अरिगुलम् पणि कॉण्डलै कडल् अडैत्तान्॰ अरङ्गमानगर् अमरन्दाने॥७॥	दुष्ट आततायी राक्षस ने काले घुंघराले लटों तथा मूंगा सी होठों वाली सीता को प्रभु से अलग कर दिया। लंका को नष्ट करने के उद्देश्य से प्रभु ने पत्थरों का सेतु बना अपने महान धनुष से समुद्र का शमन किया।आपने बन्दरों की सेना के साथ नगर में प्रवेश कर शक्तिशाली रावण के मुकुट वाले दसों मस्तकों को काट डाला। आप अरंगम नगर के निवासी हैं। **1414**
ऊळियाय् ओमत्तुच्चियाय्॰ ऑरुगाल् उडैय तेर् ऑरुवनाय्॰ उलगिल् शूळि माल् यानै तुयर् कॅडुत्तु॰ इलङ्ग मलङ्ग अन्रडु शरम् तुरन्दु॰ पाळियाल् मिक्क पार्त्तनुक्करुळि॰ प्पगलवन् ऑळि कॅड॰ पगले आळियाल् अन्रङ्गाळियै मरैत्तान्॰ अरङ्ग मा नगर् अमरन्दाने॥८॥	चक्रधारी प्रभु एक चक्के वाले सूर्य देव के रथ के अंतः वासी हैं एवं अग्नि वेदी पर अर्पित सामग्रियों को प्राप्त करने वाले हैं। आपतग्रस्ता हाथी को बचाने के लिये आपने चक्र चलाया। आपने लंका नगर पर अग्नि बाणों की वर्षा की। भारत के युद्ध में आपने सूर्य को चक्र से ढककर दिन को रात बना दिया और सदाचारी अर्जुन का पक्ष लिया। आप अरंगम नगर के निवासी हैं। **1415**
पेयिनार् मुलै ऊण् पिळ्ळैयाय्॰ ऑरुगाल् पेरु निलम् विळुङ्गि अदु मिळन्द वायनाय्॰ मालाय् आल् इलै वळर्न्दु॰ मणि मुडि वानवर् तमक्कु च्चेयनाय्॰ अडियेर्कणियनाय् वन्दु॰ एं झिन्दैयुळ् वॅन्दुयररुक्कुम्॰ आयनाय् अन्रु कुन्रम् ऑन्रॅडुत्तान्॰ अरङ्ग मा नगर् अमरन्दाने॥९॥	आप वह शिशु हैं जिसने राक्षसी का स्तन पान किया। एक बार एक शिशु के रूप में सारे ब्रह्यांड को निगलकर प्रलय जल में बट पत्र पर सो गये और पुनः सारे ब्रह्यांड को बाहर निकाल दिया। मुकुटधारी देवों से आप पूजित हैं। आप हमारे नीच मन में प्रवेश कर हमें दुष्कर्मों से मुक्त कर दिया। गायों की रक्षा के लिये आपने पर्वत उठा लिया। आप अरंगम नगर के निवासी हैं। **1416**
पॉन्नु मा मणियुम् मुत्तमुम् शुमन्द॰ पॉरु तिरै मा नदि पुडै शूळ्न्दु॰ अन्नम् आडुलवुम् अलै पुनल् शूळ्न्द॰ अरङ्ग मा नगर् अमरन्दानै॰ मन्नु मा माड मङ्गैयर् तलैवन्॰ मान वेल् कलियन् वाय् ऑलिगळ्॰ पन्निय पनुवल् पाडुवार्॰ नाळुम् पळविनै पढरुप्पारे॥१०॥	महलों वाले मंगै क्षेत्र के तीक्ष्ण भाला धारी राजा कलियन ने यह मधुर तमिल पदों वाली गीतमाला की रचना अरंगन नगर के निवासी प्रभु की प्रशस्ति में की है, जहां कावेरी का जल अमूल्य सोना एवं रत्न धोता है एवं हंसो की जोड़ी शांत जल में निवास करती है। गान के माध्यम से इसे कंठ करने वाले अपने प्राचीन कर्मो की यातना से मुक्त हो जायेंगे। **1417** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः **48 एळै एदलन् (1418 - 1427)** **तिरूवरंगम 5**	
एळै एदलन् कीळ्मगन् एन्नादु इरङ्गि⋆ मट्रवर्किन्नरुळ् शुरन्दु⋆ माळै मान् मड नोक्कि उन् तोळि⋆ उम्बि एम्बि एन्रॉळिन्दिलै⋆ उगन्दु तोळन् नी एनक्किङ्गॉळि एन्र शॉर्कळ् वन्दु⋆ अडियेन् मनत्तिरुन्दिड⋆ आळिवण्ण ! निन् अडियिणैयडैन्देन्⋆ अणि पॉळिल् तिरुवरङ्गत्तम्माने॥१॥	'दुःखी दीन अति नीच सेवक' गुह को ऐसा नहीं कहा। पार्श्व भाग में मृग नयनी सीता वाले प्रभु, अपने परम समर्पित भाई को भी उसका बना दिया। 'हमेशा हमारे सखा, मेरे प्यारे भाई, आओ' ये शब्द हमारे मन में आते हैं, एवं हमेशा कौंधते हैं। हे सागर सा सलोने प्रभु ! हम आपके चरणारविन्द के आश्रय में आये हैं, बागों से घिरे अरंगम के प्रभु! **1418**
वाद मा मगन् मर्क्कडम् विलङ्गु⋆ मट्रोर् शादियॅन्रॉळिन्दिलै⋆ उगन्दु कादल् आदरम् कडलिनुम् पॅरुग⋆ च्चॅय्द तगविनुक्किल्लै कैम्मारॅन्र⋆ कोदिल् वाय्मैयिनायॉडुम् उडने⋆ उण्बन् नान् एन्र ऑण् पॉरुळ्⋆ एनक्कुम् आदल् वेण्डुम् एन्रडियिणैयडैन्देन्⋆ अणि पॉळिल् तिरुवरङ्गत्तम्माने॥२॥	'वायु के पुत्र एक बन्दर पशु' हनुमान को ऐसा न कहकर आपने स्नेह का सागर उड़ेल दिया यह कहते हुए कि 'तुम्हारी सेवा को किसी भी वस्तु से नहीं तौला जा सकता'। हम आपके चरणारविन्द के आश्रय में आये हैं, आपके पास रहने का हमें आनंद मिले। हे सागर सा सलोने प्रभु ! बागों से घिरे अरंगम के प्रभु! **1419**
कडि कॉळ् पूम् पॉळिल् कामरु पॉय्गै⋆ वैगु तामरै वाङ्गिय वेळम्⋆ मुडियुम् वण्णम् ओर् मुळु वलि मुदलै पट्र⋆ मट्रदु निन् शरण् निनैप्प⋆ कॉडिय वाय् विलङ्गिन् उयिर् मलङ्ग⋆ क्कॉण्ड शीट्रम् ऑन्रुण्डुळदरिन्दु⋆ उन् अडियनेनुम् वन्दडियिणैयडैन्देन्⋆ अणि पॉळिल् तिरुवरङ्गत्तम्माने॥३॥	सुगंधित फूल के सरोवर में एक उम्रदार हाथी ग्राह से पैर पकड़े जाने पर कमल लेकर आर्त भाव से सभी दिशाओं में पुकारा। आप आकर कैसे चक्र चलाकर आततायी के मुंह को फाड़ डाला। हे सागर सा सलोने प्रभु ! हम आपके चरणारविन्द के आश्रय में आये हैं, बागों से घिरे अरंगम के प्रभु! **1420**
नञ्जु शोर्वदोर् वॅञ्जिन अरवम्⋆ वॅरुवि वन्दु निन् शरण् एन च्चरणाय्⋆ नॅञ्जिल् कॉण्डु निन्नञ्जिरै प्परवैक्कु⋆ अडैक्कलम् कॉडुत्तरुळ् शॅय्ददरिन्दु⋆ वॅञ्जॉलाळर्गळ् नमन् तमर् कडियर्⋆ कॉडिय शॅय्वनवुळ⋆ अदर्कडियेन् अञ्जिवन्दु निन् अडियिणै अडैन्देन्⋆ अणि पॉळिल् तिरुवरङ्गत्तम्माने॥४॥	दयाहीन गरूड़ की डर से विषैला सुमुख सांप आपके पास सुरक्षा की गुहार लगाते आया। तब आपने उसे गरूड़ को सुरक्षित रखने के लिये दे दिया। हमें इस बात का डर है कि दुर्वचन एवं निष्ठुर यमदूत हमें ले जायेंगे। हे सागर सा सलोने प्रभु ! हम आपके चरणारविन्द के आश्रय में आये हैं, बागों से घिरे अरंगम के प्रभु! **1421**

मागा मा निलम् मुळुदुम् वन्दिरैञ्जुम्* मलर् अडि कण्ड मा मरैयाळन्* तोगै मा मयिल् अन्नवर् इन्बम्* तुद्रिलामैयिल् अत्त! इङ्गॊळिन्दु* पोगम् नी एय्दि प्पिन्नुम् नम् इडैक्के* पोदुवाय् एन्र पॊन् अरुळ्* एनक्कुम् आग वेण्डुम् एन्रडियिणैयडैन्देन्* अणि पॊळिल् तिरुवरङ्गत्तम्माने॥५॥	सभी आपकी पूजा करते हैं। आपने एक गोविन्द स्वामी पर दया की और कहा 'मोर समान मधुर नारियों से आनन्द मिलता है, इस बात को तुम्हें कोई ज्ञान नहीं है, संसार में जाओ, एक बार फिर से वहां रहो, और मेरे पास लौटकर तब आओ जब वहां से संतुष्ट हो जाओ।' हे सागर सा सलोने प्रभु ! हम आपके चरणारविन्द के आश्रय में आये हैं, बागों से घिरे अरंगम के प्रभु! **1422**
मन्नु नान्मरै मा मुनि पॆद्र मैन्दनै* मदियाद वॆङ्गूद्रम् तन्नै अञ्जि* निन्शरणेन च्चरणाय्* तगविल् कालनै उग मुनिन्दॊळिया* पिन्नै एन्रुम् निन् तिरुवडि पिरिया वण्णम्* एण्णिय पेररुळ्* एनक्कुम् अन्नदागुम् एन्रडियिणैयडैन्देन्* अणि पॊळिल् तिरुवरङ्गत्तम्माने॥६॥	पुरा काल में एक विद्वान ऋषि ने मार्कण्डेय को जन्म दिया था जिस पर यम का अधिकार था। इस भय से शिशु ने आपके चरणाविन्द की प्रार्थना की। उसे अभयम देकर आपने उसकी रक्षा की। तब अपने चरण कमल की छाया में उसे रखा जिसकी सब भक्त कामना करते हैं। हे सागर सा सलोने प्रभु ! हम आपके चरणारविन्द के आश्रय में आये हैं, बागों से घिरे अरंगम के प्रभु! **1423**
ओदु वाय्मैयुम् उवनिय प्पिरप्पुम्* उनक्कुमुन् तन्द अन्दणन् ऒरुवन्* कादल् एन् मगन् पुगल् इडम् काणेन्* कण्डु नी तरुवाय् एनक्कॆन्रु* कोदिल् वाय्मैयिनान् उनै वेण्डिय* कुरै मुडित्तवन् शिरुवनै क्कॊडुत्ताय्* आदलाल् वन्दुन् अडियिणै अडैन्देन्* अणि पॊळिल् तिरुवरङ्गत्तम्माने॥७॥	पुरा काल में अपनी शिक्षा एवं विद्या हेतु आप वैदिक ऋषि के पास गये।तब ऋषि ने सागर में डूबे अपने पुत्र को जीवित करने की कामना प्रकट की।आप पश्चिम के समुद्र में गये और उनका पुत्र यथावत लाकर वापस सुपुर्त कर दिया। हे सागर सा सलोने प्रभु ! हम आपके चरणारविन्द के आश्रय में आये हैं, बागों से घिरे अरंगम के प्रभु! **1424**
वेद वाय् मॊळि अन्दणन् ऒरुवन्* एन्दै! निन् शरण् एन्नुडै मनैवि* कादल्मक्कळै प्पयत्तलुम् काणाळ्* कडियदोर्देय्वम् कॊण्डॊळिक्कुमॆन्रळैप्प* एदलार्मुन्ने इन्नरुळ् अवर्क्कु च्चॆय्दु* उन् मक्कळ् मद्रिवर् एन्रु कॊडुत्ताय्* आदलाल् वन्दुन् अडियिणै अडैन्देन्* अणि पॊळिल् तिरुवरङ्गत्तम्माने॥८॥	एक बार चारों वेदों के ज्ञाता अपनी पत्नी के साथ आपके पास आकर अपनी दुखड़ा सुनाया 'एक के बाद एक बच्चा होता है परंतु उसे कोई राक्षसी गायब कर देती है।' तब आप उसे बहुत दूर ले गये और उसके सारे बच्चों को यथावत उसे उपलब्ध करा दिया। हे सागर सा सलोने प्रभु ! हम आपके चरणारविन्द के आश्रय में आये हैं, बागों से घिरे अरंगम के प्रभु! **1425**
तुळङ्गुनीळ्मुडि अरशर् तम् कुरिशिल्* तॊण्डै मन्नवन् तिण् तिरलॊरुवर्कु* उळङ्गॊळ् अन्बिनोडिन्नरुळ् शुरन्दु* अङ्गोडु नाळिगै एळ् उडन् इरुप्प* वळम् कॊळ् मन्दिरम् मद्रवर्करुळि च्चॆय्दवारु* अडियेन् अरिन्दु* उलगम् अळन्द पॊन् अडिये अडैन्दुयन्देन्* अणि पॊळिल् तिरुवरङ्गत्तम्माने॥९॥	दक्षिण के पट्टाभिषिक्त राजाओं के एक शक्तिशाली राजा तोण्डै मन्नवन आपकी असीम दया के पात्र हुए जब आपने उन्हें अष्टाक्षर मंत्र का रहस्य बतलाया। अपने राज काज में ज्यादा अच्छे कामों में वे अपने जीवन का समय देने लगे। हे सागर सा सलोने प्रभु ! हम आपके

	चरणारविन्द के आश्रय में आये हैं, बागों से घिरे अरंगम के प्रभु! **1426**
‡माड माळिगै शूळ् तिरुमङ्गै मन्नन्⋆ ऑन्नलर् तङ्गळै वॅल्लुम्⋆ आडल्मा वलवन् कलिगन्रि⋆ अणि पॉळिल् तिरुवरङ्गत्तम्मानै⋆ नीडु तॉल् पुगळ् आळि वल्लानै⋆ एन्दैयै नॅडुमालै निनैन्द⋆ पाडल् पत्तिवै पाडुमिन् तॉण्डीर्! पाड⋆ नुम्मिडै प्पावम् निल्लावे॥१०॥	वरामदों के साथ महलों वाले मंगै क्षेत्र के वीर योद्धा रक्षक एवं घुड़सवार शासक कलकन्रि ने तेजोमय दिव्य चक्रधारी, प्राचीन प्रभु, ब्रह्मांड के नाथ, तिरूवरंगत्तन के प्रभु की प्रशस्ति गायी है। हे भक्तगण ! इस दसक पदों की माला का गान करो, कर्म की यातना से कभी पीड़ा न होगी। **1427** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

49 कैयिलङ्गु (1428 - 1437)

तिरूप्पेर् नगर् (कोइलाडी)

(तिरूप्पेर नगर जिसे ज्यादा कोइलाडी के नाम से जाना जाता है तिरिची से **24** कि मी पर है या अनबिल से **8** कि मी पर है। मूलावर को 'अप्पा कुदुथन' या 'आदि रंगनाथ' कहते हैं जो भुजंग शयनम अवस्था में हैं। एक हाथ मार्कण्डेय मुनि के सिर पर है मानों आशीष कर रहे हों।हाथ में अप्पम का कूडम यानी घड़ा लिये हुए हैं जो एक मधुर भोज्य सामग्री है।शिव जी से मार्कण्डेय को 'भागवत कवचम' 'देखें Ramesh vol. 3 / 142 / 143' का पाठ करने का आदेश हुआ था और तब वे यम के चंगुल से मुक्त हो सके थे। Ramesh vol. 3 / 137)

कै इलङ्काळि शङ्गन्⋆ करु मुगिल् तिरु निरत्तन्⋆ पॊय् इलन् मॆय्यन् तन् ताळ्⋆ अडैवरेल् अडिमै आक्कुम्⋆ शॆय् अलर् कमलम् ओङ्गु⋆ शॆरि पॊळिल् तॆन् तिरुप्पेर्⋆ पै अरवणैयान् नामम्⋆ परवि नान् उय्न्दवारे॥१॥	मेघ के समान वर्ण के सुन्दर शंख एवं चक्रधारण करने वाले प्रभु की स्थिति मिथ्या नहीं बल्कि सत्य है।जो आपका आश्रय लेते हैं उन्हें आप अपना भक्त बना लेते हैं। कमल से भरे सरोवरों से घिरे तेन (दक्षिणी) तिरूप्पेर में आप फनधारी नाग पर सोये हैं। आपका नाम जपकर कितनी सुविधा से हम आपको पा गये हैं! **1428**
वङ्गमार् कडल्गळ् एळुम्⋆ मलैयुम् वानगमुम् मट्रुम्⋆ अङ्गण् मा ञालम् एल्लाम्⋆ अमुदु शॆय्दुमिळ्न्द एन्दै⋆ तिङ्गळ् मा मुगिल् अणवु⋆ शॆरि पॊळिल् तॆन् तिरुप्पेर्⋆ एङ्गळ् माल् इरैवन् नामम्⋆ एत्ति नान् उय्न्दवारे॥२॥	सातों समुद्र पर्वत आकाश पृथ्वी एवं सब चीजों को निगलकर पुनः बाहर कर देने वाले प्रभु हमारे जनक हैं।चांद को छूते महलों एवं सुगंधित बागों से घिरे तेन (दक्षिणी) तिरूप्पेर में आप रहते हैं। आपका नाम जपकर कितनी सुविधा से हम आपको पा गये हैं! **1429**
ऑरुवनैयुन्दि प्पूमेल्⋆ ओङ्गुवित्तागम् तन्नाल्⋆ ऑरुवनै च्चापम् नीक्कि⋆ उम्बराळ् एन्रु विट्टान्⋆ पॆरु वरै मदिळ्गाळ् शूळ्न्द⋆ पॆरु नगर् अरवणै मेल्⋆ करु वरै वण्णन् तन् पेर्⋆ करुदि नान् उय्न्दवारे॥३॥	प्रभु ने ब्रह्मा को अपने नाभि कमल पर बनाया एवं शिव के खाली कपाल पात्र को अपने हृदय के रस से भरकर उनकों शाप से मुक्त करते हुए देवों का प्रभु बना दिया। आप ऊंचे दीवालों से घिरे तेन (दक्षिणी) तिरूप्पेर में शेषशायी हैं। आपका नाम जपकर कितनी सुविधा से हम आपको पा गये हैं! **1430**

ऊन् अमर् तलै ऑन्रेन्दि⋆ उलगॅल्लाम् तिरियुम् ईशन्⋆ ईन् अमर् शापम् नीक्काय् एन्न⋆ ऑण् पुनलै ईन्दान्⋆ तेन् अमर् पॉळिल्गळ् शूळ्न्द⋆ शॅरि वयल् तॅन् तिरुप्पेर्⋆ वानवर् तलैवन् नामम्⋆ वाळ्त्ति नान् उयन्दवारे॥ ४॥	कपाल पात्र लिये मुक्ति हेतु आये शिव को अपने हृदय के रस से उनके पात्र को भरकर आपने शाप विमुक्त कर दिया। आप अमृतमय बागों एवं उपजाऊ खेतों से घिरे तेन (दक्षिणी) तिरूप्पेर में रहते हैं। आपका नाम जपकर कितनी सुविधा से हम आपको पा गये हैं! **1431**
वक्करन् वाय् मुन् कीण्ड⋆ मायने! एन्रु वानेर् पुक्कु⋆ अरण् तन्दुअरुळाय् एन्न⋆ पॉन् आगत्तानै⋆ नक्करि उरुवम् आगि⋆ नगम् किळर्न्दिडन्दुगन्द⋆ चक्कर च्चॅल्वन् तॅन्बेर्⋆ त्तलैवन् ताळ् अडैन्दुयन्देने॥ ५॥	देवगन समूह में आकर आपकी पूजा किये एवं विनती की 'वक्रदंत का मुंह फाड़ने वाले प्रभु हमारी रक्षा कीजिये।' तब आपने नरसिंह के रूप में मुंह खोले अपने पंजों से हिरण्य की छाती चीर डाली। पूज्य चक्रधारी! आप तेन (दक्षिणी) तिरूप्पेर में रहते हैं। आपका नाम जपकर कितनी सुविधा से हम आपको पा गये हैं! **1432**
विलङ्गलाल् कडल् अडैत्तु⋆ विळङ्गिळै पॉरुट्टु⋆ विल्लाल् इलङ्गै मा नगर्क्किरैवन्⋆ इरुबदु पुयम् तुणित्तान्⋆ नलङ्गॉळ् नान्मरै वल्लार्गळ्⋆ ऑत्तॉलि एत्त क्केट्टु⋆ मलङ्गु पाय् वयल् तिरुप्पेर्⋆ मरुवि नान् वाळ्न्दवारे॥ ६॥	समुद्र के ऊपर पत्थरों से सेतु का निर्माण कर आभूषित सीता को प्राप्त करने के लिये आप लंका में प्रवेश किये और राक्षस के दसों सिर एवं बीसों भुजायें काट डाले। वैदिक ऋषियों से वैदिक ऋचाओं के निपुण पाठ वाले जगह में आप रहते हैं जहां जलसिंचित बागों में मछलियां आनन्दित हो नाचती हैं। आपका नाम जपकर कितनी सुविधा से हम आपको पा गये हैं! **1433**
वॅण्णॅय् तान् अमुदु शॅय्य⋆ वॅगुण्डु मत्तायच्चि ओच्चि⋆ कण्णियार् कुरुङ्गयिट्राल्⋆ कट्ट वॅट्टॅन्रिरुन्दान्⋆ तिण्ण मा मदिळ्गाळ् शूळ्न्द⋆ तॅन् तिरुप्पेरुळ्⋆ वेलै वण्णनार् नामम् नाळुम्⋆ वाय् मॊळिन्दुयन्दवारे॥ ७॥	कृष्ण के रूप में मक्खन खा आप मां के कोपभाजन हुए एवं मथानी वाली रस्सी से मां ने आपको ऊखल में बांध दिया। आप ऊंचे महलों वाले तेन (दक्षिणी) तिरूप्पेर में रहते हैं।आप का सागर सा सलोना वर्ण है। आपका नाम जपकर कितनी सुविधा से हम आपको पा गये हैं! **1434**
अम् पॉनार् उलगम् एळुम् अरिय⋆ आयप्पाडि तन्नुळ्⋆ कॉम्बनार् पिन्नै कोलम्⋆ कूडुदर्केरु कॊन्रान्⋆ शॅम् पॉनार् मदिळ्गाळ् शूळ्न्द⋆ तॅन् तिरुप्पेरुळ् मेवुम्⋆ एम् पिरान् नामम् नाळुम्⋆ एत्ति नान् उयन्दवारे॥ ८॥	संसार विदित खुली प्रतियोगिता में आपने पतली नप्पिनाय के लिये सात वृषभों का अंत किया। आप सुवर्ण जटित महलों वाले तेन (दक्षिणी) तिरूप्पेर में रहते हैं। आपका नाम जपकर कितनी सुविधा से हम आपको पा गये हैं! **1435**

नाल् वगै वेदम् ऐन्दु वेळ्वि⋆ आऱङ्गम् वल्लार्⋆ मेलै वानवरिन् मिक्क⋆ वेदियर् आदि कालम्⋆ शेल् उगळ् वयल् तिरुप्पेर्⋆ च्चेङ्गण् मालोडुम् वाळ्वार्⋆ शील मा तवत्तर् शिन्दै आळि⋆ एन शिन्दैयाने॥९॥	चारों वेद, पांचो यज्ञ, एवं छः आगमों में निष्णात आपकी सदा प्रशस्ति गाते हैं। आप तेन (दक्षिणी) तिरूप्पेर में रहते हैं जहां देवों से भी अच्छे तपस्या रत ऋषि गन रहते हैं एवं जहां खेतों में सेल मछलियां नाचती हैं। आपका नाम जपकर कितनी सुविधा से हम आपको पा गये हैं ! **1436**
वण्डरै पोंळिल् तिरुप्पेर्⋆ वरि अरवणैयिल् पळ्ळि कोंण्डु⋆ उरैगिन्ऱ माल्लै⋆ क्कोंडि मदिळ् माड मङ्गै⋆ तिण् तिऱल् तोळ् कलियन्⋆ शेञ्जोंलाल् मोंळिन्द माल्लै⋆ कोंण्डिवै पाडियाड⋆ क्कूडुवार् नीळ् विशुम्बे॥१०॥	ऊंचे महलों वाले मंगै के राजा कलियन के मीठे पदों की यह गीतमाला मधुमक्खी मंड़राते खेतों से घिरे फनधारी नाग पर सोये तेन (दक्षिणी) तिरूप्पेर के प्रभु की प्रशस्ति में है। जो इसे गा कर नाचेंगे वे ऊंचे स्वर्ग पा जायेंगे। **1437** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

50 तीदरू (1438-1447)

तिरूनन्दिपुर विण्णगरम्

(यह कुंभकोनम रेलवे स्टेशन से 5 कि मी दूर दक्षिण पूर्व दिशा में है। मूलावर बैठे अवस्था में पश्चिमाभिमुख हैं और 'जग्गननाथन' 'नन्दी नाथन' तथा 'विण्णगर पेरूमल' आदि नामों से जाने जाते हैं। इस स्थान को नाथन कोइल भी कहते हैं। जबकि पूरी में जगन्नाथ प्रसिद्ध हैं आप यहां दक्षिण के जगन्नाथ माने जाते हैं। यहां विख्यात दानी शिवी की परीक्षा हुई थी जो अपना मांस काट कर पलड़ा पर दिये जा रहे थे। यह स्थान वन्नामलै मठ के आधीन है।
Ramesh vol. 3 / 154)

तीदऱु निलत्तॉडॅरि कालिनॉडु⋆ नीर् कॅळु विशुम्बुम् अवैयाय्⋆ माशऱु मनत्तिनॉडुऱक्कमॉडिऱक्कै⋆ अवैयाय पॅरुमान्⋆ ताय् शॅऱ उळैन्दु तयिर् उण्डु कुडम् आडु⋆ तडमार्वर् तगै शेर्⋆ नादन् उऱैगिन्ऱ नगर्⋆ नन्दिपुर विण्णगरम् नण्णु मनमे॥१॥	पावन पृथ्वी अग्नि जल वायु एवं ऊपर का आकाश, सभी आप हैं प्रभु ! चैतन्य का जीवन में जाग्रत सुषुप्त एवं स्वप्न की तीन अवस्थाओं के साथ बड़ा अनोखा संमिश्रण। अपनी मां के कोप का भय मानते हुए उनके द्वारा धैर्य पूर्वक बनाये गये दही एवं मक्खन के पात्र आपने चुरा लिया। हमारे आराध्य, नगर नन्दिपुर विण्णगरम प्रभु को सिर नवाओ। **1438**
उय्युम् वगै उण्डु शॉन शॅय्यिल् उलगेळुम्⋆ ऑळियामै मुननाळ्⋆ मॅय्यिन् अळवे अमुदु शॅय्य वल⋆ ऐयन् अवन् मेवु नगर् तान्⋆ मैय वरि वण्डु मदुवुण्डु किळैयोडु⋆ मलर् किण्डि अदन्मेल्⋆ नैवळम् नविट्रु पॉळिल्⋆ नन्दिपुर विण्णगरम् नण्णु मनमे॥२॥	अपने महान उदर में सातों लोक,एवं अन्य सब कुछ रख लिया। युग युग के प्रलय बाद इन सबों से पुनः आपने जगत की सृष्टि की। आप बागों में रहते हैं जहां मधुमक्खी की गूंज एवं फूलों का सुगन्ध साथ साथ है। हमारे आराध्य, नगर नन्दिपुर विण्णगरम प्रभु को सिर नवाओ। **1439**
उम्बर् उलगेळु कडल् एळु मलै एळुम्⋆ ऑळियामै मुन नाळ्⋆ तम् पॉन् वयिरार् अळवुम् उण्डवै उमिळ्न्द⋆ तडमार्वर् तगै शेर्⋆ वम्बु मलर्गिन्ऱ पॉळिल् पैम् पॉन् वरु तुम्बिमणि⋆ कङ्गुल् वयल् शूळ्⋆ नम्बन् उऱैगिन्ऱ नगर्⋆ नन्दिपुर विण्णगरम् नण्णु मनमे॥३॥	अपने महान उदर में सातों लोक,सातों समुद्र, एवं सातों पहाड़ को रख लिया। युग युग के प्रलय बाद इन सबों से पुनः आपने जगत की सृष्टि की। आप बागों में रहते हैं जहां मधुमक्खी की गूंज एवं फूलों का सुगन्ध साथ साथ है। हमारे आराध्य, नगर नन्दिपुर विण्णगरम प्रभु को सिर नवाओ। **1440**
पिऱैयिन् ऑळि एयिऱिलग मुऱुगि एदिर् पॉरुदुम् एन⋆ वन्द अशुरर्⋆ इऱैगळ् अवै नॅऱु नॅऱॅन वॅरिय अवर् वयिऱळल⋆ निन्ऱ पॅरुमान्⋆ शिऱै कॉळ् मयिल् कुयिल् पयिलमलर्गळुग अळि मुरल⋆ अडिगॉळ् नॅडु मा⋆ नऱैशॅय् पॉळिल् मळै तवळुम्⋆ नन्दिपुर विण्णगरम् नण्णु मनमे॥४॥	भारी शरीर एवं श्वेत बड़े दांतों वाले युद्धरत असुरों का दलन करते हुए उनके शरीर पर दुखदायी घाव की पीड़ा देकर रण से भगा दिया। मोर, कोयल, एवं उड़ते भौंरे ऊंचे आम के पेड़ों पर नृत्य करते हैं। हमारे आराध्य, नगर नन्दिपुर विण्णगरम प्रभु को सिर नवाओ। **1441**

मूऴॆवरि शिन्दि मुनिवॆय्दि अमर् शॆय्दुम् ऎन* वन्द अशुरर्* तोळुम् अवर् ताळुम् मुडियोडु पॊडियाग* नॊडियाम् अळवॆय्दान्* वाळुम् वरि विल्लुम् वळै आऴि गदै शङ्गम्* इवै अङ्गै उडैयान्* नाळुम् उऱैगिन्ऱ नगर्* नन्दिपुर विण्णगरम् नण्णु मनमे॥५॥	अग्नि से प्रज्वलित एवं धुंआ वाले युद्ध में चमकते दांतों के राक्षसों का गुस्सा में सामना करते हुए हजारों सूर्य से प्रतिभावान चक्र एवं शंख धारण कर गदा धनुष बाण एवं खड्ग से राक्षसों का आपने टुकड़े टुकड़े कर दिया। हमारे आराध्य, नगर नन्दिपुर विण्णगरम प्रभु को सिर नवाओ। **1442**
तम्बियॊडु ताम् ऒरुवर् तन् तुणैवि कादल्* तुणैयाग मुन नाळ्* वॆम्बियॆरि कानगम् उलावुम् अवर् ताम्* इनिदु मेवु नगर् तान्* कॊम्बु कुदि कॊण्डु कुयिल् कूव मयिल् आलुम्* ऎऴिल् आर् पुऱवु शेर्* नम्बि उऱैगिन्ऱ नगर्* नन्दिपुर विण्णगरम् नण्णु मनमे॥६॥	पुरा काल में राजकुमार ने छोटे भाई एवं पत्नी के साथ घनघोर जंगल में भ्रमण किया। आप सुख से यहां रहते हैं जहां पेड़ों पर कोयल फुदकते एवं गाते हैं एवं मोर उनके धुन पर बागों में नाचते हैं। हमारे आराध्य, नगर नन्दिपुर विण्णगरम प्रभु को सिर नवाओ। **1443**
तन्दै मनम् उन्दुदुयर् नन्द इरुळ् वन्द विऱल्* नन्दन् मदलै* ऎन्दै इवन् ऎन्ऱमरर् कन्द मलर् कॊण्डु तॊऴ* निन्ऱ नगर् तान्* मन्द मुऴवोशै मऴै आग ऎऴु कार्* मयिल्गळ् आडु पॊऴिल् शूऴ्* नन्दि पणिशॆय्द नगर्* नन्दिपुर विण्णगरम् नण्णु मनमे॥७॥	अपने पिता की यातना का अंत करने के लिये प्रभु बन्द कारागार में जन्म लिये और नंदगोप के पुत्र के रूप में पाले पोसे गये। नन्दिपुर विण्णगरम में हर दिन देवगन पिता के रूप में आपकी पूजा नूतन फूलों से करते हैं जहां उत्स्व के नगाड़े वर्षा के मेघ की गर्जन की तरह बजते हैं एवं चतुर्दिक बागों में मोर नृत्य करते हैं। राजा नन्दीवर्मन यहां पूजा अर्पित करते हैं। **1444**
ऎण्णिल् निनैवॆय्दि इनि इल्लै इऱै ऎन्ऱु* मुनियाळर् तिरुवार्* पण्णिल् मलि गीदमॊडु पाडि अवर् आडलॊडु* कूड ऎऴिल्लार्* मण्णिल् इदुपोल नगर् इल्लै ऎन* वानवर्गळ् ताम् मलर्गळ् तूय्* नण्णि उऱैगिन्ऱ नगर्* नन्दिपुर विण्णगरम् नण्णु मनमे॥८॥	वंदीगन प्रशस्ति गाते हैं 'इनसे अच्छे देवता की कल्पना नहीं कर सकते' और पन्न गीतों के धुन पर गाते नाचते हैं। देवता गन कहते हैं 'इससे अच्छा नगर नहीं पा सकते' एवं पूजा के फूल चढ़ाते हैं। हमारे आराध्य, नगर नन्दिपुर विण्णगरम प्रभु को सिर नवाओ। **1445**
वङ्ग मलि पौवम् अदु मा मुगडिन् उच्चि पुग* मिक्क पॆरुनीर्* अङ्गम् अऴियार् अवनदाणै* तलै शूडुम् अडियार् अऱिदियेल्* पॊङ्गु पुनल् उन्दु मणि कङ्गुल् इरुळ् शीऱुम् ऒळि* ऎङ्गुम् उळदाल्* नङ्गळ् पॆरुमान् उऱैयुम्* नन्दिपुर विण्णगरम् नण्णु मनमे॥९॥	हे मेरे मन ! यह जान लो, जब प्रलय की बाढ़ आकाश को छूती है उस समय प्रभु की ईच्छा को सिर पर धारण करने वाले को कोई क्षति नहीं पहुंचती। हमारे प्रभु ऐसे जलागार में रहते हैं जहां के रत्न एवं मणि अपनी आभा से रात को दिन बनाये रहते हैं। हमारे आराध्य, नगर नन्दिपुर विण्णगरम प्रभु को सिर नवाओ। **1446**

‡नरै शॆय् पॊळिल् मळै तवळुम्⋆ नन्दिपुर विण्णगरम् नण्णि उरैयुम्⋆ उरै कॊळ् पुगर् आळि शुरि शङ्गम्⋆ अवै अङ्गैयुडैयानै⋆ ऒळि शेर् करै वळरुम् वेल् वल्ल⋆ कलियन् ऒलि मालै इवै ऐन्दुम् ऐन्दुम्⋆ मुरैयिन् इवै पयिल वल्ल अडियवर्गळ् कॊडु विनैगळ्⋆ मुळुदगलुमे॥१०॥	तीक्ष्ण भालाधारी कलियन ने इन तमिल दस पदों की गीतमाला को शंख चक्र धारी प्रभु की प्रशंसा में गाया है जो सुगंधित बागों वाले नगर नन्दिपुर विण्णगरम में रहते हैं। जो भक्तगन इसे याद कर लेंगे वे घोर कर्मों से मुक्त हो जायेंगे। **1447** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

51 वण्डुणुम् (1448 – 1457)

तिरूविण्णगर 1 (ओप्पिलिअप्पन)

(यह कुंभकोणम से 6 कि मी पर है तथा तिरूनागेश्वरम रेलवे स्टशन से 2 कि मी पर है।मूलावर पूर्वाभिमुख खड़े अवस्था में हैं और ओप्पिलिअप्पन श्रीनिवास के नाम से जाने जाते हैं। तायर लक्ष्मी भू देवी हैं और वसुंधरा, धरनी देवी, तथा भूमि नाच्चियार आदि नामों से जानी जाती हैं और उत्तराभिमुखी हैं तथा आधे बैठने की मुद्रा में हैं। तायर के सामने मार्कण्डेय मुनि हैं जिन्होंने तायर का पालन पोषण किया था और दक्षिण की ओर मुंह कर कन्या दान की मुद्रा में ससुर की भांति बैठे हुए हैं।मूलावर वेंकटाचलपति प्रभु के भाई जाने जाते हैं इसीलिये इस स्थान को तेन तिरूपति भी कहते हैं।नम्माळवार को प्रभु ने पांच रूपों में दर्शन दिया था जो तिरूवायमोळी 6।3।9 में चित्रित हैं। यहां प्रभु के पांच नाम हैं। मूलावर तिरूविण्णागरमप्पन, उत्सावर पोन्नाप्पन, भोग मूर्त्ति को मूथाप्पन कहते हैं, तथा दो अन्य को एन्नाप्पन एवं मणिअप्पन कहते हैं जिनकी मुख्य मंदिर परिसर में पृथक सन्निधि है।भगवान ने बूढ़े ब्राह्मण के वेष में मार्कण्डेय से उनकी कन्या मांगी थी।मुनि नहीं चाहते सुन्दरी कन्या को देना अतः उन्होंने ब्राह्मण को कह दिया कि यह कन्या छोटी है और भोजन में नमक देना भूल जाती है जिससे भोजन का स्वाद जाता रहता है। ब्राह्मण इस बात से नहीं हिला और अपना प्राण देने का ठान लिया। मुनि बड़े असमंजस में पड़े और ध्यान लगाकर प्रभु की प्रार्थना की। भगवान शंख चक्र लिये प्रकट हुए और ब्राह्मण गायब हो गया। मुनि ने प्रसन्न होकर कन्या जो भू देवी थी प्रभु को दे दिया। भगवान ने कहा कि उनका भोजन अब से बिना नमक का रहेगा और आज भी यहां भोग बिना नमक का ही लगता है। Ramesh vol. 3, pp 41)

वण्डुणु नरु मलर् इण्डै कॊण्डु★ पण्डै नम् विनै कॆड एन्रु★ अडिमेल् तॊण्डरुम् अमरुम् पणिय निन्रु★ अङ्गण्डमॊडगल् इडम् अळन्दवने !★ आण्डाय् उनै क्काणवदोर्★ अरुळ् एनक्करुळुदियेल्★ वेण्डेन् मनैवाळ्क्कैयै★ विण्णगर् मेयवने★ ॥१॥	कर्म की यातना से मुक्ति हेतु मधुमक्खी झूलते नूतन फूलों की माला से देव एवं भक्तगन आपकी पूजा करते हैं।पुरा काल में प्रभु पृथ्वी को मापने के लिये आये। अगर अपनी उपस्थिति की कृपा हम पर करते हैं तो हमें इस संसार में जन्म के चक्कर से मुक्त करने की कृपा कीजिये। विण्णगर प्रभु ! **1448**
अण्णल् शॆय्दलै कडल् कडैन्दु★ अदनुळ् कण्णुदल् नञ्जुण क्कण्डवने !★ विण्णवर् अमुदुण अमुदिल् वरुम्★ पॆण्णमुदुण्ड एम् पॆरुमाने !★ आण्डाय् ! उनै क्काणवदोर्★ अरुळ् एनक्करुळुदियेल्★ वेण्डेन् मनैवाळ्क्कैयै★ विण्णगर् मेयवने॥२॥	समुद्र मंथन में आपने पधारने की कृपा की। नीला विषपान शिव को दिया, अमृत देवों को दिया, तथा स्वयं लक्ष्मी रूपी अमृत को परिणय हेतु अपनी बाहों में लिया। अगर अपनी उपस्थिति की कृपा हम पर करते हैं तो हमें इस संसार में जन्म के चक्कर से मुक्त करने की कृपा कीजिये। विण्णगर प्रभु ! **1449**
कुळल् निर वण्ण ! निन् कूरु कॊण्ड★ तळल् निर वण्णन् नण्णार् नगरम् विळ★ ननि मलै शिलै वळैवुशॆय्दु★ अङ्गळल् निर अम्बदुवानवने !★ आण्डाय् ! उनै क्काणवदोर्★ अरुळ् एनक्करुळुदियेल्★ वेण्डेन् मनैवाळ्क्कैयै★ विण्णगर् मेयवने॥३॥	अग्नि से प्रदीप्त लाल शरीर वाले शिव के ऊपर तप्त बाणों से केश की तरह काला चिह्न छोड़ दिया, तब, जब आपने पुरा काल में तीन पुरियों पर आकमण कर पूरब वाले को जला कर राख कर दिया था। अगर अपनी उपस्थिति की कृपा हम पर करते हैं तो हमें इस संसार में जन्म के चक्कर से मुक्त करने की कृपा कीजिये। विण्णगर प्रभु ! **1450**

<table>
<tr><td>निल्वॊडु वॆयिल् निलविरु शुडरुम्⋆ उलगमुम् उयिर्गळुम् उण्डॊरुगाल्⋆
कल्लै तरु कुळवियिन् उरुविनैयाय्⋆ अलै कडल् आलिलै वळर्न्दवने !⋆
आण्डाय् ! उनै क्काण्बदोर्⋆ अरुळ् एनक्करुळुदियेल्⋆
वेण्डेन् मनैवाळ्क्कैयै⋆ विण्णगर् मेयवने ॥ ४ ॥</td><td>पुरा काल में पृथ्वी, सूर्य, चांद, जड, चेतन को क्षण भर में निगलकर एक सरल शिशु के रूप में बट पत्र पर समुद्र में सो गये। अगर अपनी उपस्थिति की कृपा हम पर करते हैं तो हमें इस संसार में जन्म के चक्कर से मुक्त करने की कृपा कीजिये। विण्णगर प्रभु ! 1451</td></tr>
<tr><td>पार्ॅळु कडल् एळु मलैयॆळुम् आय्⋆ च्चीर् कॆळुम् इव्वुलगेळुम् एल्लाम्⋆
आर् कॆळु वयिद्रिनिल् अडक्कि निन्रु⋆ अङ्गोर् एळुत्तोर् उरुवानवने !⋆
आण्डाय् ! उनै क्काण्बदोर्⋆ अरुळ् एनक्करुळुदियेल्
वेण्डेन् मनैवाळ्क्कैयै⋆ विण्णगर् मेयवने ॥ ५ ॥</td><td>सातों द्वीप, सातों महान सागर, सातों महान पर्वत, सुन्दर सातों लोक, एवं सारी बस्तुओं को अपने उदर में रखकर आप शब्द एवं आकृति के प्रथम रूप हो गये। अगर अपनी उपस्थिति की कृपा हम पर करते हैं तो हमें इस संसार में जन्म के चक्कर से मुक्त करने की कृपा कीजिये। विण्णगर प्रभु ! 1452</td></tr>
<tr><td>कार् कॆळु कडल्गळुम् मलैगळुमाय्⋆ एर् कॆळुम् उलगमुम् आगि⋆
मुदलार्गळुम् अरिवरु निलैयिनैयाय्⋆ च्चीर् कॆळु नान्मरै आनवने !⋆
आण्डाय् ! उनै क्काण्बदोर्⋆ अरुळ् एनक्करुळुदियेल्⋆
वेण्डेन् मनैवाळ्क्कैयै⋆ विण्णगर् मेयवने ॥ ६ ॥</td><td>आप पुनः समुद्र एवं पर्वत हो गये। लोकों के लोक के सृष्टि कर्त्ताब्रह्मा हो गये। चारों वेद की ऋचायें हो गये। अगर अपनी उपस्थिति की कृपा हम पर करते हैं तो हमें इस संसार में जन्म के चक्कर से मुक्त करने की कृपा कीजिये। विण्णगर प्रभु ! 1453</td></tr>
<tr><td>उरुक्कुरु नरु नॆय् कॊण्डार् अळल्लिल्⋆ इरुक्कुरुम् अन्दणर् शन्दियिन्वाय्⋆
पॆरुक्कमॊडमरर्गळ् अमर नल्गुम्⋆ इरुक्किनिल् इन्निशै आनवने !⋆
आण्डाय् ! उनै क्काण्बदोर्⋆ अरुळ् एनक्करुळुदियेल्⋆
वेण्डेन् मनैवाळ्क्कैयै⋆ विण्णगर् मेयवने ॥ ७ ॥</td><td>वैदिक ऋषि प्रातः एवं सायं अग्नि कुंड में घी की आहुती देते हैं। वेद की ऋचाओं के पाठ से ऋक् यजु एवं साम की मधुर ध्वनि हो गये। अगर अपनी उपस्थिति की कृपा हम पर करते हैं तो हमें इस संसार में जन्म के चक्कर से मुक्त करने की कृपा कीजिये। विण्णगर प्रभु ! 1454</td></tr>
<tr><td>कादल् शॆय्दिळैयवर् कल्वि तरुम्⋆ वेदनै विनैयदु वॆरुवुदलाम्⋆
आदलिन् उनदडि अणुगुवन् नान्⋆ पोदलर् नॆडुमुडि प्पुण्णियने !⋆
आण्डाय् ! उनै क्काण्बदोर्⋆ अरुळ् एनक्करुळुदियेल्⋆
वेण्डेन् मनैवाळ्क्कैयै⋆ विण्णगर् मेयवने ॥ ८ ॥</td><td>कामी नारियों के आकर्षण सुख में बहुत यातना है एवं मृत्यु का भय रहता है। तुलसी की माला एवं मुकुट धारण करने वाले प्रभु ! हम आपके चरणारविंद का आश्रय लेने आये हैं। अगर अपनी उपस्थिति की कृपा हम पर करते हैं तो हमें इस संसार में जन्म के चक्कर से मुक्त करने की कृपा कीजिये। विण्णगर प्रभु ! 1455</td></tr>
<tr><td>शादलुम् पिरत्तलुम् एन्रिवद्रै⋆ क्कादल् शॆय्यादुन् कळल् अडैन्देन्⋆
ओदल् शॆय् नान्मरै आगि⋆ उम्बर् आदल् शॆय् मूवुरुवानवने !⋆
आण्डाय् ! उनै क्काण्बदोर्⋆ अरुळ् एनक्करुळुदियेल्⋆
वेण्डेन् मनैवाळ्क्कैयै⋆ विण्णगर् मेयवने ॥ ९ ॥</td><td>मृत्यु के बाद जीवन और बीच के जीवन का तिरस्कार कर हम आपके चरण में आये हैं। चारों वेद की ऋचाओं एवं उसके सार के प्रभु आप तीनों प्रमुख देवों के नाथ हैं। अगर अपनी उपस्थिति की कृपा हम पर करते हैं तो हमें इस संसार में जन्म के चक्कर से मुक्त करने की कृपा कीजिये। विण्णगर प्रभु ! 1456</td></tr>
<tr><td>‡पू मरु पॊळिल् अणि⋆ विण्णगर्मेल्⋆
कामरु शीर्⋆ क्कलिगन्रि शॊन्न⋆
पा मरु तमिळ् इवै⋆ पाड वल्लार्⋆
वामनन् अडियिणै⋆ मरुवुवरे ॥ १० ॥</td><td>पूज्य कलिकन्रि कवि के ये तमिल गीत हृदय को मधुर शान्ति देते हैं जैसे विण्णगर के सुगंधित बाग। जो इसे याद कर लेंगे वे पावन चरण का दर्शन पायेंगे। अगर अपनी उपस्थिति की कृपा हम पर करते हैं तो हमें इस संसार में जन्म के चक्कर से मुक्त करने की कृपा कीजिये। विण्णगर प्रभु ! 1457

तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्</td></tr>
</table>

श्रीमते रामानुजाय नमः

52 पोरूत्तेन् (1458 - 1467)

तिरूविण्णगर 2 (ओप्पिलिअप्पन)

पॊरुत्तेन् पुन्शॊल् नॆञ्जिल्⋆ पॊरुळ् इन्बम् एन इरण्डुम् इरुत्तेन्⋆ ऐम्बुलन्गट्किडन् आयिन⋆ वायिल् ऒट्टि अरुत्तेन्⋆ आर्व च्चॆट्रम् अवै तम्मै⋆ मनत्तगट्रि वॆरुत्तेन्⋆ निन्नडैन्देन्⋆ तिरुविण्णगर् मेयवने॥१॥	तिरूविण्णगर के निवासी प्रभु ! इन्द्रियों को वस्तुओं एवं भौतिक सुख से खुश रखने के चक्कर बहुत अपमानित होना पड़ा है। मैने स्नेह एवं घृणा से मुक्त होने की प्रतिज्ञा की एवं अपने मन की सफाई की। अब आपके पास आया हूं। **1458**
मरन्देन् उन्नै मुन्नम्⋆ मरन्द मदियिन् मनत्ताल्⋆ इरन्देन् एत्तनैयुम्⋆ अदनाल् इडुम्बै क्कुळियिल्⋆ पिरन्दे एय्त्तॊळिन्देन्⋆ पॆरुमान्! तिरु मार्बा!⋆ शिरन्देन् निन्नडिक्के⋆ तिरुविण्णगर् मेयवने॥२॥	तिरूविण्णगर के निवासी प्रभु ! तब मैं आपको भूल गया था।बुद्धिहीन अवस्था में जन्म मरण की आवृति में पड़कर दुख एवं यातना झेलता रहा।श्री सहित वक्षस्थल वाले प्रभु ! अब आपके चरणों में आया हूं। **1459**
मानेय् नोक्कियर् तम्⋆ वयिट्रु क्कुळियिल् उळैक्कुम्⋆ ऊनेय् आक्कै तन्नै⋆ उदवामै उणर्न्दुणर्न्दु⋆ वाने! मा निलमे!⋆ वन्दुवन्दॆन् मनत्तिरुन्द तेने⋆ निन्नडैन्देन्⋆ तिरुविण्णगर् मेयवने॥३॥	तिरूविण्णगर के निवासी प्रभु ! हमारे मन में बसने वाले, हे पृथ्वी ! हे आकाश ! हे मधु ! मृगनयनी कामी नारियों के सुख की निस्सारता को समझ अब आपके चरणों में आया हूं। **1460**
पिरिन्देन् पॆट्र मक्कळ्⋆ पॆण्डिर् एन्रिवर् पिन्नुदवा- दरिन्देन्⋆ नी पणित्त अरुळॆन्नुम्⋆ ऒळ् वाळ् उरुवि एरिन्देन्⋆ ऐम्बुलन्गळ् इडर् तीर⋆ एरिन्दुवन्दु शॆरिन्देन्⋆ निन्नडिक्के⋆ तिरुविण्णगर् मेयवने॥४॥	तिरूविण्णगर के निवासी प्रभु ! यह समझ कर कि बच्चें एवं पत्नियां उहलोक में कोई काम नहीं आयेंगे उनसबों से मन को हटा लिया हूं। आपने जो अपनी कृपा की कटार हमें दी है उससे इन्द्रियों के अनाचार को काट कर आपके चरणों में आ पड़ा हूं। **1461**
पाण् तेन् वण्डरैयुम् कुळलार्गळ्⋆ पल्लाण्डिशैप्प⋆ आण्डार् वैयम् एल्लाम्⋆ अरशागि⋆ मुन्नाण्डवरे माण्डार् एन्रु वन्दार्⋆ अन्दो! मनैवाळ्क्कै तन्नै वेण्डेन्⋆ निन्नडैन्देन्⋆ तिरुविण्णगर् मेयवने॥५॥	तिरूविण्णगर के निवासी प्रभु ! पृथ्वी पर एक बार शासन करने वाला राजा का गौरव गान मधुमक्खी लिपटे सुगंधित जूड़ों वाली नारियां करती थीं वह अब मृत होकर नष्ट हो गया। हाय ! अब हमें संपन्न सांसारिक जीवन नहीं चाहिये। आपके चरणों में आया हूं। **1462**

कल्ला ऐम्बुलन्याळ् अवै* कण्डवाऱु शॆय्यगिल्लेन्* मल्ला ! मल्लमरुळ् मल्लर् माळ* मल्लडरत्त मल्ला !* मल्ललम् शीर्* मदिळ् नीर् इलङ्गैयळित्त विल्ला* निन्नडैन्देन्* तिरुविण्णगर् मेयवने ॥६॥	तिरूविण्णगर के निवासी प्रभु ! इन्द्रियों के मनमाने पन के अनुसार अब मैं नहीं चलूंगा। पहलवानों के साथ कुश्ती करने पहलवान प्रभु ! प्रगतिशील दीवारों से घिरे लंका को नष्ट करने वाले धनधारी प्रभु ! आपके चरणों में आया हूं। **1463**
वेऱा यान् इरन्देन्* वॆगुळादु मनक्कॊळ् एन्दाय् !* आऱा वॆन्नरगत्तु* अडियेनै इड क्करुदि* कूऱा ऐवर् वन्दु कुमैक्क* क्कुडिविट्टवरै* तेऱादुन् अडैन्देन्* तिरुविण्णगर् मेयवने ॥७॥	तिरूविण्णगर के निवासी प्रभु ! इस बात की भिक्षा मांगता हूं कि आप मुझ पर कोध न करें। आपकी दी हुई हमारे भीतर जो इन्द्रियां हैं वे हमें नरकगामी बनाने के लिये आतुर हैं। उनपर विश्वास नहीं कर सकता। आपके चरणों में आया हूं। **1464**
ती वाय् वल्विनैयार्* उडन् निन्ऱु शिऱन्दवर् पोल्* मेवा वॆन्नरगत्तिड* उद्दु विरैन्दु वन्दार्* मूवा वानवर् तम् मुदल्वा !* मदि कोळ् विडुत्त देवा* निन्नडैन्देन्* तिरुविण्णगर् मेयवने ॥८॥	तिरूविण्णगर के निवासी प्रभु ! हमारे धूर्त्त कर्म मित्र बनने का स्वांग भर कर हमें घोर नरक भेजने की प्रतीक्षा में हैं। प्रभु आप देवों के आदि कारण हैं एवं तीनों देवों को मिलाकर एक हैं। आपने चांद को उसकी यातना से विमुक्त किया। आपके चरणों में आया हूं। **1465**
पोदार् तामरैयाळ्* पुल्वि कुल वानवर् तम् कोदा* कोदिल् शॆङ्गोल्* कुडै मन्नर् इडै नडन्द तूदा* तू मॊळियाय् ! शुडर्पोल्* एन् मनत्तिरुन्द वेदा* निन्नडैन्देन्* तिरुविण्णगर् मेयवने ॥९॥	तिरूविण्णगर के निवासी प्रभु ! आप कमल के समान लक्ष्मी, भूदेवी, एवं आकाश के भक्तों के अमृत हैं। मृदु भाषी प्रभु ! आपने छत्रधारी राजाओं के बीच दूत का काम किया। आप हमारे हृदय के ज्ञान दीप हैं। आपके चरणों में आया हूं। **1466**
तेनार् पूम् पुरविल्* तिरुविण्णगर् मेयवनै* वानारुम् मदिल् शूळ्* वयल् मङ्गैयर् कोन् मरुवार्* ऊनार्वेल् कलियन्* ऑलिशॆय् तमिळ् मालै वल्लार्* कोनाय् वानवर् तम्* कॊडि मा नगर् कूडुवरे ॥१०॥	ऊंची दीवारों वाली एवं उपजाऊ मंगै क्षेत्र के भालाधारी राजा कलियन ने अमृतमयी बागों वाले तिरूविण्णगर के प्रभु की प्रशस्ति में इस तमिल गीत माला को गाया है। जो इसका गान करेंगे वे पताकाओं से सजे देवों के नगर में राजा होकर जायेंगे। **1467** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

53 तुरप्पेन् (1468 - 1477)

तिरूविण्णगर् 3 (ओप्पिलिअप्पन)

(देखें ऊपर के पाशुर Ramesh vol. 3 , pp 41)

तुरप्पेन् अल्लेन्⋆ इन्बम् तुरवादु⋆ निन्नुवरुम् मरप्पेन् अल्लेन्⋆ एन्रुम् मरवादु⋆ यान् उलगिल् पिरप्पेनाग एण्णेन्⋆ पिरवामै पॆट्रदु⋆ निन् तिरत्तेन् आदन्मैयाल्⋆ तिरुविण्णगराने॥१॥	तिरूविण्णगर के निवासी प्रभु ! आपके सुन्दर सौंदर्य का स्मरण कर सभी सुखों का हमने त्याग कर दिया है। पृथ्वी अब हमारा कभी जन्म नहीं होगा। जन्म से मुक्त होकर आपकी कृपा से आपके पास आया हूं। **1468**
तुरन्देन् आर्व च्चॆट्र⋆ च्चुट्रम् तुरन्दमैयाल्⋆ शिरन्देन् निन्नडिक्के⋆ अडिमै तिरुमाले⋆ अरम् तानाय् त्तिरिवाय्⋆ उन्नै एन् मनत्तगत्ते⋆ तिरम्बामल् कॊण्डेन्⋆ तिरुविण्णगराने॥२॥	तिरूविण्णगर के निवासी प्रभु ! धर्म स्वरूप तिरूमल प्रभु ! प्यार एवं तिरस्कार का नाता छोड़ चुका हूं। अतः आपके चरणारविंद की सेवा के लिये हम उपयुक्त हो गये हैं।आपके हम अपने मन में दृढ़ता पूर्वक बैठा चुके हैं। **1469**
मानेय् नोक्कु नल्लार्⋆ मदिपोल् मुगत्तुलवुम्⋆ ऊनेय् कण् वाळिक्कु⋆ उडैन्दोट्टन्दुन् अडैन्देन्⋆ कोने ! कुरुङ्गुडियुळ् कुळगा !⋆ तिरुनरैयूर् त्तेने⋆ वरु पुनल् शूळ्⋆ तिरुविण्णगराने॥३॥	तिरूविण्णगर के निवासी प्रभु ! मेरे नाथ ! तिरूकुरूगुंडी के सुन्दर प्रभु ! तिरूनरैयूर के मधु ! चंद्रमुखी के नयन कटाक्ष से घायल हो हम दौड़ते आपके चरणों तक आये हैं। **1470**
शान्देन्दु मॆन् मुलैयार्⋆ तडन् तोळ् पुणर् इन्ब वॆळ्ळ- त्ताळ्न्देन्⋆ अरु नगरत्तळुन्दुम्⋆ पयन् पडैत्तेन्⋆ पोन्देन् पुण्णियने !⋆ उनैयॆय्दि एन् तीविनैगळ् तीर्न्देन्⋆ निन् अडैन्देन्⋆ तिरुविण्णगराने॥४॥	तिरूविण्णगर के निवासी प्रभु ! चंदन लिपटे कोमल उरोजों एवं लंबी बाहों वाली नारियों के समागम आनंद मे हम डूब गये और इसका फल घोर नरक मिला। पावन प्रभु ! आपके पास आये हैं। आपकी खोज में हमने अपना दुख गंवा दिया और आपके चरण तक आ गये। **1471**
मट्रोर् दॆय्वम् एण्णेन्⋆ उन्नै एन् मनत्तु वैत्तु प्पॆट्रेन्⋆ पॆट्रदुवुम्⋆ पिरवामै एम् पॆरुमान्⋆ वट्रा नीळ् कडल् शूळ्⋆ इलङ्गै इरावणनै च्चॆट्राय्⋆ कॊट्रवने !⋆ तिरुविण्णगराने॥५॥	तिरूविण्णगर के निवासी प्रभु ! समुद्र से घिरे लंका नगर के राजा रावण का अंत करने वाले प्रभु, मेरे नाथ, हम दूसरे देवता को नहीं जानते। अपने हृदय में दृढ़ता से आपको बैठा लिया हूं। ऐसा करने से जन्म से मुक्त हो गया हूं। **1472**

मैयोण् करुङ्गडलुम्* निलनुम् अणि वरैयुम्* शॆय्य शुडर् इरण्डुम्* इवैयाय निन्नै* नॆञ्जिल् उय्युम् वगै उणर्न्देन्* उण्मैयाल् इनि* यादु मट्रोर् दॆय्वम् पिरिदरियेन्* तिरुविण्णगराने॥६॥	तिरूविण्णगर के निवासी प्रभु ! आप गहरे समुद्र हैं, पृथ्वी हैं, सुन्दर पर्वत हैं, युगल ज्योति के आभा हैं, एवं अन्य सब कुछ हैं। सच्चाई के रास्ते से अपनी आत्मा की उन्नति का मार्ग पा सका हूं। आपको छोड़कर दूसरे किसी देवता को हम नहीं जानते। **1473**
वेरे कूरुवदुण्डु* अडियेन् विरित्तुरैक्कु मारे* नी पणियादडै* निन् तिरुमनत्तु* कूरेन् नॆञ्जु तन्नाल्* कुणम् कॊण्डु* मट्रोर् दॆय्वम् तेरेन् उन्नै अल्लाल्* तिरुविण्णगराने॥७॥	तिरूविण्णगर के निवासी प्रभु ! हमें कुछ कहना है ः मुझे व्याख्या के लिये न कहें बल्कि सीधे अपने हृदय में रखें।मैं किसी और देवता की प्रशस्ति न तो गा सकता हूं और न ऐसा सोंच ही सकता हूं। **1474**
मुळिन्दीन्द वेङ्गडत्तु* मूरि प्पॆरुङ्गळिट्राल्* विळिन्दीन्द मा मरम्पोल्* वीळ्न्दारै निनैयादे* अळिन्दोर्न्द शिन्दै* निन्बाल् अडियेर्कु* वान् उलगम् तॆळिन्दे एन्रॆय्दुवदु* तिरुविण्णगराने॥८॥	तिरूविण्णगर के निवासी प्रभु ! शक्तिशाली हाथी घोर जंगल में भारी लकड़ी ठेलता है। आग लग जाने से सब नष्ट हो गया। हमें इस तरह से हटायें नहीं। आपके पास स्पष्ट मान्यता एवं स्नेहिल हृदय से आया हूं।कब आप मुझे आकाश में भेजेंगे ? **1475**
शॊल्लाय् तिरु मार्वा !* उनक्कागि त्तॊण्डु पट्ट नल्लेनै* विनैगळ् नलियामै* नम्बु नम्बी* मल्ला ! कुडम् आडि !* मदुशूदने* उलगिल् शॆल्ला नल्लिशैयाय् !* तिरुविण्णगराने॥९॥	तिरूविण्णगर के निवासी प्रभु ! पात्र नर्त्तक मधुसूदन हमसे बात कीजिये। संपूर्ण प्रभु ! संसार आपकी कभी भी पूरी प्रशस्ति नहीं गा सकता।श्री के साथ वक्षस्थल वाले! विनती है, इस दास की रक्षा एवं कुशल क्षेम की कृपा करें।**1476**
‡तारार् मलर् क्कमल* त्तडम् शूळ्न्द तण् पुरविल्* शीरार् नॆडु मरुगिल्* तिरुविण्णगरानै* कारार् पुयल् तडक्कै* क्कलियन् ऒलि मालै* आरार् इवै वल्लार्* अवर्क्कल्लल् निल्लावे॥१०॥	वर्षा के मेघ की तरह उदार कलियन ने, बागों, कमल झुरमुट के जलाशयों, एवं चौड़ी वीथियों वाले तिरूविण्णगर के प्रभु की प्रशंसा में इस मधुर तमिल गीत की माला को गाया है। जो कण्ठ कर लेंगे वे कर्मो की लेखा से मुक्त हो जायेंगे। **1477** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

54 कण्णुम् शुऴन्रू (1478 - 1487)

तिरूनरैयूर 1 (नाच्चियार कोईल)

(यह कुंभकोनम से 8 कि मी पर अवस्थित है। यह स्थान सुगंध गिरी के नाम से भी जाना जाता है।यहां 'काल गरूड़ सेवै' यानी गरूड़ की उत्सव मूर्त्ति पत्थर की रहती है जबकि साधारणतया उत्सव मूर्त्ति धातु के आवरण वाले लकड़ी की रहती है।यह चारों तरफ अन्य दिव्यों देशों से घिरा हैः उत्तर में 5 कि मी पर तिरूविण्णगरम 'ओप्पिलीप्पन कोईल', पश्चिम में 10 कि मी पर नन्दीपुरा विण्णगर 'नाथन कोईल', दक्षिण में तिरूच्चेरै 'शरणदा पेरूमल कोईल', दक्षिणपश्चिम में 8 कि मी पर तिरूकुडन्दै 'सारंगपानी कोईल'। Ramesh vol. 3 , pp 71)

कण्णुम् शुऴन्रु पीळैयोडु⋆ ईळै वन्देङ्गिनाल्⋆ पण्णिन् मॊळियार्⋆ पैय नडमिन् एन्नादमुन्⋆ विण्णुम् मलैयुम्⋆ वेदमुम् वेळ्वियुम् आयिनान्⋆ नण्णु नरैयूर्⋆ नाम् तॊळुदुम् एळुनॆञ्जमे॥१॥	हे मन ! इसके पहले कि आंखें नाचें, कफ भर जाये, एवं सुन्दर नारियां कहें 'पिता जी सावधानी से चलो', हमलोग प्रभु के पास चलें जो सूर्य, चांद, वायु एवं अग्नि हुए। आप नरैयूर में रहते हैं, आपको पूजा अर्पित करें। **1478**
कॊङ्गुण् कुऴल्लार्⋆ कूडियिरुन्दु शिरित्तु⋆ नीरिङ्गॆन् इरुमि⋆ एम्बाल् वन्ददॆन्ऱिगळादमुन्⋆ तिङ्गळॆरि काल्⋆ शॆञ्जुडर् आयवन् तेशुडै⋆ नङ्गळ् नरैयूर्⋆ नाम् तॊळुदुम् एळुनॆञ्जमे॥२॥	हे मन ! इसके पहले कि सुगंधित जूड़े वाली नारियां एकत्र होकर व्यंग भरी हंसी के साथ पूछें 'कफ वाला आदमी, तुम यहां क्या करने आये हो ? ', हमलोग प्रभु के पास चलें जो सूर्य, चांद, वायु एवं अग्नि हुए। आप नरैयूर में रहते हैं, आपको पूजा अर्पित करें। **1479**
कॊङ्गार् कुऴल्लार्⋆ कूडियिरुन्दु शिरित्तु⋆ एम्मै एङ्गोल्लम् ऐया !⋆ एन् इनि क्काण्बदॆन्नादमुन्⋆ शॆङ्गोल् वलवन्⋆ ताळ् पणिन्देत्ति त्तिगळुम् ऊर्⋆ नङ्गोन् नरैयूर्⋆ नाम् तॊळुदुम् एळुनॆञ्जमे॥३॥	हे मन ! इसके पहले कि सुगंधित लटों वाली नारियां एकत्र होकर व्यंग भरी हंसी के साथ पूछें 'भवान ! अब आप क्यों हमलोगों को तथा हमारे वस्त्र को देखते हैं ? ', हमलोग प्रभु के पास चलें जो दंडधारी राजाओं से पूज्य सेवित एवं प्रशंसित हैं। । आप नरैयूर में रहते हैं, आपको पूजा अर्पित करें। **1480**
कॊम्बुम् अरवमुम्⋆ वल्लियुम् वॆन्ऱ नुण्णेर् इडै⋆ वम्पुण् कुऴल्लार्⋆ वाशल् अडैत्तिगळादमुन्⋆ शॆम् पॊन् कमुगिनम् तान्⋆ कनियुम् शॆळुम् शोलै शूळ्⋆ नम्बन् नरैयूर्⋆ नाम् तॊळुदुम् एळुनॆञ्जमे॥४॥	हे मन ! इसके पहले कि मधुमक्खी लिपटे जूड़े तथा लता एवं सांप से पतली कमर वाली नारियां दरवाजा बन्द कर अपमान भरे शब्द बोलें, हमलोग विश्वासी प्रभु के पास चलें जो सुगंधित एरेका एवं सुनहले फलों के बागों से घिरे नरैयूर में रहते हैं, आपको पूजा अर्पित करें। **1481**

विल्ङ्गुम् कयल्लुम्⋆ वेल्लुम् ऑण् कावियुम् वेन्ऱ् कण्⋆ शलम् कॊण्डशॊल्लार्⋆ ताङ्गळ् शिरित्तिगळाद मुन्⋆ मल्ङ्गुम् वरालुम्⋆ वाळैयुम् पाय् वयल् शूळ्दरु⋆ नलङ्गॊळ् नरैयूर्⋆ नाम् तॊळुदुम् एळुनॆञ्जमे॥५॥	हे मन ! इसके पहले कि मृग, मछली, कटारी एवं कमल जैसी आंखों वाली नारियां व्यंग में हंसे, हमलोग प्रभु के पास चलें जो उपजाऊ खेतों तथा तालाबों से घिरे हैं, एवं जहां मलंगु, वराल एवं वलै मछलियां नाचतीं हैं।आप नरैयूर में रहते हैं, आपको पूजा अर्पित करें। **1482**
मिन्नेर् इडैयार्⋆ वेट्कैयै माट्रियिरुन्दु⋆ एन्नीर् इरुमि⋆ एम्बाल् वन्ददॆन्ऱिगळाद मुन्⋆ तॊन्नीर् इलङ्गै मलङ्ग⋆ विल्लॆङ्गरि ऊट्टिनान्⋆ नन्नीर् नरैयूर्⋆ नाम् तॊळुदुम् एळुनॆञ्जमे॥६॥	हे मन ! इसके पहले कि विजली रेखा सी कमर वाली नारियां अपना स्नेह हटाते हुए पूछें 'इतनी दूर खांसते क्यों आ गये ? ' तथा डांटें, हमलोग प्रभु के पास चलें जिन्होंनें समुद्र से घिरे लंका नगर को जला दिया। आप नरैयूर में रहते हैं, आपको पूजा अर्पित करें। **1483**
विल्लेर् नुदलार्⋆ वेट्कैयै माट्रि च्चिरित्तु⋆ इवन् पॊल्लान् तिरैन्दान् एन्नुम्⋆ पुरनुरै केट्पदन् मुन्⋆ शॊल्लार् मरै नान्गोदि⋆ उलगिल् निलायवर्⋆ नल्लार् नरैयूर्⋆ नाम् तॊळुदुम् एळुनॆञ्जमे॥७॥	हे मन ! इसके पहले कि धनुषाकृति भौंहें वाली नारियां अपना प्रेम बदल दें तथा हंसते हुए बोलें 'यह आदमी दुष्ट है तथा टूट चुका है' और कानों के पास मिथ्या वचन बोलें, हमलोग प्रभु के पास चलें जो चारों वेद के ऋचाओं के प्रचार प्रसार करने वाले वैदिक ऋषियों से घिरे हैं। आप नरैयूर में रहते हैं, आपको पूजा अर्पित करें। **1484**
वाळ् ऑण् कण् नल्लार् ताङ्गळ्⋆ मदनन् एन्रार् तम्मै⋆ केण्मिण्गळ् ईळैयोडु⋆ एड्गु किळवन् एन्नाद मुन्⋆ वेळ्वुम् विळवुम्⋆ वीदियिल् एन्रुम् अरादवूर्⋆ नाळुम् नरैयूर्⋆ नाम् तॊळुदुम् एळुनॆञ्जमे॥८॥	हे मन ! इसके पहले कि कटारी जैसी तीक्ष्ण आंखों वाली नारियां जो पहले मदन कहा करती थी अब कहना शूरू करें 'इस खांसते आदमी से पूछो कि यहां क्या करने आया है', हमलोग प्रभु के पास चलें जो वर्ष भर उत्स्व एवं यज्ञों के बीच रहते हैं। आप नरैयूर में रहते हैं, आपको पूजा अर्पित करें। **1485**
कनि शेरन्दिलङ्गु नल् वायवर्⋆ कादन्मै विट्टिड⋆ कुनि शेरन्दुडलम्⋆ कोलिल् तळरन्दिळैयाद मुन्⋆ पनि शेर् विशुम्बिल्⋆ पाल्मदि कोळ् विडुत्तान् इडम्⋆ ननि शेर् नरैयूर्⋆ नाम् तॊळुदुम् एळुनॆञ्जमे॥९॥	हे मन ! इसके पहले कि बैर सी होठों वाली नारियां अपना स्नेह खींच लें, शरीर क्षीण हो जाये, कमर झुक कर डंडे पर टिक जाये, हमलोग प्रभु के पास चलें जिन्होंने चंद्रमा को क्षय होने के शाप से बचाया था। आप नरैयूर में रहते हैं, आपको पूजा अर्पि त करें। **1486**

‡पिरै शेर् नुदलार्⋆ पेणुदल् नम्मै इलादमुन्⋆ नरै शेर् पॉळिल् शूळ्⋆ नरैयूर् तॉळु नॅञ्जमे! एन्र⋆ करैयार् नॅडुवेल् मङ्गैयर् कोन्⋆ कलिगन्रि शॉल्⋆ मरवादुरैप्पवर्⋆ वानवर्क्किन् अरशावारे॥१०॥	हे मन ! इसके पहले कि अर्द्धचंद्राकार भौहें वाली नारियां हंसे बागों से घिरे नरैयूर के प्रभु की पूजा करें। ये पद भाला वाले मंगै के राजा कलियन के हैं। जो इसे याद कर लेंगे वे देवलोक पर सदा के लिये राज्य करेंगे। **1487** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

55 कलङ्ग (1488 - 1497)

तिरूनरैयूर 2 (नाच्चियार कोईल)

कलङ्ग मुन्नीर् कडैन्दु⋆ अमुदम् कॉण्डु⋆ इमैयोर् तुलङ्गल् तीर⋆ नल्गु शोदि च्चुडराय⋆ वलङ्गैयाऴि इडङ्गै च्चङ्गम्⋆ उडैयान् ऊर्⋆ नलङ्गॊळ् वाय्मै⋆ अन्दणर् वाऴुम् नऱैयूरे॥१॥	दिव्य चक्र एवं शंख धारण करने वाले प्रभु ने पुरा काल में समुद मंथन कर अमृत देवों को उनकी रक्षा के लिये दे दिया। आप नरैयूर में रहते हैं जहां के निवासी वैदिक ऋषिगन मंत्रगान एवं यज्ञ करते हैं। **1488**
मुनैयार् शीयम् आगि⋆ अवुणन् मुरण् मार्वम्⋆ पुनै वाळ् उगिराल्⋆ पोऴ्पड ईर्न्द पुनिदन् ऊर्⋆ शिनैयार् तेमाञ्जॆन्दळिर् कोदि⋆ क्कुयिल् कूवुम्⋆ ननैयार् शोलै शूऴ्न्दु⋆ अऴगाय नऱैयूरे॥२॥	नरसिंह के रूप में आकर प्रभु ने नखपंजों से असुर की छाती चीर दी। आप नरैयूर में रहते हैं जहां कोयल आाम के पेड़ों के ऊपर नवविकसित नूतन लाल पत्तों को खोदते हैं। **1489**
अनै प्पुरवि तेरॊडु काल्लाळ्⋆ अणिगॊण्ड⋆ शेनै त्तॊगैयै च्चाडि⋆ इलङ्गै शॆट्रान् ऊर्⋆ मीनै त्तऴुवि वीऴ्न्दॆऴुम्⋆ मळ्ळर्क्कलमन्दु⋆ नान प्पुदल्लिल्⋆ आमै ऑळिक्कुम् नऱैयूरे⋆॥३॥	हाथी, घोड़े, रथ सवार एवं पैदल योद्धाओं से युद्ध कर प्रभु ने लंका को नष्ट कर दिया। आप नरैयूर में रहते हैं जहां खेत जोतने वाले लोग कीचकृमि को पकड़ने के लिये दौड़ते हैं तथा कछुआ डर से विल में छिप जाते हैं। **1490**
उऱियार् वॆण्णॆय् उण्डु⋆ उरल्लोडुम् कट्टुण्डु⋆ वॆऱियार् कून्दल्⋆ पिन्नै पॊरुट्टान् वॆन्ऱान् ऊर्⋆ पॊऱियार् मञ्ञै⋆ पूम् पॊऴिल् तोऱुम् नडम् आड⋆ नऱु नाण्मलर्मेल्⋆ वण्डिशै पाडुम् नऱैयूरे॥४॥	प्रभु ने मक्खन चुराया एवं ऊखल में बांधे गये। नप्पिनाय से पाणिग्रहण के लिये आप ने सात वृषभों से युद्ध किया। आप नरैयूर में रहते हैं जहां चितकवरे चिह्न वाले मोर अमृतमय बागों में भौंरे के धुन पर नाचते हैं। **1491**
विडैयेऴ् वॆन्ऱु⋆ मॆन् तोळ् आय्च्चिक्कन्बनाय्⋆ नडैयाल् निन्ऱ⋆ मरुदम् शाय्त्त नादन् ऊर्⋆ पॆडैयोडन्नम्⋆ पॆय्वळैयार् तम् पिन् शॆन्ऱु⋆ नडैयोडियल्लि⋆ नाणि ऑळिक्कुम् नऱैयूरे॥५॥	सात वृषभों से लड़कर सुन्दर बाहों वाली नप्पिनाय का प्रभु ने आलिंगन किया। मरूदु पेड़ों के वीच घूमकर आपने उन्हें नष्ट कर दिया। आप नरैयूर में रहते हैं जहां हंसो की जोड़ी कंगन वाली किशोरियों के पीछे उनकी चाल का अनुकरण करते हुए चलते हैं एवं फिर लज्जा से छिप जाते हैं। **1492**

पगुवाय् वन् पेय्⋆ कोङ्गै शुवैत्तार् उयिर् उण्डु⋆ पुगुवाय् निन्र⋆ पोदगम् वीळ प्पॊरुदान् ऊर्⋆ नॆगु वाय् नॆय्दल्⋆ पू मदु मान्दि क्कमलत्तिन्⋆ नगुवाय् मलर्मेल्⋆ अन्नम् उरङ्गुम् नरैयूरे⋆ ॥६॥	मुंह फाड़े पूतना राक्षसी का प्रभु ने स्तन पान किया तथा हाथी पर जोरों से प्रहार उसका बध कर दिया। आप नरैयूर में रहते हैं जहां हंस पूर्ण प्रस्फुटित नीले कमल से अमृत पीकर लाल कमल के पास सो जाते हैं।**1493**
मुन्दु नूलुम् मुप्पुरि नूलुम्⋆ मुन्नीन्द⋆ अन्दणाळन् पिळ्ळैयै⋆ अञ्ञान्रळित्तान् ऊर्⋆ पॊन्दिल् वाळुम् पिळ्ळैक्कागि⋆ प्पुळ्ळोडि⋆ नन्दु वारुम्⋆ पैम् पुनल् वावि नरैयूरे॥७॥	प्रभु ने समुद्र यात्रा कर गुरू को उनका पुत्र लाकर दे दिया। आप नरैयूर में रहते हैं जहां पक्षीगन दूर जाकर केंकड़ा आदि भोजन एकत्र कर भूखे बच्चों के पास पेड़ो पर लौट आते हैं। **1494**
वॆळ्ळै प्पुरवै त्तेर् विशयर्काय्⋆ विरल् वियूगम् विळ्ळ⋆ शिन्दुक्कोन् विळ⋆ ऊर्न्द विमलन् ऊर्⋆ कॊळ्ळै क्कॊळु मीन्⋆ उण् कुरुगोडि प्पॆडैयोडुम्⋆ नळ्ळ क्कमल⋆ त्तेरल् उगुक्कुम् नरैयूरे॥८॥	प्रभु ने श्वेत घोड़े वाले अर्जुन के रथ को चलाया एवं जयद्रथ का उसकी शक्तिशाली सेना के साथ विनाश कर दिया। आप नरैयूर में रहते हैं जहां बड़े बगुले जल से मछलियों को खाकर अपनी जोड़ी के साथ कमल का मधु पीते हैं। **1495**
पारैयूरुम् पारम् तीर⋆ प्पारत्तन् तन् तेरैयूरुम्⋆ देव देवन् शेरुम् ऊर्⋆ तारैयूरुम्⋆ तण् तळिर् वेलि पुडै शूळ⋆ नारैयूरुम्⋆ नल् वयल् शूळ्न्द⋆ नरैयूरे॥९॥	पृथ्वी का भार हटाने के लिये अर्जुन का रथ हांकने वाले प्रभु नरैयूर में रहते हैं जहां बाग मधु बहाते हैं तथा बगुले जलाशयों में आते रहते हैं। **1496**
‡ताम त्तुळब⋆ नीळ् मुडि मायन् तान् निन्र⋆ नाम त्तिरळ् मा माळिगै शूळ्न्द⋆ नरैयूर् मेल्⋆ काम क्कदिर् वेल् वल्लान्⋆ कलियन् ऑलि माल्ै⋆ शेम त्तुणैयाम्⋆ शॆप्पुम् अवर्क्कु त्तिरुमाले॥१०॥	चमकते भाला वाले कलियन के ये गीत तुलसी की माला एवं ऊंचे मुकुट प्रभु की प्रशस्ति है जो प्रसिद्ध महलों से घिरे नरैयूर में रहते हैं। जो इसको कंठ कर लेगा वह तिरूमल के शाश्वत दया का पात्र हो जायेगा। **1497** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

56 अम्बरमुम् (1498 - 1507)

तिरूनरैयूर 3 (नाच्चियार कोईल)

‡अम्बरमुम् पॆरु निलनुम् तिशैगळ् एट्टुम्⋆ अलै कडलुम् कुल वरैयुम् उण्ड कण्डन्⋆ कॊम्बमरुम् वड मरत्तिन् इलैमेल्⋆ पळ्ळि कॊण्डिनान् तिरुवडिये कुडुगिर्पीर्⋆ वम्बविळुम् शॆण्बगत्तिन् वाशम् उण्डु⋆ मणि वण्डु वगुळत्तिन् मलर्मेल् वैगुम्⋆ शॆम्बियन् को च्चॆङ्गणान् शेर्न्द कोयिल्⋆ तिरुनरैयूर् मणिमाडम् शेर्मिन्गळे॥१॥	भक्तों ! पृथ्वी,आकाश, दिशायें, समुद, पर्वत तथा अन्य सभी को निगलकर तैरते बटपत्र पर शिशु के रूप में सोने वाले प्रभु का दर्शन अगर चाहते हो तो तिरूनरैयूर मणिमडक्कोईल जाओ जहां भौंरे शण्बकम का सुगंध लेकर वकुला फूलों पर जाते हैं और जहां शेम्बिआको चेंगनन पूजा अर्पित करने आते हैं। **1498**
कॊळुङ्गयलाय् नॆडु वॆळ्ळम् कॊण्ड कालम्⋆ कुल वरैयिन् मीदोडि अण्डत्तप्पाल्⋆ एळुन्दिनिदु विळैयाडुम् ईशन् एन्दै⋆ इणैयडिक्कीळ् इनिदिरुप्पीर्! इन वण्डालुम्⋆ उळुम् शॆऴविल् मणि कॊणर्न्दु करैमेल् शिन्दि⋆ उलगॆल्लाम् शन्दनमुम् अगिलुम् कॊळ्ळ⋆ शॆळुम् पॊन्नि वळम् कॊडुक्कुम् शोळन् शेर्न्द⋆ तिरुनरैयूर् मणिमाडम् शेर्मिन्गळे॥२॥	भक्तों ! विशाल मत्स्य के रूप में प्रलय जल पर प्रकट होकर पर्वतों आदि के ऊपर आनंद से तैरने वाले प्रभु के चरणों के आश्रय में रहना चाहते हो तो तिरूनरैयूर मणिमडक्कोईल जाओ जहां पोन्नी नदी रत्न, चंदन, एवं अगिल खेतों की मेड़ पर प्रवाह से लाकर जमा करते हैं और जहां चोल राजा पूजा अर्पित करने आते हैं। **1499**
पव्व नीर् उडै आडैयाग च्चुट्रि⋆ पार् अगलम् तिरुवडिया प्पवनम् मॆय्या⋆ शॆव्वि मादिरम् एट्टुम् तोळा⋆ अण्डम् तिरु मुडिया निन्रान्पाल् शॆल्लगिर्पीर्⋆ कव्वै मा कळिऱुन्दि वॆण्णियेट्र⋆ कळल् मन्नर् मणि मुडिमेल् कागम् एर⋆ दॆय्व वाळ् वलम् कॊण्ड शोळन् शेर्न्द⋆ तिरुनरैयूर् मणिमाडम् शेर्मिन्गळे॥३॥	भक्तों ! अगर प्रभु को पाना चाहते हो, जिनका वस्त्र समुद्र है, पृथ्वी पैर हैं, वायु धड़ है, आठों दिशायें बाहें हैं, एवं ब्रह्मांड किरीटधारी मस्तक है तो तिरूनरैयूर मणिमडक्कोईल जाओ जहां चोल राजा पूजा अर्पित करने आते हैं जिनकी दिव्य तलवार हाथी पर सवार मुकुटधारी राजाओं का बध कर गिद्धों को भोजन देती है। **1500**
पैङ्गण् आळ् अरियुरुवाय् वॆरुव नोक्कि⋆ परुवरै त्तोळ् इरणियनै प्पट्रि वाङ्गि⋆ अङ्गै वाळ् उगिर् नुदियाल् अवनदागम्⋆ अङ्गुरुदि पॊङ्गुवित्तान् अडिक्कीळ् निर्पीर्⋆ वॆङ्गण् मा कळिऱुन्दि वॆण्णियेट्र⋆ विरल् मन्नर् तिरल् अळिय वॆम्मा उय्त्त⋆ शॆङ्गणान् को च्चोळन् शेर्न्द कोयिल्⋆ तिरुनरैयूर् मणिमाडम् शेर्मिन्गळे॥४॥	भक्तों ! डरावने नरसिंह के रूप में हिरण्य असुर को पकड़ कर अपने गोद में रख उसकी छाती चीर कर सर्वत्र गर्म खून बिखेरने वाले प्रभु के चरणों के पास अगर रहना चाहते हो तो तिरूनरैयूर मणिमडक्कोईल जाओ जहां शेम्बिआको चेंगनन पूजा अर्पित करने आते हैं जो युद्ध में घोड़े की सवारी कर हाथी वाले मुकुटधारी राजाओं पर विजय पाते हैं। **1501**

अन्रुलग मून्रिनैयुम् अळन्दु⋆ वेरोर् अरियुरुवाय् इरणियनदागम् कीण्डु⋆ वेन्रवनै विण्णुलगिल् शॅलवुयत्तार्कु⋆ विरुन्दावीर्! मेल् एळुन्दु विलङ्गल् पायन्दु⋆ पॉन् शिदरि मणि कॉणरन्दु करैमेल् शिन्दि⋆ पुलम् परन्दु निलम् परक्कुम् पॉन्नि नाडन्⋆ तॅन् तमिळन् वड पुलक्कोन् शोळन् शेरन्द⋆ तिरुनरैयूर् मणिमाडम् शेर्मिन्गाळे॥५॥	भक्तों ! पृथ्वी मापने वाले तथा भयानक नरसिंह बन के हिरण्य असुर का नाश कर उसे आकाशगामी बनाने वाले प्रभु का अगर अतिथि बनना चाहते हो तो तिरूनरैयूर मणिमडक्कोईल जाओ जहां पोन्नि नदी पास के पहाड़ों से उतरकर ताड़ों से गुजरते हुए खेतों को पटाकर सोना एवं रत्न जमा करती है और जहां उत्तर तथा दक्षिण के चोल राजा पूजा अर्पित करने आते हैं। **1502**
तन्नाले तन्नुरुवम् पयन्द तानाय⋆ तयङ्गॉळि शेर् मूवुलगुम् तानाय् वानाय्⋆ तन्नाले तन्नुरुविल् मूर्त्ति मून्राय्⋆ तानायन् आयिनान् शरण एन्रुव्वीर्⋆ मिन्नाडु वेलेन्दु विळैन्द वेळै⋆ विण्णेर त्तनि वेलुयत्तुलगम् आण्ड⋆ तॅन्नाडन् कुड कॉङ्गन् शोळन् शेरन्द⋆ तिरुनरैयूर् मणिमाडम् शेर्मिन्गाळे॥६॥	भक्तों ! स्वयंभू, तीनों तेजोमय लोक बनाने वाले, वैकुंठ के नाथ, स्वयं त्रिमूर्ति बनने वाले एवं चरवाहा बनकर आने वाले प्रभु तिरूनरैयूर मणिमडक्कोईल में रहते हैं जहां भालाधारी चोल नरेश कोंगन पूजा अर्पित करने आते हैं।आपको यहीं प्राप्त करो। **1503**
मुलै त्तडत्त नञ्जुण्डु तुञ्ज प्पेयच्चि⋆ मुद्दुवरै क्कुलपदिया क्कालिप्पिन्ने⋆ इलै त्तडत्त कुळल् ऊदि आयर् मादर्⋆ इन वळै कॉण्डान् अडिक्कीळ् एय्दगिर्पीर्⋆ मलै त्तडत्त मणि कॉणरन्दु वैयम् उय्य⋆ वळम् कॉडुक्कुम् वरु पुनलम् पॉन्नि नाडन्⋆ शिलै त्तडक्कै क्कुल च्चोळन् शेरन्द कोयिल्⋆ तिरुनरैयूर् मणिमाडम् शेर्मिन्गाळे॥७॥	भक्तों ! अगर आप प्रभु के चरणों को प्राप्त करना चाहते हो जिन्होंने राक्षसी का स्तन पान कर उसका बध कर दिया, गायें चराया, बांसुरी बजाया, गोपियों का कंगन चुराया तथा प्राचीन द्वारिका नगर पर राज्य किया तो तिरूनरैयूर मणिमडक्कोईल जाओ जो रत्न लाने वाली कावेरी से सिंचित क्षेत्र है एवं जहां धर्नुधारी चोल नरेश पूजा अर्पित करने आते हैं। **1504**
मुरुक्किलङ्गु कनि त्तुवर् वाय् प्पिन्नै केळ्वन्⋆ मन्नॅल्लाम् मुन्नविय च्चॅन्रु⋆ वॅन्रि च्चॅरुक्कळत्तु त्तिरल् अळिय च्चॅट्र वेन्दन्⋆ शिरम् तुणिन्दान् तिरुवडि नुम् शॅन्नि वैप्पीर्⋆ इरुक्किलङ्गु तिरुमॉळि वाय् एण तोळ ईशर्कु⋆ एळिल् माडम् एळुपदु शॅय्दुलगम् आण्ड⋆ तिरुक्कुलत्तु वळ च्चोळन् शेरन्द कोयिल्⋆ तिरुनरैयूर् मणिमाडम् शेर्मिन्गाळे॥८॥	भक्तों ! अगर आप प्रभु के चरणों को अपने मस्तक पर रखना चाहते हो जिन्होंने मूंगावत होठ वाली नप्पिनाय से व्याह किया, योद्धा के रूप में **21** राजाओं का पुराकाल में फरसा से अंत किया तो तिरूनरैयूर मणिमडक्कोईल जाओ जहां ऊंचे कुल के चोल नरेश पूजा अर्पित करने आते हैं और जिन्होनें आठ हाथ वाले ईश्वर का सत्तर बड़े मंदिरों का निर्माण कराया। **1505**

तार् आळन् तण् अरङ्गवाळन्* पूमेल् तनियाळन् मुनियाळर् एत्त निन्ऱ पेर् आळन्* आयिरम् पेर् उडैयवाळन्* पिन्नैक्कु मणवाळन् पॆरुमै केट्पीर्* पार् आळर् अवर् इवर् एन्ऱळुन्दैयेद्* पडै मन्नर् उडल् तुणिय प्परिमावुयत्त* तेर् आळन् को च्चोळन् शेरन्द कोयिल्* तिरुनऱैयूर् मणिमाडम् शेर्मिन्गाळे॥९॥	भक्तों ! अगर आप प्रभु की प्रशस्ति सुनना चाहते हो जो तुलसी की माला धारण करते हैं, अरंगम में रहते हैं, कमल सी लक्ष्मी के पति हैं, ऋषियों से प्रशंसित हैं, हजारों नाम वाले हैं, तथा नप्पिनाय के दूल्हा हैं, तो तिरूनरैयूर मणिमडक्कोईल जाओ जहां चोल नरेश पूजा अर्पित करने आते हैं और जिन्होंने अलुन्दुर के युद्ध में घोड़े वाले रथ पर सवार हो छोटे राजाओं की बोटियां उड़ा डाली। **1506**
शॆम् मॊळि वाय् नाल् वेद वाणर् वाळुम्* तिरुनऱैयूर् मणिमाड च्चॆङ्गण् माल्लै* पॊय्म् मॊळि ऒन्ऱिल्लाद मॆय्म्मैयाळन्* पुल मङ्ङै कुल वेन्दन् पुलमैयारन्द* अम्मॊळि वाय् क्कलिगन्ऱियिन्ब प्पाडल्* पाडुवार् वियन् उलगिल् नमनार् पाडि* वॆम् मॊळि केट्टञ्जादे मॆय्म्मै शॊल्लिल्* विण्णवर्क्कु विरुन्दागुम् पॆरुन् तक्कोरे॥१०॥	यह मधुर तमिल पदों की माला ऊंचे गुणवाले वैदिक ऋषियों के साथ रहने वाले तिरूनरैयूर मणिमडक्कोईल के सेंकनमल प्रभु की प्रशस्ति में सत्यवादी कवि एवं मंगै क्षेत्र के राजा कलकन्रि ने रचा है। जो इन पदों को याद कर लेंगे वे मौत से डरेंगे नहीं तथा देवों से भी सम्मानित होंगे। **1507** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

<table>
<tr><td colspan="2">

श्रीमते रामानुजाय नमः

57 आळुम पणियुम् (1508 - 1517)

तिरूनरैयूर 4

</td></tr>
<tr><td>आळुम् पणियुम् अडियेनै क्कॉण्डान्⋆ विण्ड निशाचररै⋆
तोळुम् तलैयुम् तुणिवुम् एय्द⋆ च्चुडु वॆञ्जिलैवाय् च्चरम् तुरन्दान्⋆
वेळुम् शेयुम् अनैयारुम्⋆ वेर्कणारुम् पयिल् वीदि⋆
नाळुम् विळविन् ऑलियोवा⋆ नरैयूर् निन्र नम्बिये॥१॥</td><td>नरैयूर के प्रभु ने हमें अपना कर अपनी सेवा में ले लिया। आपने बहुत सारे सिर एवं हाथ अग्नि बाणों से काट डाले।मन्मथ की तरह सुन्दर लोगों से आपकी बीथि भरी हुई है। प्रतिदिन होने वाले उत्सव की ध्वनि पूरे साल कभी बन्द नहीं होती। 1508</td></tr>
<tr><td>मुनियाय् वन्दु मूवॆळुगाल्⋆ मुडिशेर् मन्नरुडल् तुणिय⋆
तनिवाय् मळुविन् पडैयाण्ड⋆ तारार् तोळान्वार् पुरविल्⋆
पनि शेर् मुल्लै पल्लरुम्ब⋆ पानल् ऑरुवाल् कण् काट्ट⋆
ननि शेर् वयलुळ् मुत्तलैक्कुम्⋆ नरैयूर् निन्र नम्बिये॥२॥</td><td>नरैयूर के प्रभु तब तीक्ष्ण फरशा वाले भृगु राम होकर आये और 21 बलशाली राजाओं का शमन किया। आप मस्तक पर तुलसी का किरीट पहनते हैं। सुगंधित मुल्लै विहंसते हैं, पानल फूल उनके साथ मिलकर आमंत्रण देते हैं, गौरवशाली कमल आनंदित बागों एवं खेतों में सर्वत्र अपना मुखमंडल दिखाते हैं। 1509</td></tr>
<tr><td>तॆळ्ळार् कडल्वाय् विडवाय⋆ च्चिनवाळ् अरविल् तुयिलमरन्दु⋆
तुळ्ळा वरु मान् वीळ वालि तुरन्दान्⋆ इरन्दान् मावलि मण्⋆
पुळ्ळार् पुरविल् पूङ्गावि⋆ पुलन्गॉळ् मादर् कण् काट्ट⋆
नळ्ळार् कमलम् मुगम् काट्टुम्⋆ नरैयूर् निन्र नम्बिये॥३॥</td><td>नरैयूर के प्रभु सागर में शेष शय्या पर सोते हैं। आपने सुवर्ण मृग का बध किया। आपने भूमि के उपहार की याचना की। जलाशयों में पक्षीगन की बहुतायत है। सर्वत्र नगर में लाल कुमुद किशोरियों की आंखें की तरह एवं कमल उनके मुखमंडल जैसे दिखते हैं। 1510</td></tr>
<tr><td>ऑळिया वॆण्णॆय् उण्डान् एन्रु⋆ उरलोडाय्च्चि ऑण् कयिट्राल्⋆
विळिया आर्क्क आप्पुण्डु⋆ विम्मियळुदान् मॆन् मलर्मेल्⋆
कळिया वण्डु कळ्ळुण्ण⋆ क्कामर् तॆन्रल् अलर् तूट्र⋆
नळिर्वाय् मुल्लै मुरुवलिक्कुम्⋆ नरैयूर् निन्र नम्बिये॥४॥</td><td>नरैयूर के प्रभु शिशु काल में श्वेत मक्खन की चोरी की और जब मां ने गुस्से में ऊखल से बांध दिया तो रोते खड़े रहे। भौंरे मधुपान करते हैं। शीतल वायु वहती हैं एवं सबों को बताती हैं। मुल्लै के हंसते फूल यह सुनकर अपनी मुस्कान विखेरते हैं। 1511</td></tr>
<tr><td>विल्लार् विळविल् वड मदुरै⋆ विरुम्बि विरुम्बा मल्लडर्त्तु⋆
कल्लार् तिरळ् तोळ् कञ्जनै क्कायन्दान्⋆ पायन्दान् काळियन्मेल्⋆
शॊल्लार् शुरुदि मुरैयोदि⋆ च्चोमु च्चॆय्युम् तॊळिलिनोर्⋆
नल्लार् मरैयोर् पलर् वाळुम्⋆ नरैयूर् निन्र नम्बिये॥५॥</td><td>नरैयूर के प्रभु खुशी से धनुष यज्ञ में मथुरा गये तथा मल्लयोद्धाओं के साथ कंस का अंत किया।आप कालिय नाग के फन पर नाचे।चारों वेद की ऋचाओं को याद रखने वाले वैदिक ऋषिगन संरक्षित अग्निकुंड में नित्य हवन करते हैं। 1512</td></tr>
</table>

वळ्ळि कॊळुनन् मुदलाय⋆ मक्कळोडु मुक्कणणान् वॆळ्ळियोड⋆ विऱल्वाणन्⋆ वियन् तोळ् वनत्तै त्तुणित्तुगन्दान्⋆ पळ्ळि कमलत्तिडै प्पट्ट⋆ पगु वाय् अलवन् मुगम् नोक्कि⋆ नळ्ळियूडुम् वयल् शूळ्न्द⋆ नऱैयूर् निन्ऱ नम्बियेे॥६॥	नैरेयूर के प्रभु ने पुरा काल में बानासुर के हजारों हाथों को काट डाला जबकि त्रिनेत्रधारी शिव एवं उनके पुत्र सेना के साथ भाग खड़े हुए। जलाशयों के कमल की कलियों में नर केंकड़ा सोते हैं एवं मादा केंकड़ा सारी रात प्रतीक्षा रत उनके लौटने पर खेतों में झगड़ा करती हैं। **1513**
मिडैया वन्दवेल् मन्नर् वीय⋆ विशयन् तेर् कडवि⋆ कुडैया वरै ऒन्ऱॆडुत्तु⋆ आयर् कोवाय् निन्ऱान् कूराळि प्पडैयान्⋆ वेदम् नान्गैन्दु वेळ्वि⋆ अङ्गम् आऱिशैयेळ्⋆ नडैया वल्ल अन्दणर् वाळ्⋆ नऱैयूर् निन्ऱ नम्बियेे॥७॥	प्रभु ने विजय के लिये रथ हांका तथा सेनावाले महान राजाओं का अंत किया। आप ने पर्वत को उठाकर गोपवंश का रक्षक के रूप में काम किया।आप चक्रधारी नैरेयूर में रहते हैं जहां वैदिक ऋषिगन चारों वेद, पांचों यज्ञ, छः आगमों, एवं संगीत के सातों स्वरों में निपुण हैं। **1514**
पन्दार् विरलाळ् पाञ्जालि⋆ कून्दल् मुडिक्क प्पारदत्तु⋆ कन्दार् कळिऱ्ऱु क्कळत्तु मन्नर् कलङ्ग⋆ च्चङ्गम् वाय् वैत्तान्⋆ शॆन्दामरैमेल् अयनोडु⋆ शिवनुम् अनैय पॆरुमैयोर्⋆ नन्दावण् कै मऱैयोर् वाळ्⋆ नऱैयूर् निन्ऱ नम्बियेे॥८॥	भारत के युद्धक्षेत्र में शंख फूंककर हाथीवाले महारथियों को भयभीत कर गेंद पकड़ने वाली पांचाली के जूड़ा बंधवाने वाले प्रभु नैरेयूर में रहते हैं जहां उदार वैदिक ऋषिगन कमलासीन ब्रह्मा एवं शिव के समान गौरवशाली होकर इनदोनों के प्रतिद्वंदी हैं। **1515**
आऱुम् पिऱैयुम् अरवमुम्⋆ अडम्बुम् शडैमेल् अणिन्दु⋆ उडलम् नीऱुम् पूशि एऱूरुम्⋆ इऱैयोन् शॆन्ऱु कुऱैयिरप्प⋆ माऱॊन्ऱिल्ला वाश नीर्⋆ वरै मार्बगलत्तळित्तुगन्दान्⋆ नाऱुम् पॊळिल् शूळ्न्दळगाय⋆ नऱैयूर् निन्ऱ नम्बियेे॥९॥	भस्म लगाये बैल पर सवार जटाधारी शिव गंगा एवं चंद्रमा को अपने बालों पर रखे हुए ब्रह्मा की खोपड़ी का भिक्षा पात्र लिये जब भिक्षा के लिये पहुंचे तो प्रभु ने अपने हृदय के रस से इनके भिक्षापात्र को भरकर इनको शाप से विमुक्त किया। आप सुगंधित बागों से घिरे नैरेयूर में रहते हैं। **1516**
नन्मैयुडैय मऱैयोर् वाळ्⋆ नऱैयूर् निन्ऱ नम्बियै⋆ कन्नि मदिल्शूळ् वयल् मङ्गै⋆ क्कलियनॊलिशॆय् तमिळ्मालै पन्नियुलगिल् पाडुवार्⋆ पाडु शारा पळ विनैगळ्⋆ मन्नि उलगम् आण्डु पोय्⋆ वानोर् वणङ्ग वाळ्वारे॥१०॥	महलों एवं उपजाऊ खेतों वाले मंगै क्षेत्र के राजा कलियन ने यह मधुर तमिल पदों वाली गीतमाला की रचना वैदिक ऋषिगन वाले नैरेयूर के प्रभु की प्रशस्ति में की है। जो इसे याद कर लेंगे वे कर्मों के बढ़ने से मुक्त हो जायेंगे तथा पृथ्वी का शासन करते हुए देवों से पूजित होंगे। **1517** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

<table>
<tr><td colspan="2">श्रीमते रामानुजाय नमः
58 मान् कोण्ड   (1518 - 1527)
तिरूनरैयूर 5</td></tr>
<tr><td>मान् कॊण्ड तोल्⋆ मार्विन् माणियाय्⋆ मावलि मण्
तान् कॊण्डु⋆ ताळाल् अळन्द पॆरुमानै⋆
तेन् कॊण्ड शारल्⋆ तिरुवेङ्गडत्तानै⋆
नान् शॆन्ऱु नाडि⋆ नऱैयूरिल् कण्डेने॥१॥</td><td>अपनी छाती पर मृगछाला लपेटे प्रभु वामन के रूप में मावली के पास जाकर जमीन की याचना की और सारी पृथ्वी ले लिया। आप अमृतमय बागों वाले तिरूवेंकटम के निवासी हैं। सब जगह खोजने पर मैंने आपको नरैयूर में पाया। 1518</td></tr>
<tr><td>मुन्नीरै मुन् नाळ्⋆ कडैन्दानै⋆ मूळ्त्त नाळ्
अन्नीरै मीनाय्⋆ अमैत्त पॆरुमानै⋆
तॆन्नालि मेय⋆ तिरुमालै एम्मानै⋆
नन्नीर् वयल् शूळ्⋆ नऱैयूरिल् कण्डेने॥२॥</td><td>प्रभु ने पुराकाल में समुद्र का मंथन किया और मछली के रूप में आकर प्रलय काल में इसे पी गये। आप तिरूमल एवं तेन वयल आली के प्रभु हैं। मैंने आपको उपजाऊ खेतों एवं बागों से घिरे नरैयूर में पाया है। 1519</td></tr>
<tr><td>तू वाय पुळ्ळूर्न्दु वन्दु⋆ तुऱै वेळम्⋆
मूवामै नल्गि⋆ मुदलै तुणित्तानै⋆
देवादि देवनै⋆ च्चॆङ्गमल क्कण्णानै⋆
नावायुळानै⋆ नऱैयूरिल् कण्डेने॥३॥</td><td>गरूड़ पर सवार प्रभु सरोवर को आये एवं चक्र से ग्राह के टुकड़े कर आपने गजेन्द्र की जान बचायी। अरूणाभ नयन शेनकल आप देवों के देव हैं। मैंने आपको नरैयूर में पाया है। 1520</td></tr>
<tr><td>ओडा अरियाय्⋆ इरणियनै ऊन् इडन्द⋆
शेडार् पॊळिल् शूळ्⋆ तिरुनीर् मलैयानै
वाडा मलर्त्तुळाय्⋆ मालै मुडियानै⋆
नाडोऱुम् नाडि⋆ नऱैयूरिल कण्डेने॥४॥</td><td>नरसिंह रूप में प्रभु ने हिरण्य का नाश किया। बागों से घिरे तिरूमलय के आप प्रभु हैं। आप सदा सुगंधित रहने वाली तुलसी की माला पहनते है। मैंने आपको नरैयूर में पाया है। 1521</td></tr>
<tr><td>कल्लार् मदिल् शूळ्⋆ कडियिलङ्गै क्कार् अरक्कन्⋆
वल्लागम् कीळ⋆ वरि वॆञ्जरम् तुरन्द
विल्लानै⋆ शॆल्व विबीडणर्कु⋆ वेऱाग⋆
नल्लानै नाडि⋆ नऱैयूरिल् कण्डेने॥५॥</td><td>धर्नुधारी के रूप में प्रभु ने समुद्र से घिरे लंका के राजा रावण का बध कर दिया। आपने छोटे विभीषण पर उदारता दिखायी। मैंने आपको नरैयूर में पाया है। 1522</td></tr>
<tr><td>उम्बर् उलगोडु⋆ उयिर् एल्लाम् उन्दियिल्⋆
वम्बु मलर्मेल्⋆ पडैत्तानै मायोनै⋆
अम्पन्न कण्णाळ्⋆ अशोदै तन् शिङ्गत्तै⋆
नम्बनै नाडि⋆ नऱैयूरिल् कण्डेने॥६॥</td><td>चमत्कारिक प्रभु ने अपने नाभि कमल पर ब्रह्मांड देवों तथा मनुष्यों की रचना की।आप कटारी नयनों वाली यशोदा के केसरी किशोर हैं।विश्वास पूर्वक मैंने आपको नरैयूर में पाया है। 1523</td></tr>
</table>

कट्टेरु नीळ् शोलै⋆ क्काण्डवत्तै त्ती मूट्टि विट्टानै⋆ मेय्यम् अमरन्द पॆरुमानै⋆ मट्टेरु कर्पगत्तै⋆ मादरक्काय्⋆ वण् तुवरै नट्टानै नाडि⋆ नरैयूरिल् कण्डेने॥७॥	खांडव वन में आग लगाने वाले प्रभु मेय्यम में रहते हैं और अमृत टपकाते कल्पवृक्ष हैं।सत्यभामा के लिये आपने सुन्दर द्वारिका बनाया। मैंने आपको नरैयूर में पाया है। **1524**
मण्णिन् मी पारम् कॆडुप्पान्⋆ मर मन्नर्⋆ पण्णिन्मेल् वन्द⋆ पडैयॆल्लाम् पारदत्तु⋆ विण्णिन् मीदेर⋆ विशयन् तेर् ऊरन्दानै⋆ नण्णि नान् नाडि⋆ नरैयूरिल् कण्डेने॥८॥	विजय के लिये आपने रथ हांका एवं आततायी राजाओं को स्वर्ग गामी बना दिया और इसतरह से पृथ्वी का भार कम किया। आप नरैयूर में रहते हैं, आज आपको देखा है। **1525**
पॊङ्गेरु नीळ् शोदि⋆ प्पॊन्नाळि तन्नोडुम्⋆ शङ्गेरु कोल⋆ त्तड क्कै प्पॆरुमानै⋆ कॊङ्गेरु शोलै⋆ क्कुडन्दै क्किडन्दानै⋆ नङ्गोनै नाडि⋆ नरैयूरिल् कण्डेने॥९॥	सुगंधित कुडन्दै के शयनावस्था वाले प्रभु सुन्दर श्वेत शंख एवं तेजोमय चक्र धारण करते हैं। आप हमारे राजा हैं। आपको नरैयूर में देखा है। **1526**
मन्नु मदुरै⋆ वशुदेवर् वाळ् मुदलै⋆ नन्नरैयूर्⋆ निन्र नम्पियै⋆ वम्पविळ् तार् कन्नविलुम् तोळान्⋆ कलियन् ऑलि वल्लार्⋆ पॊन्नुलगिल् वानवरक्कु⋆ प्पुत्तेळिर् आगुवरे॥१०॥	तमिल पदों की इस माला में मधुमक्खी लिपटे हार धारन करने वाले बाहुबली कलियन ने नरैयूर में रहनेवाले वसुदेव के मेधावी पुत्र मथुरा के प्रभु की प्रशस्ति गायी है।जो इसे याद कर लेंगे वे देवों के गुरू हो जायेंगे। **1527** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

59 पेडैयडरत्त (1528 - 1537)

तिरूनरैयूर 6

पेडैयडरत्त मडवन्नम्⋆ पिरियादु⋆ मलर् क्कमलम् मडल् एडुत्तु मदु नुगरुम्⋆ वयल् उडुत्त तिरुनरैयूर्⋆ मुडैयडरत्त शिरम् एन्दि⋆ मूवुलगुम् पलि तिरिवोन्⋆ इडर् कॆडुत्त तिरुवाळन्⋆ इणैयडिये अडै नॆञ्जे ! ॥१॥	हंसो की आलिंगन करती नर एवं मादा जोड़ी तिरूनरैयूर के खेतों में गिरे कमल की पंखुड़ियों के अमृत पीती हैं। कपाल भिक्षापात्र लिये तीनों लोक घूमने वाले शिव को श्रीपति प्रभु ने शाप से मुक्त कराया। हे मन ! आपके चरणों का आश्रय लो। **1528**
कळियारुम् कन शङ्गम्⋆ कलन्देङ्गुम् निरैन्देरि⋆ वळियार मुत्तीन्रु⋆ वळम् कॊडुक्कुम् तिरुनरैयूर्⋆ पळियारुम् विरल् अरक्कन्⋆ परु मुडिगळ अवै शिदर⋆ अळल् आरुम् शरम् तुरन्दान्⋆ अडियिणैये अडै नॆञ्जे ! ॥२॥	लवण जल के उत्प्लावित घोंघा तिरूनरैयूर की वीथियों में मोती एवं अन्य बहुमूल्य सामग्री देते हैं। धर्नुधारी प्रभु के तप्त बाणों से दोषी राक्षसों के भारी सिर धराशायी हो गये। हे मन !आपके चरणों का आश्रय लो। **1529**
शुळै कॊण्ड पलङ्कनिगळ्⋆ तेन् पाय⋆ कदलिगळिन् तिळै कॊण्ड पळम् कॆळुमु⋆ त्तिगळ् शोलै त्तिरुनरैयूर्⋆ वळै कॊण्ड वण्णत्तन्⋆ पिन् तोन्रल्⋆ मूवुलगो- डळै वॆण्णॆय् उण्डान् तन्⋆ अडियिणैये अडै नॆञ्जे ! ॥३॥	तिरूनरैयूर में कटहल अमृत देते हैं एवं बगानों में केला स्वयं अपने छिलके से बाहर आ जाते हैं। शंख का वर्ण के बलराम के छोटे भाई के रूप में प्रभु ने दूध की सामगियों एवं जगत को एक घोंट में निगल लिया। हे मन! आपके चरणों का आश्रय लो। **1530**
तुन्रोळि त्तुगिल् पडलम्⋆ तुन्नि एङ्गुम् माळिगैमेल्⋆ निन्रार वान् मूडुम्⋆ नीळ शॆल्व त्तिरुनरैयूर्⋆ मन्रार क्कुडम् आडि⋆ वरैयॆडुत्तु मळै तडुत्त⋆ कुन्रारुम् तिरळ तोळन्⋆ कुरै कळले अडै नॆञ्जे ! ॥४॥	संपन्न तिरूनरैयूर में महलों के ऊपर लहरते वस्त्रों की सघन पंक्तियां आकाश को ढ़क लेती हैं। वर्त्तनों के साथ नाचने वाले प्रभु ने वर्षा रोकने के लिये शक्तिशाली भुजाओं से पर्वत उठा लिया। हे मन! आपके चरणों का आश्रय लो। **1531**
अगिर्कुरडुम् शन्दनमुम्⋆ अम् पॊन्नुम् अणि मुत्तुम्⋆ मिग क्कॊणरन्दु तिरैयुन्दुम्⋆ वियन् पॊन्नि त्तिरुनरैयूर्⋆ पगल् करन्द शुडर् आळि⋆ प्पडैयान् इव्वुलगेळुम्⋆ पुग क्करन्द तिरु वयिट्रन्⋆ पॊन्नडिये अडै नॆञ्जे ! ॥५॥	तिरूनरैयूर में निरंतर प्रवाह वाली कावेरी ढ़ेरों सारे अगिल चंदन सोना एवं मोती बहा लाती है। भारत के युद्ध में प्रभु ने चक्र से सूर्य को छिपा दिया जो स्वयं अपने उदर में ब्रह्मांड छिपाते हैं। हे मन! आपके चरणों का आश्रय लो। **1532**

पॊन् मुत्तुम् अरियुगिरुम्⋆ पुळै क्कै मा करि क्कोडुम्⋆ मिन्न त्तण् तिरैयुन्दुम्⋆ वियन् पॊन्नि त्तिरुनरैयूर्⋆ मिन्नोत्त नुण् मरुङ्गुल्⋆ मॆल्लियलै⋆ त्तिरु मार्बिल् मन्न त्तान् वैत्तुगन्दान्⋆ मलर् अडिये अडैनॆञ्जे ! ॥६॥	तिरूनरैयूर में कावेरी उपहार स्वरूप सोना, मोती, बघनखा, एवं हाथी दांत बहा कर लाती है। तड़ित रेखा सी पतली कटि वाली श्री लक्ष्मी को अपने वक्षस्थल पर रख प्रभु प्रसन्न रहते हैं। हे मन! आपके चरणों का आश्रय लो। **1533**
शीर् तळैत्त कदिर् च्चॆन्नॆल्⋆ शॆङ्गमल त्तिडैयिडैयिन्⋆ पार् तळैत्तु क्करुम्पोङ्गि⋆ प्पयन् विळैक्कुम् तिरुनरैयूर्⋆ कार् तळैत्त तिरुवुरुवन्⋆ कण्ण पिरान् विण्णवर् कोन्⋆ तार् तळैत्त तुळाय् मुडियन्⋆ तळिरडिये अडै नॆञ्जे ! ॥७॥	तिरूनरैयूर में सुनहले पके वाल के धान, लाल कमल, एवं ऊंचे गन्ना के पौधे एक दूसरे के बीच उपजते हैं। मेघ सा वर्ण वाले देवों के नाथ, कृष्ण, तुलसी की माला धारण करते हैं। हे मन! आपके चरणों का आश्रय लो। **1534**
कुलैयारन्द पळु क्कायुम्⋆ पशुङ्गायुम् पाळै मुत्तुम्⋆ तलैयारन्द इळङ्गमुगिन्⋆ तडञ्जोलै त्तिरुनरैयूर्⋆ मलैयारन्द कोलम् शेर्⋆ मणि माडम् मिग मन्नि⋆ निलैयार निन्रान् तन्⋆ नीळ् कळले अडै नॆञ्जे ! ॥८॥	तिरूनरैयूर में पके हुए एवं पकने वाले फल, अरेका के फूलों के मोती से गुच्छे बागों में भरे हुए हैं। प्रभु रत्न जटित पर्वत सा ऊंचे महलों में रहते हैं। हे मन! आपके चरणों का आश्रय लो। **1535**
मरैयारुम् पॆरु वेळ्वि⋆ क्कॊळुम् पुगै पोय् वळरन्दॆङ्गुम्⋆ निरैयार वान् मूडुम्⋆ नीळ् शॆल्व त्तिरुनरैयूर्⋆ पिरैयारुम् शडैयानुम्⋆ पिरमनुम् मुन् तॊळुदेत्त⋆ इरैयागि निन्रान् तन्⋆ इणैयडिये अडै नॆञ्जे ! ॥९॥	तिरूनरैयूर में वैदिक ऋषियों के अग्नि कुंड से उठने वाला धुंआ संपन्नता प्रदान करने वाला बादल बनाता है। शिव एवं ब्रह्मा से पूजित प्रभु सबके सिरमौर हैं। हे मन! आपके चरणों का आश्रय लो। **1536**
‡तिण् कनग मदिळ् पुडै शूळ्⋆ तिरुनरैयूर् निन्रानै⋆ वण् कळग निलवॆरिक्कुम्⋆ वयल् मङ्गै नगराळन्⋆ पण्गळ् अगम् पयिन्र शीर्⋆ प्पाडल् इवै पत्तुम् वल्लार्⋆ विण्गळ् अगत्तिमैयवराय्⋆ वीट्रिरुन्दु वाळ्वारे॥१०॥	हंसो वाले जलाशयों से घिरे मंगै के राजा मीठे पन्न के धुन पर आधारित तमिल पदों की यह गीतमाला प्रभु के चरणों में अर्पित करते हैं जो ऊंचे एवं धवल महलों के तिरूनरैयूर में खड़े हैं। जो इसे याद कर लेंगे उन्हें ऊंचा स्वर्ग मिलेगा तथा वे सदा देवों के साथ रहेंगे। **1537** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

60 किडन्द नम्बि (1538-1547)

तिरूनरैयूर 7

‡किडन्द नम्बि कुडन्दै मेवि॰ क्केळलायुलगै इडन्द नम्पि॰ एङ्गळ नम्बि॰ एरिजर अरण अळिय॰ कडन्द नम्पि कडियार इलङ्गै॰ उलगै ईर अडियाल॰ नडन्द नम्बि नामम् शॊल्लिल॰ नमो नारायणमे॥१॥	कुडन्दै में सोने वाले प्रभु ने वराह के रूप में पृथ्वी का ऊद्धार किया संरक्षित लंका को जलाकर धूल में मिला दिया एवं पृथ्वी को दो पगों में माप दिया। आपका मंत्र है 'नमो नारायणम'। **1538**
विडन्दान उडैय अरवम् वॆरुव॰ च्चॆरुविल् मुन नाळ॰ मुन तडन् तामरै नीर पॊय्यौ पुक्कु॰ मिक्क ताळाळन॰ इडन्दान् वैयम् केळल् आगि॰ उलगै ईर अडियाल॰ नडन्दानुडैय नामम् शॊल्लिल॰ नमो नारायणमे॥२॥	प्रभु ने कमल सरोवर में प्रवेश कर विष वमन करने वाले कालिय के फन पर नृत्य किया। आपने वराह रूप में पृथ्वी को दाढ़ों पर उठा लिया। आपने फूल समान कोमल पैरों से पृथ्वी पर भ्रमण किया। आपका मंत्र है 'नमो नारायणम'। **1539**
पूणादनलुम्॰ तरुगण वेळम् मरुग॰ वळै मरुप्पै प्पेणान् वाङ्गि॰ अमुदम् कॊण्ड पॆरुमान् तिरुमार्वन॰ पाणा वण्डु मुरलुम् कून्दल॰ आयच्चि तयिर वॆण्णॆय॰ नाणादुण्डान् नामम् शॊल्लिल॰ नमो नारायणमे॥३॥	प्रभु ने लाल आंखों वाला गुस्सैल हाथी का दांत उखाड़ लिया।आप ने अमृत के लिये समुद्र मंथन किया। आप अपने वक्षस्थल पर श्रीलक्ष्मी को धारण करते हैं। आपने जूड़ो वाली गोपियों के मक्खन चुरा लिया। आपका मंत्र है 'नमो नारायणमे'। **1540**
कल्लार मदिळ शूळ॰ कच्चि नगरुळ नच्चि॰ प्पाडगत्तुळ एल्ला उलगुम् वणङ्ग॰ इरुन्द अम्मान॰ इलङ्गैक्कोन् वल्लाळ आगम्॰ विल्लाल् मुनिन्द एन्दै॰ विबीडणर्कु नल्लानुडैय नामम् शॊल्लिल॰ नमो नारायणमे॥४॥	प्रभु पूर्ण संरक्षित कांची नगर में रहते हैं एवं सारे संसार से पडकम यानी पांडव दूत में पूजित हैं। आपने लंका के राजा रावण की शक्तिशाली छाती पर बाणों की वर्षा कर राज्य उसके छोटे भाई विभीषण को दे दिया। आपका मंत्र है 'नमो नारायणमे'। **1541**
कुडैया वरैयाल॰ निरै मुन् कात्त पॆरुमान्॰ मरुवाद विडै तान् एळुम् वॆन्रान्॰ कोवल् निन्रान्॰ तॆन्निलङ्गै अडैया अरक्कर वीय॰ पॊरुदु मेवि वॆङ्गूट्रम्॰ नडैया उण्ण क्कण्डान् नामम्॰ नमो नारायणमे॥५॥	प्रभु ने पर्वत उठाकर तूफान से गायों की रक्षा की। आपने सात वृषभों का शमन किया।आप कोवलूर में खड़े हैं। आप ने यम को रण क्षेत्र में दौड़ाकर राक्षस कुल का अंत कर दिया। आपका मंत्र है 'नमो नारायणमे'। **1542**

कान एण्गुम् कुरङ्गुम्⋆ मुशुवुम् पडैया⋆ अडल् अरक्कर् मानम् अऴित्तु निन्ऱ⋆ वॆन्ऱि अम्मान्⋆ एनक्कॆन्ऱुम् तेनुम् पालुम् अमुदुम् आय⋆ तिरुमाल् तिरुनामम्⋆ नानुम् शॊन्नेन् नमरुम् उरैमिन्⋆ नमो नारायणमे॥६॥	प्रभु ने बंदरों भालुओं की सेना से बलशाली राक्षसों का मान मर्दन कर दिया।आप दूध मधु एवं अमृत के तरह हमारे हृदय के लिये मधुर हैं। आप श्रीपति हैं। मैं भक्तों से कहूंगा कि वे हमारे साथ 'नमो नारायणमे' दुहरायें। **1543**
निन्ऱ वरैयुम् किडन्द कडलुम्⋆ तिशैयुम् इरु निलनुम्⋆ ऑन्ऱुम् ऑऴिया वण्णम् एण्णि⋆ निन्ऱ अम्मानार्⋆ कुन्ऱु कुडैया एडुत्त⋆ अडिगळुडैय तिरुनामम्⋆ नन्ऱु काण्मिन् तॊण्डीर ! शॊन्नेन्⋆ नमो नारायणमे॥७॥	आप पर्वत श्रेणियों की, विस्तृत सागर की, दिशाओं की, एवं अचल पृथ्वी की, युग युगान्तर तक बिना अपवाद के रक्षा प्रदान करते हैं। आपने तूफान के विरूद्ध छाता की तरह पर्वत को उठा लिया। मैं जो कहता हूं भक्तों उसे लिख लो, आपका मंत्र है 'नमो नारायणमे'। **1544**
कडुङ्गाल् मारि कल्ले पॊऴिय⋆ अल्ले एमक्कॆन्ऱु पडुङ्गाल्⋆ नीये शरण एन्ऱु⋆ आयर् अञ्ज अञ्जामुन्⋆ नॆडुङ्गाल् कुन्ऱम् कुडैयॊन्ऱेन्दि⋆ निरैयै च्चिरमत्ताल्⋆ नडुङ्गा वण्णम् कात्तान् नामम्⋆ नमो नारायणमे॥८॥	जब ग्वालों के घर तूफान से आक्रांत हो गये और उनके पुकारने के पहले 'कृष्ण हमारी रक्षा करो' आपने विशाल पर्वत को छाते की तरह उठाकर गायों की सर्दी से रक्षा की। आपका मंत्र है 'नमो नारायणमे'। **1545**
पॊङ्गु पुणरि क्कडल् शूऴ् आडै⋆ निल मा मगळ् मलर् मा मङ्गै⋆ पिरमन् शिवन् इन्दिरन्⋆ वानवर् नायगर् आय⋆ एङ्गळ् अडिगळ् इमैयोर्⋆ तलैवरुडैय तिरुनामम्⋆ नङ्गळ् विनैगळ् तविर उरैमिन्⋆ नमो नारायणमे॥९॥	सागर परिवृत्त भू देवी, कमल जैसी लक्ष्मी देवी, ब्रह्मा, शिव, इन्द्र एवं सभी देवगन अपनी स्थिति को बनाये रखने के लिये आप पर आधारित हैं। आप हमारे तथा देवों के प्रभु हैं। आपका मंत्र 'नमो नारायणमे' जपकर कर्म के लेखा से मुक्त हो जाओ। **1546**
‡वावि त्तडम् शूऴ् मणि मुत्ताट्रु⋆ नरैयूर् नॆडुमालै⋆ नाविल् परवि नॆञ्जिल् कॊण्डु⋆ नम्बि नामत्तै⋆ कावि त्तडङ्गण् मडवार् केळ्वन्⋆ कलियन् ऑलि मालै⋆ मेवि च्चॊल्ल वल्लार् पावम्⋆ निल्ला वीयुमे॥१०॥	बहुत सारे मृगनयनी के पति कलियन के ये पद कावेरी के मणि मुत्ताटु से घिरे तिरूनरैयूर के निवासी प्रभु के मंत्र की प्रशस्ति है। जो इसे याद कर लेंगे वे कर्मों के लेखा से मुक्त हो जायेंगे। **1547** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

61 कऱवा मडनागु (1548 – 1557)

तिरूनरैयूर 8

तिरूमूळिकळम 1553

कऱवा मड नागु⋆ तन् कन्ऱुळ्ळिनाऱ् पोल्⋆ मऱवादडियेन्⋆ उन्नैये अळैक्किन्ऱेन्⋆ नऱवार् पॊळिल् शूळ्⋆ नऱैयूर् निन्ऱ नम्बि⋆ पिऱवामै एनै प्पणि⋆ एन्दै पिराने ! ॥१॥	अमृत मय बागों से घिरे नरैयूर के प्रभु ! जैसे बछड़ा गाय को दूध के लिये पुकारता है वैसे ही हम आपको पुकारते हैं। विनती है कि मेरा पुनर्जन्म न होने की व्यवस्था करें। **1548**
वढ़ा मुदु नीरॅाडु⋆ माल्वरै एळुम्⋆ तुढ़ा मुन् तुढ़िय⋆ तॊल् पुगळोने⋆ अढ़ेन् अडियेन्⋆ उन्नैये अळैक्किन्ऱेन्⋆ पॆढ़ेन् अरुळ् तन्दिडु⋆ एन् एन्दै पिराने ! ॥२॥	सात समुद्र, पर्वत एवं अन्य सभी आपने एक ही बार में निगल लिया। प्रथम कारण प्रभु अनवरत मैं केवल आपको पुकारता हूं। विनती है कि हम पर दया करें। **1549**
तारेन् पिऱर्क्कु⋆ उन् अरुळ् एन्निडै वैत्ताय्⋆ आरेन् अदुवे⋆ परुगि क्कळिक्किन्ऱेन्⋆ कारेय् कडल्ले मलैये⋆ तिरुक्कोट्टि ऊरे⋆ उगन्दायै⋆ उगन्दडियेने॥३॥	आपने जो हम पर कृपा की है मैं दूसरों के साथ बंटवारा नहीं करूंगा। हमारे प्रेम से आप क्षीरसागर में, वेंकटम के पर्वतों एवं तिरूकोट्टियूर में रहते हैं। बिना संतुष्टि के हम आनंद विभोर रहते हैं। **1550**
पुळ् वाय् पिळन्द⋆ पुनिदा ! एन्ऱळैक्क⋆ उळ्ळे निन्ऱु⋆ एन् उळ्ळम् कुळिरुम् ऑरुवा !⋆ कळ्वा !⋆ कडन्मल्लै क्किडन्द करुम्बे⋆ वळ्ळाल् ! उन्नै⋆ एङ्ङनम् नान् मऱक्केने॥४॥	कडलमल्लै के अमृत मय प्रभु ! जब मैं आपको पुकारता हूं 'केशी घोड़ा के जबड़ा फाड़ने वाले शुद्ध परात्पर प्रभु 'हमारा हृदय चुराते हुए उसमें आनंद भर कर आप निवास कर जाते हैं। आपकी उदारता को मैं कैसे भूल सकता हूं ! **1551**
विल्लेर् नुदल्⋆ वेल् नॆडुङ्गण्णियुम् नीयुम्⋆ कल्लार् कडुङ्गानम्⋆ तिरिन्द कळिऱे⋆ नल्लाय् ! नर नारणने !⋆ एङ्गळ् नम्बि⋆ शॊल्लाय् उन्नै⋆ यान् वणङ्गि त्तॊळुम् आऱे॥५॥	हे गजेन्द्र ! आप अपनी धनुषाकार भौंहें एवं कटारी नयना वाली प्रियतमा के साथ पत्थीले वन में भ्रमण किये। नेक, नर नारायण, मेरे अपने प्रभु ! विनती है, कृपया बताईये कि आपकी पूजा ठीक से कैसे करूं। **1552**
पणियेय् परङ्गुन्ऱिन्⋆ पवळ त्तिरळे⋆ मुनिये⋆ तिरुमूळिक्कळत्तु विळक्के⋆ इनियाय् ! तॊण्डरोम्⋆ परुगिन्नमुदाय कनिये⋆ उन्नै क्कण्डु कॊण्डु⋆ उय्न्दॊळिन्देने॥६॥	हिमालय की बर्फीली चोटियों पर रहने वाले मूंगे की लड़ी ! विचारक प्रभु ! तिरूमूळिकळम के प्रकाश ! भक्तों के अमृत फल ! आपके दर्शन से हमारी जीवात्मा बंधन से मुक्त हो गयी है। **1553**

कदियेल् इल्लै॰ निन्नरुळ् अल्लदॅनक्कु॰ निदिये !॰ तिरुनीर्मलै नित्तिल त्तॉत्ते॰ पदिये परवि त्तॊळुम्॰ तॊण्डर् तमक्कु कदिये॰ उन्नै क्कण्डु कॊण्डुयन्दॊळिन्देने॥ ७ ॥	हमारी संपन्नता ! आपके सिवा हमारा कोई सहारा नहीं है। तिरूनिर्मलै के मोती की हार एवं निवासी अर्चक भक्तों के जान प्राण ! आपके दर्शन से हमारी जीवात्मा बंधन से मुक्त हो गयी है। **1554**
अत्ता ! अरिये ! एन्रु॰ उन्नै अळैक्क॰ पित्ता वॆन्रु पेशुगिन्रार्॰ पिरर् एन्नै॰ मुत्ते ! मणि माणिक्कमे !॰ मुळैक्किन्र वित्ते॰ उन्नै एङ्ङनम् नान् विडुगेने ! ॥ ८ ॥	जब मैं आपको 'प्रभु एवं नाथ' कहता हूं तो दूसरे हमें 'पागल पागल' कहते हैं। हे मोती ! हे पन्ना ! हे अंकुरित बीज ! कैसे आपको कभी भी मैं जाने दूंगा ? **1555**
तूयाय् ! शुडर् मा मदिपोल्॰ उयिर्क्कॆल्लाम्॰ तादाय् अळिक्किन्र॰ तण् तामरै क्कण्णा !॰ आया ! अलै नीर् उलगेळुम्॰ मुन्नुण्ड वाया॰ उन्नै एङ्ङनम् नान् मरक्केने॥ ९ ॥	पूर्ण चांद की तरह शुद्ध तेजोमय प्रभु ! सभी प्राणी की मां ! हे राजीवनयन मेरे रक्षक ! हे गोप ! हे सात लोकों को निगलने वाले प्रभु ! कैसे कभी भी मैं आपको भूल सकता हूं ? **1556**
‡वण्डार् पॊळिल् शूळ्॰ नरैयूर् नम्बिक्कु॰ एन्रुम् तॊण्डाय्॰ कलियन् ऑलि शॆय् तमिळ् मालै॰ तॊण्डीर् ! इवै पाडुमिन्॰ पाडि निन्राड॰ उण्डे विशुम्बु॰ उन्दमक्किल्लै तुयरे॥ १० ॥	भक्तों ! कलियन के गाये हुए ये शुद्ध तमिल गीत मधुमक्खी मंड़राते बागों से घिरे नरैयूर प्रभु की प्रशस्ति है। जो इसे याद कर गायेंगे तथा नाचेंगे वे निराशा विहीन हो वैकुंठ जायेंगे। **1557** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्

श्रीमते रामानुजाय नमः **62 पुळळाय् एनमुमाय् (1558 - 1567)** **तिरूनरैयूर 9**	
पुळ्ळाय् एनमुमाय् प्पुगुन्दु* एन्नै उळ्ळम् कॊण्ड कळ्वा ! एन्रलुम्* एन् कण्गळ् नीर् शोर् तरुमाल्* उळ्ळे निन्रुरुगि* नॆञ्जम् उन्नै उळ्ळियक्काल्* नळ्ळेन् उन्नै अल्लाल्* नरैयूर् निन्र नम्बीयो ! ॥१॥	आप वराह एवं पक्षी के रूप में आये और मेरे नीच हृदय को अपने जैसा बना दिया। हाय ! जब मैं आपको 'चोर' कहता हूं तो मेरी आंखें अश्रु बहाती है। अहा ! जब मैं आपके बारे में सोचता हूं तो मेरा हृदय कामनामय हो जाता है।मैं नरैयूर निवासी के लिये ज्यादा ईच्छा नहीं कर सकता। **1558**
ओडा आळरियिन्* उरुवाय् मरुवि* एन् तन् माडे वन्दु* अडियेन् मनम् कॊळ्ळ वल्ल मैन्दा* पाडेन् तॊण्डर् तम्मै* क्कविदै प्पनुवल् कॊण्डु* नाडेन् उन्नै अल्लाल्* नरैयूर् निन्र नम्बीयो ! ॥२॥	आपने आश्चर्यमय सिंह का रूप लिया और मेरे लाड़ले हो गये। मेरे प्रति प्रेम के कारण आपने मुझे सेवक बना लिया। हमारे राजकुमार ! क्षणभंगुर सांसारिकों की प्रशस्ति मैं नहीं गा सकता। न तो मैं अन्य किसी देव के बारे में सोंच सकता। हे नरैयूर निवासी ! **1559**
एम्मानुम् एम्मनैयुम्* एन्नै प्पॆट्रॊळिन्ददर्पिन्* अम्मानुम् अम्मनैयुम्* अडियेनुक्कागि निन्र* नन्मान वॊण् शुडरे !* नरैयूर् निन्र नम्बी !* उन् मैम्मान वण्णम् अल्लाल्* मगिळ्न्देत्त माट्टेने॥३॥	हमारे माता पिता ने जन्म दिया और बाद में वे संसार छोड़ कर चले गये। तदुपरांत सव स्नेह एवं प्यार देने वाले आप ही हमारे माता पिता हैं।मेघ सा श्यामल वर्ण एवं सूर्य से अधिक तेज वाले प्रभु ! आपके सिवा मैं अन्य किसी के लिये नहीं गाता। हे नरैयूर निवासी ! **1560**
शिरियाय् ओर् पिळ्ळैयुमाय्* उलगुण्डोर् आलिलै मेल् उरैवाय्* एन् नॆञ्जिनुळ्ळे* उरैवाय् उरैन्दुदु तान्* अरियादिरुन्दरियेन्* अडियेन् अणि वण्डु किण्डुम्* नरै वारुम् पॊळिल् शूळ्* नरैयूर् निन्र नम्बीयो ! ॥४॥	शिशु रूप में आये। सबों को निगल गये। सोते हुए एक तैरते बट पत्र पर रहे। शाश्वत प्रभु हमारे हृदय में विराजमान रहे परन्तु तव मैं जानता नहीं था। अमृत टपकाते एवं भौंरो से गुंजायमान बागों से आपका मंदिर घिरा है। अब मैं कैसे भूल सकता हूं ! हे नरैयूर निवासी ! **1561**
नीण्डायै वानवर्गळ्* निनैन्देत्ति क्काण्वरिदाल्* आण्डाय् एन्रादरिक्क प्पडुवायक्कु* नान् अडिमै पूण्डेन्* एन् नॆञ्जिनुळ्ळे* पुगुन्दायै प्पोगल् ऒट्टेन्* नाण् ताण् उनक्कॊळिन्देन्* नरैयूर् निन्र नम्बीयो ! ॥५॥	शश्वत प्रभु ! देवों के ध्यान से भी परे ! सबों के नाथ ! मैं आपके चरणों में पूरी सेवा के लिये अर्पित हूं।आप मेरे हृदय में नीचे उतर कर बैठ गये हैं। कैसे आपको अब जाने दूंगा ? बहुत पहले मैंने लाज छोड़ दिया है। हे नरैयूर निवासी ! **1562**

एन्दादै तादै अप्पाल्⋆ एळुवर् पळवडिमै वन्दार्⋆ एन् नॆञ्जिनुळ्ळे⋆ वन्दायै प्पोगल् ऑट्टेन्⋆ अन्दो ! एन्नारुयिरे !⋆ अरशे ! अरुळ् एनक्कु⋆ नन्दामल् तन्द एन्दाय् !⋆ नरैयूर् निन्र नम्बीयो ! ॥६॥	हे प्रभु ! मेरे पिता के पिता के पिता के पिता ... एक बार हमारे भीतर बस गये हैं तो कैसे आपको अब जाने दूंगा ? हमारे बहुमूल्य प्राण एवं सम्राट ! आपने मुझे अपनी पूरी कृपा दी है। हे हमारे माता पिता ! हे नरैयूर निवासी ! **1563**
मन्नञ्ज आयिरम् तोळ्⋆ मळुविल् तुणित्त मैन्दा⋆ एन् नॆञ्जत्तुळ् इरुन्दु⋆ इङ्गिनि प्पोय् प्पिरर् ऑरुवर्⋆ वन्नॆञ्जम् पुक्किरुक्कल् ऑट्टेन्⋆ वळैत्तु वैत्तेन्⋆ नन्नॆञ्ज अन्नम् मन्नुम्⋆ नरैयूर् निन्र नम्बीयो ! ॥७॥	पुरा काल में हजारों राजाओं के नाश करने वाले फरसाधारी प्रभु ! अगर मुझे छोड़कर आप किसी दूसरे के हृदय में जा बसते हैं तो मेरी हिस्सेदारी रहेगी नहीं।बात मानो और मेरे हृदय में हंसगामिनी देवी के साथ बसे रहो। हे नरैयूर निवासी ! **1564**
एप्पोदुम् पॊन् मलरिट्टु⋆ इमैयोर् तॊळुदु⋆ तङ्गळ् कैप्पोदु कॊण्डिरैञ्जि⋆ क्कळल् मेल् वणङ्ग निन्राय्⋆ इप्पोदॆन् नॆञ्जिनुळ्ळे⋆ पुगुन्दायै प्पोगल् ऑट्टेन्⋆ नर्पोदु वण्डु किण्डुम्⋆ नरैयूर् निन्र नम्बीयो ! ॥८॥	सुनहले पुष्पों के साथ सर्वदा देवगन आकाश में अपने करबद्ध करकमलों से आपके चरण कमल में पूजा अर्पित करते हैं।अब हमने आपको अपने हृदय में बैठा लिया है और कभी आपको जाने नहीं देंगे। हे भौंरों वाले अमृतमय बाग के नरैयूर निवासी ! **1565**
ऊनेर् आक्कै तन्नै⋆ उळन्दोम्बि वैत्तमैयाल्⋆ यानाय् एन् तनक्काय्⋆ अडियेन् मनम् पुगुन्द तेने !⋆ तीङ्गरुम्बिन् तॆळिवे !⋆ एन् शिन्दै तन्नाल्⋆ नाने एय्द प्पॆट्टेन्⋆ नरैयूर् निन्र नम्बीयो ! ॥९॥	शरीर की मांसपेसियों को आपको धारण करने लायक रखे हुए हूं। मेरा, मेरे लिये, एवं मुझसे आपने हमारे हृदय में स्थान प्राप्त कर लिया है। आपका ध्यान करते हूए आपको अपने हृदय में दृढ़ता से आसीन करा चुका हूं। मधु एवं गन्ने के रस के समान मधुर नरैयूर निवासी ! **1566**
नन्नीर् वयल् पुडै शूळ्⋆ नरैयूर् निन्र नम्बियै⋆ कन्नीर माल् वरै त्तोळ्⋆ कलिगन्रि मङ्गैयर् कोन्⋆ शॊन्नीर शॊल् मालै⋆ शॊल्लुवार्गळ्⋆ शूळ् विशुम्बिल् नन्नीमैयाल् मगिळ्न्दु⋆ नॆडुङ्गालम् वाळ्वारे॥१०॥	बादलों की तरह उदार मंगै के राजा कलकन्रि ने सिंचित बागों एवं खेतों से घिरे नरैयूर के निवासी प्रभु की प्रशस्ति में इस तमिल गीत माला को अर्पित किया है। जो इसका गान करेंगे वे पृथ्वी पर बहुत आनन्द से रहेंगे। **1567** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

63 शिन्विल (1568 - 1577)

तिरूनरैयूर 10

शिनविल् शॆङ्गण् अरक्कर् उयिर् माळ* च्चॆट्र विल्लियॆन्रु कट्रवर् तन्दम् मनमुळ् कॊण्डु* एन्रुमॆप्पोदुम् निन्रेत्तुम् मामुनियै* मरमेळ् एय्द मैन्दनै* ननविल् शॆन्रारक्कुम् नण्णर्करियानै* नान् अडियेन् नरैयूर् निन्र नम्बियै* कनविल् कण्डेनिन्रु कण्डमैयाल्* एन् कण्णिणैगळ् कळिप्पक्कळित्तेने॥१॥	लाल आंखोवाले कोधी एवं डरावने राक्षसों के विनाशक प्रभु ! सन्यासी प्रभु ! सात वृक्षों को बेधने वाले प्रभु ! सहृदय धर्नु धारी ! विद्वान एवं ज्ञानी लोग आपको अपने हृदय में रखते हुए पूजा करते हैं। ज्ञानियों से अगम्य तिरूनरैयूर में रहने वाले पूर्ण प्रभु।इस नीचात्मा ने आपको स्वप्न में देखा और देखते हीं मेरी आंखें तथा हृदय उमंग में उछल पड़े। **1568**
ताय् निनैन्द कन्रेयॊक्क* एन्नैयुम् तन्नैये निनैक्क च्चॆय्दु* तान् एन- क्काय् निनैन्दरुळ् शॆय्युम् अप्पनै* अन्रिव् वैयगम् उण्डुमिळ्न्दिट्ट वायनै* मगर क्कुळै क्कादनै* मैन्दनै मदिळ् कोवल् इडैगळि आयनै* अमरर्क्करियेट्रै* एन् अन्बनै अन्रि आदरियेने॥२॥	जैसे बछड़े गाय को धीमी आवाज से बुलाते हैं उसी तरह हम अपने मां प्रभु को खड़े पुकार रहे हैं। अकेले निरंतर अपने प्रभु पर चित्त लगाये रहते हैं जो पुरा काल में शिशु रूप में तैरते बट पत्र पर सोये। आप मकराकृत कुण्डल पहनते हैं। तीन आळवारों के बीच एक तंग जगह में आप चौथे भी प्रवेश कर गये। आप देवों के बीच सिंह हैं एवं मेरे केवल प्रेम हैं। **1569**
वन्द नाळ् वन्दॆन् नॆञ्जिडम् कॊण्डान्* मट्रोर् नॆञ्जरियान्* अडियेनुडै च्चिन्दैयाय् वन्दु* तॆन्बुलर्क्कॆन्नै च्चेर्गॊडान् इदु शिक्कॆन प्पॆट्रेन्* कॊन्दुलाम् पॊळिल् शूळ् कुडन्दै त्तलै क्कोविनै* क्कुडम् आडिय कूत्तनै* एन्दैयै एन्दै तन्दै तम्मानै* एम्बिरानै एत्ताल् मरक्केने॥३॥	जिस दिन से आप आये किसी और के पास न जाकर आप हमारे मन में बस गये। यम से हमारी रक्षा करते हुए आप हमारे स्थिर चैतन्य हो गये। पात्रों के साथ नृत्य करने वाले प्रभु मधुमय बागों से घिरे कुडन्दै में आप शयनावस्था में हैं। आप हमारे पिता तथा उनके भी प्रभु हैं। बास्तव में कैसे हम आपको भूल सकते हैं ? **1570**
उरङ्गळाल् इयन्र मन्नर् माळप्* वारदत्तॊरु तेर् ऐवर्क्काय् च्चॆन्रु* इरङ्गि ऊर्न्दवर्क्किन्नरुळ् शॆय्युम् एम्बिरानै* वम्बार् पुनल् काविरि* अरङ्गम् आळि एन्नाळि विण्णाळि* आळि शूळ् इलङ्गै मलङ्ग च्चॆन्रु* शरङ्गळाण्ड तण् तामरैक्कण्णनुक्कन्रि* एन्मनम् ताळ्न्दु निल्लादे॥४॥	महान राजाओं का भारत युद्ध पांडव हमारे कृष्ण के कारण जीत गये जो शक्तिशाली राजाओं का बध करते हुए रथ हांके। मधुमक्खी वाले बागों के बीच आप मधुर अरंगम के प्रभु हैं तथा मेरे हृदय में हैं।कमल के समान आंखें तथा होंठ वाले आप देवों के प्रभु हैं। आपने लंका के राजा पर बाणों की वर्षा कर दी।केवल आप ही हमारी पूजा लेते हैं। **1571**

<table>
<tr>
<td>आङ्गु वॆन्नरगत्तळुन्दुम् पोदु⋆ अञ्जेल् एन्रडियेनै अङ्गे वन्दु
ताङ्गु⋆ तामरै अन्न पॊन्नार् अडि एम्बिरानै⋆ उम्बर्क्कणियाय् निन्र⋆
वेङ्गडत्तरियै प्परि कीऱियै⋆ वॆण्णॆय् उण्डुरल्लिनिडै आप्पुण्ड
तीङ्गरुम्बिनै⋆ तेनै नन् पालिनै अन्रि⋆ एन् मनम् शिन्दै शॆय्यादे॥५॥</td>
<td>जब हम नरक की यातना झेलते हैं तब आप हमारी रक्षा करते हैं। श्यामल चरण वाले प्रभु जिसकी पूजा देवगन करते हैं, हाथ उठाकर उत्साहित करते हुए मुझे ढ़ाढस बंधाते हैं 'डरो नहीं, हम तुम्हारे साथ हैं'। आप शीतल वेंकटम के प्रभु हैं।केशी शत्रु, आप वही बालक हैं जो मक्खन खाने के बाद बांधे गये। गन्ने, मधु, दूध की तरह हमारे मधुर प्रभु हैं जो हमारे हृदय में रहते हैं। **1572**</td>
</tr>
<tr>
<td>एट्टनै प्पॊळुदागिलुम्⋆ एन्रुम् एन् मनत्तगलादिरुक्कुम् पुगळ्⋆
तट्टलरत्त पॊन्नै अलर् कोङ्गिन्⋆ ताळ् पॊळिल् तिरुमालिरुञ्जोलै अं–
गट्टियै⋆ करुम्बीन्र इन् शाऱ्ऱै⋆ क्कादलाल् मरै नान्गुम् मुन्नोदिय
पट्टनै⋆ परवै त्तुयिल् एऱ्ऱै⋆ एन् पण्बनैयन्रि प्पाडल् शॆय्येने॥६॥</td>
<td>ख्याति लब्ध प्रभु, आप शर्करा की तरह मधुर हैं, एवं हमारे हृदय में रहते हैं तथा एक क्षण के लिये भी नहीं छोड़ते।गन्ने का रस की तरह मधुर प्रभु, तिरूमालीरूमसोलै के निवासी हैं जहां कोंगु वृक्ष आप पर सुनहले पंखुड़ियां वर्षाते हैं।आप चारों वेदों के नाथ हैं।हमारी जिह्वा किसी और की प्रशस्ति न गाकर केवल आप ही की गाती है जो गहरे सागर को पसंद करते हैं। **1573**</td>
</tr>
<tr>
<td>पण्णिन् इन् मॊळियाम् नरम्बिल् पॆऱ्ऱ⋆ पालैयागि इङ्गे पुगुन्दु⋆ एन्
कण्णुम् नॆञ्जुम् वायुम् इडम् कॊण्डान्⋆ कॊण्ड पिन् मरैयोर् मनम् तन्नुळ्⋆
विण्णुळार् पॆरुमानै एम्मानै⋆ वीङ्गु नीर् मगरम् तिळैक्कुम् कडल्
वण्णन्⋆ मा मणि वण्णण् एम् अण्णल्⋆ वण्णमे अन्रि वाय् उरैयादे॥७॥</td>
<td>याल के तने हुए तार से पलै धुन की मीठी आवाज आती है।वैदिक ऋषियों के हृदय वाले प्रभु हमारे हृदय आंख एवं नीच जिह्वा पर आ गये हैं।आप ऊपर आकाश के सभी देवों के प्रभु हैं। आप गहरे समुद्र में नाचती मछलियों के साथ सोते हैं।आप मणि के गहरे रंग हैं। हमारी जीभ किसी अन्य देवता का नाम लेना नहीं जानती। **1574**</td>
</tr>
<tr>
<td>इनि एप्पावम् वन्दॆय्दुम् शॊल्लीर्⋆ एमक्किम्मैये अरुळ् पॆऱ्ऱमैयाल्⋆ अडुम्
तुनियै त्तीर्त्तिन्बमे तरुगिन्रदोर्⋆ तोऱ्ऱ त्तॊन्नॆरियै⋆ वैयम् तॊळप्पडुम्
मुनियै वानवराल् वणङ्गप्पडुम् मुत्तिनै⋆ प्पत्तर् ताम् नुगर्गिन्रदोर्
कनियै⋆ कादल् शॆय्दॆन्नुळ्ळम् कॊण्ड कळ्वनै⋆ इन्रु कण्डु कॊण्डेने॥८॥</td>
<td>इस संसार एवं जीवन में आपने जो कृपा की है उससे अव कोई कर्म संग्रहित होकर मुझे नीच नहीं बना सकते।पुष्पों से पूजा के लिये आप मंदिर के मार्ग हैं।आप देवों के आराध्य हैं।भक्तों के लिये अलौकिक स्वाद के फल हैं।आप धूर्त्त प्रेमी हैं जिन्होंने मेरा सब कुछ ले लिया।हमारे पापों को धोते हुए आपने मेरा जीवन मधुर बना दिया।मोती की आभा वाले प्रभु आपको आज यहां देखा है। **1575**</td>
</tr>
</table>

एन् शॅय्केन् अडियेन् उरैयीर् इदर्कॅन्ऱुम्* एन् मनत्ते इरुक्कुम् पुगळ्* तञ्जै आळियै प्पॉन् पॅयरोन्* तन् नॅञ्जम् अन्ऱिडन्दवनै तळले पुरै* मिन्शॅय् वाळरक्कन् नगर् पाळ् पड* शूळ् कडल् शिरै वैत्तिमैयोर् तॉळुम्* पॉन् शॅय्माल् वरैयै मणि क्कुन्ऱिनै अन्ऱि* एन् मनम् पोट्रि एन्नादे॥१॥	मेरे नीच हृदय में आप हमेशा रहते हैं और तंजै मामणि कोइल आपका निवास है। भक्तों ! इसके बदले मै दे ही क्या सकता हूं ? आपने बलवान हिरण्य की छाती चीर दी, लंका के लिये सेतु बनाया, रावण के संपन्न नगर को राख कर दिया। आप श्यामल वर्ण के मणि पर्वत हैं। आप को छोड़कर मेरा हृदय किसी और की प्रशंसा करना नहीं जानता। **1576**
तोड् विण्डलर् पूम् पॉळिल् मङ्गैयर्* तोन्ऱल् वाळ् कलियन् तिरुवालि नाडन्* नन्नरैयूर् निन्ऱ नम्बि तन्* नल्ल मामलर् शेवडि शॅन्नियिल्* शूडियुम् तॉळुदुम् एळुन्दाडियुम्* तॉण्डर्कॅट्ठवन् शॉन्न शॉल् मालै* पाडल् पत्तिवै पाडुमिन् तॉण्डीर्! पाड* नुम्मिडै प्पावम् निल्लावे॥१०॥	मीठे बागों से घिरे तिरूमंगै के राजा तेजभाला वाले कलकन्रि के ये गीत नरैयूर के प्रभु के चरणों की प्रशस्ति हैं। जो इसे गाते नाचते आनंदातिरेक में गिरते पड़ते याद कर लेते हैं तथा भक्तों के बीच समूह गान सीखते हैं और पूजा की तरह अर्पित करते हैं उनके पास कष्ट एवं पीड़ा दुबारा नहीं फटकते। **1577** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

64 कण्शोर (1578 - 1587)

तिरूच्चेरै

(यह कुंभकोनम से दक्षिण पूर्व में 11 कि मी पर तथा नाच्चियार कोइल से 5 कि मी पर अवस्थित है। मूलावर पूर्वाभिमुख खड़े अवस्था में हैं तथा सारनाथन कहे जाते हैं। यहां साथ में कावेरी, मार्कण्डेय ऋषि, भूदेवी, श्रीदेवी तथा नीला देवी हैं। यह अकेला स्थान है जहां प्रभु पांचो लक्ष्मी के साथ दर्शन देते हैं जो पांच महाभूतों के प्रतिनिधि हैंः श्री देवी वायु, भूदेवी पृथ्वी, नीला देवी आकाश, सरनायकी जल, वक्षस्थल पर की महालक्ष्मी अग्नि। Ramesh vol. 3 , pp 116)

कण् शोर वेंङ्गुरदि वन्दिऴिय॰ वेन्दळल् पोल् कून्दलाळै॰ मण् शेर मुलैयुण्ड मा मदलाय्! ॰वानवर् तम् कोवे! एन्ऱु॰ विण् शेरुम् इळन् तिङ्गळ् अगडुरिञ्जु॰ मणि माड मल्गु॰ शेल्व- त्तण् शेरै एम्बेरुमान् ताळ् तॊळुवार्॰ काण्मिन् एन् तलै मेलारे॥१॥	प्रभु ने तप्त नयना पूतना राक्षसी का स्तन पान कर प्राण हर लिया। देवों के प्रभु, संपन्न रत्न जटित आकाश में चांद को छूते एवं उससे खेलने वाले महलों से घिरे तेन चेरै में रहते हैं। देखो ! जो आपकी पूजा करते हैं वे हमारे प्रभु हैं। **1578**
अम्बुरुव वरि नेडुङ्गण्॰ अलर् मगळै वरैयगलत्तमर्न्दु मल्लल्॰ कॊम्बुरुव विळङ्गिनिमेल्॰ इळङ्गन्ऱु कोण्डेरिन्द कूत्तर् पोलाम्॰ वम्बलरुम् तण् शोलै॰ वण् शेरै वान् उन्दु कोयिल् मेय॰ एम्बेरुमान् ताळ् तॊळुवार्॰ एप्पोळुदुम् एन् मनत्ते इरुक्किन्ऱारे॥२॥	प्रभु ने असुर बछड़े को ताड़ के पेड़ पर पटक कर दोनों का नाश कर दिया। कमल सी सुन्दर आंखोवाली लक्ष्मी को अपने वक्षस्थल पर रखने वाले प्रभु, सुगंधित बागों से घिरे आकाश को छूते मंदिर में तेन चेरै में रहते हैं। जो आपकी पूजा करते हैं वे हमारे हृदय के स्थायी निवासी हैं। **1579**
मीदोडि वाळ् एयिरु मिन्निलग॰ मुन् विलगुम् उरुविनाळै॰ कादोडु कॊडि मूक्कन्ऱुडन् अरुत्त॰ कैत्तलत्ता! एन्ऱु निन्ऱु॰ तादोडु वण्डलम्बुम्॰ तण् शेरै एम्बेरुमान् ताळैयेत्ति॰ पोदोडु पुनल् तूवुम् पुण्णियरे॰ विण्णवरिल् पॊलिगिन्ऱारे॥३॥	सूर्पनखा राक्षसी के नाक कान काटने वाले प्रभु मधुमक्खी मंड़राते सुगंधित बागों से घिरे तिरूच्चेरै में रहते हैं। देखो ! जो आपकी पूजा फूल शुद्ध जल एवं गाथा गान से करते हैं वे देवों से भी महान हैं। **1580**
तेर् आळुम् वाळ् अरक्कन्॰ तॆन्निलङ्गै वेञ्जमत्तु प्पॊन्ऱि वीळ॰ पोर् आळुम् शिलैयदनाल्॰ पॊरु कणैगळ् पोक्कुवित्ताय्! एन्ऱु॰ नाळुम् तार् आळुम् वरै मार्बन्॰ तण् शेरै एम्बेरुमान् उम्बर् आळुम्॰ पेराळन् पेर् ओदुम् पॆरियोरै॰ ऒरुगालुम् पिरिगिलेने॥४॥	प्रभु ने महान राक्षसराज रथ पर सवार रावण एवं उसके भव्य नगर लंका का नाश अग्नि बाणों की बौछार से किया। आप शाश्वतों के देव एवं पर्वत सा विशाल वक्षस्थल पर तुलसी धारण करने वाले तिरूच्चेरै में रहते हैं। जो आपके नाम का गान करते हैं मैं उनसे अलग नहीं रह सकता। **1581**

वन्दिक्कुम् मट्रवर्क्कुम्* माशुडम्बिन् वल्लमणर् तमक्कुम् अल्लेन्* मुन्दि च्चॅन्ररियुरुवाय्* इरणियनै मुरण् अळित्त मुदल्वर्क्कल्लाल्* शन्द प्पू मलर् च्चोलै* तण् शेरै एम्बॅरुमान् ताळै* नाळुम् शिन्दिप्पार्क्कॅन् उळ्ळम्* तेन् ऊरि एप्पॉळुदुम् तित्तिक्कुमे॥५॥	मैं उनको सम्मान नहीं देता जो नरसिंह रूप में आकर बलशाली हिरण्य का नाश करने वाले प्रभु की पूजा नहीं करते। सुगंधित चंदन बगानों के बीच प्रभु शीतल तिरूच्चेरै में रहते हैं। जो आपकी पूजा करते हैं उनके लिये मेरा हृदय मधु की भांति द्रवित होता है। **1582**
पण्डेनमाय् उलगै अन्रिडन्द* पण्वाळा! एन्रु निन्रु* तॉण्डानेन् तिरुवडिये तुणैयल्लाल्* तुणैयिल्लेन् शॉल्लुगिन्रेन्* वण्डेन्दुम् मलर् प्पुरविल्* वण् शेरै एम्बॅरुमान् अडियार् तम्मै* कण्डेनुक्किदु काणीर्* एन् नॅञ्जुम् कण्णिणैयुम् कळिक्कुम् आरे॥६॥	वराह के रूप में प्रभु ने पृथ्वी को पुरा काल में ऊपर उठाया। मैं घोषणा करता हूं कि आपके चरणारविंद के आश्रय के सिवा मेरा कोई आश्रय नहीं है। मधुमक्खी मंड़राते बागों के तिरूच्चेरै में आपके भक्तों को देख कर मेरी आंखें तथा हृदय आनंद मनाते हैं। **1583**
पै विरियुम् वरियरविल्* पडु कडलुळ् तुयिल् अमरन्द पण्वा! एन्रुम्* मै विरियुम् मणि वरैपोल्* मायवने! एन्रॅन्रुम् वण्डार् नीलम्* शॅय् विरियुम् तण् शेरै एम्बॅरुमान्* तिरुवडियै शिन्दित्तेर्कु* एन् ऐयरिवुम् कॉण्डानुक्काळ् आनार् क्काळाम्* एन् अन्बु ताने॥७॥	कुण्डलाकार शेषशय्या पर गहरे सागर में शयन करने वाले, मणि के समान श्यामल, आश्चर्य मय प्रभु ! आप मधुमक्खी मंड़राते नीले कुमुद वाले तालाबों के बीच तिरूच्चेरै में रहते हैं। जो आपका ध्यान एवं सेवा करते हैं वे हमारे प्रभु हैं और उनके लिये मेरा हृदय प्रेम से ओत प्रोत रहता है। **1584**
उण्णादु वॅङ्गूट्रम्* ओवादु पावङ्गळ् शेरा* मेलै विण्णोरुम् मण्णोरुम् वन्दिरैञ्जुम्* मॅन् तळिर्पोल् अडियिनानै पण्णार वण्डियम्बुम्* पैम् पॉळिल् शूळ् तण् शेरै अम्मान् तन्नै* कण्णार क्कण्डुरुगि* कैयार तॉळुवारै क्करुदुङ्गाले॥८॥	कमल की पंखुड़ी से कोमल चरण वाले प्रभु की पूजा ऊपर देवगन करते हैं तथा पृथ्वी पर भक्तजन करते हैं। आप पन्नधुन वाले मधुमक्खी मंड़राते अमृतमय बागों के बीच तिरूच्चेरै में रहते हैं।भक्तगन भींगी आंखें एवं द्रवित हृदय से आपका दर्शन कर करबद्ध हो आपकी पूजा करते हैं। ऐसे भक्तों पर मन जाने से ही यम पास नहीं फटकेंगे तथा कर्म चिपकते नहीं। **1585**
कळ्ळत्तेन् पॉय्यगत्तेन् आदलाल्* पोदॉरुगाल् कवलै एन्नुम्* वॅळ्ळत्तेर्कॅन्गॉलो* विळै वयलुळ् करु नीलम् कळैञर् ताळाल् तळ्ळ* तेन् मण नारुम्* तण् शेरै एम्बॅरुमान् ताळै* नाळुम् उळ्ळत्ते वैप्पारुक्किदु काणीर्* एन्नुळ्ळम् उरुगुम् आरे॥९॥	मैं झूठा धूर्त एवं सदा दुख के शैलाव में रहता हूं। फिर भी आपकी कृपा मुझे मिली, क्या चमत्कार है ! देखो, मेरा हृदय तिरूच्चेरै के भक्तों के लिये द्रवित होता है, जहां कृषक खेतों से नीला कुमुद अपने पैरों से निकालते हैं एवं फूल के मधु उनके पैरों पर प्रवाहित होते हैं। **1586**

पू माण् शेर् करुङ्गुळ्लारपोल् नडन्दु* वयल् निन्र् पॆडैयोडु* अन्नम् तेमाविन् इन्निळलिल् कण् तुयिलुम्* तण् शेरै अम्मान् तन्नै* वा मान् तेर् प्परगालन्* कलिगन्रि ऑलिमालै कॊण्डु तॊण्डीर्* तू मान् शेर् पॊन्नडिमेल् शूट्टुमिन्* नुम् तुणै क्कैयाल् तॊळुदु निन्रे॥१०॥	यह गीतमाला तिरूच्चेरै प्रभु की प्रशस्ति में युद्धविशारद परकालन कलकन्रि के हैं जहां के बागों में हंसों की जोड़ी जूड़ेवाली नारियों की चाल का अनुकरण करते हैं पर हारकर आम के पेड़ों के नीचे ठहर जाते हैं। भक्तों ! इसे प्रभु के दिव्य चरणों में करबद्ध हो पूजा के लिये समर्पित करो। **1587** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

65 तन्दै कालिल् (1588 - 1597)

तिरूवळुन्दूर् 1

(यह मायावरम के पास है। मूलावर खड़े अवस्था में पूर्वाभिमुख हैं तथा देवाधिराजन कहे जाते हैं। आपके बायें गरूड़ एवं कावेरी हैं तथा दायें तरफ प्रह्लाद हैं। उत्स्व मूर्ति को यहां अमरूविअप्पन कहते हैं। मात्र एक यही स्थान है जहां उत्स्व मूर्ति गाय एवं बछड़ा के साथ हैं। इस स्थान को राधामग्न पुरम भी कहते हैं।कवि चक्रवर्ती कम्बन का यह जन्म स्थान है। ध्वज स्तंभ के पास में एक सन्निधि है जिसे कम्बन की सन्निधि कहते हैं। प्रत्येक वर्ष फाल्गुन के हस्ता नक्षत्र में तीन दिन का कम्बन का जन्मोत्स्व मनाया जाता है।थोड़ी दूर पर एक ऊंचा स्थान है जिसे 'कम्बन मेदू' कहते हैं।

तिरूमंगैआळवार की एक रोचक कथा इस स्थान से जुड़ी है। जब वे पहली बार यहां से गुजर रहे थे तो लोगों से मंदिर के देवता का नाम पूछा। देवाधिराजन नाम सुनकर उन्होने इन्द्र के मन्दिर का अनुमान किया और मन्दिर न जाकर नगर से गुजरने लगे। प्रभु चाहते थे कि आळवार प्रशस्ति गीत रचें अतः आळवार के पैरों को बहुत भारी कर दिया और उनके लिये चलना दूभर हो गया। वे अपनी गलती महसूस कर मन्दिर गये और दर्शन पश्चात् **45** पाशुरों की रचना की। Ramesh vol. 3 , pp 83)

तन्दै कालिल् पॅरु विलङ्गु⋆ ताळ् अविळ⋆ नळ्ळिरुट्कण् वन्द एन्दै पॅरुमानार्⋆ मरुवि निन्र ऊर्पोलुम्⋆ मुन्दि वानम् मळै पॉळियुम्⋆ मूवा उरुविल् मरैयाळर्⋆ अन्दि मून्रुम् अनल् ओम्बुम्⋆ अणियार् वीदि अळुन्दूरे॥१॥	पुराकाल में अपने पिता को बेड़ी से मुक्त करते हुए प्रभु ने अर्द्ध रात्रि में अवतार लिया। आप अऴन्दूर में रहते हैं जहां विस्तृत सुन्दर वीथियां हैं और युवा वैदिक ऋषि दिन में तीन बार अग्नि यज्ञ करते हैं जो वर्षा के कारक हैं। **1588**
पारित्तॆळुन्द⋆ पडै मन्नर् तम्मै माळ⋆ बारदत्तु– त्तेरिल् पागनाय् ऊर्न्द⋆ देव देवन् ऊर्पोलुम्⋆ नीरिल् पणैत्त नॅडु वाळैक्कु⋆ अञ्जि प्पोन कुरुगिनङ्गळ्⋆ आरल्कवुळोडरुगणैयुम्⋆ अणियार्वयल्शूळ् अळुन्दूरे॥२॥	भारत के युद्ध में छली एवं सैन्य समृद्ध राजागन प्रभु के विरोध में आये परन्तु आपने रथ हांक कर सबों पर विजय प्राप्त की। देवों के नाथ आप अऴन्दूर में रहते हैं जो उपजाऊ खेतों से घिरा है एवं जहां बगुले बड़ी वालै मछली के लिये उड़ते हुए छोटे अरल मछली अपने चोंच में पकड़ पाते हैं। **1589**
शॅम् पॉन् मदिळ् शूळ् तॅन् इलङ्गैक्किरैवन्⋆ शिरङ्गळ् ऐयिरण्डुम्⋆ उम्बर् वाळिक्किलक्काग⋆ उदिर्त्त उरवोन् ऊर्पोलुम्⋆ कॉम्बिल् आर्न्द मादविमेल्⋆ कोदि मेय्न्द वण्डिनङ्गळ्⋆ अम्बरावुम् कण् मडवार्⋆ ऐम्बाल् अणैयुम् अळुन्दूरे॥३॥	सोने की दीवार वाला लंका नगर के राजा रावण का पांच गुना दो मस्तक धर्नुधर प्रभु के तप्त ब्रह्मास्त्र से धराशायी कर दिये गये। आप अऴन्दूर में रहते हैं जहां भौंरे सुनहले पुन्नै फूलों में घुसे रहते हैं और तब वहां से बाण से तीक्ष्ण आंखों वाली नारियों के जूड़े के लटों के पांच गुणों के आनन्द लेने जाते हैं। **1590**

वॆळ्ळत्तुळ् ओर् आलिलैमेल् मेवि⋆ अडियेन् मनम् पुगुन्दु⋆ एन् उळ्ळत्तुळ्ळुम् कण्णुळ्ळुम्⋆ निन्ऱार् निन्ऱ ऊर्पोलुम्⋆ पुळ्ळु प्पिळ्ळैक्किरै तेडि⋆ प्पोन कादल् पॆडैयोडुम्⋆ अळ्ळल्शॆरुविल् कयल्नाडुम्⋆ अणियार्वयल्शूळ् अळुन्दूरे॥४॥	अऴ़न्दूर के उपजाऊ खेतों की पंकिल मिट्टी में अपने बच्चों के लिये मछली खोजते बगुले की जोड़ी फंसे रहते हैं। यह प्रलय जल में बटपत्र पर रहने वाले प्रभु का निवास है जो हमारी आंखों एवं हृदय में निवास करने के लिये उड़कर आते हैं। **1591**
पगल्लुम् इरवुम् तानेयाय्⋆ प्पारुम् विण्णुम् तानेयाय्⋆ निगरिल् शुडराय् इरुळागि⋆ निन्ऱार् निन्ऱ ऊर्पोलुम्⋆ तुगिलिन् कॊडियुम् तेर् त्तुगळुम्⋆ तुन्नि मादर् कून्दल्वाय्⋆ अगिलिन् पुगैयाल्मुगिलेय्क्कुम्⋆ अणियार्वीदि अळुन्दूरे॥५॥	आप दिन और रात को अपने में धारण करते हैं। आप पृथ्वी एवं आकाश को अपने में धारण करते हैं। आप आभा के प्रकाश एवं अंधकार अपने में धारण करते हैं। आप अऴ़न्दूर में रहते हैं जहां महलों के ऊपर पताके, रथ उत्स्व के धूल, एवं अगिल लकड़ी का धुंआ जिसे नारियां अपने जूड़े को सुगंधित करती हैं, सब मिलकर तूफान के मेघ के समान दृश्य उपस्थित करते हैं। **1592**
एडिलङ्गु तामरै पोल्⋆ शॆव्वाय् मुऱुवल् शॆय्दरुळि⋆ माडु वन्दॆन् मनम् पुगुन्दु⋆ निन्ऱार् निन्ऱ ऊर्पोलुम्⋆ नीडु माड त्तनि च्चूलम्⋆ पोळ क्कॊण्डल् तुळि तूव⋆ आडल् अरव त्तार्प्पोवा⋆ अणियार् वीदि अळुन्दूरे॥६॥	ऊंचे महलों के त्रिशूल बादल को चीर कर नाचती लड़कियों पर मोती बरसाते हैं जिनकी नुपूर की ध्वनि अऴ़न्दूर की वीथियों में कभी बंद नहीं होती। यह प्रभु का निवास है जो अपने कमल की पंखुड़ी से कोमल होठों पर विजयभरी मुस्कान विखेरते हमारे पास आये और हमारे हृदय में घर कर गये। **1593**
माल्लै प्पुगुन्दु मलरणैमेल्⋆ वैगि अडियेन् मनम् पुगुन्दु⋆ एन् नील क्कण्गळ् पनि मल्ग⋆ निन्ऱार् निन्ऱ ऊर्पोलुम्⋆ वेल्लैक्कडल्पोल् नॆडु वीदि⋆ विण् तोय् शुदै वॆण्मणि माडत्तु⋆ आल्लै प्पुगैयाल् अळल् कदिरै मऱैक्कुम्⋆ वीदि अळुन्दूरे॥७॥	गन्नारस से शर्करा बनाने में उत्पन्न धुंआ का बादल अऴ़न्दूर के सागर के समान लंबा एवं विस्तृत वीथियों के दोनों तरफ की ऊंची श्वेत अटारियों को सूर्य प्रकाश से बाधित करता है। यह गोधूली वेला में अवतार लेने वाले प्रभु का निवास है जो फूल की शय्या पर सोकर हमारे हृदय में प्रवेश कर गये तथा हमारी काली आंखों को अश्रुपूरित कर दिया। **1594**
वञ्जि मरुङ्गुल् इडै नोव⋆ मणन्दु निन्ऱ कनवगत्तु⋆ एन् नॆञ्जु निऱैय क्कै कूप्पि⋆ निन्ऱार् निन्ऱ ऊर्पोलुम्⋆ पञ्जि अन्न मॆल्लडि⋆ नर्पावैमार्गळ्⋆ आडगत्तिन् अञ्जिलम्बिन् आर्प्पोवा⋆ अणियार् वीदि अळुन्दूरे॥८॥	सुन्दर वीथियों वाले अऴ़न्दूर में रूई के समान कोमल पैरों वाली नारियों के नृत्य से उत्पन्न पाजेब का रूनझुन कभी बंद नहीं होता। यह प्रभु का निवास स्थान है जो स्वप्न में हमें आत्मसात कर लिये और हमारी लता सी पतली कमर दर्द से भर गयी। पूर्ण तया संतुष्ट हम करबद्ध खड़े रहे। **1595**

एन् ऐम् पुलनुम् एळिलुम् कॊण्डु⋆ इङ्ङे नॆरुनल् एळुन्दरुळि⋆ पॊन्नम् कलैगळ् मॆल्लिवॆय्द⋆ प्पोन पुनिदर् ऊर्पोलुम्⋆ मन्नु मुदु नीर् अरविन्द मलर्मेल्⋆ वरि वण्डिशै पाड⋆ अन्नम् पॆडैयोडुडनाडुम्⋆ अणियार् वयल्शूळळुन्दूरे॥९॥	हमेशा जलमय कमल सरोवर में भौंरे मदमत्त हो गीत गाते हैं तथा हंस की जोड़ियां साथ में नृत्य करती हैं। सुन्दर खेतों से घिरे हुए अऴ़न्दूर हमारे शुद्ध प्रभु का निवास है जो कल यहां आकर हमारी होश एवं कुशलता को खत्म करके मुझे इतना पतला बना दिया कि हमारे वस्त्र वदन पर नहीं टिकते। **1596**
नॆल्लिल् कुवळै कण् काट्ट⋆ नीरिल् कुमुदम् वाय् काट्ट⋆ अल्लि क्कमलम् मुगम् काट्टुम् कळनि⋆ अळुन्दूर् निन्रानै⋆ वल्लि प्पॊदुम्बिल् कुयिल् कूवुम्⋆ मङ्गै वेन्दन् परगालन्⋆ शॊल्लिनल् पॊलिन्द तमिळ् मालै⋆ शॊल्ल प्पावम् निल्लावे॥१०॥	मोर से भरे झुरमुटों वाले मंगै के राजा परकालन का यह तमिल पदों से बना गीतमाला अऴ़न्दूर के प्रभु को समर्पित है जहां धान के खेत का नीला कुमुद नारियों की काली आंखों, जल वाले लाल कुमुद उनकी अरूणाभ आंखों, एवं कमल फूल उनके मुखमंडल को दर्शाते हैं। जो इसको कंठ कर लेगा उसके कर्मों का अंत हो जायेगा। **1597** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

66 शिङ्गमदाय् (1598 - 1607)

तिरूवळुन्दूर् 2

कण्णमंगै 1602 ः Ramesh vol. 3 , pp 92

कण्णमंगै की चर्चा पाशुर 1602 में की गयी है। यह एक दिव्य देश है एवं तिरूचेरै से 24 कि मी पर तथा तिरूवरूर से 8 कि मी पर है। भगवान यहां भक्तवत्सल कहे जाते हैं। मूलावर 14 फीट ऊंची पूर्वाभिमुख खड़े हैं तथा पेरूमपूरक कडल के नाम से जाने जाते हैं। आपको 'अवि' यानी भक्तों का हृदय भी कहा जाता है। ऊतर तथा दक्षिण में 2 कि मी पर यह स्थान दो नदियों से घिरा है। गरूड़ की यहां विशेष आराधना होती है जो पक्षिराज के रूप में जाने जाते हैं। प्रत्येक रविवार को पक्षिराज का तिरूमंजन होता है तथा इनके जन्म नक्षत्र स्वाती में विशेष तिरूमंजन होता है। एक बड़ी रोचक कथा इस स्थान से जुड़ी है। दो लोग अपने अपने कुत्ते के साथ यहां दर्शन में आये। कुत्ते आपस में लड़ाई करने लगे । फलस्वरूप उनके मालिक भी आपस में लड़ पड़े। कहते हैं कुत्ते तो आपस में लड़कर मर ही गये उनके स्वामी की भी वही गति हुई। इसे देखकर एक सज्जन बड़े आश्चर्य में पड़ गये। एक छोटा जीव कुत्ता के लिये उसका स्वामी जीवन दे सकता है तो हमारे बनाने वाले भगवान तो हमपर अवश्य कृपालु रहेंगे। तदुपरान्त सारा जीवन उन्होंने कण्णमंगै में ही बिता दिया और वे कण्णमंगै अन्दन के नाम से जाने गये। ।

‡शिङ्गमदाय् अवुणन्⋆ तिरल् आगम् मुन् कीण्डुगन्द⋆ शङ्गम् इडत्तानै⋆ त्तळल् आलि वलत्तानै⋆ शेङ्गमलत्तयन् अनैयार्⋆ तेन्नळुन्दैयिल् मन्नि निन्र⋆ अङ्गमल क्कण्णनै⋆ अडियेन् कण्डु कोण्डेने॥१॥	चक्र एवं शंख धारण करने वाले प्रभु ने नरसिहं रूप में आकर हिरण्य की छाती चीर दी। ब्रह्मा के समतुल्य ऋषियों से घिरे कमल समान सुन्दर आंखों वाले भगवान दिव्य अलन्दूर में रहते हैं। हमने आज आपको देखा है। 1598
कोवानार् मडिय⋆ क्कोलैयार् मळु क्कोण्डरुळुम्⋆ मूवा वानवनै⋆ मुळु नीर् वण्णनै⋆ अडियार्क्कु आवा! एन्रिरङ्गि⋆ तेन्नळुन्दैयिल् मन्नि निन्र⋆ देवादि देवनै⋆ यान् कण्डु कोण्डु तिळैत्तेने॥२॥	पुरा काल में फरसा धारण करने वाले प्रभु ने इक्कीस महान राजाओं का अंत किया। सदा युवा रहने वाले सागर से श्याम प्रभु आकाश जगत के 'देवादि देव' हैं यानी सभी देवों के देव हैं तथा अपने भक्तों के कुशल क्षेम के लिये सचेत रहते हैं। आप अलन्दूर में रहते हैं। हमने आज आपको देखा है। 1599
उडैयानै⋆ ओलि नीर् उलगङ्गळ् पडैत्तानै⋆ विडैयान् ओड अन्रु⋆ विरल् आलि विशैत्तानै⋆ अडैयार् तेन्निलङ्गै अळित्तानै⋆ अणियळुन्दूर् उडैयानै⋆ अडियेन् अडैन्दुयन्दु पोनेने॥३॥	जगत स्रष्टा, सबके नाथ, चक्रधारी प्रभु, आपने वृषभारोही शिव को भगा दिया तथा आपने लंका का नाश किया। आप अलन्दूर में रहते हैं। हमने आज आपको देखा है। 1600

कुन्ऱाल् मारि तडुत्तवनै॰ क्कुल वेऴम् अन्ऱु पॊन्ऱामै॰ अदनुक्करुळ् शॆय्द॰ पोर् एट्टै॰ अन्ऱाविन् नऱुनॆय॰ अमरन्दुण्ण अणियऴुन्दूर् निन्ऱानै॰ अडियेन् कण्डु कॊण्डु निऱैन्देनॆ॥ ४ ॥	तूफान के विरोध में पर्वत उठाने वाले, आपदाग्रस्त हाथी को त्राण देनेवाले, युद्ध में विजयश्री प्राप्त करने वाले, मक्खन चुरा कर खाने वाले प्रभु आप अलन्दूर में रहते हैं। हमने आज आपको देखा है। **1601**
कञ्जनै क्कायन्दानै॰ क्कण्ण मङ्गैयुळ् निन्ऱानै॰ वञ्जन प्पेय् मुलैयूडु॰ उयिर् वाय् मडुत्तुण्डानै॰ शॆञ्जॊल् नान्मऱैयोर्॰ तॆन्नऴुन्दैयिल् मन्नि निन्ऱ॰ अञ्जन क्कुन्ऱम् तन्नै॰ अडियेन् कण्डु कॊण्डेनॆ॥ ५ ॥	कंस का नाश करने वाले, कण्णमंगै में रहने वाले, सुन्दर राक्षसी पूतना का स्तन पीकर उसके प्राण हर लेने वाले, आप श्यामल मणि के पर्वत हैं तथा वैदिक ऋषियों के साथ सुन्दर अलन्दूर में रहते हैं। हमने आज आपको देखा है। **1602**
पॆरियानै॰ अमरर् तलैवर्कुम् पिरमनुक्कुम्॰ उरि यानै उगन्दान् अवनुक्कुम्॰ उणर्वदनु- क्करियानै॰ अऴुन्दूर् मऱैयोर्गळ्॰ अडिपणियुम् करियानै॰ अडियेन् कण्डु कॊण्डु कळित्तेनॆ॥ ६ ॥	ब्रह्मा शिव एवं इन्द्र से भी अगम्य, श्यामल सलोने प्रभु वैदिक ऋषियों से पूजित होकर अलन्दूर में रहते हैं। हमने आज आपको देखा है। **1603**
तिरु वाऴ मार्वन् तन्नै॰ त्तिशै मण् नीर् एरि मुदला॰ उरुवाय् निन्ऱवनै॰ ऑलि शेरुम् मारुदत्तै॰ अरुवाय् निन्ऱवनै॰ तॆन्नऴुन्दैयिल् मन्नि निन्ऱ॰ करुवार् कर्पगत्तै॰ क्कण्डु कॊण्डु कळित्तेनॆ॥ ७ ॥	श्रीवक्षस्थल वाले प्रभु जो दिशायें, पृथ्वी, जल, अग्नि एवं वायु, तथा अन्य के रूप में उनके प्रारूप तथा उनकी अन्तर्शक्ति होकर वर्तमान हैं, हमारे कल्प वृक्ष हैं। आप सुन्दर अलन्दूर में रहते हैं। हमने आज आपको देखा है। **1604**
निलैयाळ् आग॰ एन्नै उगन्दानै॰ निल मगळ् तन् मुलैयाळ् वित्तगनै॰ मुदु नान्मऱै वीदिदोऱुम्॰ अलैयारुम् कडल्पोल् मुऴङ्गुम्॰ तॆन्नऴुन्दैयिल् मन्नि निन्ऱ॰ कलैयार् शॊर्पॊरुळै॰ क्कण्डु कॊण्डु कळित्तेनॆ॥ ८ ॥	प्रभु ने हमें अपना चिरंतन दास के रूप में स्वीकार कर लिया है। भूदेवी को आलिंगन करने वाले प्रभु मंदिर में रहते हैं जहां वैदिक ऋचाओं का पाठ इस तरह से होता है जैसे समुद्र की तरंगें उठती हैं। आप शास्त्रों के सार हैं एवं सुन्दर अलन्दूर में रहते हैं। हमने आज आपको देखा है। **1605**
पेरानै॰ क्कुडन्दै प्पॆरुमानै॰ इलङ्गॊळि शेर् वारार् वनमुलैयाळ्॰ मलर् मङ्गै नायगनै॰ आरा इन्नमुदै॰ तॆन्नऴुन्दैयिल् मन्नि निन्ऱ॰ कारार् करुमुगिलै॰ क्कण्डु कॊण्डु कळित्तेनॆ॥ ९ ॥	तिरूप्पेर, कुडन्दै, एवं कमल समान लक्ष्मी के प्रभु, अतृप्त अमृत, आप वर्षा के मेघ सा वर्ण वाले उदार हैं। आप सुन्दर अलन्दूर में रहते हैं। हमने आज आपको देखा है। **1606**

‡तिरल् मुरुगन् अनैयार्★ तॆन्नऴुन्दैयिल् मन्नि निन्र★ अर् मुदल्वन् अवनै★ अणियालियर् कोन् मरुवार्★ करै नॆडु वेल् वलवन्★ कलिगन्रि शॊल् ऐयिरण्डुम्★ मुरै वऴुवामै वल्लार्★ मुऴुदाळ्वर् वान् उलगे॥१०॥	यह मधुर तमिल पदों की माला सुब्रमणियम जैसे सुन्दर लोगों के बीच दक्षिणी अलन्दूर में रहने वाले आदि कारण प्रभु की प्रशस्ति में है जिसे धब्बे सहित भाला को धारण करने वाले तिरूवाली के राजा कलकन्रि ने रचा है। जो इन पदों को याद कर लेंगे वे संपूर्ण आकाश जगत के शासक हो जायेंगे। **1607** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

67 तिरूवुक्कुम् (1608 - 1617)

तिरूवळुन्दूर् 3

<table>
<tr><td>तिरुवुक्कुम् तिरुवागिय शॆल्वा !⋆ दॆय्वत्तुक्करशे ! शॆय्य कण्णा !⋆
उरुव च्चॆञ्जुडराळि वल्लाने !⋆ उलगुण्ड ऒरुवा ! तिरुमार्वा !⋆
ऒरुवर्कोट्रियुय्युम् वगैयॆन्राल्⋆ उडन् निन्रैवर् एन्नुळ् पुगुन्दु⋆ ऒळिया
तरुवित्तिन्रिड अञ्जि निन्नडैन्देन् अळुन्दूरमेल् दिशैनिन्र अम्माने ! ॥१॥</td><td>श्री की संपन्नता, संपन्नता प्रदान करने वाले मेघ के वर्णवाले राजीवनयन देवाधिदेव तेजोमय सुन्दर चक्रधारी लोकों को निगलने वाले श्री धारण करने वाले प्रभु ! जब एक इन्द्रिय को संतुष्ट करना कठिन है परंतु यहां तो पांच इन्द्रियां एक ही साथ घर कर बैठी हैं। उनके आनंद का सहन न कर सकने के कारण पश्चिमी अलन्दूर के निवासी प्रभु के पास आया हूं। **1608**</td></tr>
<tr><td>पन्दार् मॆल् विरल् नल् वळै तोळि⋆ पावै पूमगळ् तन्नॊडुम् उडने
वन्दाय्⋆ एन् मनत्ते मन्नि निन्राय्⋆ माल् वण्णा ! मळैपोल् ऒळि वण्णा⋆
शन्दोगा ! पौळिया ! तैत्तिरिया !⋆ शाम वेदियने ! नॆडुमाले⋆
अन्दो ! निन्नडियन्रि मट्रियेन्⋆ अळुन्दूरमेल् दिशैनिन्र अम्माने ! ॥२॥</td><td>गेंद पकड़ती उंगलियां वाली, कंगन युक्त कलाईयों वाली, कमल समान लक्ष्मी आपके पास रहती हैं। पूज्य तेजोमय मेघ वर्ण वाले देव आप आये और हमारे हृदय को निवास की तरह अपना लिया। छाण्दोग्य, आरण्यक, तैत्तिरीय, साम वेद के सार, कालातीत प्रभु ! मैं दुख हूं, अन्य आश्रय जानता नहीं हूं। पश्चिमी अलन्दूर के निवासी प्रभु ! **1609**</td></tr>
<tr><td>नॆय्यार् आळियुम् शङ्गमुम् एन्दुम्⋆ नीण्ड तोळ् उडैयाय्⋆ अडियेनै
च्चॆय्याद उलगत्तिडै च्चॆय्दाय्⋆ शिरुमैक्कुम् पॆरुमैक्कुम् उळ् पुगुन्दु⋆
पॊय्याल् ऐवर् एन् मॆय् कुडियेरि⋆ प्पोट्रि वाळ्वदर्कञ्जि निन्नडैन्देन्⋆
ऐया ! निन्नडियन्रि मट्रियेन्⋆ अळुन्दूरमेल् दिशैनिन्र अम्माने ! ॥३॥</td><td>तीक्ष्ण चक्र एवं श्वेत शंख धारी पर्वत समान लंबी शक्तिशाली भुजाओं वाले प्रभु ! छोटे एवं बड़े चीजों का अनुभव कराते हुए आपने जो हमें दिया है वह उससे कहीं ज्यादा है जो आपने संसार को दिया है। स्वतंत्र पांच इन्द्रियां मुझमें प्रवेश कर गयी हैं। हम उनकी चाकरी न कर आपके चरणों के आश्रय में आये हैं।अन्य आश्रय जानता नहीं हूं। पश्चिमी अलन्दूर के निवासी प्रभु ! **1610**</td></tr>
<tr><td>परने ! पञ्जवन् पौळियन् शोळन्⋆ पार् मन्नर् मन्नर् ताम् पणिन्देत्तुम्
वरने !⋆ मादवने ! मदुसूदा !⋆ मट्रोर् नल् तुणै निन्नलाल् इलेन् काण्⋆
नरने ! नारणने ! तिरुनरैयूर् नम्बी !⋆ एम्पॆरुमान् ! उम्बर् आळुम्
अरने⋆ आदिवरागम् मुनानाय् !⋆ अळुन्दूरमेल् दिशैनिन्र अम्माने ! ॥४॥</td><td>पृथ्वी के राजाओं के राजा चोला नरेश पंचवन पौलियन एवं चोलन आपकी यहां पूजा करते हैं। अत्यंत सुन्दर माधव मधुसूदन, आपको छोड़कर हमारा अन्य आश्रय नहीं है। देखो, पहले के नर नारायण, तिरूनरैयूर के निवासी प्रभु, पृथ्वी एवं आदिवाराह प्रभु, पश्चिमी अलन्दूर के निवासी प्रभु हैं ! **1611**</td></tr>
<tr><td>विण्डान् विण् पुग वॆञ्जमत्तरियाय्⋆ प्परियोन् मार्वगम् पट्रि प्पिळन्दु⋆
पण्डान् उय्य ओर् माल्वरै एन्दुम्⋆ पण्वाळा ! परने ! पवित्तिरने⋆
कण्डेन् नान् कलियुगत्तदन् तन्मै⋆ करुमम् आवदुम् एन् तनक्करिन्देन्⋆
अण्डा ! निन्नडियन्रि मट्रियेन्⋆ अळुन्दूरमेल् दिशैनिन्र अम्माने ! ॥५॥</td><td>आप आधा नर एवं आधा पशु बनकर हिरण्य असुर की छाती में चीरते घुस गये। पर्वत उठाकर आपने गायों की रक्षा की। दयावान उदार एवं पावन प्रभु आप कली का चेहरा पूरी तरह जानते हैं तथा मेरे लिये क्या उपयुक्त है यह भी जानते हैं। आपके चरणों के आश्रय के अलावे अन्य</td></tr>
</table>

	आश्रय जानता नहीं हूं। पश्चिमी अलन्दूर के निवासी प्रभु ! **1612**
तोयाविन् तयिर् नेय्यमुदुण्ण शॊन्नार्* शॊल्लि नगुम् परिशे* पॆट् तायाल् आप्पुण्डिरुन्दळुदेङ्गुम् ताडाळा !* तरैयोरक्कुम् विण्णोरक्कुम् शेयाय्* किरेद तिरेद तुवापर कलियुगम्* इवै नान्गुम् मुन् आनाय्* आया ! निन्नडियन्रि मट्रियेन्* अळुन्दूरमेल् दिशैनिन्र अम्माने ! ॥६॥	छींका से दही एवं मक्खन खाने वाले गोप किशोर ने बड़ी असमंजस की स्थिति बना दी। जब राजा एवं देवगन आप को नहीं पा सकते आपकी मां ने आपको ऊखल में बाध दी। आप ही पुराकाल से चारो युग ः कृत त्रेता द्वापर एवं कलि बने हुए हैं। आप के अलावे अन्य आश्रय जानता नहीं हूं। पश्चिमी अलन्दूर के निवासी प्रभु ! **1613**
करुत्तु क्कञ्जनै अञ्ज मुनिन्दाय् !* कार् वण्णा ! कडल्पोल् ऒळि वण्णा* इरुत्तिट्टान् विडैयेळुम् मुन्वॆन्राय् !* एन्दाय् ! अन्दरम् एळु मुन् आनाय्* पॊरुत्तु क्कॊण्डिरुन्दाल् पॊरुक्कॊण्णा* प्पोगमे नुगर्वान् पुगुन्दु* ऐवर् अरुत्तुत्तिन्रिड अञ्जि निन्नडैन्देन्* अळुन्दूरमेल् दिशैनिन्र अम्माने ! ॥७॥	कंस के हृदय में डर एवं कोध उत्पन्न करने वाले श्यामल एवं तेजोमय सागर सा वर्ण वाले प्रभु ! आपने सात वृषभों का द्वंद में नाश किया। पुराकाल में आप ही सात लोक बन गये। पांचो इन्द्रियों ने हम पर जो असहनीय कहर ढायी है हम उससे डरे हुए हैं। पश्चिमी अलन्दूर के निवासी प्रभु ! हम आपके चरणाश्रित हो चुके हैं। **1614**
नॆडियाने ! कडियार् कलि नम्बी !* निन्नैये निनैन्दिङ्गिरुप्पेनै* कडियार् काळैयर् ऐवर् पुगुन्दु* कावल् शॆय्द अक्कावलै प्पिळैत्तु* कुडिपोन्दुन् अडिक्कीळ् वन्दु पुगुन्देन्* कूरै शोरिवै तन्दॆनक्करुळि* अडियेनैप्पणियाण्डुगॊळ् एन्दाय् !* अळुन्दूरमेल्दिशैनिन्र अम्माने ! ॥८॥	सागर के प्राचीन प्रभु ! मेरे नाथ ! आप का निरंतर ध्यान करते हुए हम पांच इन्द्रियों से रक्षित कैद से भाग निकले हैं एवं आपके चरणों में आश्रय पाने के लिये आ गये हैं। भोजन एवं वस्त्र की छोटी सी मांग को पूरा करते हुए आप अवश्य मुझे अपना समर्पित दास बना लें। पश्चिमी अलन्दूर के निवासी प्रभु ! हम आपके चरणाश्रित हो चुके हैं। **1615**
कोवाय् ऐवर् एन् मॆय् कुडियेरि* क्कूरै शोरिवै तावॆन्रु कुमैत्तु प्पोगार्* नान् अवरै प्पॊरुक्कगिल्लेन्* पुनिदा ! पुट्कॊडियाय् ! नॆडुमाले* ती वाय् नागणैयिल् तुयिल्वाने !* तिरुमाले ! इनि च्चॆय्वदॊन्ररियेन्* आ ! आ ! एन्रडियेर्किरै इरङ्गाय्* अळुन्दूरमेल् दिशैनिन्र अम्माने ! ॥९॥	सात्विक, पक्षी पताका वाले, पूज्य, आग उगलने वाले शेष पर शयन करने वाले, श्रीपति ! पांच राजाओं ने मुझ पर आक्रमण कर भोजन एवं वस्त्र का हमपर दायित्व दे रखा है। उनके दमनकारी शासन को न तो सहन कर सकता और न यह जानता कि मैं क्या करूं। हाय ! आप हम पर तरस भी नहीं खाते। पश्चिमी अलन्दूर के निवासी प्रभु ! हम आपके चरणाश्रित हो चुके हैं। **1616**
‡अन्न मन्नु पैम्पूम् पॊळिल् शूळ्न्द* अळुन्दूर् मेल् दिशै निन्र अम्मानै* कन्नि मन्नु तिण्तोळ् कलिगन्रि आलि नाडन्* मङ्गै क्कुल वेन्दन्* शॊन्न इन् तमिळ् नन्मणि क्कोवै* तूय मालै इवै पत्तुम् वल्लार्* मन्नि मन्नवराय् उलगाण्डु* मान वॆण् कुडैक्कीळ् मगिळ्वारे ॥१०॥	अलि नादन मंगै के बाहुबली राजा कलिकन्रि ने हंस के सरोवरों एवं उपजाऊ खेतों से घिरे पश्चिमी अलन्दूर के निवासी प्रभु की प्रशस्ति में मधुर तमिल पदों के रत्नों को पिरोकर माला बनाया है। जो इसे याद कर लेंगे वे पृथ्वी पर राजा की तरह शासन कर श्वेत चंद्र के समान छत्र का आनंद लेंगे। **1617** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

68 शेंगमलम् (1618 - 1627)

तिरूवळुन्दूर् 4

शेंङ्गमल त्तिरुमगळुम् पुवियुम् शेंम् पॊन्⋆ तिरुवडियिन् इणै वरुड मुनिवर् एत्त⋆ वङ्गमलि तडङ्गडलुळ् अनन्दन् एन्नुम्⋆ वरियरविन् अणै त्तुयिन्ऱ मायोन् काण्मिन्⋆ एङ्गुमलि निरै पुगळ् नाल् वेदम्⋆ ऐन्दु वेळ्विगळुम् केळ्विगळुम् इयन्ऱ तन्मै⋆ अङ्गमलत्तयन् अनैयार् पयिलुम् शेंल्वत्तु⋆ अणियळुन्दूर् निन्ऱुगन्द अमरर् कोवे॥१॥	देखो, कमल सी लक्ष्मी तथा भू देवी क्षीर सागर में फनधारी शेष शय्या पर शयन किये हुए प्रभु के दिव्य चरण की सेवा कर रहीं हैं जबकि मुनिगन गाथा गान कर रहे हैं। वेदोच्चार की ध्वनि, पांच यज्ञों एवं प्रसना के साथ आकाश में गूंज रहे हैं। वेद पढ़ते एवं पढ़ाने वाले ब्रह्मा के समान वैदिक ऋषि गन के अणि अलून्दूर में सब देवों के प्रभु का निवास स्थान हैं। **1618**
मुन् इव्वुलगेळुम् इरुळ् मण्डियुण्ण⋆ मुनिवरॊडु दानवर्गळ् तिगैप्प⋆ वन्दु पन्नु कलै नाल् वेद प्पॊरुळै एल्लाम्⋆ परि मुगमाय् अरुळिय एम्परमन् काण्मिन्⋆ शेंन्नेल् मलि कदिर् क्कवरि वीश⋆ च्चङ्गम् अवै मुरल चेंङ्गमल मलरैयेरि⋆ अन्नम् मलि पेंडैयोडुम् अमरुम् शेंल्वत्तु⋆ अणियळुन्दूर् निन्ऱुगन्द अमरर् कोवे॥२॥	पुरा काल में सर्वत्र अंधेरा हो जाने पर देव एवं असुर गन आपकी सहायता के लिये आये। पुरातन चारों वेद एवं शास्त्र आपके श्वेत अश्व के स्वरूप वाले श्रीमुख से उत्पन्न हुए। खेतों में धान की पकी बालियां चंवर की भांति हिलती हैं। शंख हवा से स्वयं ही मंगलमय ध्वनि उत्पन्न कर रहे हैं। कमल शय्या पर विश्राम कर रहे हंसो की जोड़ी वाले अणि अलून्दूर में सब देवों के प्रभु का निवास स्थान है। **1619**
कुलत्तलैय मद वेळम् पॊय्गै पुक्कु⋆ कोळ् मुदलै पिडिक्क अदर्कनुङ्गि निन्ऱु⋆ निलत्तिगळुम् मलर् च्चुडरेय् शोदी ! एन्न⋆ नेंञ्जिडर् तीर्त्तरुळिय एन् निमलन् काण्मिन्⋆ मलैत्तिगळ् शन्दगिल् कनगमणियुम् कॊण्डु⋆ वन्दुन्दि वयल्गळ्दोरुम् मडैगळ् पाय⋆ अलैत्तुवरुम् पॊन्नि वळम् पेरुगुम् शेंल्वत्तु⋆ अणियळुन्दूर् निन्ऱुगन्द अमरर् कोवे॥३॥	पुरा काल में ग्राह के जवड़े में पैर फंस जाने पर भक्त हाथी ने पुकारा 'चांद सी आभा वाले प्रभु रक्षा कीजिये' और प्रभु ने पधार कर उसके दुःख का अंत किया। पर्वत की झरनाओं से सुगंधित लकड़ियां रत्न एवं सोना बहकर मैदानी क्षेत्र के सुन्दर एवं हरे भरे कावेरी नदी में आते हैं। अणि अलून्दूर में सब देवों के प्रभु का निवास स्थान है। **1620**

शिलम्बु मुदल् कलन् अणिन्दोर् शॅङ्गण् कुन्ऱम्⋆ तिगऴ्न्दॅदॅन त्तिरुवुरुवम् पन्ऱियागि⋆ इलङ्गुबुवि मडन्दै तनै इडन्दु पुल्गि⋆ एयिट्टिडै वैत्तरुळिय एम्मीशन् काण्मिन्⋆ पुलम्बुशिऱै वण्डॊलिप्प प्पूगम् तॊक्क⋆ पॊऴिल्गळ् तोऱुम् कुयिल् कूव मयिल्गळ् आल⋆ अलम्बुदिरै प्पुनल् पुडै शूऴ्न्दऴगार् शॅल्वत्तु⋆ अणियऴुन्दूर् निन्ऱुगन्द अमरर् कोवे॥ ४ ॥	देखो, प्रभु पर्वत की तरह लाल युवा वराह के रूप में पाजेब एवं अन्य आभूषणों से सजे आये और धरा देवी को प्रलय जल से अपने दाढ़ों पर ऊपर उठा लिया।बागों में भौंरे एरेका के कोपलों पर गूंजते हैं। कोयल एवं मोर गाते तथा नाचते हैं।पोन्नी नदी तेज प्रवाह से बहती है। अणि अलून्दूर में सब देवों के प्रभु का निवास स्थान है। **1621**
शिनमेवुम् अडलरियिन् उरुवमागि⋆ तिऱल् मेवुम् इरणियनदागम् कीण्डु⋆ मनमेवु वञ्जनैयाल् वन्द पेय्च्चि माळ⋆ उयिर् वव्विय एम्मायोन् काण्मिन्⋆ इनमेवु वरि वळैक्कै एन्दुम् कोवै⋆ एय्वाय मरगदम्पोल् किळियिनिन् शॊल्⋆ अनमेवु नडै मडवार् पयिलुम् शॅल्वत्तु⋆ अणियऴुन्दूर् निन्ऱुगन्द अमरर् कोवे॥ ५ ॥	आश्चर्य मय प्रभु को देखो, आप पुरा काल में भयानक नरसिंह के रूप में शक्तिशाली हिरण्य की छाती फाड़े, तथा सुन्दरी राक्षसी का प्राण ले लिये। कंगन एवं मूंगावत होठों वाली नारियां अपने तोतों से उनकी मधुर आवाज सीख रही हैं। सुन्दर हंस पंक्तिबद्ध होकर उनके मधुर चाल का अनुकरण कर रहे हैं। अणि अलून्दूर में सब देवों के प्रभु का निवास स्थान है। **1622**
वानवर् तम् तुयर् तीर वन्दु तोन्ऱि⋆ माण् उरुवाय् मूवडि मावलियै वेण्डि⋆ तान् अमर एऴुलगुम् अळन्द वॅन्ऱि⋆ तनि मुदल् शक्कर प्पडै एन् तलैवन् काण्मिन्⋆ तेन् अमरुम् पॊऴिल् तऴुवुम् एऴिल् कॊळ् वीदि⋆ शॅऴु माड माळिगैगळ् कूडन्दोऱुम्⋆ आनदॊल् शीर् मऱैयाळर् पयिलुम् शॅल्वत्तु⋆ अणियऴुन्दूर् निन्ऱुगन्द अमरर् कोवे॥ ६ ॥	शंख चक्र धारी प्रभु को देखो, देंवो के कष्ट को दूर करने हेतु वामन रूप में आकर बलि से तीन पग जमीन मांगी तथा अपना स्वरूप बढ़ाकर सातों लोकों को दो पग में नाप लिया। अमृतमय बाग वीथियों के किनारे अवस्थित हैं। ऊंची छत के बड़े कक्ष एवं वरामदा वाले ऊंची महलें वेदोच्चार से गूंजती हैं। अणि अलून्दूर में सब देवों के प्रभु का निवास स्थान है। **1623**
पन्दणैन्द मॅल् विरलाळ् शीदैक्कागि⋆ पगलवन् मीदियङ्गाद इलङ्गै वेन्दन्⋆ अन्दमिल् तिण् करम् शिरङ्गळ् पुरण्डु वीऴ⋆ अडु कणैयाल् एय्दुगन्द अम्मान् काण्मिन्⋆ शॅन्दमिऴुम् वडगलैयुम् तिगऴ्न्द नावर्⋆ तिशैमुगने अनैयवर्गळ् शॅम्मै मिक्क⋆ अन्दणर् तम् आगुदियिन् पुगैयार् शॅल्वत्तु⋆ अणियऴुन्दूर् निन्ऱुगन्द अमरर् कोवे॥ ७ ॥	अणि अलून्दूर में सब देवों के प्रभु का निवास स्थान है जहां ब्रह्मा के समान मेधावी तमिल एवं संस्कृत में निष्णात वैदिक ऋषि अग्नि यज्ञ करते हैं जिसके धुंआ से आकाश में बादल बन जाता है। देखो, प्रभु ने गेंद खेलती सुन्दर पतली उंगली वाली सीता के लिये अग्नि बाणों की वर्षा कर लंका नगर के शक्तिशाली राजा की भुजाओं एवं सिर काट गिराये। **1624**

कुम्बमिगु मदवेऴम् कुलैय क्कॉम्बु परित्तु⋆ मऴ विडैयडरत्तु क्कुरवै कोत्तु⋆ वम्बविऴुम् मलर् क्कुऴलाऴ् आय्च्चि वैत्त तयिर् वॆण्णॆय्⋆ उण्डुगन्द मायोन् काण्मिन्⋆ शॆम्बवऴ मरगदम् नल् मुत्तम् काट्ट⋆ तिगऴ् पूगम् कदलि पल वऴम् मिक्कॆङ्गुम्⋆ अम्बॊन् मदिऴ् पॊऴिल् पुडै शूऴ्न्दऴगार् शॆल्वत्तु⋆ अणियऴुन्दूर् निन्ऱुगन्द अमरर् कोवे॥८॥	सुन्दर अणि अलून्दूर में सब देवों के प्रभु का निवास स्थान है जो दीवारों वाले एरेका वृक्ष के बागों से घिरा हुआ है जहां मूंगा जैसे फूल, पन्ना जैसे फल, एवं मोती जैसी कलियां, तथा गुच्छे के गुच्छे केला मिलते हैं। देखो, आपने मदमत्त हाथी के दांत उखाड़ लिये, सात वृषभों का नाश किया, गोपियों के साथ कुरवै नृत्य किया, एवं जूड़े वाली यशोदा के दही एवं मक्खन आनंद से चट कर गये। **1625**
ऊडेऱु कञ्जनॊडु मल्लुम् विल्लुम्⋆ ऑण् करियुम् उरुळ् शगडुम् उडैय च्चॆट्⋆ नीडेऱु पॆरुवलि त्तोऴ् उडैय वॆन्ऱि⋆ निलवुपुगऴ् नेमियङ्गै नॆडियोन् काण्मिन्⋆ शेडेऱु पॊऴिल् तऴुवुम् ऎऴिल् कॊऴ् वीदि⋆ तिरुविऴविल् मणियणिन्द तिण्णै तोऱुम्⋆ आडेऱु मलर् क्कुऴलार् पयिल्लुम् शॆल्वत्तु⋆ अणियऴुन्दूर् निन्ऱुगन्द अमरर् कोवे॥९॥	सुन्दर अणि अलून्दूर में सब देवों के प्रभु का निवास स्थान है जो उपजाऊ बागों एवं वीथियों के किनारे पंक्तिबद्ध रत्नजड़ित महलों से घिरा है जहां के वरामदों में फूल की जूड़ा वाली नारियां एकत्र होकर उत्स्व यात्रायें देखती हैं। देखो, आपने कंस के मलयोद्धाओं, धनुष हाथी, एवं शकटासुर का अंत किया। आपकी भुजाओं में अप्रतिम शक्ति है एवं आप चक्रधारी हैं। **1626**
‡पन्ऱियाय् मीनागि अरियाय्⋆ प्पारै प्पडैत्तु क्कात्तुण्डुमिऴ्न्द परमन् तन्नै⋆ अन्ऱमरर्क्कदिपदियुम् अयनुम् शेयुम् अडि पणिय⋆ अणियऴुन्दूर् निन्ऱ कोवै⋆ कन्ऱि नॆडुवेल् वलवन् आलि नाडन्⋆ कलिगन्ऱि ऑलिशॆय्द इन्ब प्पाडल्⋆ ऑन्ऱिनॊडु नान्गुम् ओरैन्दुम् वल्लार्⋆ ऑलि कडल् शूऴ् उलगाळुम् उम्बर् तामे॥१०॥	दस तमिल पदों की इस माला में भाला धारी अलिनादन कलकन्रि ने अणि अलन्दूर के प्रभु की प्रशस्ति गायी है जो वराह मत्स्य नरसिंह बनकर आये तथा जिन्होंने ब्रह्मांड बनाया, उसे निगल गये, पुनः बना दिया, और आप इन्द्र ब्रह्मा शिव एवं अन्य देवताओं से पूजित हैं। जो इसे याद कर लेंगे वे देवता बनकर धरा के शासक होंगे। **1527** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

69 कळ्ळम् मनम्   (1628 - 1637)

तिरूच्चिरूपुलियूर्

Ramesh vol. 2 , pp 151

यह कुंभकोनम कराइक्कल रोड पर अवस्थित है। मूलावर श्रीरंगम की तरह दक्षिणाभिमुख भुजंग शयनम हैं। आपको 'अरूमा कदल अमुदम' कहते हैं यानी अमृत के समान मीठा।

‡कळ्ळम् मनम् विळ्ळुम् वगै⋆ करुदि क्कळल् तॊऴुवीर्⋆ वॆळ्ळम् मुदु परवै⋆ त्तिरै विरिय⋆ करैयॆङ्गुम् तॆळ्ळुम् मणि तिगऴुम्⋆ शिऱु पुलियूर् च्चलशयन त्तुळ्ळुम्⋆ ऎनदुळ्ळत्तुळ्ळुम्⋆ उऱैवारै उळ्ळीरे॥१॥	प्रभु के चरणों की सेवा करने वाले जो अपना हृदय परिवर्तन चाहते हैं। महान समुद्र की तरंगे शिरूपुलियूर में रत्न प्रदान करते हैं जहां शलशयन प्रभु रहते हैं। आप हमारे हृदय के प्रभु हैं। आपकी पूजा करो। **1628**
तॆरुविल् तिरि शिऱु नोन्बियर्⋆ शॆञ्जोट्रॊडु कञ्जि मरुवि⋆ पिरिन्दवर् वाय्मॊऴि⋆ मदियादु वन्दडैवीर्⋆ तिरुविल् पॊलि मऱैयोर्⋆ शिऱुपुलियूर् च्चलशयनत्तु⋆ उरुव क्कुऱळ् अडिगळ् अडि⋆ उणर्मिन् उणर्वीरे॥२॥	गली में घुमने वाले साधारण संयमित जीवन शैली के मांड़ पीने वाले फकीरों की बातों को भूल जाओ। हमारे साथ आओ। वैदिक ऋषियों से प्रशंसित श्रीसंपन्न प्रभु शिरूपुलियूर शलशयन में रहते हैं। अगर कर सकते हो तो प्रभु के छोटे एवं भूमंडल मापने वाले बड़े चरणों का ध्यान करो। **1629**
पऱैयुम् विनै तॊऴुदुय्मिन् नीर्⋆ पणियुम् शिऱु तॊण्डीर्!⋆ अऱैयुम् पुनल्तॊरुपाल्⋆ वयल्तॊरुपाल् पॊऴिल्तॊरुपाल्⋆ शिऱै वण्डिन मऱैयुम्⋆ शिऱुपुलियूर् च्चलशयन– त्तुऱैयुम्⋆ इऱैयडियल्लदु⋆ ऒन्ऱिऱैयुम् अऱियेने॥३॥	भक्तों ! प्रभु को समर्पित कर विजयी महसूस करो, तुम्हारे सारे कर्मो का सद्यः अंत हो जायेगा। शिरूपुलियूर शलशयन में प्रभु रहते हैं जहां एक तरफ तरंगो वाला सागर है तथा दूसरी तरफ मधुमक्खी के बाग हैं। आपको छोड़ कर अन्य किसी देवता को नहीं जानता हूं। **1630**
वानार् मदि पॊदियुम् शडै⋆ मऴुवाळियॊडॊरुपाल्⋆ तान् आगिय तलैवन् अवन्⋆ अमरर्क्कदिपदियाम्⋆ तेनार् पॊऴिल् तऴुवुम्⋆ शिऱुपुलियूर् च्चलशयन– त्तान् आयनदु⋆ अडियल्लदु⋆ ऒन्ऱऱियेन् अडियेने॥४॥	मधुमय बागों से घिरे शिरूपुलियूर शलशयन में प्रभु रहते हैं जहां एक तरफ चंद्रभूषण शिव हैं तथा दूसरी तरफ स्वयं उद्यमी इन्द्र हैं। आप गोप किशोर कृष्ण हैं। आपके चरणारविंद के अलावे हम कोई और सहारा नहीं जानते। **1631**
नन्दा नॆडु नरगत्तिडै⋆ नणुगावगै⋆ नाळुम् ऎन्दाय्! ऎन⋆ इमैयोर् तॊऴुदेत्तुम् इडम्⋆ ऎऱिनीर् च्चॆन्दामरै मलरुम्⋆ शिऱुपुलियूर् च्चलशयनत्तु⋆ अन्दामरै अडियाय्!⋆ उनदडियेर्करुळ् पुरिये॥५॥	कमल के झुरमुटों से घिरे शिरूपुलियूर शलशयन में प्रभु रहते हैं जहां देवगन प्रतिदिन समूह में आकर पूजा अर्पित करते हैं। कमल समान चरण वाले प्रभु! विनती है कि इस दास को स्थायी नरक मत दे देना। **1632**

मुळुनीलमुम् अलर् आम्बलुम्⋆ अरविन्दमुम् विरवि⋆ कळुनीरॆडु मडवार् अवर्⋆ कण् वाय् मुग मलरुम्⋆ शॆळु नीर् वयल् तळुवुम्⋆ शिरुपुलियूर् च्चलशयनम्⋆ तॊळुनीमॆयदुडैयार्⋆ अडि तॊळुवार् तुयरिलरे॥६॥	उपजाऊ खेतों के शिरूपुलियूर शलशयन में नीला कुमुद, लाल कुमुद, एवं कमल क्रमशः नारियों की आंखें होंठ एवं मुखारविन्द के प्रतिनिधि हैं। जो पूजा करते हैं एवं पूजा अर्पित करते हैं निराशा से मुक्त रहेंगे। **1633**
‡शेयोङ्गु⋆ तण् तिरुमालिरुञ्जोलै मलै उरैयुम् माया⋆ एनक्कुरैयाय् इदु⋆ मरै नान्गिन् उळायो⋆ तीयोम् पुगै मरैयोर्⋆ शिरुपुलियूर् च्चलशयन त्तायो⋆ उनदडियार् मनत्तायो⋆ अरियेने⋆॥७॥	शीतल तिरूमलीरूमसोलै के आश्चर्य मय प्रभु ! कृपया यह बताइये कि आप चार वेदों की ऋचाओं में हैं या शिरूपुलियूर शलशयन में हैं जहां वैदिक ऋषि अग्नि यज्ञ करते हैं या अपने भक्तों के हृदय में हैं।कहां हैं मैं नहीं जानता। **1634**
मैयार् वरि नीलम्⋆ मलर् क्कण्णार् मनम् विट्टिट्टु⋆ उय्वान् उन कळले⋆ तॊळुदॆळुवेन्⋆ किळि मडवार् शॆव्वाय् मॊळि पयिलुम्⋆ शिरुपुलियूर् च्चलशयनत्तु⋆ ऐवाय् अरवणैमेल्⋆ उरै अमला ! अरुळाये॥८॥	शिरूपुलियूर शलशयन के पांच फन वाले शेष पर शयन करने वाले प्रभु! जहां तोते मूंगा के समान होंठ वाली नारियों से मधुर बातचीत सीखती हैं। प्रार्थना है, कृपा कीजिये की कमलनयनी सुन्दरियों से ध्यान हटाकर आपके चरणारविंद पर मन लगाउं एवं पूजा अर्पित कर अपनी आत्मा की उन्नति प्राप्त करूं। **1635**
‡करुमा मुगिल् उरुवा !⋆ कनल् उरुवा ! पुनल् उरुवा⋆ पॆरुमाल् वरै उरुवा !⋆ पिरवुरुवा ! निनदुरुवा !⋆ तिरुमा मगळ् मरुवुम्⋆ शिरुपुलियूर् च्चलशयनत्तु⋆ अरुमा कडल् अमुदे !⋆ उनदडिये शरणामे॥९॥	शिरूपुलियूर शलशयन में रहने वाले मेघ के वर्णवाले, प्रज्वलित अग्नि के समान,प्रवाहित शीतल जल के समान, सम्मानित पर्वत श्रेणियों, अपने आप में अद्वितीय, कमल लक्ष्मी श्री से पूजित प्रभु। आप समुद्र के अमृत हैं। आपके चरण हमारे परम आश्रय हैं। **1636**
‡शीरार् नॆडु मरुगिल्⋆ शिरुपुलियूर् च्चलशयनत्तु⋆ एरार् मुगिल् वण्णन् तनै⋆ इमैयोर् पॆरुमानै⋆ कारार् वयल् मङ्गैक्किरै⋆ कलियन् ऑलि मालै⋆ पारार् इवै परवि त्तॊळ⋆ प्पावम् पयिलावे॥१०॥	विस्तृत वीथियों वाले शिरूपुलियूर शलशयन के मेघ वर्ण वाले देवों के प्रभु की प्रशस्ति उपजाऊ क्षेत्र मंगै के राजा कलियन ने तमिल पदों की यह गीतमाला से की है। जो इसे याद कर लेंगे और पूजा अर्पित करेंगे वे कभी भी कर्मो का संचय नहीं करेंगे। **1537** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

70 पेरम्पुरक्कडलै (1638-1647)

तिरूकण्णमंगै

Ramesh vol. 3 , pp 92

कण्णमंगै की चर्चा पाशुर 1602 में भी की गयी है। यह एक दिव्य देश है एवं तिरूचेरै से 24 कि मी पर तथा तिरूवरूर से 8 कि मी पर है। भगवान यहां भक्तवत्सल कहे जाते हैं। मूलावर 14 फीट ऊंची पूर्वाभिमुख खड़े हैं तथा पेरूमपूरक कडल के नाम से जाने जाते हैं। आपको 'अवि' यानी भक्तों का हृदय भी कहा जाता है। ऊत्तर तथा दक्षिण में 2 कि मी पर यह स्थान दो नदियों से घिरा है। गरूड़ की यहां विशेष आराधना होती है जो पक्षिराज के रूप में जाने जाते हैं। प्रत्येक रविवार को पक्षिराज का तिरूमंजन होता है तथा इनके जन्म नक्षत्र स्वाती में विशेष तिरूमंजन होता है। एक बड़ी रोचक कथा इस स्थान से जुड़ी है। दो लोग अपने अपने कुत्ते के साथ यहां दर्शन में आये। कुत्ते आपस में लड़ाई करने लगे । फलस्वरूप उनके मालिक भी आपस में लड़ पड़े। कहते हैं कुत्ते तो आपस में लड़कर मर ही गये उनके स्वामी की भी वही गति हुई। इसे देखकर एक सज्जन बड़े आश्चर्य में पड़ गये। एक छोटा जीव कुत्ता के लिये उसका स्वामी जीवन दे सकता है तो हमारे बनाने वाले भगवान तो हमपर अवश्य कृपालु रहेंगे। तदुपरान्त सारा जीवन उन्होंने कण्णमंगै में ही बिता दिया और वे कण्णमंगै अन्दन के नाम से जाने गये।

तिरूमंगै आळवार ने अंतिम पद 1647 में भगवान को भी इन पदों के ज्ञान से लाभान्वित होने का परामर्श देते हैं।

पॆरुम् पुऱ क्कडलै अडल् एऱ्ऱिनै* पॆण्णै याणै* एण्णिल् मुनिवर्क्करुळ् तरुम् तवत्तै मुत्तिन् तिरळ् कोवैयै* प्पत्तर् आवियै नित्तिल त्तॊत्तिनै* अरुम्बिनै अलरै अडियेन् मनत्ताशैयै* अमुदम् पॊदियिन् शुवै* करुम्बिनै क्कनियै च्चॆन्ऱु नाडि* क्कण्ण मङ्गैयुळ् कण्डु कॊण्डेने॥१०॥	महान समुद्र, शक्तिशाली वृषभ, नर, मादा, ऋषियों का संयम, मुक्ता की ढ़ेर, भक्तों के हृदय, मुक्तावली, टहनी, पुष्प, मेरे हृदय के प्रेम, मधु का स्राव, मधुर गन्ना, फल ! हमने खोजा एवं आपको कण्णमंगै में पाया। **1638**
मॆय्न् नल्ल तवत्तै त्तिवत्तै तरुम्* मॆय्यै प्पॊय्यिनै क्कैयिल् ओर् शङ्गुडै* मैन् निऱ क्कडलै क्कडल् वण्णनै* माल्लै आलिल्लै प्पळ्ळि कॊळ् मायनै* नॆन्नलै प्पगलै इऱ्ऱै नाळिनै* नाळैयाय् वरुम् तिङ्गळै आण्डिनै* कन्नलै क्करुम्बिनिडै त्तेऱलै* क्कण्ण मङ्गैयुळ् कण्डु कॊण्डेने॥२॥	तप, सच का स्वर्ग, झूठ, शंखधारी, गहरे सागर की गहराई, सागर का वर्ण, पूज्य बट पत्र के आश्चर्य मय देव, बीता कल, आज, आनेवाला कल, आनेवाला मास, वर्ष, र्शकरा, गन्ना का मधुर रस ! हमने खोजा एवं आपको कण्णमंगै में पाया। **1639**
एङ्गळुक्करुळ् शॆय्गिन्ऱ ईशनै* वाशवार् कुळलाळ् मलै मङ्गै तन् पङ्गनै* प्पङ्गिल् वैत्तुगन्दान् तन्नै* प्पान्मैयै प्पनि मा मदियम् तवळ्* मङ्गुलै च्चुडरै वड मामलै उच्चियै* नच्चि नाम् वणङ्गप्पडुम् कङ्गुलै* पगलै च्चॆन्ऱुनाडि* क्कण्ण मङ्गैयुळ् कण्डु कॊण्डेने॥३॥	उदार प्रभु, सुगंधित जूड़े वाली पार्वती के दूल्हा को धारण करने वाले, आकाश के प्रभु, सूर्य एवं चंद्र की आभा को धारण करने वाले, उत्तरी वेंकटम पर्वत की चोटी, वांछनीय दिन एवं रात ! हमने खोजा एवं आपको कण्णमंगै में पाया। **1640**

पेय् मुलै त्तलै नञ्जुण्ड पिळ्ळैयै⋆ त्तॆळ्ळियार् वणङ्गप्पडुम् देवनै⋆ मायनै मदिळ् कोवल् इडैगळि मैन्दनै⋆ अन्रि अन्दणर् शिन्दैयुळ् ईशनै⋆ इलङ्गुम् शुडर् च्चोदियै⋆ एन्दैयै एनक्कॆय्प्पिनिल् वैप्पिनै⋆ काशिनै मणियै च्चॆन्रु नाडि⋆ क्कण्ण मङ्गैयुळ् कण्डु कॊण्डेने॥ ४॥	राक्षसी के विषैले स्तन पान करने वाले शिशु, स्पष्ट विचार के ऋषियों के पूज्य, तिरूकोईलूर के तंग जगह में प्रकट होने वाले राजकुमार, वैदिक ऋषियों के हृदयवासी, जीवों के तेज, मेरे पिता, मेरे रक्षक, मेरी संपन्नता, मेरे रत्न ! हमने खोजा एवं आपको कण्णमंगै में पाया। **1641**
एट्रिनै इमयत्तुळ् एम् ईशनै⋆ इम्मैयै मरुमैक्कु मरुन्दिनै⋆ आट्रलै अण्डत्तप्पुरत्तुय्त्तिडुम् ऐयनै⋆ क्कैयिल् आळि ऑन्रेन्दिय कूट्रिनै⋆ कुरु मा मणि क्कुन्रिनै⋆ निन्रवूर् निन्र नित्तिल त्तॊत्तिनै⋆ काट्रिनै प्पुनलै च्चॆन्रु नाडि⋆ क्कण्ण मङ्गैयुळ् कण्डु कॊण्डेने॥ ५॥	वृषभ, देवों के नाथ, यहां का जीवन एवं परलोक के जीवन की औषधी, इह लोक से परलोक यात्रा के साथी, भयानक चक्र के धारक, रत्न के तेजोमय पर्वत, तिरूनिन्रावुर के नाथ, मुक्तों की ढ़ेर, वायु , जल ! हमने खोजा एवं आपको कण्णमंगै में पाया। **1642**
तुप्पनै त्तुरङ्गम् पड च्चीरिय तोन्रलै⋆ च्चुडर् वान् कलन् पॆय्ददोर् शेप्पिनै⋆ तिरुमङ्गै मणाळनै⋆ त्तेवनै त्तिगळुम् पवळत्तॊळि ऑप्पनै⋆ उलगेळिनै ऊळियै⋆ आळियेन्दिय कैयनै अन्दणर् कर्पिनै⋆ कळुनीर् मलरुम् वयल्⋆ कण्ण मङ्गैयुळ् कण्डु कॊण्डेने॥ ६॥	चालाक घोड़ा केसिन को नियंत्रित करने वाले सुन्दर प्रभु, आभापूर्ण आकाश, श्रीपति, देवों के नाथ, मूंगा की चमक, सातों लोक, समय, चक्र के प्रभु, वैदिक ऋषियों के ज्ञान, कमल के क्षेत्र ! हमने खोजा एवं आपको कण्णमंगै में पाया। **1643**
तिरुत्तनै त्तिशै नान्मुगन् तन्दैयै⋆ त्तेव देवनै मूवरिल् मुन्निय विरुत्तनै⋆ विळङ्गुम् शुडर् च्चोदियै⋆ विण्णै मण्णिनै क्कण्णुदल् कूडिय अरुत्तनै⋆ अरियै प्परि कीरिय अप्पनै⋆ अप्पिलार् अळलाय् निन्र करुत्तनै⋆ कळि वण्डरैयुम् पॊळिल्⋆ कण्ण मङ्गैयुळ् कण्डु कॊण्डेने॥ ७॥	पूर्ण संतुष्ट ब्रह्मा के पिता, देवों के नाथ, त्रिमूर्ति में प्रथम, आभामय, धरा, आकाश, शिव को धारण करने वाले, नरसिंह, घोड़ा के बध करने वाले, जल की घुलनशीलता, मधुमक्खी के बागों से घिरे देव! हमने खोजा एवं आपको कण्णमंगै में पाया। **1644**
वॆञ्जिन क्कळिट्रै विळङ्गाय् विळ⋆ क्कन्रु वीशिय ईशनै⋆ पेय्मगळ् तुञ्ज नञ्जु शुवैत्तुण्ड तोन्रलै⋆ त्तोन्रल् वाळ् अरक्कन् कॆड त्तोन्रिय नञ्जिनै⋆ अमुदत्तिनै नादनै⋆ नच्चुवार् उच्चिमेल् निर्कुम् नम्बियै⋆ कञ्जनै त्तुञ्ज वञ्जित्त वञ्जनै⋆ क्कण्ण मङ्गैयुळ् कण्डु कॊण्डेने॥ ८॥	गुस्सैल हाथी, बछड़े को पेड़ पर पटक कर उसके फल गिराने वाले, राक्षसी के स्तन का विष पीने वाले शिशु, दुष्ट रावण पर विष की तरह काम करने वाले मधुर अमृत, चाहने वालों के सिर पर वास करने वाले, कंस के नाश करने वाले ! हमने खोजा एवं आपको कण्णमंगै में पाया। **1645**
पण्णिनै प्पण्णिल् निन्रदोर् पान्मैयै⋆ प्पालुळ् नॆय्यिनै माल् उरुवाय् निन्र विण्णिनै⋆ विळङ्गुम् शुडर् च्चोदियै⋆ वेळ्वियै विळक्किन् ऑळि तन्नै⋆ मण्णिनै मलैयै अलै नीरिनै⋆ मालै मा मदियै मरैयोर् तङ्गळ् कण्णिनै⋆ कण्गळ् आरळवुम् निन्रु⋆ कण्ण मङ्गैयुळ् कण्डु कॊण्डेने॥ ९॥	मधुर धुन पन्न, पन्न धुन का माधुर्य, दूध का घी, वैकुंठ के पूज्य स्वरूप, आभामय स्वरूप, यज्ञ, दीपक के प्रकाश, धरा, पर्वत, गहरा जल, उदयवान चंद, वैदिक ऋषियों की प्यारी आंखें ! अपने संतुष्टी भर हमने खोजा एवं आपको कण्णमंगै में पाया। **1646**

कण्णमङ्गैयुळ् कण्डु कॊण्डेन् एन्ऱु* कादलाल् कलिगन्ऱि उरैशॆय्द* वण्ण ऒण् तमिळ् ऒन्बदोडॊन्ऱिवै* वल्लराय् उरैप्पार् मदियम् तवळ्* विण्णिल् विण्णवराय् मगिळ्वॆय्दुवर्* मॆय्म्मै शॊल्लिल् वॆण् शङ्गम् ऒन्ऱेन्दिय कण्णा !* निन्दनक्कुम् कुऱिप्पागिल् कर्कलाम्* कवियिन्पॊरुळ् ताने॥१०॥	'हमने खोजा एवं आपको कण्णमंगै में पाया' कलियन के मधुर तमिल पदों की यह माला प्रेम से सरोबोर है। जो इसे याद कर लेंगे वे विस्तृत आकाश में देवों के साथ रहेंगे। हाथ में शंख धारण करने वाले, हे कृष्ण ! आप भी इन गीतों के ज्ञान से लाभान्वित हो सकते हैं। **1647** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

71 शिलैयिलङ्गु (1648 – 1657)

तिरूकण्णपुरम 1

परकाल नायकी की मां अपनी बेटी का प्रभु से प्रेम होने पर आश्चर्य प्रकट करती है।

Ramesh Vol. 2 pp 65

शिलैयिलङ्गु पॊन्नाऴि* तिण् पडै तण्डॊण् शङ्गम् एन्गिन्राळाल्* मलैयिलङ्गु तोळ् नान्गे* मट्रवनुक्कॆट्रे काण्! एन्गिन्राळाल्* मुलैयिलङ्गु पूम् पयलै* मुन्बोड अन्बोडि इरुक्किन्राळाल्* कलैयिलङ्गु मॊऴियाळर्* कण्णपुरत्तम्मानै क्कण्डाळ् कॊलो॥१॥	धनुष, सुवर्ण चक्र, गदा, शंख एवं खड्ग भी धारण करने वाले प्रभु ! वह कहती है 'हाय ! पर्वत के समान चार भुजाओं वाले कौन होगा ऐसा ? , आइए'।उसके कोमल उभरे उरोज पील पड़ गये हैं एवं वह अपने नष्ट सौंदर्य के लिये चिन्तित है। कन्नापुरम प्रभु के साथ वैदिक ऋषिगन रहते हैं। क्या उसने देखा है आपको ? हाय ! **1648**
शॆरुवरै मुन्नाशरुत्त* शिलैयन्रो कैत्तलत्तदॆन्गिन्राळाल्* पॊरु वरैमुन् पोर् तॊलैत्त* पॊन्नाऴि मट्रॊरु कै एन्गिन्राळाल्* ऒरुवरैयुम् निन्नॊप्पार्* ऒप्पिला एन्नप्पा! एन्गिन्राळाल्* करुवरैपोल् निन्रानै* क्कण्णपुरत्तम्मानै क्कण्डाळ् कॊलो॥२॥	वह कहती है 'क्या धर्नुधर प्रभु ने युद्ध में महान राजाओं का नाश नहीं किया ? ' विलाप करते हुए कहती है 'क्या चक्र ने पर्वतों को उड़से नहीं रोका ?' कहती है 'ओप्पिला अप्पा प्रभु ! आपके समतुल्य कोई नहीं है।' कन्नापुरम में श्यामल पर्वत की तरह खड़े हैं प्रभु। क्या उसने देखा है आपको ? हाय ! **1649**
तुन्नु मा मणि मुडिमेल्* तुळाय् अलङ्गल् तोन्रुमाल् एन्गिन्राळाल्* मिन्नु मा मणि मगर कुण्डलङ्गळ्* विल् वीशुम् एन्गिन्राळाल्* पॊन्निन् मा मणि आरम्* अणियागत्तिलङ्गुमाल् एन्गिन्राळाल्* कन्नि मा मदिळ् पुडै शूळ्* कण्णपुरत्तम्मानै क्कण्डाळ् कॊलो॥३॥	वह कहती है 'अपने ऊंचे रत्न मुकुट के ऊपर आप तुलसी माला पहनते हैं।' कहती है 'आपका मणि जड़ा हुआ सुवर्ण मकराकृत कुण्डल बिजली की तरह चमकती है।' कहती है 'आपके मणि जड़े सोना वाला हार शक्तिशाली वक्षस्थल पर रत्नों के बीच झूलता है'। कन्नापुरम में मजबूत दीवारें हैं। क्या उसने देखा है आपको ? हाय ! **1650**
ताराय तण् तुळव* वण्डुळुद वरै मार्वन् एन्गिन्राळाल्* पोर् आनै क्कॊम्बॊशित्त पुळ्ळागन्* एन्नम्मान् एन्गिन्राळाल्* आरानुम् काणिमन्गाळ्* अम्बवळम् वाय् अवनुक्कॆन्गिन्राळाल्* कार्वानम् निन्र तिरु* क्कण्णपुरत्तम्मानै क्कण्डाळ् कॊलो॥४॥	वह कहती है 'वक्षस्थल पर अमृत मय मधुमक्खी वाले शीतल तुलसी की माला।' कहती है 'हमारे पक्षीआरोही प्रभु ने मदमत्त हाथी के दांत उखाड़ लिये।' कहती है 'देखो आपके मूंगावत होंठ पूर्णतया अद्वितीय है।' कन्नापुरम के ऊपर घने गरजते बादल। क्या उसने देखा है आपको ? हाय ! **1651**
अडित्तलमुम् तामरैये* अङ्गैयुम् पङ्गयमे एन्गिन्राळाल्* मुडित्तलमुम् पॊर्पूणुम्* एन् नॆञ्जत्तुळ् अगला एन्गिन्राळाल्* वडित्तडङ्गण् मलरवळो* वरैयागत्तुळ्ळिरुप्पाळ् एन्गिन्राळाल्* कडिक्कमलम् कळ्ळुगुक्कुम्* कण्णपुरत्तम्मानै क्कण्डाळ् कॊलो॥५॥	वह कहती है 'आपके चरण सुवर्ण कमल के हैं एवं हाथ कमल जैसे सुनहले हैं।' कहती है 'आपका मुकुट एवं सुवर्ण आभूषण कभी भी हमारे हृदय से बाहर नहीं रहते। कहती है 'हाय! आपके विस्तृत वक्षस्थल पर कमल लक्ष्मी नहीं रहती है क्या ?' कन्नापुरम के मधुर सुगंधित कमल। क्या उसने देखा है आपको ? हाय ! **1652**

पेरायिरम् उडैय पेराळन्⋆ पेराळन् एन्गिन्राळाल्⋆ एरार् कन मगर कुण्डलत्तन्⋆ एण् तोळन् एन्गिन्राळाल्⋆ नीरार् मळै मुगिले⋆ नीळ् वरैये ऒक्कुमाल् एन्गिन्राळाल्⋆ कारार् वयल् अमरुम्⋆ कण्णपुरत्तम्मानै क्कण्डाळ् कॊल्लो ॥६॥	वह कहती है 'आपके हजार नाम हैं एवं हजार विशेषतायें हैं।' कहती है 'आप सुवर्ण के मकराकृत कुण्डल पहनते हैं और आपकी आठ शक्तिशाली भुजायें हैं।' कहती है 'आपके श्यामल मेघ समान वर्ण हैं एवं आप श्यमल पर्वत जैसे हैं।' कन्नापुरम में धान की बड़ी फसल होती है। क्या उसने देखा है आपको ? हाय ! **1653**
शॆव्वरत्त उडैयाडै⋆ अदन्मेल् ओर् शिवळिगै क्कच्चॆन्गिन्राळाल्⋆ अव्वरत्त अडियिणैयुम्⋆ अङ्गैगळुम् पङ्गयमे एन्गिन्राळाल्⋆ मैवळर्क्कुम् मणियुरुवम्⋆ मरगदमो मळै मुगिलो ! एन्गिन्राळाल्⋆ कैवळर्क्कुम् अळलाळर्⋆ कण्णपुरत्तम्मानै क्कण्डाळ् कॊल्लो ॥७॥	वह कहती है 'आप लाल वस्त्र तथा सुनहले कमरबंद धारण करते हैं।' कहती है 'अहा! चरण भी उसी रंग के हैं जिस रंग के कमल जैसे हाथ हैं।' चिल्ला कर कहती है 'आपके श्यामल मेघ समान वर्ण हैं या मणि समान ' कन्नापुरम में वैदिक ऋषि अग्नि होम करते हैं। क्या उसने देखा है आपको ? हाय ! **1654**
कॊट्पुळ् ऒन्रेरि⋆ मन्नूडे वरुगिन्रान् एन्गिन्राळाल्⋆ वॆट्प्पोर् इन्दिरर्कुम्⋆ इन्दिरने ऒक्कुमाल् एन्गिन्राळाल्⋆ पॆट्क्काल् अवनागम्⋆ पॆण् पिरन्दोम् उय्योमो एन्गिन्राळाल्⋆ कट्नूल् मरैयाळर्⋆ कण्णपुरत्तम्मानै क्कण्डाळ् कॊल्लो ॥८॥	वह कहती है 'विजयी पक्षी पर सवार आप स्वछंद घूमते हैं।' कहती है ' देवों के विजयी राजा इन्द्र के आप इन्द्र हैं।' कहती है 'अगर हम आपके आलिंगन को प्राप्त करें तो हम नारी जन्म को प्राप्त किये हैं।' कन्नापुरम में विद्वान वैदिक ऋषि रहते हैं। क्या उसने देखा है आपको ? हाय ! **1655**
वण्डमरुम् वनमालै⋆ मणि मुडिमेल् मण नारुम् एन्गिन्राळाल्⋆ उण्डिवर् पाल् अन्बॊनक्कॆन्रु⋆ ऒरुगालुम् पिरिगिलेन् एन्गिन्राळाल्⋆ पण्डिवरै क्कण्डरिवदु⋆ एव्वूरिल् याम् एन्रे पयिल्गिन्राळाल्⋆ कण्डवर् तम् मनम् वळङ्गुम्⋆ कण्णपुरत्तम्मानै क्कण्डाळ् कॊल्लो ॥९॥	वह कहती है 'आपके सुनहले किरीट पर की तुलसी माला का सुगंध सर्वत्र व्याप्त है।' कहती है ' हम आपको प्रेम करते हैं और आपसे कभी विदा नहीं हो सकते।' पूछती है 'याद है आपको पहले देखा है कौन सी जगहा ?' कन्नापुरम में जो आपके देखते हैं आपके ही हो जाते हैं। क्या उसने देखा है आपको ? हाय ! **1656**
मावळरु मॆन् नोक्कि⋆ मादराळ् मायवनै क्कण्डाळ् एन्रु⋆ कावळरुम् कडि पॊळिल् शूळ्⋆ कण्णपुरत्तम्मानै क्कलियन् शॊन्न⋆ पावळरुम् तमिळ् मालै⋆ पन्नियनूल् इवै ऐन्दुम् ऐन्दुम् वल्लार्⋆ पूवळरुम् कर्पगम् शेर्⋆ पॊन्नुलगिल् मन्नवराय् प्पुगळ् तक्कोरे ॥१०॥	कलियन के गाये हुए ये शुद्ध तमिल गीत मां की वेदना को प्रकट करते हैं जिसकी मृगनयनी बेटी सुगंधित बागों से घिरे कन्नापुरम के प्रभु को चाहती है। जो इसे याद कर लेंगे वे कल्पवृक्ष के फूलों से भरे स्वर्ग के प्रसिद्ध राजा बन करके रहेंगे। **1657** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्

श्रीमते रामानुजाय नमः

72 तेळिळयीर् (1658 - 1667)

तिरूकण्णपुरम 2

परकाल नायकी की मां अपनी बेटी के व्यवहार से दुखी होकर प्रभु पर गुस्सा दिखाती है।

‡तॆळ्ळियीर्! देवर्क्कुम्⋆ देवर् तिरु त्तक्कीर्!⋆ वॆळ्ळियीर् वॆय्य⋆ विळु निदि वण्णर्⋆ ओ! तुळ्ळु नीर्⋆ क्कण्णपुरम् तॊळुदाळ् इवळ् कळ्वियो⋆ कैवळै कॊळ्वदु तक्कदे॥१॥	प्रज्ञावान, देवों के देव, निष्कलंक, श्री वर, सुनहले वर्णवाले प्रभु ! मेरी बेटी कन्नपुरम के नृत्य करते जल की ओर करवद्ध मुद्रा में थी। क्या यह अपराध है ? क्या उसके कंगन ले लेना ठीक है ? **1658**
नीळ् निला मुट्रत्तु⋆ निन्रिवळ् नोक्किनाळ्⋆ काणुमो !⋆ कण्णपुरम् एन्रु काट्टिनाळ्⋆ पाणनार् तिण्णम् इरुक्क⋆ इनि इवळ् नाणुमो⋆ नन्रु नन्रु नरैयूरर्क्के॥२॥	चांदनी भरी छत पर खड़ा होकर क्षितिज का सर्वेक्षण कर खिले हुये मन से उधर दिखाते हुए बोली 'देखो कन्नपुरम।' मडल गायक प्रतीक्षारत हैं, क्या अपने आत्मघाती कदम से वह पीछे मुड़ेगी ? अच्छा, अच्छा, नैरैयूर प्रभु ने उसे रास्ता दिखाया है। **1659**
‡अरुवि शोर् वेङ्गडम्⋆ नीर्मलै एन्रु वाय् वॆरुविनाळ्⋆ मॆय्यम् विनवि इरुक्किन्राळ्⋆ पॆरुगु शीर्⋆ क्कण्णपुरम् एन्रु पेशिनाळ् उरुगिनाळ्⋆ उळ्मॆलिन्दाळ् इदॆन्नॊलो॥३॥	शीतल प्रवाहित जल वाले वेंकटम एवं स्थगित जलवाले निर्मले के बारें में बड़बड़ा रही थी।मेय्यम के बारे में पूछी तथा संपन्न कन्नपुरम के बारे में बताने लगी। अश्रुपूर्ण होकर दिन प्रति दिन भीतर से पतली होती जा रही है। हाय ! क्या हो रहा है? **1660**
उण्णुम् नाळ् इल्लै⋆ उऱक्कमुम् तान् इल्लै⋆ पॆण्मैयुम् शाल⋆ निऱैन्दिलळ् पेदै तान्⋆ कण्णनूर् कण्णपुरम्⋆ तॊळुम् कार् क्कडल् वण्णर्मेल्⋆ एण्णम् इवट्किदॆन्नॊलो॥४॥	कोई भी दिन ऐसा नहीं है जो उपवास का न हो एवं कोई रात ऐसी नहीं है जो जागरण का न हो। अभी किशोरी बच्ची है तब भी अपने कृष्ण के निवास कन्नपुरम को नमस्कार करते रहती है। उसका मन हमेशा सागर सा सलोने प्रभु पर रहता है। ओह ! यह सब क्या है ? **1661**
कण्णनूर्⋆ कण्णपुरम् तॊळुम् कारिगै⋆ पॆण्मैयुम् तन्नुडै⋆ उण्मै उरैक्किन्राळ्⋆ वॆण्णॆयुण्डाप्पुण्ड⋆ वण्णम् विळम्बिनाळ्⋆ वण्णमुम्⋆ पॊन् निऱम् आवदॊळियुमे॥५॥	प्रभु के निवास कन्नपुरम को नमस्कार करते रहती है। अपना सौंदर्य एवं कुमारीपन पर हमेशा बोलते रहती है। उसका सुनहला रंग उसके गाल एवं उरोज से उड़ जाते हैं जब वह सुनती है कि कैसे कृष्ण ने मक्खन चुराया एवं दंडित हुए। **1662**

वड वरै निन्ऱुम् वन्दु⋆ इन्ऱु कणपुरम्⋆ इडवगै कॊळ्वदु⋆ याम् एन्ऱु पेशिनाळ्⋆ मडवरल् मादर् एन् पेदै⋆ इवरक्किवळ् कडवदॆन्⋆ कण् तुयिल् इन्ऱु⋆ इवर् कॊळ्ळवे॥६॥	वह कहती है 'उत्तर के पर्वतीय आवास को छोड़कर प्रभु के साथ खेलने हम आज कन्नपुरम में आ गये हैं।' मेरी बेटी सरल चित्त है। वह किस काम आयेगी कि आपने उसकी नींद चुरा ली है। **1663**
तरङ्ग नीर् पेशिनुम्⋆ तण् मदि कायिनुम्⋆ इरङ्गुमो⋆ एत्तनै नाळ् इरुन्दॆळ्िानाळ्⋆ तुरङ्गम् वाय् कीण्डुगन्दान्⋆ अदु तॊन्मै ऊर्⋆ अरङ्गमे एन्बदु⋆ इवळ् तनक्काशैये॥७॥	समुद्र का गर्जन सुनती है एवं चंद्रमा की चमक को महसूस करती हुई भीतर भीतर दुबली हो गयी है। हाय ! कितने समय से वह इन बातों में लगी हुई है। श्रीरंगम उसका चहेता गंतव्य स्थल है जो उसके कृष्ण का मूल स्थान है जिन्होंने केशिन घोड़ा का जबड़ा चीर अपने आप में प्रसन्न हुए थे। **1664**
तॊण्डॆल्लाम् निन्नडिये⋆ तॊळुदुय्युमा कण्डु⋆ तान् कणपुरम्⋆ कै तॊळ प्पोयिनाळ्⋆ वण्डुलाम् कोदै एन् पेदै⋆ मणि निऱम् कॊण्डु तान्⋆ कोयिन्मै शॆय्वदु तक्कदे॥८॥	आपके चरणों की पूजा कर स्वयं का उत्थान करते भक्तों को देख वह भी कन्नपुरम पूजा अर्पित करने गयी। क्या यह आपके लिये उचित है कि आपने हमारे बेटी का मनमाने ढंग से सौंदर्य प्रसाधन चुरा लिया ? **1665**
मुळ्ळॆयिरेय्न्दिल⋆ कूळै मुडिगॊडा⋆ तॆळ्ळियळ् एन्बदोर्⋆ तेशिलळ् एन् शॆय्गेन्⋆ कळ्ळविळ् शोलै⋆ क्कणपुरम् कै तॊळुम् पिळ्ळैयै⋆ पिळ्ळै एन्ऱॆण्ण प्पॆऱुवरे॥९॥	हाथीदांत का कंघा शायद ही उसके बाल को एकत्र कर पाते हैं तथा उसकी लटों में शायद ही गांठ लग पाती है। उसके कोई भी गुण स्थिर चित्त के द्योत्तक नहीं है। हाय ! मैं क्या करूं ? उसने अमृतमय बागों से घिरे कन्नपुरम में तथा अन्य जगहों में पूजा अर्पित की। हाय ! अपनी संतान को अब अपनी नहीं कह सकती। **1666**
कार्मलि⋆ कण्णपुरत्तॆम् अडिगळै⋆ पार् मलि मङ्गैयर् कोन्⋆ परगालन् शॊल्⋆ शीर् मलि पाडल्⋆ इवै पत्तुम् वल्लवर्⋆ नीर् मलि वैयत्तु⋆ नीडु निर्पार्गळे॥१०॥	यह अतिउत्तम तमिल गीत माला पर्याप्त वर्षा वाले कन्नपुरम के प्रभु की प्रशस्ति में जग प्रसिद्ध मंगै के राजा परकालन के हैं। जो इसे याद कर लेंगे वे पृथ्वी पर दीर्घायु होंगे। **1667** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः **73 कैरेयेडुत्त (1668 - 1677)** **तिरूकण्णपुरम 3** **परकाल नायकी विछुड़न के विषाद में है।**	
करैयॆडुत्त शुरि शङ्गुम्⋆ कन पवळत्तॆळु कॊडियुम्⋆ तिरैयॆडुत्तु वरु पुनल् शूळ्⋆ तिरु क्कण्णपुरत्तुऱैयुम्⋆ विरैयॆडुत्त तुळाय् अलङ्गल्⋆ विऱल् वरै त्तोळ् पुडै पॆयर⋆ वरैयॆडुत्त पॆरुमानुक्कु⋆ इळन्देन् ऎन् वरि वळैये॥१॥	समुद्र के आक्रामक तरंगें तिरूकन्नपुरम में तेज आवाज वाला शंख एवं मूंगा की लड़ियां छोड़ जाते हैं। यहां प्रभु रहते हैं जो तुलसी की माला पहनते हैं एवं शक्तिशाली भुजाओं से जिन्होंने पर्वत उठा लिया। हाय ! हमने अपने सुन्दर सुवर्ण कंगन उनके पास खो दिये **1668**
अरिविरवु मुगिल् कणत्ताल्⋆ अगिल् पुगैयाल् वरैयोडुम्⋆ तॆरिविरिय मणि माड⋆ त्तिरु क्कण्णपुरत्तुऱैयुम्⋆ वरियरविन् अणै त्तुयिन्ऱु⋆ मळै मदत्त शिऱु तऱु कण्⋆ करिवॆरुव मरुप्पॊशित्ताऱ्कु⋆ इळन्देन् ऎन् कन वळैये॥२॥	तिरूकन्नपुरम में रत्न जटित ऊची अटारियों के शिखर के तड़ित संरक्षक आकाश में घुसकर चांद एवं बादलों को चिढ़ाते हैं। यहां के निवासी प्रभु ने सात वृषभों का शमन किया तथा प्रसन्नता पूर्वक चांद को शाप से विमुक्त किया। आप अरूणाभ नयन शंकनमल हैं। हाय ! हमने अपने सुन्दर सुवर्ण कंगन उनके पास खो दिये **1669**
तुङ्ग मा मणि माड⋆ नॆडु मुगट्टिन् शूलिगै पोम्⋆ तिङ्गळ् मा मुगिल् तुणिक्कुम्⋆ तिरु क्कण्णपुरत्तुऱैयुम्⋆ पैङ्गण् माल् विडैयडर्त्तु⋆ प्पनि मदिगोळ् विडुत्तुगन्द⋆ शॆङ्गण् माल् अम्मानुक्कु⋆ इळन्देन् ऎन् शॆरि वळैये॥३॥	तिरूकन्नपुरम में रत्न जटित पर्वत से ऊंचे महलें हैं जो बादलों एवं अगिल के धुंआ को छूते हैं। यहां के निवासी प्रभु धारीदार शेष पर शयन करते हैं तथा मदमत्त हाथी को शांत कर उसके दांत उखाड़ लिये। हाय ! हमने अपने सुन्दर सुवर्ण कंगन उनके पास खो दिये **1670**
कणमरुवु मयिल् अगवु⋆ कडि पॊळिल् शूळ् नॆडु मऱुगिल्⋆ तिणमरुवु कन मदिळ् शूळ्⋆ तिरु क्कण्णपुरत्तुऱैयुम्⋆ मणमरुवु तोळ् आय्च्चि⋆ आर्क्क प्पोय् उरलोडुम्⋆ पुणर्मरुदम् इऱनडन्दाऱ्कु⋆ इळन्देन् ऎन् पॊन् वळैये॥४॥	तिरूकन्नपुरम मजबूत दीवारों से घिरा है।यहां विस्तृत वीथियां हैं। सुगंधित बागों में मोर के झुंड सर्वत्र नृत्य करते हैं। यहां के निवासी प्रभु को सुगंधित जूड़े वाली यशोदा ने ऊखल से बांध दी और आप सरकते हुए मरूदु वृक्षों तक जाकर उन्हें नष्ट कर दिया। हाय ! हमने अपने सुन्दर सुवर्ण कंगन उनके पास खो दिये **1671**

वाय् एडुत्त मन्दिरत्ताल्* अन्दणर् तम् शॆय् तॊळिल्गळ्* तीयॆडुत्तु मऱै वळर्क्कुम्* तिरु क्कण्णपुरत्तुऱैयुम्* ताय् एडुत्त शिऱु कोल्लुक्कु* उळैन्दोडि त्तयिर् उण्ड* वाय् तुडैत्त मैन्दनुक्कु* इळन्देन् एन् वरि वळैये॥५॥	तिरूकन्नपुरम में वैदिक ऋषिगन एकत्र होकर मंत्रोच्चार करते हैं अग्नि होम करते हैं तथा वेद को जाग्रत बनाये हैं। यहां के निवासी प्रभु मां के हाथ में डंडे को देख भय से सिकुड़ गये तथा मुंह के दही को पोंछते हुए फैला दिये। हाय ! हमने अपने सुन्दर सुवर्ण कंगन उनके पास खो दिये **1672**
मडल् एडुत्त नॆडुन् ताळै* मरुङ्गॆल्लाम् वळर् पवळम्* तिडल् एडुत्तु च्चुडर् इमैक्कुम्* तिरु क्कण्णपुरत्तुऱैयुम्* अडल् अडरत्तन्ऱिररणियनै* मुरण् अळिय अणियुगिराल्* उडल् एडुत्त पॆरुमानुक्कु* इळन्देन् एन् ऒळि वळैये॥६॥	तिरूकन्नपुरम के खेत खजूर के वृक्षों से घिरे हैं जो फूल से खिले रहते हैं तथा जिसमें मूंगे जैसी लड़ियां लटकती हैं मानों सर्वत्र प्रकाश विखेर रहे हों। यहां के निवासी प्रभु ने तीक्ष्ण पंजों से महान हिरण्य की छाती चीर दिये। हाय ! हमने अपने सुन्दर सुवर्ण कंगन उनके पास खो दिये **1673**
वण्डमरुम् मलर् प्पुन्नै* वरि नीळल् अणि मुत्तम्* तॆण् तिरैगळ् वर त्तिरट्टुम्* तिरु क्कण्णपुरत्तुऱैयुम्* एण् दिशैयुम् एळु कडलुम्* इरु निलनुम् पॆरु विशुम्बुम्* उण्डुमिळ्न्द पॆरुमानुक्कु* इळन्देन् एन् ऒळि वळैये॥७॥	तिरूकन्नपुरम में मधुमक्खी वाले घने पुन्नै के वृक्ष हैं जो जल के ऊपर छाया तथा पकाश करते हैं जहां मोती के समान कलियां तैरती हुइ तरंगो पर एकत्र होती हैं। यहां के निवासी प्रभु ने आठों दिशायें, दोनों ज्याति पुंज, विस्तृत आकाश तथा अन्य सभी को निगल लिया एवं फिर उन्हें बाहर कर दिया। हाय ! हमने अपने सुन्दर सुवर्ण कंगन उनके पास खो दिये **1674**
कॊङ्गु मलि करुङ्गुवळै* कण्णाग तॆण् कयङ्गळ्* शॆङ्गमल मुगम् अलरत्तुम्* तिरु क्कण्णपुरत्तुऱैयुम्* वङ्गमलि तडङ्गडलुळ्* वरियरविन् अणैत्तुयिन्ऱ* शॆङ्गमलनाबनुक्कु* इळन्देन् एन् शॆऱि वळैये॥८॥	तिरूकन्नपुरम के साफ जलाशयों में नीले कुमुद प्रभु की आंखों की तरह तथा लाल कुमुद मुखमंडल की तरह दिखते हैं। यहां के निवासी प्रभु नाभि में लाल कमल लिये गहरे सागर में फनधारी शेष पर शयन करते हैं। हाय ! हमने अपने सुन्दर सुवर्ण कंगन उनके पास खो दिये **1675**
वाराळुम् इळङ्गॊङ्गै* नॆडुम् पणै त्तोळ् मड प्पावै* शीर् आळुम् वरै मार्वन्* तिरु क्कण्णपुरत्तुऱैयुम्* पेराळन् आयिरम् पेर्* आयिर वाय् अरवणैमेल्* पेराळर् पॆरुमानुक्कु* इळन्देन् एन् पॆय् वळैये॥९॥	तिरूकन्नपुरम में प्रभु के पर्वत समान वक्षस्थल पर कंचुकी से बंधी कोमल उरोज एवं सुघड़ बांस सी बाहों वाली कमल लक्ष्मी का निवास है। आप हजार नाम वाले हैं तथा हजार फन वाले शेष पर शयन करने वाले प्रभु हैं। हाय ! हमने अपने सुन्दर सुवर्ण कंगन उनके पास खो दिये **1676**

तेमरुवु पॉऴिल् पुडै शूऴ्★ तिरु क्कण्णपुरत्तुरैयुम् वामननै★ मरि कडल् शूऴ्★ वयलालि वळ नाडन्★ कामरु शीर् क्कलिगन्रि★ कण्डुरैत्त तमिऴ् मालै★ ना मरुवि इवै पाड★ विनैयाय नण्णावे॥१०॥	उपजाऊ खेतों से घिरे तिरूवाली के सम्मानीय राजा कलकन्रि के ये मधुर तमिल पदों की गीतमाला अमृत टपकाते बागों वाले तिरूकन्नपुरम के दुल्हा की प्रशस्ति में है। जो इसे याद कर लेंगे वे कर्मों से मुक्त हो जायेंगे। **1677** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

74 विण्णवर् तङ्गळ् (1678 - 1687)

तिरूकण्णपुरम 4

परकाल नायकी भौंरा का दूत भेजती है।

विण्णवर् तङ्गळ् पॆरुमान्⋆ तिरुमार्वन्⋆ मण्णवर् एल्लाम् वणङ्गुम्⋆ मलि पुगऴ् शेर्⋆ कण्णपुरत्तॆम् पॆरुमान्⋆ कदिर् मुडिमेल्⋆ वण्ण नरुन् तुळाय्⋆ वन्दूदाय् कोल् तुम्बी ! ॥१॥	हे भौंरा ! अब हमारे तिरूकन्नपुरम के प्रभु के पास जाओ। आप देवां के देव हैं, वक्षस्थल पर श्री धारण किये हैं, समस्त लोकों से पूजित हैं। लौट कर हमारे ऊपर उनकी तुलसी माला का सुगंध डाल दो। **1678**
वेद मुदल्वन्⋆ विळङ्गु पुरि नूलन्⋆ पादम् परवि⋆ प्पलरुम् पणिन्देत्ति⋆ कादन्मै शॆय्युम्⋆ कण्णपुरत्तॆम् पॆरुमान्⋆ तादु नरुन् तुळाय्⋆ ताळ्न्दूदाय् कोल् तुम्बी ! ॥२॥	हे भौंरा ! अब हमारे तिरूकन्नपुरम के प्रभु के पास जाओ। आप वेदों के प्रथम कारण देव हैं, वैदिक उपवीत धारण करते हैं,संसार प्रेम से पूजा अर्पित करते हुए चरणों की प्रशस्ति गाता है। लौट कर हमारे ऊपर उनकी तुलसी माला का रज डाल दो। **1679**
विण्ड मलर् एल्लाम्⋆ ऊदि नी एन् पॆऱुदि⋆ अण्ड मुदल्वन्⋆ अमरर्गळ् एल्लारुम्⋆ कण्डु वणङ्गुम्⋆ कण्णपुरत्तॆम् पॆरुमान्⋆ वण्डु नरुन् तुळाय्⋆ वन्दूदाय् कोल् तुम्बी ! ॥३॥	हे भौंरा खिले फूलों पर मंड़राने से क्या मिलेगा ! अब हमारे तिरूकन्नपुरम के प्रभु के पास जाओ। आप ब्रह्मांड के देव हैं एवं सभी देवों से पूजित हैं। लौट कर हमारे ऊपर उनकी तुलसी माला का सुगंध डाल दो। **1680**
नीर् मलिगिन्ऱदोर्⋆ मीनाय् ओर् आमैयुमाय्⋆ शीर् मलिगिन्ऱदोर्⋆ शिङ्ग उरुवागि⋆ कार् मलि वण्णन्⋆ कण्णपुरत्तॆम् पॆरुमान्⋆ तार् मलि तण् तुळाय्⋆ ताळ्न्दूदाय् कोल् तुम्बी ! ॥४॥	हे भौंरा ! अब हमारे तिरूकन्नपुरम के प्रभु के पास जाओ। आप प्रलय में प्रकट होने वाले सुन्दर मछली हैं, समुद्र के कच्छप हैं, तथा पुराकाल के नरसिंह हैं। लौट कर हमारे ऊपर उनकी तुलसी माला का सुगंध डाल दो। **1681**
एरार् मलर् एल्लाम्⋆ ऊदि नी एन् पॆऱुदि⋆ पारार् उलगम् परव⋆ प्पॆरुङ्गडलुळ्⋆ कार् आमै आन⋆ कण्णपुरत्तॆम् पॆरुमान्⋆ तारार् नरुन् तुळाय्⋆ ताळ्न्दूदाय् कोल् तुम्बी ! ॥५॥	हे भौंरा सुन्दर सभी फूलों पर मंड़राने से क्या मिलेगा ! अब हमारे तिरूकन्नपुरम के प्रभु के पास जाओ। आप धरा को परिवृत्त किये हुए गहरे समुद्र में विशाल कच्छप के रूप में प्रकट होने वाले प्रभु हैं। लौट कर हमारे ऊपर उनकी तुलसी माला का सुगंध डाल दो। **1682**

मार्विल् तिरुवन्* वलन् एन्दु चक्करत्तन्* पारै प्पिळन्द* परमन् परञ्जोदि* कारिल् तिगळ* काया वण्णन् कदिर् मुडिमेल्* तारिल् नरुन् तुळाय्* ताळन्दूदाय् कोल् तुम्बी ! ॥६॥	हे भौंरा! प्रभु श्री को वक्षस्थल पर धारण किये हैं तथा दायें हाथ में तेजोमय चक्र पकड़े हैं। आपने धरा को ऊपर उठाया। आपका दिव्य स्वरूप कया फूल जैसा श्याम वर्ण का है। लौट कर हमारे ऊपर उनकी तुलसी माला का सुगंध डाल दो। **1683**
वामनन् कर्कि* मदुशूदन् मादवन्* तार् मन्नु* दाशरदियाय तडमार्वन्* कामन् तन् तादै* कण्णपुरत्तेम् पेरुमान्* ताम नरुन् तुळाय्* ताळन्दूदाय् कोल् तुम्बी ! ॥७॥	हे भौंरा ! अब हमारे तिरूकन्नपुरम के प्रभु के पास जाओ। आप वामन कल्कि मधुसूदन माधव एवं राजतिलक वाले दशरथ नन्दन राम हैं।आप विस्तृत वक्षस्थल वाले प्रेम के देवता काम के जनक हैं। लौट कर हमारे ऊपर उनकी तुलसी माला का सुगंध डाल दो। **1684**
नील्ल मलर्गळ्* नेंडु नीर् वयल् मरुङ्गिल्* शाल्ल मलर् एल्लाम्* ऊदादे* वाळरक्कर् काल्लन्* कण्णपुरत्तेम् पेरुमान् कदिर् मुडिमेल्* कोल्ल नरुन् तुळाय्* कोंण्डूदाय् कोल् तुम्बी ! ॥८॥	हे भौंरा नीले कुमुद एवं जलाशयों के फूलों पर मत मंड़राओ ! अब हमारे तिरूकन्नपुरम के प्रभु के पास जाओ। आप महान बलशाली राक्षसों के नाशकर्ता हैं। लौट कर हमारे ऊपर उनकी तुलसी माला का सुगंध डाल दो। **1685**
नन्दन् मदलै* निल्ल मङ्गै नल् तुणैवन्* अन्द मुदल्वन्* अमरर्गळ् तम् पेरुमान्* कन्दम् कमळ* काया वण्णन् कदिर् मुडिमेल्* कोंन्द् नरुन् तुळाय्* कोंण्डूदाय् कोल् तुम्बी ! ॥९॥	हे भौंरा! प्रभु नंदगोप के पुत्र एवं मधुर नप्पिनाय के साथी हैं। आप देवों के देव हैं, अंत की शुरूआत हैं, एवं सुगंधित कया फूल के श्याम वर्ण हैं। लौट कर हमारे ऊपर उनकी तुलसी माला का सुगंध डाल दो। **1686**
वण्डमरुम् शोलै* वयल् आलि नल् नाडन्* कण्ड शीर् वेंन्रि* क्कलियन् ऑलि मालै* कोंण्डल् निर वण्णन्* कण्ण पुरत्तानै* तोंण्डरोम् पाड* निनैन्दूदाय् कोल् तुम्बी ! ॥१०॥	हे भौंरा ! यह तमिल गीतमाला मेघ के श्याम वर्ण वाले तिरूकन्निपुरम प्रभु की प्रशस्ति में मधुमक्खी मंड़राते उपजाऊ बागों एवं खेतों से घिरे वयलआली के विजयी राजा कलियन ने गाये हैं। हम भक्तगन जब इसे गायें हमलोगों पर कृपा कर प्रभु की तुलसी माला का सुगंध डाल दो। **1687** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

75 तन्दै कालिल् (1688 - 1697)

तिरूकण्णपुरम 5

परकाल नायकी संध्या पश्चात भी उनके आगमन न होने पर निराश हो अपनी विरह सुनाती है।

तन्दै कालिल् विलङ्गर्* वन्दु तोन्रिय तोन्रल् पिन्* तमियेन् तन् शिन्दै पोयिट्टु* त्तिरुवरुळ् अवनिडै प्पेरुम् अळविरुन्देनै* अन्दि कावलन् अमुदुरु पशुङ्गदिर्* अवैशुड अदनोडुम्* मन्द मारुदम् वन मुलै तडवन्दु* वलिशेय्वदोळियादे ! ॥१॥	हमारा खोया हुआ मन प्रभु के साथ चला गया है जो पिता के पैरों की बेड़ी हटाने के लिये जन्म लिये। जब मैं उनकी कृपापूर्ण समय की प्रतीक्षा करती हूं तब रात का प्रहरी चांद की शीतल चांदनी हमको दग्ध करती है तथा मंद वायु हमारे उभरे उरोजों के ऊपर से बहकर निरंतर यातना देती है। 1688
मारि मा क्कडल् वळैवणर्किळैयवन्* वरै पुरै तिरुमार्बिल्* तारिन् आशैयिल् पोयिन नेञ्जमुम्* ताळन्ददोर् तुणै काणेन्* ऊरुम् तुञ्जिट्टु उलगमुम् तुयिन्रदु* ऑळियवन् विशुम्बियङ्गुम्* तेरुम् पोयिट्टु त्तिशैगळुम् मरैन्दन* शेय्वदोन्ररियेने ! ॥२॥	वक्षस्थल की तुलसी की चाह में सागर के शंख सा वर्ण वाले बलराम के छोटे भाई के पास मेरा मन चला गया एवं कभी नहीं लौटा। कोई संगी नहीं है सारा नगर एवं साथ में संसार सोता है। हाय ! सूर्य भी अपने को आकाश में भुला चुका है उसका रथ खो गया है।दिशायें लुप्त हो गयी हैं। हाय ! समझ में नहीं आता मैं क्या करूं ? 1689
आयन् मायमे अन्रि मर्रेन् कैयिल्* वळैगळुम् इरै निल्ला* पेयिन् आर् उयिर् उण्डिडुम् पिळ्ळै* नम् पॆण्णुयिरक्किरङ्गुमो* तूय मा मदि क्कदिर् शुड त्तुणैयिल्लै* इणै मुलै वेगिन्रदाल्* आयन् वेयिनुक्कळिगिन्रदुळ्ळमुम्* अञ्जेल् एन्बार् इलैये ! ॥३॥	कृष्ण की निष्ठुरता के सिवा हमारे हाथ पर कुछ टिकता नहीं, मेरे कंगन भी नहीं। क्या राक्षसी का प्राण पीने वाले को हम किशोरियों के जीवन के लिये कोई दया है क्या ? पूर्ण चांद की चांदनी हमें दग्ध करती है।हाय ! हमारा कोई सहाय नहीं है। हवा हमारे युगल उरोजों को जला रही है। गोपकिशोर की बंशी के लिये हमारा हृदय टूट रहा है। हाय ! कोई कहने वाला नहीं है 'डरो मत'। 1690
कयम् कॊळ् पुण् तलै क्कळिरुन्दु वॆन्दिरल्* कळल् मन्नर् पॆरुम् पोरिल्* मयङ्ग वॆण् शङ्गम् वाय्वैत्त मैन्दनुम्* वन्दिलन् मरि कडल् नीर्* तयङ्गु वॆण् तिरै त्तिवलै नुण् पनियॆन्नुम्* तळल् मुगन्दिळ मुलैमेल्* इयङ्गु मारुदम् विलङ्गिल् एन् आवियै* एनक्कॆन प्पॆरलामे ! ॥४॥	हाथी सवार योद्धाओं के घायल सिर को घुमाने वाली ध्वनि उत्पन्न करने वाले श्वेत शंख को अपने होठ पर रख कर बजाने वाले राजकुमार नहीं आ रहे हैं। हाय ! सागर का श्वेत फेन गर्म वाष्प को लेकर भी हमारे उरोजों के ऊपर से बहना बंद कर दे तो मैं जीवित रह सकती हूं। 1691

एळु मा मरम् तुळैपड च्चिलैवळैत्तु* इलङ्गैयै मलङ्गुवित्त आळियान्* नमक्करुळिय अरुळॊडुम्* पगल् एल्लै कळिगिन्ऱदाल्* तोळि ! नाम् इदर्कॆन् शॆय्दुम् तुणैयिल्लै* शुडर् पडु मुदुनीरिल्* आळ आळिगिन्ऱ आवियै अडुवदोर्* अन्दि वन्दडैगिन्ऱदे ! ॥५॥	चक्रधारी ने सात पेड़ों को वेध दिया एवं लंका को जला दिया। बहनों ! यही उनकी हमलोगों पर कृपा है। दिन का अंत हो रहा है हाय ! हम क्या कर सकते हैं हमारा कोई सहाय नहीं है। सूर्य सागर में डूब रहा है। हाय ! संध्या हमारे चंचल हृदय की हत्या के लिये आ गयी है। **1692**
मुरियुम् वॆण् तिरै मुदु कयम् तीप्पड* मुळङ्गळल् एरियम्बिन्* वरिगॊळ् वॆञ्जिलै वळैवित्त मैन्दनुम्* वन्दिलन् एन् शॆय्गोन्* एरियुम् वॆङ्गदिर् तुयिन्ऱदु* पावियेन् इणै नॆडुङ्गण् तुयिला* करिय नाळिगै ऊळियिल् पॆरियन* कळियुम् आऱ्ऱियेने ! ॥६॥	श्वेतफेन वाला सागर में आग लग चुकी है। हाय ! सुन्दर धनुष से अग्नि बाण छोड़ने वाले राजकुमार नहीं आये। हम क्या कर सकते हैं ? चमकता सूर्य सोने चला गया। हमारी सुन्दर बड़ी आंखें सोने को तैयार नहीं। मैं नहीं जानती युग समान लंबी रात कैसे कटेगी ! **1693**
कल्लङ्ग माक्कडल् कडैन्दडैत्तु* इलङ्गैयर् कोनदु वरैयागम् मलङ्ग* वॆञ्जमत्तडु शरम् तुरन्द* एम् अडिगळुम् वारानाल्* इलङ्गु वॆङ्गदिर् इळ मदि अदनॊडुम्* विडै मणियडुम्* आयन् विल्लङ्गल् वेयिनदोशैयुमाय्* इनि विळैवदॊन्ऱऱियेने ! ॥७॥	महान सागर का मंथन करने वाले ने सागर पर सेतु बनाकर राक्षसराज के पीड़ित हृदय पर अग्नि बाणों की वर्षा कर दी। हाय ! नहीं आये। सुकुमार चांद की शीतल किरणें, काले वृषभ की घंटियों की ध्वनि, तथा गोपकुमार की बंशी का धुन सब मिलकर हमारी हत्या करना चाहते हैं। पता नहीं आगे क्या होगा ? **1694**
मुळुदिव्वैयगम् मुऱै कॆड मऱैदलुम्* मुनिवनुम् मुनिवॆय्द* मळुविनाल् मन्नर् आरुयिर् वव्विय* मैन्दनुम् वारानाल्* ऒळुगु नुण् पनिक्कॊडुङ्गिय पेडैयै* अडङ्ग अञ्जिऱै कोलि* तळुवु नळ्ळिरुळ् तनिमैयिन् कडियदोर्* कॊडु विनै अऱियेने ! ॥८॥	जब सारा संसार धर्म विहीन हो गया एवं हमारे संन्यासी पिता गुस्सा हो गये तब हमारे राजकुमार ने फरसा से महान राजाओं का अंत कर दिया। हाय ! वे अभी आ नहीं रहे। रात के अंधेरे में ओस कणों से बचने के लिये हंसिनी हंस के पंखों के नीचे सिमट गयी है। अकेलापन से ज्यादा निष्ठुर और कुछ नहीं हो सकता। **1695**
कनञ्जॆय् मा मदिळ् कणपुरत्तवनॊडुम्* कनविनिल् अवन् तन्द* मनञ्जॆय् इन्बम् वन्दुळ् पुग वॆळ्गि* एन् वळै नॆग इरुन्देनै* शिनञ्जॆय् माल् विडै च्चिऱु मणि ओशै* एन् शिन्दैयै च्चिन्दुविक्कुम्* अनन्दल् अन्ऱिलिन् अरि कुरल्* पावियेन् आवियै अडुगिन्ऱदे ! ॥९॥	मजबूत ऊंची दीवारों वाले तिरूकन्नपुरम के प्रभु ने स्वप्न में जो हमारे हृदय को आह्लादित किया वहा कौंधता है एवं हमारा कंगन खिसक रहा है। गुस्सैल बड़े सांढ़ के गले की घंटी की आवाज हमारे विचारों को विखरा दे रही है। हाय ! आलसी अन्ऱिल पक्षी की कूक हमारे पापी मन को मार रही है। **1696**

वार् कॉळ् मॅन् मुलै मडन्दैयर्⋆ तडङ्ङडल् वण्णनै त्ताळ् नयन्दु⋆ आर्वत्ताल् अवर् पुलम्बिय पुलम्बलै⋆ अरिन्दु मुन् उरैशॅय्द⋆ कार् कॉळ् पैम् पॉळिल् मङ्गैयर् कावलन्⋆ कलिगन्रि ऑलि वल्लार्⋆ एर् कॉळ् वैगुन्द मानगर् पुक्कु⋆ इमैयवरॉडुम् कूडुवरे॥१०॥	वर्षा से बढने वाले बागों से घिरे मंगै के राजा कलकन्रि का यह तमिल पदों से बना गीतमाला सागर सा सलोने प्रभु के चरणों को प्राप्त करने वाली जूड़े वाली किशोरी की विरह को चित्रित करती है। जो इसे कंठ कर लेंगे वे दिव्य वैकुंठ में प्रवेश कर देवों के साथ रहेंगे। **1697** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

76 तोण्डीर् (1698 - 1707)

तिरूकण्णपुरम 6

तॊण्डीर्! उय्युम् वगै कण्डेन्⋆ तुळङ्गा अरक्कर् तुळङ्ग⋆ मुन् तिण् तोळ् निमिरच्चिलै वळैय⋆ च्चिरिदे मुनिन्द तिरुमार्वन्⋆ वण्डार् कून्दल् मलर् मङ्गै⋆ वडि क्कण् मडन्दै मा नोक्कम् कण्डाळ्⋆ कण्डु कॊण्डुगन्द⋆ कण्णपुरम् नाम् तॊळुदुमे॥१॥	भक्तों ! मुझे प्रगति का मार्ग पता है। अपने धनुष से अग्नि वर्षाते बाणों की बौछार कर युद्धक्षेत्र में साहसी राक्षसों को अंत करने वाले मंगलमय प्रभु की एक सुन्दर योजना है। श्रीदेवी एवं भूदेवी के साथ हर्ष पूर्वक सदा के लिये कन्नपुरम में बसने के लिये आ गये हैं। चलें आपकी पूजा करें। **1698**
पॊरुन्दा अरक्कर् वॆञ्जमत्तु⋆ प्पॊन्र अन्रु पुळ्ळूर्न्दु⋆ पॆरुन् तोळ् मालि तलै पुरळ⋆ प्पेर्न्द अरक्कर् तॆन्निलङ्गै⋆ इरुन्दार् तम्मैयुडन् कॊण्डु⋆ अङ्ङॊळिलार् पिलत्तु प्पुक्कॊळिप्प⋆ करुन्दाळ् शिलैगै क्कॊण्डानूर्⋆ कण्णपुरम् नाम् तॊळुदुमे॥२॥	राक्षसकुल के साथ युद्ध में आप ने गरूड़ की सवारी कर शक्तिशाली माली एवं अनेक भयानक राक्षसों के सिर धराशायी कर दिये। समुद्र से घिरे सुन्दर शहर लंका में महान धनुष के साथ प्रवेश कर बलशाली रावण का बध किया। अब आप कन्नपुरम में हैं। चलें आपकी पूजा करें। **1699**
वल्लियिडैयाळ् पॊरुट्टाग⋆ मदिळ् नीर् इलङ्गैयार् कोवै⋆ अल्लल् शॆय्दु वॆञ्जमत्तुळ्⋆ आट्रल् मिगुन्द आट्रलान्⋆ वल्लाळ् अरक्कर् कुलप्पावै वाड⋆ मुनि तन् वेळ्वियै⋆ कल्वि च्चिलैयाल् कात्तानूर्⋆ कण्णपुरम् नाम् तॊळुदुमे॥३॥	सुकुमारी लता सी पतली कमर वाली सीता के लिये आपने धनुष बाण से लंका नगर को जलाकर मिट्टी में मिला दिया। आपने विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा की तथा ताटका राक्षसी का नाश किया। कन्नपुरम चलें आपकी पूजा करें। **1700**
मल्लै मुन्नीर् अदर्पड⋆ वरि वॆञ्जिलै काल् वळैवित्तु⋆ कॊल्लै विलङ्गु पणिशॆय्य⋆ क्कॊडियोन् इलङ्गै पुगल्दु⋆ तॊल्लै मरङ्गळ् पुगप्पॆय्दु⋆ तुवलै निमिर्न्दु वानणव⋆ कल्लाल् कडलै अडैत्तानूर्⋆ कण्णपुरम् नाम् तॊळुदुमे॥४॥	अपने बाणों से भीषण आग वर्षाकर सागर को दो भाग में बांट दिया। लंका में सीधे प्रवेश करने के लिये बन्दर जाति से समुद्र के ऊपर सेतु निर्माण कराया। लकड़ी के कुन्दे फेंकने से पानी छलक कर ऊंचा चला गया तब उसके ऊपर पत्थर डालकर सेतु बनाया। कन्नपुरम चलें आपकी पूजा करें। **1701**
आमैयागि अरियागि⋆ अन्नम् आगि⋆ अन्दणर् तम् ओममागि ऊळियाय्⋆ उलगु शूळ्न्द नॆडुम् पुणरि⋆ शेम मदिळ् शूळ् इलङ्गैक्कोन्⋆ शिरमुम् करमुम् तुणित्तु⋆ मुन् कामन् पयन्दान् करुदुमूर्⋆ कण्णपुरम् नाम् तॊळुदुमे॥५॥	हे मन ! पुरा काल के कच्छप नरसिंह हंस स्वरूप वाले प्रभु वैदिक अग्नि यज्ञ एवं चारों युग के प्रभु हैं। समुद्र से घिरे लंका में प्रवेश कर आपने राक्षसराज के मस्तक एवं भुजाओं को काट गिराया। आप मदन के पिता हैं एवं कन्नपुरम में रहते हैं। चलें आपकी पूजा करें। **1702**

वरुन्दादिरुनी मड नॅञ्जे* नम्मेल् विनैगळ् वारा* मुन् तिरुन्दा अरक्कर् तॅन्निलङ्गै* शॅन्दी उण्ण च्चिवन्दोंरुनाळ्* पॅरुन्दोळ् वाणर्करुळ् पुरिन्दु* पिन्नै मणाळन् आगि* मुन् करुन्दाळ् कळिरॉन्रॉशित्तानूर्* कण्णपुरम् नाम् तॉळुदुमे॥६॥	दलित मन ! चिंता न करो। कर्म हमें कोई भी क्षति नहीं पहुंचा सकेंगे। पुरा काल में महान धनुष के अग्नि बाणों से आपने लंका नगर को जला दिया। आपने बाणासुर पर कृपा की, नप्पिनाय के साथ व्याह किया, महज घूंसे की मार से हाथी को चकनाचूर कर दिया।आप कन्नपुरम में रहते हैं। चलें आपकी पूजा करें। **1703**
इलैयार् मलर्प्पूम् पॉय्गैवाय्* मुदलै तन्नालडर्प्पुण्डु* कॉलैयार् वेळम् नडुक्कुट्ट क्कुलैय* अदनुक्करुळ् पुरिन्दान्* अलैनीर् इलङ्गै त्तशक्किरीवर्कु* इळैयोर्करशै अरुळि* मुन् कलैमा च्चिलैयाल् एय्दानूर्* कण्णपुरम् नाम् तॉळुदुमे॥७॥	भक्त गजेन्द्र कमल सरोवर में अनभिज्ञ प्रवेश कर गया। ग्राह से पकड़ लिये जाने पर वह रोया एवं प्रभु की कृपा से बच सका। आपने लंका का राज्य छोटे भाई विभीषण को दे दिया। आप कन्नपुरम में रहते हैं। चलें आपकी पूजा करें। **1704**
मालाय् मनमे ! अरुन्दुयरिल्* वरुन्दादिरुनी वलिमिक्क* काल्लार् मरुदुम् काय् शिनत्त कळुदुम्* कदमा क्कळुदैयुम्* माल्लार् विडैयुम् मदगरियुम्* मल्लरुयिरुम् मडिवित्तु* काल्लाल् शगडम् पाय्न्दानूर्* कण्णपुरम् नाम् तॉळुदुमे॥८॥	दलित मन ! गहरी चिंता में न रहो।मरूदु वृक्ष को उखाड़ने वाले, राक्षसी पूतना, कोधी केशिन, गदहा, सात वृषभ, मदमत्त हाथी, मल्ल योद्धाओं का नाश करने वाले तथा पैरों से गाड़ी को नष्ट करने वाले प्रभु कन्नपुरम में रहते हैं। चलें आपकी पूजा करें। **1705**
कुन्राल् मारि पळुदाक्कि* क्कॉडियेर् इडैयाळ् पॉरुट्टाग* वन्दाळ् विडैयेळन्रडर्त्त* वानोर् पॅरुमान् मामायन्* शॅन्रान् तूदु पञ्जवर्क्काय्* तिरि काल् शगडम् शिनमळित्तु* कन्राल् विळङ्गाय् एरिन्दानूर्* कण्णपुरम् नाम् तॉळुदुमे॥९॥	देवों के देव, पर्वत उठाकर वर्षा बन्द करने वाले आश्चर्य मय देव, कृश कटि नप्पिनाय के लिये सात वृषभों का नाशकरने वाले, राजाओं के लिये दूत बनने वाले, पैरों से गाड़ी को नष्ट करने वाले, बछड़े को ताड़ पेड़ पर पटकने वाले प्रभु कन्नपुरम में रहते हैं। चलें आपकी पूजा करें। **1706**
करुमा मुगिल् तोय् नॅडु माड* क्कण्णपुरत्तॅम् अडिगळै* तिरुमा मगळाल् अरुळ्मारि* शॅळुनीर् आलि वळ नाडन्* मरुवार् पुयल् कै क्कलिगन्रि* मङ्गै वेन्दन् ऑलि वल्लार्* इरुमा निलत्तुक्करशागि* इमैयोर् इरैञ्ज वाळ्वारे॥१०॥	यह मधुर तमिल पदों की माला बादल को छूने वाले अटारियों से घिरे कन्नपुरम के प्रभु की प्रशस्ति में है जिसे भाग्यशाली मंगै क्षेत्र के उदार राजा अलि नाडन कलकन्रि ने रचा है। जो इन पदों को याद कर लेंगे वे देव गन से पशंसित धरा पर राजा की तरह रहेंगे। **1707** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

77 वियमुडै (1708 - 1717)

तिरूकण्णपुरम 7

पाशुर	अर्थ
‡वियमुडै विडैयिनम्⋆ उडैदर मड मगळ्⋆ कुयमिडै तड वरै⋆ अगलम् अदुडैयवर्⋆ नयमुडै नडैयनम्⋆ इळैयवर् नडै पयिल्⋆ कयमिडै कणपुरम्⋆ अडिगळ् तम् इडमे॥१॥	सात वृषभों का नाश कर पर्वत की तरह उरोज वाली गोप किशोरी नप्पिनाय का आलिंगन करने वाले प्रभु कन्नपुरम में रहते हैं जहां सरोवरों के हंस युवतियों की आकर्षक चाल सीखते हैं। **1708**
इणै मलि मरुदिनोंडु⋆ एरुदिर् इगल् शेय्दु⋆ तुणै मलि मुलैयवळ्⋆ मणमिगु कलवियुळ्⋆ मण मलि विळविनोंडु⋆ अडियवर् अळविय⋆ कण मलि कणपुरम्⋆ अडिगळ् तम् इडमे॥२॥	मरूदु के वृक्षों को ऊखाड़ने वाले एवं कंचुकी वाली नप्पिनाय से समागम के आनंद हेतु सात वृषभों के साथ युद्ध करने वाले प्रभु कन्नपुरम में रहते हैं जहां उत्स्व के दिनों में भक्तों का तांता लगा रहता है। **1709**
पुयलुरु वरै मळै⋆ पॊळिदर मणि निरै⋆ मयलुर् वरै कुडै⋆ एडुविय नेंडियवर्⋆ मुयल् तुळर् मिळै मुयल् तुळ⋆ वळ विळैवयल्⋆ कयल् तुळु कणपुरम्⋆ अडिगळ् तम् इडमे॥३॥	तूफान से अचेत होती गायों की रक्षा हेतु पर्वत उठाने वाले प्रभु पहाड़ों से घिरे कन्नपुरम में रहते हैं जहां कृषक के हिसुआ से उकसाये हुए खरगोश अपना मांद से बाहर एवं खेतों की कयल मछलियां आनंद में नाचते हैं। **1710**
एदलर् नगैशेय⋆ इळैयवर् अळै वेंणय⋆ पोदु शेय्दमरिय⋆ पुनिदर् नल् विरै⋆ मलर् कोदिय मदुगरम्⋆ कुलविय मलर् मगळ्⋆ कादल्शेय् कणपुरम्⋆ अडिगळ् तम् इडमे॥४॥	मक्खन चुराने के लिये कोसे एवं हंसे जाने वाले संपूर्ण सत्व संपन्न प्रभु कन्नपुरम में रहते हैं जहां मधुमक्खी लिपटे कमल वाली वाला प्रेम से आपके साथ रहती है। **1711**
तॊण्डरुम् अमररुम्⋆ मुनिवरुम् तॊळुदेळ⋆ अण्डमोंडगल् इडम्⋆ अळन्दवर् अमर् शेय्दु⋆ विण्डवर् पड⋆ मदिळ् इलङ्गै मुनॆरियॆळ⋆ कण्डवर् कणपुरम्⋆ अडिगळ् तम् इडमे॥५॥	युद्ध कर लंका को धूल धूसरित करने वाले एवं धरा तथा आकाश को दो कदमों में मापने वाले प्रभु कन्नपुरम में रहते हैं जहां देवों एवं भक्तों की टोलियां पूजा एवं स्वयं की उन्नति हेतु भीड़ करते हैं। **1712**
मळुवियल् पडैयुडै⋆ अवनिडम् मळै मुगिल्⋆ तळुविय उरुविनर्⋆ तिरुमगळ् मरुविय⋆ कॊळुविय शेळु मलर्⋆ मुळुशिय परवै पण्⋆ एळुविय कणपुरम्⋆ अडिगळ् तम् इडमे॥६॥	दिव्य आभा वाले श्री को धारण किये मेघ के वर्ण वाले प्रभु स्थायी रूप से कन्नपुरम में रहते हैं जहां सर्वत्र प्रस्फुटित कमल में मधुमक्खी पन्न धुन का गीत गाते हैं। **1713**

परिदियॊडणि मदि⋆ पनिवरै दिशै निलम्⋆ एरिदियॊडॆनविन⋆ इयल्विनर् शॆलविनर्⋆ शुरुदियॊडरु मरै⋆ मुरै शॊल्लुम् अडियवर्⋆ करुदिय कणपुरम्⋆ अडिगळ् तम् इडमे॥७॥	सूर्य चंद्र पर्वत दिशा धरा एवं अग्नि को बनाने एवं संचालित करने वाले प्रभु कन्नपुरम में रहते हैं जहां भक्तगण वेदों एवं उपनिषदों के पाठ करने हेतु जमा होते हैं। **1714**
पडि पुल्गुम् अडियिणै⋆ पलर् तॊळ मलर् वैगु⋆ कॊडि पुल्गु तडवरै⋆ अगलमदुडैयवर्⋆ मुडि पुल्गु नॆडुवयल्⋆ पडै शॆल अडि मलर्⋆ कडि पुल्गु कणपुरम्⋆ अडिगळ् तम् इडमे॥८॥	पैर से पृथ्वी को मापने वाले अपने पर्वतनुमा वक्षस्थल पर कमल समान लक्ष्मी को धारण करने वाले प्रभु कन्नपुरम में रहते हैं जहां पौधों के प्रत्यारोपण हेतु जोते हुए खेत से कमल का सुगंध आता है। **1715**
पुलमनु मलर्मिशै⋆ मलर् मगळ् पुणरिय⋆ निलमगळ् एन इन⋆ मगळिर्गळ् इवरॊडुम्⋆ वलमनु पडैयुडै⋆ मणि वणर् निदि कुवै⋆ कलमनु कणपुरम्⋆ अडिगळ् तम् इडमे॥९॥	मणि के वर्ण वाले प्रयोग मुद्रा में चक्र धारण किये हुए पार्श्व में श्रीदेवी एवं भूदेवी के साथ खड़े प्रभु कन्नपुरम में रहते हैं जहां धन संपति ढ़ोने वाले नाव किनारों पर भीड़ किये रहते हैं। **1716**
मलि पुगळ् कणपुरमुडैय⋆ एम् अडिगळै⋆ वलिगॊळ् मदिळयल्⋆ वयलणि मङ्गैयर्⋆ कलियन तमिळ् इवै⋆ विळुमिय विशैयिनॊडु⋆ ऑलि शॊल्लुम् अडियवर्⋆ उऱुदुयर् इलरे॥१०॥	पत्थर की दीवारों एवं उपजाऊ खेतों से घिरे मंगै के राजा कलियन ने पूज्य कन्नपुरम प्रभु की प्रशस्ति में तमिल पदों को रचा है। संगीत के धुन पर इसे गाने वाले भक्तों के कर्म नहीं रहेंगे। **1717** तिरुमङ्गैयाळवार तिरुवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः **78 वानोर् अळवुम् (1718 - 1727)** **तिरूकण्णपुरम 8**	
वानोर् अळवुम् मुदु मुन्नीर्⋆ वळरन्द कालम्⋆ वलियुरुविल् मीनाय् वन्दु वियन्दुय्यक्कोंण्ड⋆ तण् तामरै क्कण्णन्⋆ आना उरुविलान् आयन्⋆ अवनै अम्मा विळै वयलुळ्⋆ कानार् पुऱविल् कण्णपुरत्तु⋆ अडियेन् कण्डु कोंण्डेने॥१॥	पुरा काल में प्रलय जल आकाश तक ऊंचा जाकर धरा को जल मग्न कर दिया। मत्स्य के रूप में प्रभु ने जगत की रक्षा की। आप सौम्य राजीवनयन गोपकुमार अजेय कृष्ण हैं।मैं जानता हूं आप कन्नपुरम में हैं जो उपजाऊ खेतों एवं घने जंगलों से घिरा है। **1718**
मलङ्गु विलङ्गु नेंडु वेंळ्ळम् मऱुग⋆ अङ्गोर् वरै नट्टु⋆ इलङ्गु शोदियार् अमुदम्⋆ एय्दुम् अळवोर् आमैयाय्⋆ विलङ्गल् तिरिय त्तडङ्गडलुळ्⋆ शुमन्दु किडन्द वित्तगनै⋆ कलङ्गल् मुन्नीर् क्कण्णपुरत्तु⋆ अडियेन् कण्डु कोंण्डेने॥२॥	जब प्रभु ने अमृत मंथन के लिये मंदराचल को स्थापित किया तो समुद्र में उथल पुथल मच गया एवं इसके जीव कूदने लगे।पर्वत को धंसने या विस्थापित होने से बचाने के लिये आप कच्छप बनकर इसे आपने अपने पीठ पर संभाला। मैं जानता हूं आप कन्नपुरम में हैं जो आक्रामक सागर के किनारे है। **1719**
पारार् अळवुम् मुदु मुन्नीर्⋆ परन्द कालम्⋆ वळै मरुप्पिन् एरार् उरुवत्तेनमाय्⋆ एडुत्त आऱ्ल् अम्मानै⋆ कूरारल् इरै करुदि⋆ क्कुरुगु पाय क्कयल् इरियुम्⋆ कारार् पुऱविन् कण्णपुरत्तु⋆ अडियेन् कण्डु कोंण्डेने॥३॥	एक बार जब पानी ऊपर उठकर धरा को डूबो दिया तब प्रभु ने धरा को उठाने भर मजबूत एवं घुमावदार दांतों के साथ वराह के रूप में अवतार लिया। मैं जानता हूं आप कन्नपुरम में हैं जहां वर्षा से भरने वाले जलाशयों में तेज चोंच के जलपक्षी इधर उधर घूमते अरल मछली पर घात करते हैं। **1720**
उळैन्द अरियुम् मानिडमुम्⋆ उडनाय् त्तोन्ऱ ओंन्ऱुवित्तु⋆ विळैन्द शीऱ्म् विण् वेंदुम्ब⋆ वेऱोन् अगलम् वेंञ्जमत्तु⋆ पिळन्दु वळैन्द उगिरानै⋆ प्पेरुन् तण् शेंन्नेल् कुलै तडिन्दु⋆ कळञ्जेंय् पुऱविल् कण्णपुरत्तु⋆ अडियेन् कण्डु कोंण्डेने॥४॥	प्रभु तब एक ही भयानक स्वरूप में साथ मिले हुए सिंह एवं आदमी बनकर आये जिनके क्रोध को देखकर देवगन भी डर गये। निर्दयी हिरण्य को पकड़ कर आपने अपने तेज पंजो से उसकी छाती को चीर दिया। मैं जानता हूं आप कन्नपुरम में हैं जहां चारों तरफ उपजाऊ धान के खेत हैं। **1721**
तोंळुनीर् वडिविल् कुऱळ् उरुवाय्⋆ वन्दु तोन्ऱि मावलिवाल्⋆ मुळुनीर् वैयम् मुन् कोंण्ड⋆ मूवा उरुविन् अम्मानै⋆ उळुनीर् वयलुळ् पोंन् किळैप्प⋆ ओंरुबाल् मुल्लै मुगैयोडुम्⋆ कळुनीर् मलरुम् कण्णपुरत्तु⋆ अडियेन् कण्डु कोंण्डेने॥५॥	सम्मानीय वैदिक बटु के स्वरूप में शाश्वत प्रभु वामन बन कर माबली के पास गये एवं उससे धरा तथा सागर ले लिया। मैं जानता हूं आप कन्नपुरम में हैं जो उपजाऊ खेतों एवं बागों से घिरा है तथा जहां मुलै करूमुंगील एवं सनकळुनीर बहुतायत में खिलते हैं। **1722**

वडिवाय् मऴुवे पडैयाग⋆ वन्दु तोन्रि मूवॆऴुगाल्⋆ पडियार् अरशु कळैगट्ट⋆ पाळियानै अम्मानै⋆ कुडिया वण्डु कॊण्डुण्ण⋆ क्कोल नीलम् मट्टुगुक्कुम्⋆ कडियार् पुऱविल् कण्णपुरत्तु⋆ अडियेन् कण्डु कॊण्डेने॥६॥	सर्वशक्तिमान प्रभु तीक्ष्ण फरसा फहराते हुए धरा के इक्कीस राजाओं का अंत कर दिया। मैं जानता हूं आप कन्नपुरम में हैं जहां भौंरे अमृत से सुगंधित जलाशय में बढ़ते नीले कमल पर मंड़राते है। **1723**
वैयम् एल्लाम् उडन् वणङ्ग⋆ वणङ्गा मन्ननाय् त्तोन्रि⋆ वॆय्य शीट्ट क्कडियिलङ्गै⋆ कुडिगॊण्डोड वॆञ्जमत्तु⋆ शॆय्द वॆम्बोर् नम्बरनै⋆ च्चॆंऴुन् तण् कानल् मण नाऱुम्⋆ कैदै वेलि क्कण्णपुरत्तु⋆ अडियेन् कण्डु कॊण्डेने॥७॥	नम्र गुणों के नहीं झुकने वाले राजा के स्वरूप वाले प्रभु ने संरक्षित लंका पर कोधपूर्वक चढ़ाई कर घमासान युद्ध में राक्षसों को भगा दिया। मैं जानता हूं आप कन्नपुरम में हैं जहां के उपजाऊ खेत सर्वत्र सुगंध विखेरते खजूर के पेड़ों से घिरे हैं। **1724**
ऒट्टै क्कुऴैयुम् नाञ्जिलुम्⋆ ऒरुबाल् तोन्ऱ त्तान् तोन्रि⋆ वॆट्टि त्तोळिलार् वेल् वेन्दर्⋆ विण्बाल् शॆल्ल वॆञ्जमत्तु⋆ शॆट्ट कॊट्ट त्तोळिलानै⋆ च्चॆन्दी मून्ऱुम् इल्लिरुप्प⋆ कट्ट मऱैयोर् कण्णपुरत्तु⋆ अडियेन् कण्डु कॊण्डेने॥८॥	एक कान में कुंडल तथा दूसरे में हल धारण किये हुए प्रभु ने धराधाम से महान राजाओं को स्वर्ग भेज दिया। मैं जानता हूं आप कन्नपुरम में हैं जहां हर घर में वैदिक ऋषिगन तीन अग्नि प्रज्वलित करते हैं। **1725**
तुवरि क्कनिवाय् निल मङ्गै⋆ तुयर् तीर्न्दुय्य प्पारदत्तुळ्⋆ इवरित्तरशर् तडुमाऱ⋆ इरुळ् नाळ् पिऱन्द अम्मानै⋆ उवरियोदम् मुत्तुन्द⋆ ऒरुबाल् ऒरुबाल् ऒण् शॆन्नॆल्⋆ कवरि वीशुम् कण्णपुरत्तु⋆ अडियेन् कण्डु कॊण्डेने॥९॥	बैर के समान होंठ वाले भू देवी को भार मुक्त करने के लिये प्रभु ने अंधरी कृष्णाष्टमी की रात को जन्म लिया तथा भारत युद्ध करा के आतातायी राजाओं का अंत किया। मैं जानता हूं आप कन्नपुरम में हैं जहां एक तरफ सागर मोती जमा करता है तो दूसरी ओर हवा धान की बालियों के चंवर डुलाते हैं। **1726**
मीनोडामै केळल् अरि कुऱळाय्⋆ मुन्नुम् इरामनाय् त्तानाय्⋆ पिन्नुम् इरामनाय् त्तामोदरनाय्⋆ क्कर्कियुम् आनान् तन्नै⋆ कण्णपुरत्तडियन्⋆ कलियन् ऒलिशॆय्द⋆ तेनार् इन् शॊल् तमिऴ् मालै⋆ शॆप्प प्पावम् निल्लावे॥१०॥	दस तमिल अमृत पदों की इस माला में भक्त कलियन ने कन्नपुरम के प्रभु की प्रशस्ति गायी है जो मत्स्य कछुआ वराह नरसिंह वामन प्रशुराम बलराम कोदंडराम कृष्ण बनकर आये तथा कल्कि रूप में भी आयेंगे। जो इसे याद कर लेंगे वे दुष्कर्मो से मुक्त हो जायेंगे। **1727** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

79 कैमानम् (1728 - 1737)

तिरूक्कण्णपुरम 9

कैम् मान मद यानै* इडर् तीर्त्त करु मुगिलै* मैम् मान मणियै* अणि कॊळ् मरगदत्तै* एम्मानै एम्बिरानै ईशनै* एन् मनत्तुळ् अम्मानै* अडियेन् अडैन्दुय्न्दु पोनेने ॥१॥	हाथी को आपदा से बचाने वाले घनश्याम प्रभु अमूल्य मणि एवं पन्ना हैं। आप हमारे प्रभु, नाथ, एवं ब्रह्यांड के नाथ हैं। आप हमारे हृदय में भी रहते हैं। आपको पाकर हमारी आत्मा का उत्कर्ष हुआ है। **1728**
तरु मान मळै मुगिलै* प्पिरियादु तन्नडैन्दार्* वरु मानम् तविर्क्कुम्* मणियै अणियुरुविल्* तिरुमालै अम्मानै* अमुदत्तै क्कडर् किडन्द पॅरुमानै* अडियेन् अडैन्दुय्न्दु पिळैत्तेने ॥२॥	वर्षा के मेघ समान प्रभु उदार कल्पतरू हैं जो भक्तों के अड़चन को दूर करते हैं।आप श्याम मणि, सुन्दर तिरूमल, हमारे नाथ, अमृत, एवं सागर में सोने वाले प्रभु हैं। आपको पाकर हमारी आत्मा का उत्कर्ष हुआ है। **1729**
विडैयेळ् अन्ऱडर्त्तु* वॅगुण्डु विलङ्गल् उऱ* पडैयाल् आळि तट्ट* परमन् परञ्जोदि* मडैयार् नीलम् मल्गुम् वयल् शूळ्* कण्णपुरम् ऑन्– ऱडैयानुक्कु* अडियेन् ऑरुवर्क्कुरियेनो ॥३॥	पुराकाल में प्रभु ने सात गुस्सैल वृषभों का नाश किया। बन्दरों की सेना एकत्र कर आपने समुद्र की खाड़ी पर सेतु का निर्माण किया। आप तेजोमय हैं। आप उपजाऊ खेतों तथा नीले कमल के जलाशयों वाले कन्नपुरम के निवासी हैं। आपके भक्त बनने के बाद क्या दूसरे के सामने हम झुक सकेंगे ? **1730**
मिक्कानै* मऱैयाय् विरिन्द विळक्कै* एन्नुळ् पुक्कानै* प्पुगळ् शेर् पॊलिगिन्ऱ पॊन्मलैयै* तक्कानै क्कडिगै* त्तडङ्गुन्ऱिन्मिशै इरुन्द* अक्कार क्कनियै* अडैन्दुय्न्दु पोनेने ॥४॥	ज्योर्तिमय पारलौकिक प्रभु वेद के रूप में हैं।हमारे हृदय के नाथ हैं।पूज्य सुनहले चमकते पर्वत हैं। आप मधुर फल हैं जो कडिगै पर्वत पर रहते हैं। आपको पाकर हमारी आत्मा का उत्कर्ष हुआ है। **1731**
वन्दाय् एन् मनत्ते* वन्दु नी पुगुन्द पिन्नै* एन्दाय्! पोय् अऱियाय्* इदुवे अमैयादो* कॊन्दार् पैम् पॊळिल् शूळ्* कुडन्दै क्किडन्दुगन्द मैन्दा* उन्नै एन्ऱुम्* मऱवामै प्पॆट्रेने ॥५॥	प्रभु आये और हमारे हृदय में बस गये। अब आप बाहर निकलना जानते नहीं। यह क्या हमारा सौभाग्य नहीं है ? उपजाऊ बागों से घिरे तिरूकुडन्दै में आप आनंद से सोये हैं।आपको कभी न भूलने वाली कृपा हमें प्राप्त है। **1732**
एञ्जा वॅन्नरगत्तु* अळुन्दि नडुङ्गुगिन्ऱेर्कु* अञ्जेल् एन्ऱडियेनै* आट्कॊळ्ळ वल्लानै* नॆञ्जे! नी निनैयादु* इऱैप्पॊळुदुम् इरुत्ति कण्डाय्* मञ्जार् माळिगै शूळ्* वयलालि मैन्दनैये ॥६॥	मैं कठोर घोर नरक में था। आप आये और बोले ‘डरो नहीं’ और हमें अपनी सेवा में ले लिया। हे मन ! एक क्षण भी कभी बादल छूते महलों से घिरे वयलालि के प्रभु को मत भूलो। **1733**

पॆद्रार् पॆद्रॊळिन्दार्⋆ पिन्नुम् निन्ऱडियेनुक्कु⋆ उद्रानाय् वळर्त्तु⋆ एन्नुयिर् आगि निन्ऱानै⋆ मुद्रा मामदि कोळ् विडुत्तानै⋆ एम्मानै⋆ एत्ताल् यान् मऱक्केन्⋆ इदु शॊल्लॆन् एळै नॆन्जे ! ॥७॥	क्षीण हृदय! हमारे पिता माता हमारा जन्म देकर चले गये।तुदपरांत प्रभु ही हमारे एकमात्र संबधी हैं।आपने हमारा पालन पोषण किया एवं हमारे आत्मीय हो गये। आपने चंद्र को क्षय के शाप से मुक्त किया। बताओ अब कैसे मैं आप को भूंलू ? **1734**
कद्रार् पद्ऱुक्कुम्⋆ पिऱवि प्पॆरुङ्गडले⋆ पद्रा वन्दडियेन्⋆ पिऱन्देन् पिऱन्द पिन्नै⋆ वद्रा नीर् वयल् शूळ्⋆ वयल् आलि अम्मानै प्पॆद्रेन्⋆ पॆद्ऱुवुम्⋆ पिऱवामै पॆद्रेने॥८॥	विद्वानों के प्रति बिना कोई अनुराग के अज्ञान के महान समुद्र में मेरा जन्म हुआ।पुनः दुबारे जन्म होने पर वयलाली के प्रभु की कृपा से मैं पुनर्जन्म से मुक्त हो गया हूं। **1735**
कण्णार् कण्णपुरम्⋆ कडिगै कडि कमळुम्⋆ तण्णार् तामरै शूळ्⋆ तलैच्चङ्ग मेळिशैयुळ्⋆ विण्णोर् नाण्मदियै⋆ विरिगिन्ऱ वॆञ्जुडरै⋆ कण्णार क्कण्डु कॊण्डु⋆ कळिक्किन्ऱदिङ्गॆन्ऱुगॊलो॥९॥	मेरे प्रभु सुन्दर कण्णपुरम, कडिगै, शीतल सुगंधित कमल वाले पश्चिमी तलैच्चंग नाण्मदियम में रहते हैं जहां देवगन आपकी प्रशस्ति उगते सूर्य एवं चांद की तरह करते हैं। सबों को मैं यहां कैसे एकसाथ अपने हृदय की संतुष्टि भर देखूंगा ? **1736**
शॆरु नीर् वेल् वलवन्⋆ कलिगन्ऱि मङ्गैयर् कोन्⋆ करु नीर् मुगिल् वण्णन्⋆ कण्ण पुरत्तानै⋆ इरु नीरिन् तमिळ्⋆ इन्निशै मालैगळ् कॊण्डु तॊण्डीर्⋆ वरु नीर् वैयमुय्य⋆ इवै पाडि आडुमिने॥१०॥	जल कुमुद के श्याम वर्ण वाले कन्नपुरम के प्रभु की प्रशस्ति तेज भाला वाले मंगै के राजा कलकन्रि ने भावनापूर्ण मधुर तमिल पदों की इस गीतमाला से की है। भक्त जब इसे गाकर नाचें तो धरा को खुशी से भर जाने दो। **1737** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

80 वण्डार् (1738-1747)

तिरूक्कण्णपुरम् 10

‡वण्डार् पू मामलर् मङ्गै⋆ मण नोक्कम् उण्डाने⋆ उन्नै उगन्दुगन्दु⋆ उन् तनक्के तॊण्डानेर्कु⋆ एन् शॆय्गिन्राय् शॊल्लु⋆ नाल्वेदम् कण्डाने⋆ कण्णपुरत्तुरै अम्माने ! ॥१॥	मधुमक्खी मंडराते कमल वाली लक्ष्मी के मंगलमयी दृष्टि से आनंद लेने वाले, वेदों को प्रकट कराने वाले, कन्नपुरम में रहने वाले, आपमें स्थित रह कर बहुत तरह से विजयी होने का अनुभव करते हुए हमारा हृदय आपकी सेवा अकेले करना चाहता है। विनती है, बतायें हमारे लिये क्या सोंचा है आपने ? 1738
पॆरु नीरुम् विण्णुम्⋆ मलैयुम् उलगेळुम्⋆ ऒरु तारा निन्नुळ् ऒडुक्किय⋆ निन्नै अल्लाल् वरु देवर् मट्रुळर् एन्रु⋆ एन्मनत्तिरैयुम् करुदेन् नान्⋆ कण्णपुरत्तुरै अम्माने ! ॥२॥	कन्नपुरम में रहने वाले प्रभु! सागर आकाश पर्वत सातों द्वीप सबों को एक क्षण में आप निगलकर अपने भीतर रख लिया। मेरा हृदय थोड़ा सा भी दूसरे देव जो हमारे सामने प्रकट होते हैं उनपर नहीं टिकता। मैं केवल आपको चाहता हूं। 1739
मट्रुम् ओर् दॆय्वम् उळदॆन्रु⋆ इरुप्पारो– डुट्रिलेन्⋆ उट्रदुम्⋆ उन्नडियार्क्कडिमै⋆ मट्रॆल्लाम् पेशिलुम्⋆ निन् तिरुवॆट्टॆळुत्तुम् कट्रु⋆ नान् कण्णपुरत्तुरै अम्माने ! ॥३॥	कन्नपुरम में रहने वाले प्रभु! जो दूसरे देवों के पास जाते हैं हमें उनसे कोई सवंध नहीं है। अष्टाक्षर मंत्र के सभी व्याखानोंको सुनने से हमने आपके भक्तों की सेवा सीखी है। 1740
पॆण्णानाळ्⋆ पेर् इळङ्गॊङ्गैयिनार् अळल्पोल्⋆ उण्णा नञ्जुण्डुगन्दायै⋆ उगन्देन् नान्⋆ मण्णाळा ! वाळ् नॆडुङ्गण्णि⋆ मदु मलराळ् कण्णाळा⋆ कण्णपुरत्तुरै अम्माने ! ॥४॥	भूदेवी एवं श्रीदेवी के प्रभु ! कन्नपुरम के प्रभु! सुन्दरी आया के छद्म वेष वाली राक्षसी के स्तन के भयानक विष पीने में आनंदित होने वाले प्रभु ! हमारा हृदय आप से प्रफुल्लित हो उठा है। 1741
पॆट्रारुम् शुट्रमुम्⋆ एन्रिवै पेणेन् नान्⋆ मट्रारुम् पट्रिलेन्⋆ आदलाल् निन्नडैन्देन्⋆ उट्रान् एन्रुळ्ळत्तु वैत्तु⋆ अरुळ् शॆय् कण्डाय्⋆ कट्रार् शेर्⋆ कण्णपुरत्तुरै अम्माने ! ॥५॥	विद्वानों लोग जहां रहते हैं उस कन्नपुरम के प्रभु! हमें माता पिता तथा संबंधियों से कोई आकर्षण नहीं है। न तो हमारे मित्र हैं। आपके पास अकेला आया हूं। अतः अवश्य आप हमें अपनाने की कृपा करें। 1742
एत्ति उन् शेवडि⋆ एण्णि इरुप्पारै⋆ पार्त्तिरुन्दङ्गु⋆ नमन् तमर् पट्रादु⋆ शोत्तम् नाम् अञ्जुदुम् एन्रु⋆ तॊडामै नी कात्ति पोल्⋆ कण्णपुरत्तुरै अम्माने ! ॥६॥	कन्नपुरम के प्रभु! भक्तगन सदा आपके चरणाविन्द की प्रशस्ति गाते हैं तथा ध्यान करते हैं। जब यमदूत उनको ले जाने के लिये पास आते हैं तो डर से नमस्कार कर लौट जाते हैं। क्या आप उनके चैतन्य के अभिभावक नहीं हैं ? 1743

वॆळ्ळै नीर् वॆळ्ळत्तु⋆ अणैन्द अरवणै मेल्⋆ तुळ्ळु नीर् मॆळ्ळ⋆ तुयिन्ऱ पॆरुमाने⋆ वळ्ळले ! उन् तमरक्कॆन्ऱुम्⋆ नमन् तमर् कळ्ळर् पोल्⋆ कण्णपुरत्तुऱै अम्माने ! ॥७॥	फेनभरे क्षीर सागर में शेषशायी प्रभु! उदारमना कन्नपुरम में रहने वाले प्रभु! छिपते हुए चोर की तरह यमदूत आपके भक्तगन से दूर चले जाते हैं। **1744**
माणागि⋆ वैयम् अळन्ददुवुम् वाळ् अवुणन्⋆ पूण् आगम् कीण्डदुवुम्⋆ ईण्डु निनैन्दिरुन्देन्⋆ पेणाद वल्विनैयेन्⋆ इडर् एत्तनैयुम् काणेन् नान्⋆ कण्णपुरत्तुऱै अम्माने ! ॥८॥	कन्नपुरम के प्रभु! मैं सोंच रहा था कि कैसे आपने वामन बनकर धरा को माप दिया तथा हथियार वाले हिरण्य के आभूषित छाती को चीर दिया। ओह ! इस गुणहीन पापी का पाप तो कहीं दिखता भी नहीं। **1745**
नाट्टिनाय् एन्नै⋆ उनक्कुमुन् तॊण्डाग⋆ माट्टिनेन् अत्तनैये कॊण्डु⋆ एन् वल्विनैयै⋆ पाट्टिनाल् उन्नै⋆ एन् नॆञ्चत्तिरुन्दमै काट्टिनाय्⋆ कण्णपुरत्तुऱै अम्माने ! ॥९॥	कन्नपुरम के प्रभु ! पहले आपने मुझे अपना सेवक बनाया एवं फलस्वरूप हमें सभी कर्मो से विमुक्त कर दिया। तब गीत द्वारा आपने अपनी उपस्थिति हमारे हृदय में दिखायी। **1746**
कण्ड शीर्⋆ क्कण्णपुरत्तुऱै अम्मानै⋆ कॊण्ड शीर् तॊण्डन्⋆ कलियन् ऒलि मालै⋆ पण्डमाय् प्पाडुम्⋆ अडियवर्क्कॆञ्ञान्ऱुम्⋆ अण्डम् पोय् आट्चि⋆ अवर्क्कदरिन्दोमे॥१०॥	प्रिय भक्त कलियन के मधुर तमिल पदों की यह माला श्रीसंपन्न कन्नपुरम के प्रभु की प्रशस्ति में है। हम जानते हैं जो भक्त इसे उत्साह से गायेंगे वे स्वर्ग पर राज्य करेंगे। **1647** तिरुमङगैयाळवार तिरुवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

81 वङ्गमा मुन्नीर् (1748 – 1757)

तिरूक्कण्णङ्गुडि

यह स्थान नागपट्टिनम के पास है। तिरूवरूर नागपट्टिनम रेल मार्ग पर कीळ वेलूर स्टेशन से 2 कि मी पर है।मूलावर सुन्दर आकर्षक स्वरूप में खड़े अवस्था में पूर्वाभिमुख हैं। साथ में भूदेवी एवं श्रीदेवी भी हैं। आपको लोकनाथन नाम से जाना जाता है। उत्सव मूर्ति को दामोदर नारायणन कहते हैं तथा 'संतोतीथम' भी कहते हैं। दायां हाथ अभय मुद्रा में है एवं वायां हाथ कमर पर है। पांच कृष्ण क्षेत्र में से एक है अन्य चार हैं ः तिरूकन्नमंगै, तिरूकोविलूर, तिरूकन्नपुरम, तिरूकपिस्थलम।

तिरूमंगै आळवार से संबधित यहां तीन बातें प्रसिद्ध हैं। 1। 'काय मकिळम' यानी छोटा फूल का पेंड़ जो कभी नहीं सूखता। 2 'ओरा किनारू' यानी पानी के बिना कुंआ। 3 'थोरा वजक्कु' यानी झगड़ा जिसका कभी अंत नहीं होता। तिरूमंगै आळवार के अन्य नाम हैं तिरूमंगै मन्नन, कलियन, कलकन्रि आदि। आप आळवारों की सूची में सबसे अंत में आते हैं और भगवान के धनुष के अवतार माने जाते हैं। अवतार स्थल शिरकाळी के पास तिरूकुरैयालूर है।एक बार आप श्रीरंगम के मंदिर के जीर्णोद्धार के लिये कहीं से एक सोने की मूर्ति लूटकर लिये जा रहे थे। रास्ते में आप तिरूकंगुडि पहंचे और पास के खेत में मूर्ति छिपाकर छोटे फूल के पेड़ के नीचे सो गये। प्रातः किसान अपने खेत में जोताई करने आया। आपने रहस्य खुलने के डर से तथा सोने की मूर्ति हाथ से निकल जाने की आशंका से किसान से झगड़ा कर बैठे कि वह खेत आपका है। गांव वालों के जमा होने पर आपने प्रमाण में कागजात प्रस्तुत करने के लिये एक दिन का समय मांग लिया और फिर छोटे फूल के पेड़ के नीचे सो गये। आपको प्यास लगी । पास के कुंअें पर से पानी मांगने पर महिला ने मना कर दिया कि आप खेत की तरह कुंआ पर भी अपना अधिकार दिखाओगे। आपने गुस्से में शाप दे दिया एवं कुंआ सूख गया। रात में मूर्ति ले आप वहां से चले गये और वापस नहीं लौटे। ऊपर की तीन बातों की यही कथा है।

एक और रोचक कथा है कि वशिष्ठ जी यहां अपने तपस्या बल से मक्खन का कृष्ण बनाकर पूजते थे जो कभी पिघलता नहीं था। भगवान कृष्ण वालक रूप में आये और उस मूर्ति को उठाकर खा गये तथा भाग चले। पीछा किये जाने पर अन्य ऋषियों से छोटा फूल के पेड़ के नीचे पकड़े गये। वहां आपको बांधकर रखा गया इसी लिये इस दिव्य देश को तिरूकन्नंगुडी कहते हैं यानी जहां कृष्ण रोके गये। इस पेड़ की विशेषता है कि यह न सूखा और न नष्ट हुआ।

Ramesh Vol. 2 pp 102

वङ्ग मा मुन्नीर् वरि निर प्पॆरिय॰ वाळ् अरविन् अणै मेवि॰ शङ्गमार् अङ्ग त्तड मलर् उन्दि॰ च्चाम मा मेनि एन् तलैवन्॰ अङ्गम् आरैन्दु वेळ्वि नाल् वेदम्॰ अरुङ्गलै पयिन्रु॰ एरि मून्रुम् शॆङ्गैयाल्वळर्क्कुम् तुळक्कमिल्मनत्तोर्॰ तिरुक्कण्णङ्गुडियुळ् निन्राने॥१॥	गहरे विस्तृत सागर में प्रभु कुंडली मारे श्वेत शेष पर सोये हैं। हाथ में श्वेत शंख धारण किये हैं तथा नाभि से नीला कमल प्रस्फुटित हो बाहर निकला हुआ है। शुद्ध हृदय वाले वैदिक ऋषिगन प्रभु के खड़े स्वरूप की पूजा पावन शास्त्रों छः आगम, पांच प्रसन, चार वेद के मंत्रोच्चार से करते हैं तथा वे तिरूक्कणंगुडी में अग्नि कुंड में तीन होम देते हैं। **1748**
कवळ मा कदत्त करि उय्य॰ पॊय्गै क्कराम् कॊळ क्कलङ्गि॰ उळ् निनैन्दु तुवळ॰ मेल् वन्दु तोन्रि वन् मुदलै तुणिपड॰ च्चुडु पडै तुरन्दोन्॰ कुवळै नीळ् मुळरि कुमुदम् ऒण् कळुनीर्॰ कॊय्म् मलर् नॆय्दल् ऒण् कळनि॰ तिवळुम् माळिगै शूळ्शॆळुमणिप्पुरिशै॰ त्तिरुक्कण्णङ्गुडियुळ् निन्राने॥२॥	तालाब के ग्राह के जवड़े में फंसकर मदमत्त हाथी ने अपने हृदय में रोते हुए प्रभु का स्मरण किया।तालाब के ऊपर प्रभु आकाश में प्रकट हुए एवं तीक्ष्ण चक्र से ग्राह के टुकड़े टुकड़े कर दिये। तिरूक्कणंगुडी मंदिर में आप खड़े स्वरूप में हैं जहां चारो तरफ रत्न जड़ित ऊंचे दीवाल के महल, पके धान के खेत, नीला श्वेत लाल कुमुद, कमल तथा नैडल के फूलों वाले तालाब हैं। **1749**

वादै वन्दडर वानमुम् निलनुम्* मलैगळुम् अलै कडल् कुळिप्प* मीदु कॊण्डुगळुम् मीनुरु वागि* विरि पुनल् वरि अगट्टॊळित्तोन्* पोदलर् पुन्नै मल्लिगै मौवल्* पुदु विरै मदु मलर् अणैन्दु* शीदवॊण् तॆन्रल् तिशैदॊरुम् कमळुम्* तिरुक्कण्णङ्गुडियुळ् निन्राने॥३॥	महाप्रलय में धरा आकाश पर्वत सभी डूब गये। प्रभु मत्स्य के रूप में प्रकट होकर सबों को अपने पीठ पर संभाल लिया तथा आनंद से सागर को अपने पेट पर रख लिया। तिरूक्कणंगुडी मंदिर में आप खड़े स्वरूप में हैं जहां शाम की मन्द हवा पुन्नै चमेली एवं मुलै फूलों पर बहते हुए उनका सभी दिशाओं में सुगंध फैलाती है। **1750**
वॆन्रि शेर् तिण्मै विलङ्गल् मा मेनि* वॆळ्ळॆयिट्टॊळ्ळॆरित्तरु कण्* पन्रियाय् अन्रु पार् मगळ् पयलै तीर्त्तवन्* पञ्जवर् पागन्* ऒन्रला उरुवत्तुलप्पिल् पल् कालत्तु* उयर् कॊडि ऒळि वळर् मदियम्* शॆन्रु शेर् शॆन्नि च्चिगर नल् माड* त्तिरुक्कण्णङ्गुडियुळ् निन्राने॥४॥	पांडव के रथवाहक मेरे प्रभु पुराकाल में अंगारे सी आंखें, चमकते श्वेत दांत, विजयी, शक्तिवान, पर्वत समान सुन्दर विशाल वराह के रूप में भू देवी का कष्ट दूर करने के लिये प्रकट हुए। तिरूक्कणंगुडी मंदिर में आप खड़े स्वरूप में हैं जहां चांद को छूने वाले अनन्त प्रकार के खुले छत वाले ऊंचे महल हैं। **1751**
मन्नवन् पॆरिय वेळ्वियिल् कुरळाय्* मूवडि नीरॊडुम् कॊण्डु* पिन्नुम् एळ् उलगुम् ईरडियाग* प्पॆरुन् दिचै अडङ्गिड निमिर्न्दोन्* अन्न मॆन् कमलत्तणि मलर् प्पीडत्तु* अलै पुनल् इलै क्कुडै नीळल्* शॆन्नॆल्लॊण् कवरि अशैय वीद्दिरुक्कुम्* तिरुक्कण्णङ्गुडियुळ् निन्राने॥५॥	मावली के महान यज्ञ में वामन रूप में पधारकर तीन पग जमीन स्वीकारते हुए हमारे प्रभु ने अपने स्वरूप का विस्तार कर दो ही पगो में सातों लोक तथा आठों दिशाओं को माप लिया। तिरूक्कणंगुडी मंदिर में आप खड़े स्वरूप में हैं जहां पत्तों की छतरी के नीचे मंद प्रवाहित जल में सुन्दर हंस कमल फूल के कोमल गद्दे पर बैठते हैं तथा पके धान की बालियां हवा में चंवर की तरह हिलती हैं। **1752**
मळुविनाल् अवनि अरशै मूवॆळुगाल्* मणि मुडि पॊडिपडुत्तु* उदिर कुळुवुवार् पुनलुळ् कुळित्तु* वॆञ्जोवम् तविर्न्दवन् कुलै मलि कदलि* कुळुवुम् वार् कमुगुम् कुरवुम् नल् पलवुम्* कुळिर् तरु शूदम् मादवियुम्* शॆळुमैयार् पॊळिल्गाळ् तळुवुनन् माड* त्तिरुक्कण्णङ्गुडियुळ् निन्राने॥६॥	पुरा काल में धरा पर क्रुद्ध फरसा चलाते हुए प्रभु ने इक्कीस राजाओं के मुकुट वाले सिर काट कर जमीन पर लुघड़ा दिया और तब उनके खून की नदी में नहाया। तिरूक्कणंगुडी मंदिर में आप खड़े स्वरूप में हैं जो महलों एवं उपजाऊ बागों से घिरा है जहां गुच्छों में केला कटहल आम अरेका एवं सुगंधित कुरूकत्ती के वृक्ष हैं। **1753**
वानुळार् अवरै वलिमैयाल् नलियुम्* मरि कडल् इलङ्गैयार् कोनै* पानु शेर् शरत्ताल् पनङ्गनि पोल* प्परु मुडि उदिर विल् वळैत्तोन्* कानुला मयिलिन् कणङ्गळ् निन्राड* क्कण मुगिल् मुरशम् निन्रदिर* तेन् उला वरि वण्डिन्निशै मुरलुम्* तिरुक्कण्णङ्गुडियुळ् निन्राने॥७॥	प्रभु ने अपने धनुष से सूर्य की किरणों जैसा बाणों से देवताओं पर कहर ढ़ाने वाला सागर से घिरे लंका के राजा रावण के भारी मस्तकों को हिलते वृक्षों से नारियल के फल की तरह गिरा दिया। तिरूक्कणंगुडी मंदिर में आप खड़े स्वरूप में हैं जो जंगलों से घिरा है जहां मोर समूह में घूमते एवं नृत्य करते हैं, काले मेघ नगाड़ा बजाते हैं, तथा मधु मत्त मधुमक्खियां गीत गाती हैं। **1754**
अरवु नीळ् कॊडियोन् अवैयुळ् आशनत्तै* अञ्जिडादे इड* अदर्कु प्पॆरिय मा मेनि अण्डम् ऊडुरुव* प्पॆरुन् दिचै अडङ्गिड निमिर्न्दोन्* वरैयिन् मा मणियुम् मरगद त्तिरळुम्* वयिरमुम् वॆदिर् उदिर् मुत्तुम्* तिरै कॊणर्न्दुन्दिवयल्दॊरुम् कुविक्कुम्* तिरुक्कण्णङ्गुडियुळ् निन्राने॥८॥	सांप चिह्न के ध्वज वाले दुर्योधन ने अपनी सभा में श्रीकृष्ण प्रभु को बंधन में डालना चाहा तो आपने आकाश छेदते हुए आठों दिशाओं में अपने स्वरूप का विस्तार कर दिया। तिरूक्कणंगुडी मंदिर में आप खड़े स्वरूप में हैं जो खेतों से घिरा है जहां रत्नों के पहाड़, कीमती पत्थर, हीरे एवं बांस से निकलने वाले मोती, कावेरी नदी के तीव्र प्रवाह से किनारों पर ढ़ेर किये जाते हैं। **1755**

पन्निय पारम् पार् मगट्कोळियप्* वारद मार्पेरुम् पोरिल्* मन्नर्गळ् मडिय मणि नेंडुन् तिण् तेर्* मैत्तुनरक्कुयत्त मा मायन्* तुन्नु मादवियुम् शुरबुनै प्पोंळिलुम्* शूळ्न्देंळु शेंण्बग मलर्वाय्* तेंन्नवेंन्रळिगळ् मुरन्रिशै पाडुम्* तिरुक्कणङ्गुडियुळ् निन्राने॥९॥	धरा को भार से मुक्त करने के लिये आश्चर्य मय प्रभु ने अपनी बहन का पति अर्जुन का रथ हांक कर भारत युद्ध में दंभी राजाओं का अंत किया। तिरूक्कणंगुडी मंदिर में आप खड़े स्वरूप में हैं जो माधवी, सुरपुन्नै, सेनबकम के घने बागों से घिरा है जहां भौंरे मंड़राते हुए तेनका गीत गाते हैं। **1756**
कलैयुलावल्गुल् कारिगै तिरत्तु* क्कडल् पेरुम् पडैयोडुम् शेन्रु* शिलैयिनाल् इलङ्गै तीयेंळ च्चेंट्ट्* तिरुक्कणङ्गुडियुळ् निन्रानै* मलैगुला माड मङ्गैयर् तलैवन्* मान वेल् कलियन् वाय् ओलिगळ्* उलवुशोल् मालै ओन्बदोडोन्रुम्* वल्लवरक्किल्लै नल्गुरवे॥१०॥	ऊंचे महलों वाले मंगै के राजा कलकन्रि गाये हुए ये दस गीत कन्नापुरम के प्रभु की प्रशस्ति में है जो कंचुकी वाली सीता के लिये सेना के साथ लंका पर चढ़ाई कर उसे अपने धनुष से जलाकर धूल में मिला दिया। जो इसे याद कर लेंगे वे कभी भी गरीबी की याताना नहीं पायेंगे।**1757** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्

श्रीमते रामानुजाय नमः

82 पोन्निवर मेनि (1758 - 1767)

तिरूनागै (नागपट्टिनम)

परकाल नायकी सखियों के साथ मधुर मिलन की यादें सुनाती है।

एक समय नागपट्टिनम एक महत्वपूर्ण पोर्ट हुआ करता था। मंदिर स्टेशन से 2 कि मी पर है। मूळावर पूर्वाभिमुख गदा लिये खड़े हैं तथा नीलमेघ पेरूमल के नाम से जाने जाते हैं। उत्सवार सौंदर्यराजा के नाम से प्रसिद्ध हैं। यहां भगवान का दर्शन तीन अवस्थाओं में होता है ः 1 सोये में रंगनाथ की तरह 2 बैठे में गोविन्दराज की तरह 3 खड़े में सौंदर्यराजा की तरह। यह ध्रुव की तपस्थली भी है। गरूड़ यहां बैठे मुद्रा में हैं। आदिशेष नागों के राजा को कोई संतान नहीं थी।यहीं प्रार्थना करने से पुत्री की प्राप्ति हुई थी। नाग राजा के नाम पर स्थल का नाम नागपट्टिनम हुआ। पार्वती शापवश सौंदर्य खोकर यहीं तपस्या कर पुनः सौंदर्य प्राप्त की थी। यहां अष्टभुजी नरसिंह हैं जो शिष्ट परिपालन एवं दुष्ट निग्रहम दोनों काम करते हैं।

Ramesh Vol. 3 pp 110

पॊन्निवर् मेनि मरगदत्तिन्⋆ पॊङ्गिळञ्जोदि अगलत्तारम् मिन्⋆ इवर् वायिल् नल् वेदम् ओदुम्⋆ वेदियर् वानवर् आवर् तोळी⋆ एन्नैयुम् नोक्कि एन्नल्गुलुम् नोक्कि⋆ एन्दिळङ्गॊङ्गैयुम् नोक्कुगिन्रार्⋆ अन्नै एन् नोक्कुम् एन्रञ्जुगिन्रेन्⋆ अच्चो ऒरुवर् अळगियवा ! ॥१॥	बहन ! प्रभु का सुनहला मुखमंडल है। पन्ने के रंग का वक्षस्थल का आभूषण विजली चमकने का दृश्य उपस्थित करता है।क्या वे समन का गान करने वाले कोई वैदिक ऋषि हैं ? या वे धरा के देव हैं ? आपने हमारे ऊपर दृष्टि दौड़ायी तथा हमारी पतली कमर को देखते हुए हमारे उभरे उरोजों को देखा। इस तरह से मुझे देखने से मैंने अपनी मां के डरे हुए चेहरे को देखा। अहा ! क्या वे सुन्दर थे ? **1758**
तोडविळ् नीलम् मणम् कॊडुक्कुम्⋆ शूळ् पुनल् शूळ् कुडन्दै क्किडन्द⋆ शेडर्गॊल् एन्रु तॆरिक्क माट्टेन्⋆ शॆञ्जुडर् आळियुम् शङ्गुम् एन्दि⋆ पाडगमॆल् अडियार् वणङ्ग⋆ प्पल् मणि मुत्तॊडिलङ्गु शोदि⋆ आडगम् पूण्डॊरु नान्गु तोळुम्⋆ अच्चो ऒरुवर् अळगियवा ! ॥२॥	क्या वे युवकों में से एक थे जो नीले जल कुमुद का सुगंध विखेरते जलाशयों से घिरे कुडन्दै में विश्राम करते हैं ? मुझे नहीं पता।हाथों में तेजोमय चक्र तथा श्वेत शंख धारण किये अनेकों चमकते रत्नजड़ित सुवर्ण आभूषण पहने कोमल पाजेब वाली किशोरियों से पूजित चार भुजा के साथ खड़े हैं। अहा ! क्या वे सुन्दर थे ? **1759**
वेयिरुञ्जोलै विलङ्गल् शूळ्न्द⋆ मॆय्य मणाळर् इव्वैयम् एल्लाम्⋆ तायिन नायगर् आवर् तोळि !⋆ तामरै क्कण्गळ् इरुन्दवारु⋆ शेयिरुङ्गुन्रम् तिगळ्न्ददॊप्प⋆ च्चॆव्विय वागि मलर्न्द शोदि⋆ आयिरम् तोळॊडिलङ्गु पूणुम्⋆ अच्चो ऒरुवर् अळगियवा ! ॥३॥	बहन ! क्या वे बांस के झुरमुट वाले पहाड़ों से घिरे मेय्यम के प्रभु हमारे दुलहा थे जिन्होंने धरा मापा और अन्य काम किये ? अहा ! राजीव नयन, चमकते बाजूबंद के साथ हजारों पर्वतों के समान लंबी भुजायें । अहा ! क्या वे सुन्दर थे ? **1760**

वम्बविळुम् तुळाय् मालै तोळ्मेल्॰ कैयन आळियुम् शङ्गुम् एन्दि॰ नम्बनंम् इल्लम् पुगुन्दु निन्रार्॰ नागरिगर् पॆरिदुम् इळैयर्॰ शॆम्बवळम् इवर् वायिन् वण्णम्॰ देवर् इवरदुरुवम् शॊल्लिल्॰ अम्बवळ त्तिरळेयुम् ऒप्पर्॰ अच्चो ऒरुवर् अळगियवा ! ॥४॥	गले में मधुमक्खी लिपटे तुलसी की माला पहने एवं हाथों में चक्र शंख धारण किये विश्वासी प्रभु हमारे घर आये। अतिसुन्दर सौम्य एवं नवयौवन वाले भगवान की तरह दिखे। लाल मूंगा की तरह होंठ तथा वदन मूंगा का ढ़ेर दिखा। अहा ! क्या वे सुन्दर थे ? **1761**
कोळियुम् कूडलुम् कोयिल् कॊण्ड॰ कोवलरे ऒप्पर् कुन्रम् अन्न॰ पाळियुम् तोळुम् ओर् नान्गुडैयर्॰ पण्डिवर् तम्मैयुम् कण्डरियोम्॰ वाळियरो इवर् वण्णम् एण्णिल्॰ मा कडल् पोन्रुळर् कैयिल् वॆय्य॰ आळियॊन्रेन्दियोर् शङ्गु पट्रि॰ अच्चो ऒरुवर् अळगियवा ! ॥५॥	क्या गोपकिशोर प्रभु उरैयूर एवं मदुरै के मंदिरों में रहते हैं ? आपको पर्वत की तरह शक्तिवान चार भुजायें थी। मैंने पहले नहीं देखा, आपकी मंगल कामना करो। आप नीले सागर से वदन वाले थे। आप तेजोमय चक्र एवं शंख धारण किये थे। अहा ! क्या वे सुन्दर थे ? **1762**
वॆञ्जिन वेळ मरु प्पॊशित्त॰ वेन्दरगॊल् एन्दिळैयार् मनत्तै॰ तञ्जुडै आळरगॊल् यान् अरियेन्॰ तामरै क्कण्गळ इरुन्दवारु॰ कञ्जनै अञ्ज मुन् काल् विशैत्त॰ काळैयार् अवर् कण्डार् वणङ्गुम्॰ अञ्जन मा मलैयेयुम् ऒप्पर्॰ अच्चो ऒरुवर् अळगियवा ! ॥६॥	क्या आप आभूषित गोपियों के हृदय में रहने वाले हाथी का दांत उखाड़ने वाले थे ? क्या आप कंस की छाती दलने वाले युवक वृषभ थे ? मुझे नहीं पता। अहा ! राजीव नयन, पर्वत की तरह सद्यः पूज्य श्याम वदन। अहा ! क्या वे सुन्दर थे ? **1763**
पिणियविळ् तामरै मॊट्टलरत्तुम्॰ पेर् अरुळाळर् कॊल् यान् अरियेन्॰ पणियुम् एन् नॆञ्जम् इदॆन्गॊल् तोळि !॰ पण्डिवर् तम्मैयुम् कण्डरियोम्॰ अणिगॊळ् तामरै अन्न कण्णुम्॰ अङ्गैयुम् पङ्गय मेनि वानत्तु॰ अणिगॊळ् मा मुगिलेयुम् ऒप्पर्॰ अच्चो ऒरुवर् अळगियवा ! ॥७॥	क्या कमल खिलाने के लिये उगने वाले आप उदार सूर्य थे ? मुझे नहीं पता। कितना आश्चर्य है पहले कभी नहीं देखा। हमारे हृदय ने तुरत पूजा की। आंखें कमल की कली जैसी, हाथ भी कमल के समान। आपका वदन वर्षा के घने मेघ की तरह। अहा ! क्या वे सुन्दर थे ? **1764**
मञ्जुयर् मा मदि तीण्ड नीण्ड॰ मालिरुञ्जोलै मणाळर् वन्दु॰ एन् नॆञ्जुळ्ळुम् कण्णुळ्ळुम् निन्रु नीङ्गार्॰ नीर्मलैयारगॊल् निनैक्कमाट्टेन्॰ मञ्जुयर् पॊन्मलै मेल् एळुन्द॰ मा मुगिल् पोन्रुळर् वन्दु काणीर्॰ अञ्जिरै प्पुळ्ळुम् ऒन्रेरि वन्दार्॰ अच्चो ऒरुवर् अळगियवा ! ॥८॥	चांद से दुलारे गये, मलीरूमसलै पर्वत के दुलहा, आये और हमारे हृदय एवं आंखों में बस गये, कभी नहीं जायेंगे। क्या आप निर्मलै के प्रभु थे ? मुझे नहीं याद। आप सुन्दर पंखों वाले पक्षी पर चढ़ कर आये। आओ, देखो। आप आकाश को छूने वाले सुनहले ऊंचे पर्वत पर घने मेघ के समान हैं। अहा ! क्या वे सुन्दर थे ? **1765**

ऍण्दिशैयुम् ऍरि नीर् क्कडलुम्* एऴ् उलगुम् उडने विऴुङ्गि* मण्डि ओर् आलिलै प्पळ्ळि कॊळ्ळुम्* मायर्गॊल् मायम् अरियमाट्टेन्* कॊण्डल् नल् माल्वरैयेयुम् ऑप्पर्* कॊङ्गलर् तामरै क्कण्णुम् वायुम्* अण्डत्तमरर् पणिय निन्रार्* अच्चो ऑरुवर् अऴगियवा ! ॥९॥	क्या आप गोप शिशु थे जो एक छण में आठों दिशायें समुद्र सातों लोक को निगल कर बट पत्र पर चैन से सो गये ? इस रहस्य को मैं नहीं समझ सकती। आपका वदन मेघ एवं ऊंचे पर्वत के रंग से मिलता है। आपकी आंखें एवं होंठ सुगंधित कमल की तरह थे। देवगन मस्तक नवाते हैं। अहा ! क्या वे सुन्दर थे ? **1766**
अन्नमुम् केऴलुम् मीनुम् आय* आदियै नागै अऴगियारै* कन्नि नल् मा मदिळ् मङ्गै वेन्दन्* कामरु शीर् क्कलिगन्रि* कुन्रा इन्निशैयाल् शॊन्न शॆञ्जॊल् मालै* एऴुम् इरण्डुम् ओर् ऑन्रुम् वल्लार्* मन्नवराय् उलगाण्डु* मीण्डुम् वानवराय् मगिऴ्वॆय्दुवरे॥१०॥	यह तमिल गीत माला मधुर धुन पर आधारित है जिसे मजबूत दीवारों वाले मंगै क्षेत्र के राजा पूज्य कलकन्रि ने तिरूनागै मंदिर के सुन्दर प्रभु सौंदर्यराजा की प्रशस्ति में रचे हैं जो पुराकाल में हंस सूकर मत्स्य के रूप में आने वाले आदि प्रभु हैं। जो इसे याद कर लेंगे वे पृथ्वी पर राजा की तरह शासन करने के बाद देवों के लोक में आनंद मनायेंगे **1767** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

83 तन्नै नैविक्किलेन (1768 - 1777)

तिरूप्पुल्लाणि 1

परकाल नायकी विछुड़न के विषाद में है।

यहां रामनाथपुरम से जाया जाता है। करीव करीव देश का दक्षिणी छोर पर सेतुकरै के पास है। मूलावर आदि जागन्नाथ खड़े अवस्था में हैं।

Ramesh Vol. 4 pp 212

तन्नै नैविक्किलेन्⋆ वल् विनैयेन् तॊऴुदुमॆऴु⋆ पॊन्नै नैविक्कुम्⋆ अप्पून्जॆरुन्दि मणि नीऴल्वाय्⋆ एन्नै नैवित्तु⋆ एऴिल् कॊण्डगन्ऱ पॆरुमान् इडम्⋆ पुन्नै मुत्तम् पॊऴिल् शूऴ्न्दु⋆ अऴगाय पुल्लाणियॆ॥१॥	हे मन ! उस रास्ते झुको एवं उठो। पापिनी मैं ! अपने आप का नाश नहीं कर सकता। सोने के रंग से भी अच्छे रंग के पत्ते वाले सुगंधित सेरूण्डी की शीतल छाया में प्रभु मेरे साथ आत्मसात हो गये थे और हमारे सौंदर्य प्रसाधन चुराकर हमें छोड़ गये।आप सुन्दर पुल्लानी में रहते हैं जो मोती जैसे कलियों वाले पुन्नै के बागों से घिरा है। **1768**
उरुगि नॆन्जे ! निनैन्दिङ्गिरुन्दॆन्⋆ तॊऴुदुम् एऴु⋆ मुरुगु वण्डुण् मलर् क्कैदैयिन्⋆ नीऴलिल् मुन्नॊरुनाळ्⋆ पॆरुगु कादन्मै एन्नुळ्ळम्⋆ एय्द प्पिरिन्दान् इडम्⋆ पॊरुदु मुन्नीर् क्करैक्के⋆ मणियुन्दु पुल्लाणियॆ॥२॥	हे मन ! उस रास्ते झुको एवं उठो। यहां बैठकर गलते रहने से क्या लाभ ? पूर्व में एक दिन मधु मत्त मधुमक्खी वाले खजूर पेड़ की छाया में आपने हमारे हृदय को प्रेम से भर दिया एवं चले गये। आप पुल्लानी में रहते हैं जहां समुद्र की लहरें किनारों पर रत्न विखराती हैं। **1769**
एदु शॆय्दाल् मरक्केन्⋆ मनमे ! तॊऴुदुम् एऴु⋆ तादु मल्गु तडम् शूऴ् पॊऴिल्⋆ ताऴ्वर् तॊडर्न्दु⋆ पिन् पॆदै निन्नै प्पिरियेन् इनि⋆ एन्ऱगन्ऱान् इडम्⋆ पोदु नाऴुम् कमऴुम्⋆ पॊऴिल् शूऴ्न्द पुल्लाणियॆ॥३॥	हे मन ! उस रास्ते झुको एवं उठो।उनको भूलने के लिये मैं क्या कर सकता हूं। एक दिन हमारा तालाबों के बागों में पीछा करते हुए आये जहां फूलों के रज विखरे थे और कहा 'कृश काय ! हम तुम्हें कभी नहीं छोड़ेंगे।' तब छोड़ कर चले गये। आप पुल्लानी में रहते हैं जो ताजे खिले फूल की सुगंध वाले बागों से घिरा हुआ है। **1770**
कॊङ्गुण् वण्डे करियाग वन्दान्⋆ कॊडियेर्कु⋆ मुन् नङ्गॖळ् ईशन्⋆ नमक्के पणित्त मॊऴि शॆय्दिलन्⋆ मङ्गै नल्लाय् ! तॊऴुदुम् एऴु⋆ पोय् अवन् मन्नुम् ऊर्⋆ पॊङ्गु मुन्नीर् क्करैक्के⋆ मणियुन्दु पुल्लाणियॆ॥४॥	हे मन ! मधु पीते मधुमक्खी उनके आगमन के साक्षी हैं। पापिनी मैं ! हमारे प्रभु ने जो प्रतिज्ञा की वो पूरा नहीं कर सके। वे समुद्र के किनारे पुल्लानी के मंदिर में रहने चले गये जहां सागर की तरंगें रत्न विखेरते हैं। उस रास्ते झुको एवं उठो।**1771**

उणरिल् उळ्ळम् शुडुमाल्⋆ विनैयेन् तॊळुदुम् एळु⋆ तुणरि नाळल् नरुम् पोदु⋆ नम् शूळ कुळल् पॆय्दु⋆ पिन् तणरिल् आवि तळरुम् एन⋆ अन्बु तन्दान् इडम्⋆ पुणरियोदम् पणिलम्⋆ मणियुन्दु पुल्लाणिये॥५॥	हे मन ! जब मैं सोचती हूं तो हृदय खौल जाता है। हाय पापिनी मैं ! आपने सुगंधित लाल मलल फूल के गुच्छों को लेकर हमलोगों के जूड़ों को यह कहते हुए सजाया 'बिछुड़ने पर मैं मर जाऊंगा।' तब हमें अपना प्रेम दिया। अब वे समुद्र के किनारे पुल्लानी के मंदिर में रहते हैं जहां सागर की तरंगें घोघों से मोती जमा करते हैं। उस रास्ते झुको एवं उठो। **1772**
एळ्गि नॆञ्जे ! निनैन्दिङ्गिरुन्दॆन्⋆ तॊळुदुम् एळु⋆ वळ्ळल् मायन्⋆ मणिवण्णन् एम्मान् मरुवुम् इडम्⋆ कळ अविळुम् मलर् क्कावियुम्⋆ तूमडल् कैदैयुम्⋆ पुळ्ळुम् अळ्ळल् पळनङ्गळुम् शूळ्न्द⋆ पुल्लाणिये॥६॥	हे मन ! यहां बैठकर उनके बारे में सोचने एवं गलते रहने से क्या लाभ ? हमारे उदार मणि के वर्ण वाले आश्चर्यमय प्रभु मधु टपकते कमल, श्वेत रज वाले खजूर, एवं पक्षियों के झुंड वाले उपजाऊ बागों से घिरे पुल्लानी में रहना पसंद करते हैं। उस रास्ते झुको एवं उठो। **1773**
परवि नॆञ्जे ! तॊळुदुम् एळु⋆ पोय् अवन् पाल्माय्⋆ इरवुम् नाळुम् इनिक्कण् तुयिलादु⋆ इरुन्दॆन् पयन्⋆ विरवि मुत्तम् नॆडु वॆण् मणल् मेल् कॊण्डु⋆ वॆण् तिरै⋆ पुरवियॆन्न प्पुदम् शॆय्दु⋆ वन्दुन्दु पुल्लाणिये॥७॥	हे मन ! भगोड़े को सोचते रात दिन नींद गंवाने से क्या लाभ ? आप समुद्र किनारे पुल्लानी में रहते हैं जहां तरंगे श्वेत घोड़ों की तरह छलांगे लगाती आती हैं एवं आपके चरणों पर बेशकीमती पत्थर एवं मोती चढ़ा जाती हैं। प्रशस्ति गाओ। उस रास्ते झुको एवं उठो। **1774**
अल्लमुम् आळि प्पडैयुम् उडैयार्⋆ नमक्कन्बराय्⋆ शल्लमदागि त्तगवॊन्रिलर्⋆ नाम् तॊळुदुम् एळु⋆ उल्लवु काल्नल् कळियोङ्गु⋆ तण् पैम् पॊळिल्लूडु⋆ इशै पुल्लवु कानल्⋆ कळि वण्डिनम् पाडु पुल्लाणिये॥८॥	हे मन ! चक्र एवं हल धारण करने वाले प्रभु मित्र की तरह आये एवं धोखेवाज की तरह चले गये। आप के पास कोई दया नहीं है। आप समुद्र किनारे पुल्लानी में रहते हैं जो बिछुड़े हुए प्रेमी का स्थल है एवं जहां ऊंचे बागों में शीतल आकर्षक नाले हैं और मधुमक्खियां मंड़राते हुए गीत गाती है। उस रास्ते झुको एवं उठो। **1775**
ओदि नामम् कुळित्तुच्चि तन्नाल्⋆ ऑळि मा मलर्⋆ पादम् नाळुम् पणिवोम्⋆ नमक्के नलम् आदलिन्⋆ आदु तारान् एनिलुम् तरुम्⋆ अन्रियुम् अन्बराय्⋆ पोदुम् मादे ! तॊळुदुम्⋆ अवन् मन्नु पुल्लाणिये॥९॥	हे मन ! पवित्र डुवकी लगाकर प्रभु के नाम का यशगान करते हुए प्रतिदिन मस्तक आपके चरणाविंद में नवाओ, भले ही आप कुछ नहीं देते हैं तव भी हमारे लिये यह अच्छा है। इससे हम भक्त हो जायेंगे। आप पुल्लानी में रहते हैं। उस रास्ते झुको एवं उठो। **1776**

‡इलङ्गु मुत्तुम् पवळ क्कॉळुन्दुम्⋆ एळिल् तामरै⋆ पुलङ्गॅळ् मुट्टम् पॉळिल् शूळ्न्दु⋆ अळगाय पुल्लाणिमेल्⋆ कलङ्गल् इल्ला प्पुगळान्⋆ कलियन् ऑलिमालै⋆ वलङ्गॉळ् तॉण्डर्क्किडम् आवदु⋆ पाडिल् वैगुन्दमे॥१०॥	निष्कलंक यश वाले कलियन के ये शुद्ध तमिल पदों की गीतमाला मोती एवं मूंगा के ढ़ेर, रंगीन कमल के सरोवर एवं सुगंधित बागों से घिरे हुए सुन्दर पुल्लानी के प्रभु की प्रशस्ति हैं। जो भक्तगन इसे याद कर लेंगे वे शुद्ध आनंद के वैकुंठ में स्थान पायेंगे। **1777** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

84 कावार् (1778 - 1787)

तिरूप्पुल्लाणि 2

परकाल नायकी का प्रेम रोग

कावार् मडल् पॅण्णै⋆ अन्ऱिल् अऱिगुरल्लुम्⋆ एवायिनूडियङ्गुम्⋆ एगकिल् कॅाडिदाल्तो⋆ पूवार् मणम् कमळुम्⋆ पुल्लाणि कै तॅाळुदेन्⋆ पावाय्! इदु नमक्कोर्⋆ पान्मैये आगादे॥१॥	हे सुन्दर गुड़िया ! सुगंधित बागों से घिरे पुल्लानी के प्रभु की पूजा में हमने अपने को करबद्ध किया। अब यह एक आदत हो गयी है।हाय ! सागर किनारे ताड़ वृक्षों पर बैठे अनरिल पक्षियों के मैथुनकाल की चीख घाव में तलवार चुभने से ज्यादा कष्टकर है। **1778**
मुन्नम् कुऱळ् उरुवाय्⋆ मूवडि मण् कॅाण्डळन्द⋆ मन्नन् शरिदैक्के⋆ माल् आगि प्पॅान् पयन्देन्⋆ पॅान्नम् कळि क्कानल्⋆ पुळ्ळिनङ्गाळ्! पुल्लाणि⋆ अन्नमाय् नूल् पयन्दार्कु⋆ आङ्गिदनै च्चॅप्पुमिने॥२॥	हे खारे जल के पक्षी ! धरा को तीन पगों में मापने आये पुराकाल के अविवाहित राजा से मुग्ध होकर हमने अपने सौंदर्य प्रसाधन उनके पास खो दिया। जा कर के पुल्लानी के प्रभु को यह बताओ जो हंस के रूप में आकर वेद प्रदान किये थे। **1779**
वव्वि त्तुळाय् अदन्मेल्⋆ शॅन्ऱ तनि नॅञ्जम्⋆ शॅव्वि अऱियादु⋆ निर्कुङ्गॅाल् नित्तिलङ्गळ्⋆ पव्व त्तिरैयुलवु⋆ पुल्लाणि कै तॅाळुदेन्⋆ दॅय्व च्चिल्लैयार्कु⋆ एन् शिन्दै नोय् शॅप्पुमिने॥३॥	करबद्ध होकर हमने पुल्लानी के प्रभु की पूजा की जहां तरंगे किनारों पर मोती जमा करते हैं। आपकी तुलसी माला से मुग्ध होकर हमारा मन हमें छोड़कर आपके पीछे लग गया और हमारी दुर्दशा को भूलकर आपके पास रह गया।जा कर के मेरी हृदय वेदना सुन्दर धनुष धारण करने वाले दैवाचिलैयन को बताओ। **1780**
परिय इरणियनदागम्⋆ अणियुगिराल्⋆ अरियुरुवाय् क्कीण्डान्⋆ अरुळ् तन्दवा! नमक्कु⋆ पॅारु तिरैगळ् पोन्दुलवु⋆ पुल्लाणि कै तॅाळुदेन्⋆ अरिमलर् क्कण् नीर् तदुम्ब⋆ अन्दुगिलुम् निल्लावे॥४॥	करबद्ध होकर हमने पुल्लानी के प्रभु की पूजा की जहां तरंगे किनारों पर बजड़ते आती हैं। इस तरह से आप कृपा करते हैं ः नरसिंह रूप में आकर आपने सुन्दर नखों से हिरण्य की छाती को चीर दिया। हमारी सुन्दर फूल सी आंखें अश्रुवर्षा बंद नहीं करती एवं वस्त्र वदन पर नहीं टिकते। **1781**
विल्लाल् इलङ्गै मलङ्ग⋆ च्चरम् तुरन्द⋆ वल्लाळन् पिन् पोन⋆ नॅञ्जम् वरुम् अळवुम्⋆ एल्लारुम् एन् तन्नै⋆ एशिलुम् पेशिडिनुम्⋆ पुल्लाणि एम्बॅरुमान्⋆ पॅाय् केट्टिरुन्देने॥५॥	मेरा मन पुल्लानी के प्रभु के पास है जिन्होंने निपुण धर्नुधारी के रूप में लंका को जलाकर धूल में मिला दिया।जबकि हमारे लोग हमें दोषी बताते हुए अपशब्द कहते हैं मैं प्रभु के झूठे वादों में विश्वास कर अपने मन को लौट कर आने की प्रतीक्षा कर रही हूं। **1782**

शुळन्रिलङ्गु वॆङ्गदिरोन्⋆ तेरोडुम् पोय् मरैन्दान्⋆ अळन्रु कॊंडिदागि⋆ अञ्जुडरिल् तान् अडुमाल्⋆ शॆळुन् तडम् पूञ्जोलै शूळ्⋆ पुल्लाणि कै तॊळुदेन्⋆ इळन्दिरुन्देन् एन्दन्⋆ एळिल् निरमुम् शङ्गुमे॥६॥	उज्जवल परिक्रमा करते ज्योतिमय सूर्य अपना रथ छोड़कर गायब हो गया है।सुन्दर चांद निष्ठुर किरणों को भेजकर हमारे हृदय को दग्ध करता है। हाय ! करबद्ध होकर हमने पुल्लानी के प्रभु की पूजा की जो सुन्दर जलाशयों एवं बागों से घिरे हैं। हमारे कंगन एवं सौंदर्य प्रसाधन सदा के लिये हम खो दिये। **1783**
कनैयार् इडि कुरलिन्⋆ कार् मणियिन् नावाडल्⋆ तिनैयेनुम् निल्लादु⋆ तीयिल् कॊंडिदालो⋆ पुनैयार् मणि माड⋆ प्पुल्लाणि कै तॊळुदेन्⋆ विनैयेन् मेल् वेलैयुम्⋆ वॆन्दळले वीशुमे॥७॥	काले वृषभ के गले की घंटी के घुंघरू की कभी बंद नहीं होते ध्वनि हमारे हृदय को आग से ज्यादा जलाने वाले हैं। करबद्ध होकर हमने रत्नजड़ित महलों वाले पुल्लानी के प्रभु की पूजा की। हाय ! सागर की तरंगें भी मुझ पापिनी पर आग उगल रही है। **1784**
तूम्पुडै क्कै वेळम्⋆ वॆरुव मरुप्पॊशित्त⋆ पाम्बिन् अणैयान्⋆ अरुळ् तन्दवा नमक्कु⋆ पून्जॆरुन्दि पॊन् शॊरियुम्⋆ पुल्लाणि कै तॊळुदेन्⋆ तेम्बल् इळम् पिरैयुम्⋆ एन्दनक्कोर् वॆन्दळले॥८॥	शेषशायी प्रभु ने मदमत्त हाथी के दांत उखाड़ लिये।देखो कैसे वे कृपा करते हैं। करबद्ध होकर हमने पुल्लानी के प्रभु की पूजा की जहां सेरून्दि के पेड़ सुनहले फूल वर्षाते हैं। हाय ! सौम्य चांद भी हमलोगों पर आग उगल रहा है। **1785**
वेदमुम् वेळ्वियुम्⋆ विण्णुम् इरु शुडरुम्⋆ आदियुम् आनान्⋆ अरुळ् तन्दवा नमक्कु⋆ पोदलरुम् पुन्नै शूळ्⋆ पुल्लाणि कै तॊळुदेन्⋆ ओदमुम् नानुम्⋆ उरङ्गादिरुन्देने॥९॥	प्रभु वेद हैं, वैदिक यज्ञ हैं, एवं यज्ञ के दैविक फल हैं। आप प्रथम कारण प्रभु हैं, युगल ज्योतिपुंज हैं तथा अन्य सबकुछ हैं। देखो, कैसे वे कृपा करते हैं। करबद्ध होकर हमने खिलते पुन्नै के वृक्षों वाले पुल्लानी के प्रभु की पूजा की। हम एवं उछलते सागर निद्राविहीन हो गये हैं। **1786**
‡पॊन्नलरुम् पुन्नै शूळ्⋆ पुल्लाणि अम्मानै⋆ मिन्निडैयार् वेट्कै नोय् कूर⋆ इरुन्ददनै⋆ कल् नविलुम् तिण् तोळ्⋆ कलियन् ऑलि वल्लार्⋆ मन्नवराय् मण्णाण्डु⋆ वान् नाडु मुन्नुवरे॥१०॥	शक्तिशाली भुजा वाले कलियन का यह तमिल गीतमाला सुनहले फूल वाले पुन्नै के बागों से घिरे पुल्लानी के प्रभु के साथ तड़ित रेखा सी पतली कमर वाली नारी के प्रेमरोग को चित्रित करता है। जो इसे याद कर लेंगे वे धरा के साथ स्वर्ग के भी शासक हो जायेंगे । **1787** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

85 तवळ इळम्बिऱै   (1788 - 1797)

**तिरूक्कुरूङ्गुडि		1**

परकाल नायकी की विरह गाथा

यह नांगुनेरी यानी तोताद्री से **15** कि मी पर है तथा मूलावर पूर्वाभिमुख खड़े अवस्था में हैं। आप रामानुज स्वामी के शिष्य के भी रूप में जाने जाते हैं। नंबी नारायण का अपभ्रंश लंबे नारायण भी लोग बोलते हैं।

Ramesh Vol. 4 pp 138

तवळविळम् पिऱै तुळ्ळु मुन्नीर्* तण् मलर् त्तेन्ऱलोडन्ऱिल् ऑन्ऱि तुवळ* एन् नेञ्जगम् शोर ईरुम्* शूळ् पनि नाळ् तुयिलादिरुप्पेन्* इवळुम् ओर् पेण्गोंडि एन्ऱिरङ्गार्* एन् नलम् ऐन्दु मुन् कोण्डु पोन* कुवळै मलर् निऱ वण्णर् मन्नु* कुरुङ्गुडिक्के एन्नै उयत्तिडुमिन्॥१॥	निष्कलंक अर्द्धचंद्र, तरंगायित सागर, पुष्प सुगंधित मंद हवा, अन्रिल पक्षी की आर्त्त पुकार, सब मिलकर हमारे हृदय को तोड़ एवं मरोड़ रहे हैं। नमीपूर्ण दिनों में हम निद्राविहीन हैं। बहुत पहले कमल वर्ण प्रभु ने हमारी चेतना तथा कुशलता चुरा लिया। हाय ! हम पर आप तरस भी नहीं खाते सोचते हैं 'है तो यह क्षीण काय नारी ही न।' हमें अब ढो कर आपके निवास कुरूंगुडी ले चलो। **1788**
तादविळ् मल्लिगै पुल्लि वन्द* तण् मदियिन् इळ वाडै इन्ने* ऊदै तिरिदन्दुळरि उण्ण* ओर् इरवुम् उऱङ्गेन् उऱङ्गुम्* पेदैयर् पेदैमैयाल् इरुन्दु* पेशिलुम् पेशुग पेय्वळैयार्* कोदै नऱु मलर् मङ्गै मार्वन्* कुरुङ्गुडिक्के एन्नै उयत्तिडुमिन्॥२॥	शीतल चांदनी की नमीपूर्ण मंद हवा चमेली के सुगंधित रज से संतृप्त हमारे हृदय को शुष्क करती एवं रात की नींद उड़ाती सर्वत्र बह रही है। कंगन पहन संवेदनहीन सोने वाले जरा बतायें कि हमारा क्या सोचते हैं। सुगंधित जूड़े वाली लक्ष्मी को प्रभु अपने हृदय पर रखते हैं। हमें अब ढो कर आपके निवास कुरूंगुडी ले चलो। **1789**
काल्लैयुम् माल्लै ऑत्तुण्डु* कङ्गुल् नाळिगै ऊळियिल् नीण्डुलावुम्* पोल्वदोर् तन्मै पुगुन्दु निर्कुम्* पोङ्गळले ऑक्कुम् वाडै शोल्लिल्* माल्वन् मा मणि वण्णन् मायम्* मट्रुम् उळ अवै वन्दिडामुन्* कोल मयिल् पयिलुम् पुरविन्* कुरुङ्गुडिक्के एन्नै उयत्तिडुमिन्॥३॥	सवेरा घसीटते हुए शाम हो जाती है। रात का हर घड़ी विनाशकारी एवं अनन्तकालीन है। नमीपूर्ण मंद वायु चूल्हा के उछलते लौ की तरह है। मणिवर्ण मल प्रभु के अनेकों चमत्कार हैं। इसके पहले कि वे आक्रामक हों हमें अब ढो कर आपके निवास कुरूंगुडी ले चलो जहां सुन्दर मोर बागों में नाचते हैं। **1790**

करु मणि पूण्डु वॆण्णागणैन्दु* कार् इमिल् एट्रणर् ताळ्न्दुलावुम्* ऒरु मणि ओशै एन्नुळ्ळम् तळ्ळ* ओर् इरवुम् उरङ्गादिरुप्पेन्* पॆरु मणि वानवर् उच्चि वैत्त* पेर् अरुळाळन् पॆरुमै पेशि* कुरु मणि नीर् कॊळिक्कुम् पुरविन्* कुरुङ्गुडिक्के एन्नै उय्त्तिडुमिन्॥ ४॥	देवों के शिरमौर मणि उदार प्रभु गायों के साथ खेलते हुए दो दाने एवं ऊंची रीढ़ वाले काले वृषभ की तरह हैं। गले की नीचे लटकते घंटी हमारे हृदय को दहलाती मृत्युवत घंटी की तरह है। हाय ! निरंतर आपकी चिंतन एवं आप ही के बारे में बोलते रहने की आदत हमें एक रात भी सोने नहीं देती। अब ढो कर आपके निवास कुरूंगुडी ले चलो जहां नाले अमूल्य रत्न लाते हैं। **1791**
तिण् तिमिल् एट्रिन् मणियुम्* आयन् तीङ्गुळल् ओशैयुम् तॆन्रलोडु* कॊण्डदोर् मालैयुम् अन्दि ईन्र* कोल इळम्बिरैयोडु कूडि* पण्डैय वल्ल इवै नमक्कु* प्पावियेन् आवियै वाट्टम् शॆय्युम्* कॊण्डल् मणि निर वण्णर् मन्नु* कुरुङ्गुडिक्के एन्नै उय्त्तिडुमिन्॥ ५॥	मजबूत पुट्ठों वाले वृषभों के घंटी की आवाज, गोपकिशोर की बंशी की मधुर ध्वनि, संध्या, मंद हवा, गोधूली के सौम्य अर्द्ध चंद्र, पूर्व का कोई भी बचा नहीं, सब मिलकर शनैः शनैः हमारा प्राण हरना चाहते हैं। हाय ! अब ढो कर मणि एवं मेघ के वर्ण वाले प्रभु के निवास कुरूंगुडी ले चलो। **1792**
एल्लियुम् नन् पगलुम् इरुन्दे* एशिलुम् एशुग एन्दिळैयार्* नल्लर् अवर् तिरम् नाम् अरियोम्* नाण् मडम् अच्चम् नमक्किङ्गिल्लै* वल्लन शॊल्लि मगिळ्वरेनुम्* मा मणि वण्णरै नाम् मरवोम्* कॊल्लै वळर् इळ मुल्लै पुल्गु* कुरुङ्गुडिक्के एन्नै उय्त्तिडुमिन्॥ ६॥	आभूषित सुन्दर किशोरियों को बैठकर, अगर वे ऐसा चाहते हैं तो, रात दिन आलोचना करने दो। हम न तो उनकी बराबरी कर सकते और न सामना ही कर सकते। हमें कोई लाज नहीं है, न डर है, और न ही पूर्वाग्रह है। अगर वे चालाकी की बात करें या हम पर हंसे तो भी हम अपने मणिवर्ण वाले प्रभु को भूल नहीं सकते। अब ढो कर प्रभु के निवास कुरूंगुडी ले चलो जो ताजा मुल्लै के बागों से घिरा है। **1793**
शॆङ्गण् नॆडिय करिय मेनि* त्तेवर् ऒरुवर् इङ्गे पुगुन्दु* एन् अङ्गम् मॆलिय वळै कळल* आदुगॊल्लो एन्रु शॊन्न पिन्नै* ऐङ्गणै विल्लि तन् आण्मै एन्नोडु* आडुम् अदनै अरिय माट्टेन्* कॊङ्गलर् तण् पणै शूळ् पुरविन्* कुरुङ्गुडिक्के एन्नै उय्त्तिडुमिन्॥ ७॥	श्यामल अरूणाभ नयन प्रभु यहां प्रवेश किये। हमारे अंग शिथिल हो गये एवं कंगन गिर गये। आपने कहा 'क्या यही नहीं है ?' और चले गये। हाय ! अब मैं कभी भी गन्ने के धनुष चलाने वाले मदन का प्रेम साथी नहीं बन सकता। अब ढो कर प्रभु के निवास कुरूंगुडी ले चलो जो मधु बहाते शीतल बागों के बीच है। **1794**

केवलम् अन्ऱ् कडलिन् ओशै⋆ केण्मिन्गाळ् आयन् कै आम्बल् वन्दु⋆ एन् आवि अळवुम् अणैन्दु निर्कुम्⋆ अन्रियुम् ऐन्दु कणै तॆरिन्दिट्टु⋆ एवलम् काट्टि इवन् ऒरुवन्⋆ इप्पडिये पुगुन्दॆय्दिडामुन्⋆ कोवलर् कूत्तन् कुरिप्परिन्दु⋆ कुरुङ्गुडिक्के एन्नै उय्त्तिडुमिन्॥८॥	विनती है, ध्यान दें, सागर का गर्जन अकेला नहीं है। गोपकिशोर की बंशी का रागानंद हमारे हृदय को अवरूद्ध करता है। और यह निपुण धर्नधारी प्रेम का देवता मदन हम पर अपने फूल के बाणों से निशाना साधे है। इसके पहले कि वह आकर हम पर प्रहार करे गोपकिशोर नर्तक की नीयत का पता करो एवं अब ढो कर मुझे प्रभु के निवास कुरूंगुडी ले चलो। **1795**
शोत्तॆन निन्ऱ् तॊळ इरङ्गान्⋆ तॊन्नलम् कॊण्डॆनक्किन्ऱ्गारुम्⋆ पोर्प्पदोर् पॊर्पडम् तन्दु पोनान्⋆ पोयिन ऊर् अरियेन्⋆ एन् कॊङ्गै मूत्तिडुगिन्ऱन⋆ मट्रवन् तन् मॊय्यगलम् अणैयादु वाळा⋆ कूत्तन् इमैयवर् कोन् विरुम्बुम्⋆ कुरुङ्गुडिक्के एन्नै उय्त्तिडुमिन्॥९॥	मैंने उनके पैर पकड़े भीख मांगी पर वे नहीं डिगे। मेरी सारी कुशलता का हरण करते हुए मुझे मुर्झाया हुआ छोड़ कर चले गये।आज तक यह पता नहीं वे गये कहां। सुन्दर वक्षस्थल के आलिंगन से वंचित होकर हमारे मुर्झाये हुए उरोज क्षीण हो रहे हैं। अब ढो कर मुझे प्रभु के निवास कुरूंगुडी ले चलो जिसे देवों के देव एवं खिलाड़ी प्रभु पसंद करते हैं। **1796**
शॆट्रवन् तॆन्निलङ्गै मलङ्ग⋆ त्तेवर् पिरान् तिरु मा मगळै प्पॆट्रुम्⋆ एन् नॆञ्जगम् कोयिल् कॊण्ड⋆ पेर् अरुळाळन् पॆरुमै पेश कट्रवन्⋆ कामरु शीर् क्कलियन्⋆ कण्णगत्तुम् मनत्तुम् अगला कॊट्रवन्⋆ मुट्रुलगाळि निन्ऱ⋆ कुरुङ्गुडिक्के एन्नै उय्त्तिडुमिन्॥१०॥	लंका नगर को जलाने वाले देवों के देव, सदा कमल समान लक्ष्मी के साथ रहने वाले उदार प्रभु अभी भी हमारे हृदय में रहते हैं।प्रशस्ति गान करने वाले कलियन के हृदय एवं नयनों को नहीं छोड़ने वाले प्रभु जो ब्रह्मांड के शासक हैं कुरूंगुडी में रहते हैं। मुझे वहां ले चलो। **1797** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

86   अक्कुम् पुलियन् (1798 - 1807)

तिरूक्कुरूङ्गुडि   2

‡अक्कुम् पुलियिन्⋆ अदळुम् उडैयार्⋆ अवर् ऑरुवर् पक्कम् निर्क निन्र्⋆ पण्बर् ऊर्पोल्लुम्⋆ तक्क मरत्तिन् ताळ् शिनैयेरि⋆ ताय् वायिल् कॊक्किन् पिळ्ळै⋆ वॆळ्ळिरवुण्णुम् कुरुङ्गुडिये॥१॥	कुरूंगुडी उदार प्रभु का घर है जो कपाल एवं व्याघ्रछाल धारण किये शिव को अपने पास रख खड़े हैं। मंदिर परिसर में हीं कपाल भैरव की सन्निधि है। नीचे की टहनी पर बैठे शिशु बगुला उपर की टहनी पर बैठी अपनी मां के मुंह से वेल्लिरा मछली खाती है। **1798**
तुङ्गार् अरव⋆ त्तिरै वन्दुलव⋆ त्तॊडु कडलुळ् पॊङ्गार् अरविल् तुयिल्लुम्⋆ पुनिदर् ऊर्पोल्लुम्⋆ शॆङ्गाल् अन्नम्⋆ तिगळ् तण् पणैयिल् पॆडैयोडुम्⋆ कॊङ्गार् कमलत्तु⋆ अलरिल् शेरुम् कुरुङ्गुडिये॥२॥	उदार प्रभु का घर है गर्जन करते सागर की लहरें इसके बीच में शेषशायी प्रभु के चरणों को छूती है। आपका निवास कुरूंगुडी में है जहां लाल पैर वाले हंस अपनी प्रिया के साथ शीतल सरोवर के बीच सुगंधित कमल के शय्या पर वास करते हैं। **1799**
वाळ् क्कण्डोम्⋆ वन्दु काण्मिन् तॊण्डीर्गाळ्⋆ केळल् शॆङ्गण्⋆ मामुगिल् वण्णर् मरुवुम् ऊर्⋆ एळै च्चॆङ्गाल्⋆ इन् तुणै नारैक्किरै तेडि⋆ कूळै प्पार्वै⋆ क्कार् वयल् मेयुम् कुरुङ्गुडिये॥३॥	भक्तों ! आओ और देखो, हमने जीवन जीने का रास्ता ढूंढ़ा है। कुरूंगुडी में कोमल लाल पैर वाले जल कुक्कुट धान के खेतों में तेज नजरों से अपने जोड़ी के लिये कीड़ा खोजते हैं। यह श्यामल मेघ के वर्ण वाले कमलनयन प्रभु का निवास है जो वराह रूप में आये। **1800**
शिर मुन् ऐन्दुम् ऐन्दुम्⋆ शिन्द च्चॆन्रु⋆ अरक्कन् उरमुम् करमुम् तुणित्त⋆ उरवोन् ऊर्पोल्लुम्⋆ इरवुम् पगल्लुम्⋆ ईन् तेन् मुरल⋆ मन्रॆल्लाम् कुरविन् पूवे तान्⋆ मणम् नारुम् कुरुङ्गुडिये॥४॥	जबकि कुरूव के सुगंध सर्वत्र कुरूंगुडी में फैलते हैं यहां रात दिन मधुमक्खी धीमे धीमे मंडराते हैं। यह शक्तिशाली प्रभु का निवास है जो लंका में जाकर राक्षसराज की छाती एवं भुजाओं को काट डाले। **1801**
कव्वै क्कळिट्रु मन्नर् माळ⋆ क्कलि मान् तेर् ऐवर्क्काय्⋆ अन्रमरिल् उयत्तान् ऊर्पोल्लुम्⋆ मै वैत्तिलङ्गु⋆ कण्णार् तङ्गळ् मॊळियॊप्पान्⋆ कॊव्वै क्कनिवाय्⋆ क्किळ्ळै पेशुम् कुरुङ्कुडिये॥५॥	लाल बैर के रंग के चोंच वाले सुग्गा काजल लगी चमकते आंखों वाली किशोरियों के समान कुरूंगुडी में बोलते हैं। यह प्रभु का निवास है जो पांच के लिये रथ चलाकर युद्ध में अनेकों हाथी सवार शक्तिवान राजाओं का बध कर दिये। **1802**

तीनीर् वण्ण⋆ मा मलर् कॉण्डु विरैयेन्दि⋆ तूनीर् परवि⋆ त्तॉऴुमिन् एऴुमिन् तॉण्डीर्गाळ्⋆ मानीर् वण्णर्⋆ मरुवि उरैयुम् इडम्⋆ वानिल् कूनीर् मदियै⋆ माडम् तीण्डुम् कुरुङ्गुडिये॥६॥	भक्तों ! शुद्ध होकर आओ एवं प्रभु की प्रशस्ति गाते हुए जल, सुगंधित अग्नि एवं ताजा फूलों से पूजा कर उन्नत हो जाओ। सागर सा सलोने प्रभु स्वेच्छा से कुरूंगुडी में रहते हैं जहां महलें चांद को छूते हैं। **1803**
वल्लि च्चिरु नुण्णिडैयारिडै⋆ नीर् वैक्किन्र्⋆ अल्लल् शिन्दै तविर⋆ अडैमिन् अडियीर्गाळ्⋆ शॉल्लिल् तिरुवे अनैयार्⋆ कनिवाय् एयिरॊप्पान्⋆ कॉल्लै मुल्लै⋆ मॅल्लरुम्बीनुम् कुरुङ्गुडिये॥७॥	भक्तों ! लता सी पतली कमर वाली किशोरियों के साथ अपने साक्षात्कार को छोड़ो। अगर बैर से रंगीन होंठ वाली लक्ष्मी के समान सुन्दर दंतावली देखना चाहते हो तो कुरूंगुडी आओ जहां पिछवाड़े में मुल्लै लताओं पर श्वेत कोमल कलियां खिलती हैं। **1804**
नारार् इण्डै⋆ नाळ् मलर् कॉण्डु नम् तमर्गाळ्⋆ आरा अन्बोडु⋆ एम्बॅरुमान् ऊर् अडैमिन्गाळ्⋆ तारा वारुम्⋆ वार् पुनल् मेयन्दु वयल् वाऴुम्⋆ कूर् वाय् नारै⋆ पेडैयॊडाडुम् कुरुङ्गुडिये॥८॥	भक्तों ! ताजा फूल मालओं एवं प्रेमास्क्ति हृदय से कुरूंगुडी में आकर पूजा करो जहां तीक्ष्ण चोंच वाले जलकुक्कुट अपनी जोड़ियों के साथ खेतों में भरे तारा जल पक्षियों के साथ आनंद मनाते हैं। **1805**
निन्र् विनैयुम् तुयरुम् कॅड⋆ मा मलर् एन्दि⋆ शॅन्रु पणिमिन् एऴुमिन्⋆ तॊऴुमिन् तॊण्डीर्गाळ्⋆ एन्रुम् इरवुम् पगल्लुम्⋆ वरि वण्डिशै पाड⋆ कुन्रिन् मुल्लै⋆ मन्रिडै नारुम् कुरुङ्गुडिये॥९॥	भक्तों ! अपने पूर्व कर्मों एवं कष्टों का क्षय कर दो। पर्वतों से ताजा फूल चुनकर जहां रात दिन मधुमत्त मधुमक्खी सुगंधित मुल्लै लताओं पर गीत गाते हैं आकर पूजा तथा सेवा करो एवं उन्नत हो जाओ। **1806**
‡शिलैयाल् इलङ्गै शॅट्रान्⋆ मट्रोर् शिन वेऴम्⋆ कॉलैयार् कॉम्बु कॉण्डान् मेय⋆ कुरुङ्गुडिमेल्⋆ कलैयार् पनुवल् वल्लान्⋆ कलियन् ऑलि मालै⋆ निलैयार् पाडल् पाड⋆ प्पावम् निल्लावे॥१०॥	यह मधुर तमिल पदों की माला अद्वितीय मेधा वाले कवि कलियन ने कुरूंगुडी के उस प्रभु की प्रशस्ति में गाये हैं जो धनुष चलाकर लंका का नाश किये एवं भयानक कोधी हाथी के दांत उखाड़ लिये। जो इन पदों को याद कर लेंगे वे कर्म के लेखा से मुक्त हो जायेंगे। **1807** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

87 तन्दैताय् (1808 - 1817)

तिरूवल्लवाऴ्

यह स्थान केरल का तिरूवल्ला है जो कोट्टायम शहर का एक भाग है। इसे श्री वल्लभ क्षेत्र कहते हैं। मूलावर तिरूवल्ला खड़े अवस्था में पूर्वाभिमुख हैं। ऊपर के दो हाथों में शंख चक्र है तथा नीचे का दायां हाथ कमल धारण किये है और बायां कमर पर है। मूलावर बहुत ही आकर्षक हैं। एक महिला पूर्व में अपने को रोक नहीं सकी एवं गर्भगृह में प्रवेश कर मूलावर का आलिंगन किया। तब से महिलाओं का मंदिर में प्रवेश वर्जित था परन्तु 1967 से पुनः छूट मिल गयी है। भगवान को यहां कथकली बहुत प्रिय है और भक्तगन प्रायः रात्रि में इसका आयोजन करते रहते हैं। सुदर्शन चक्र की यहां अलग सन्निधि है जहां भभूत का प्रसाद मिलता है जबकि मुख्य मंदिर में चंदन का प्रसाद मिलता है। 2 फीट व्यास को 50 फीट जमीन से ऊपर एक ही पत्थर का गरूड़ स्तंभ बना है जो बराबर लंबाई में जमीन में है।

Ramesh Vol. 4 pp 212

तन्दै ताय् मक्कळे* शुट्रम् ऎन्ऱुट्रवर् पट्रि निन्ऱ* पन्दमार् वाऴ्क्कैयै* नॊन्दु नी पऴियॆन क्करुदिनायेल्* अन्दमाय् आदियाय्* आदिक्कुम् आदियाय् आयनाय्* मैन्दनार् वल्लवाऴ्* शॊल्लुमा वल्लैयाय् मरुवु नॆञ्जे ! ॥१॥	हे मन ! अगर पिता माता बच्चों कुटुंब एवं मित्रों तक सीमित जीवन के भार से मुक्त होना चाहते हो तो तिरूवल्लवाऴ की प्रशस्ति गाना सीखो जहां गोपकिशोर राजकुमार का निवास है और जो अंत प्रारंभ एवं प्रारंभों के प्रारंभ हैं। **1808**
मिन्नु मा वल्लियुम् वञ्जियुम् वॆन्ऱ* नुण्णिडै नुडङ्गुम्* अन्न मॆन् नडैयिनार् कलवियै* अरुवरुत्तञ्जिनायेल्* तुन्नु मा मणि मुडि प्पञ्जवर्क्कागि* मुन् तूदु शॆन्ऱ* मन्ननार् वल्लवाऴ्* शॊल्लुमा वल्लैयाय् मरुवु नॆञ्जे ! ॥२॥	हे मन ! अगर हंसगमिनी एवं तड़ित रेखा सी कटि वाली किशोरियों के समागम वाला जीवन को घृणा करते हो एवं इसतरह का जीवन से भयाक्रांत हो तो तिरूवल्लवाळ की प्रशस्ति गाना सीखो जहां प्रभु का निवास है और जो पांच मुकुट वाले पांडव राजाओं के दूत बनकर गये। **1809**
पूणुला मॆन् मुलै प्पावैमार्* पॊय्यिनै मॆय् इदॆन्ऱु* पेणुवार् पेशुम् अप्पेच्चै* नी पिऴैयॆन क्करुदिनायेल्* नीऴ् निला वॆण् कुडै वाणनार्* वेळ्वियिल् मण् इरन्द* माणियार् वल्लवाऴ्* शॊल्लुमा वल्लैयाय् मरुवु नॆञ्जे ! ॥३॥	हे मन ! अगर मोती हार एवं कोमल उरोजों वाली नारियों के आडंबर एवं मिथ्या पूर्णता को समझते हो एवं ऐसे जीवन को घृणा करते हो तो तिरूवल्लवाळ की प्रशस्ति गाना सीखो जहां प्रभु का निवास है और जो मावली के यज्ञ में जाकर तीन पग जमीन की भिक्षा मांगे। **1810**
पण्णुलाम् मॆन् मॊऴि प्पावैमार्* पणैमुलै अणैदुम् नाम् ऎन्ऱु* ऎण्णुवार् ऎण्णमदॊऴित्तु* नी पिऴैत्तुय्य क्करुदिनायेल्* विण्णुळार् विण्णिन् मीदियन्ऱ* वेङ्गडत्तुळार्* वळङ्गॊळ् मुन्नीर् वण्णनार् वल्लवाऴ्* शॊल्लुमा वल्लैयाय् मरुवु नॆञ्जे ! ॥४॥	हे मन ! अगर मृदुवचनी उभरे उरोज के सुन्दर नारियों के आलिंगन के मोह से छूटकर अपनी आध्यात्मिक उन्नति चाहते हो तो तिरूवल्लवाळ की प्रशस्ति गाना सीखो जहां सागर सा सलोने प्रभु का निवास है और जो वेंकटम में वही आनन्द देते हैं जो देवों को वैकुंठ में मिलता है। **1811**

मञ्जु तोय् वॅण् कुडै मन्नराय्* वारणम् शूळ वाळ्न्दार्* तुञ्जिनार् एन्बदोर् शॅाल्लै* नी तुयर् एन क्करुदिनायेल्* नञ्जु तोय् कॉङ्गैमेल् अङ्गवाय् वैत्तु* अवळ् नाळै उण्ड मञ्जनार् वल्लवाळ्* शॅाल्लुमा वल्लैयाय् मरुवु नॅञ्जे ! ॥५॥	हे मन ! आकाश को छूते छतरी तथा छत्रों वाले हाथी से घिरे पृथ्वी के राजागण भी एक दिन मरते हैं। अगर इस बात से उदास रहते हो तो तिरूवल्लवाळ की प्रशस्ति गाना सीखो जहां प्रभु का निवास है जिन्होंने राक्षसी पूतना का विषैला स्तन चूस कर उसका प्राण हर लिये। **1812**
उरुविनार् पिरवि शेर्* ऊन् पॅादि नरम्बु तोल् कुरम्बैयुळ् पुक्कु* अरुवि नोय् शॅय्दु निन्रु* ऐवर् ताम् वाळ्वदर्कञ्जिनायेल्* तिरुविनार् वेदम् नान्गैन्दु ती* वेळ्वियोडङ्गम् आरुम्* मरुविनार् वल्लवाळ्* शॅाल्लुमा वल्लैयाय् मरुवु नॅञ्जे ! ॥६॥	हे मन ! पांच इन्द्रियां जो जन्म के समय मांस के इस पिंजड़ानुमा शरीर में घर कर लेते हैं जीवन के दुख एवं यातना के कठोर स्रोत हैं।अगर इनसे डर लगता है तो तिरूवल्लवाळ की प्रशस्ति गाना सीखो जहां चारों वेद पांचो यज्ञ एवं छः आगम पूर्णताय प्रयोग में लाये जाते हैं। **1813**
नोय् एल्लाम् पॅय्ददोर् आक्कैयै* मॅय्यॅन क्कॅाण्डु* वाळा पेयर् ताम् पेशुम् अप्पेच्चै* नी पिळैयॅन क्करुदिनायेल्* तीयुला वॅङ्गदिर् त्तिङ्गळाय्* मङ्गुल् वान् आगि निन्र्* मायनार् वल्लवाळ्* शॅाल्लुमा वल्लैयाय् मरुवु नॅञ्जे ! ॥७॥	हे मन ! मित्र लोग इस व्याधिग्रस्त शरीर को सच मान लेते हैं। अगर इस तर्क में दोष है एवं उनका जीवन मिथ्या है तो तिरूवल्लवाळ की प्रशस्ति गाना सीखो जहां प्रभु का निवास है और जो उज्जवल सूर्य चांद आकाश तथा सबकुछ हैं। **1814**
मञ्जु शेर् वान् एरि* नीर् निलम् कालिवै मयङ्गि निन्र्* अञ्जु शेर् आक्कैयै* अरणम् अन्रॅन्रुय्य क्करुदिनायेल्* शन्दु शेर् मॅन्मुलै* प्पॅान्मलर् प्पावैयुम् तामुम्* नाळुम् वन्दु शेर् वल्लवाळ्* शॅाल्लुमा वल्लैयाय् मरुवु नॅञ्जे ! ॥८॥	हे मन ! यह शरीर पांच तत्वों मिट्टी अग्नि जल हवा एवं अकाश का एक मिश्रण है। अगर तुम यह मानते हो कि यह किला नहीं है और निकलने का मार्ग खोज रहे हो तो तिरूवल्लवाळ की प्रशस्ति गाना सीखो जहां प्रभु का निवास है और जो चंदन लिपटे कमल सी लक्ष्मी के साथ रहते हैं। **1815**
वॅळ्ळियार् पिण्डियार् पोदियार्* एन्रिवर् ओदुगिन्र्* कळ्ळनूल् तन्नैयुम्* करुमम् अन्रॅन्रुय्य क्करुदिनायेल्* तॅळ्ळियार् कै तॅाळुम् देवनार्* मामुनीर् अमुदु तन्द* वळ्ळलार् वल्लवाळ्* शॅाल्लुमा वल्लैयाय् मरुवु नॅञ्जे ! ॥९॥	हे मन ! रौद्र बौद्ध एवं अर्हत लोग गैर शास्त्रीय उदाहरण देते हैं। अगर तुम उन्हें अनावश्यक एवं अनुपयुक्त पाते हो और अपनी उन्नति का मार्ग खोज रहे हो तो तिरूवल्लवाळ की प्रशस्ति गाना सीखो जहां देवताओं से पूजित प्रभु का निवास है और जिन्होंने समुद्र मंथन कर देवों को अमृत दिया। **1816**
मरैवल्लार् कुरैविलार् उरैयुमूर्* वल्लवाळ् अडिगळ् तम्मै* शिरै कुलाम् वण्डरै शोलै शूळ्* कोल नीळ् आलि नाडन्* करैयुलाम् वेल्वल्ल* कलियन् वाय् ऑलियिवै कट्रु वल्लार्* इरैवराय् इरुनिलम् कावल् पूण्डु* इन्बम् नन्गॅय्दुवारे ॥१०॥	मधुमक्खी मंड़राते सुन्दर बागों से घिरे अलिनाडु के तीक्ष्ण भालाधारी राजा कलियन ने वैदिक ऋषियों से पूजित तिरूवल्लवाळ के प्रभु की प्रशस्ति में इस गीतमाला को रचा है।जो इसे याद कर लेंगे वे पृथ्वी पर शासन करते हुए स्वर्ग का आनंद उठायेंगे। **1817** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

88 मुन्दुर (1818 - 1827)

तिरूमालैरूञ्जोलै 1 Ramesh vol 4 pp 227

मुन्दुर उरैक्केन् विरै क्कुळल् मडवार्* कलवियै विडु तडुमारल्* अन्दरम् एळुम् अलै कडल् एळुम् आय* एम् अडिगळ् तम् कोयिल्* शन्दॊडु मणियुम् अणि मयिल् तळैयुम्* तळुवि वन्दरुविगळ् निरन्दु* वन्दिळि शारल् मालिरुञ्जोलै* वणङ्गुदुम् वा ! मड नॆञ्जे ! ॥१॥	हे निर्बल मन ! मैं तुझे सावधान करता हूं। सुगंधित जूड़े वाली नारी के साथ समागम की चाह छोड़ दे, यह एव अवरोध है। प्रभु जो स्वयं सात द्वीप एवं सात समुद्र हैं मालिरूञ्जोलै के मंदिर में रहते हैं जहां पहाड़ी नाले चंदन, रत्न, एवं मोर पंख सुगंधित बागों में सर्वत्र बहा लाते हैं। आओ हम यहां पूजा अर्पित करें। **1818**
इण्डैयुम् पुनलुम् कॊण्डिडै इन्रि* एळुमिनो तॊळुदुम् एन्रु* इमैयोर् अण्डरुम् परव अरवणै तुयिन्र* शुडर् मुडि क्कडवुळ् तम् कोयिल्* विण्डलर् तूळि वेय् वळर् पुरविल्* विरै मलर् क्कुरिञ्जियिन् नरुन् तेन्* वण्डमर् शारल् मालिरुञ्जोलै* वणङ्गुदुम् वा ! मड नॆञ्जे ! ॥२॥	हे निर्बल मन ! देवगन सदा ताजा माला एवं शुद्ध जल लेकर शेषशायी ऊंचे मुकुट वाले प्रभु की पूजा के लिये खड़े रहते हैं। आप मालिरूञ्जोलै में रहते हैं जहां बांसो के झुरमुट में मधुमक्खी पहाड़ी फूलों से मधु एकत्र करते हैं। आओ हम यहां पूजा अर्पित करें। **1819**
पिणि वळर् आक्कै नीङ्ग निन्रेत्त* पॆरु निलम् अरुळिन् मुन्नरुळि* अणिवळर् कुरळायगलिडम् मुळुदुम्* अळन्द एम् अडिगळ् तम् कोयिल्* कणि वळर् वेङ्गै नॆडु निलम् अदनिल्* कुरवर् तम् कवणिडै तुरन्द* मणि वळर् शारल् मालिरुञ्जोलै* वणङ्गुदुम् वा ! मड नॆञ्जे ! ॥३॥	हे निर्बल मन ! दैहिक यातना से त्राण पाने के लिये आपने पृथ्वी पर अनेकों पवित्र स्थल वनाये जहां हमारी पूजा स्वीकार की जा सके। आपने वामन के रूप में पृथ्वी को मापा। आप मालिरूञ्जोलै में रहते हैं जो मौसम का संकेत करने वाले वेंगै पेड़ों से घिरा है एवं जहां वनवासी गुलेलों से रत्नपत्थर फेंकते हैं। आओ हम यहां पूजा अर्पित करें। **1820**
शूर्मैयिलाय पेय् मुलै शुवैत्तु* च्चुडु शरम् अडु शिलै तुरन्दु* नीर्मै इलाद ताडगै माळ* निनैन्दवर् मनम् कॊण्ड कोयिल्* कार् मलि वेङ्गै कोङ्गलर् पुरविल्* कडि मलर् क्कुरिञ्जियिन् नरुन् तेन्* वार् पुनल् शूळ् तण् मालिरुञ्जोलै* वणङ्गुदुम् वा ! मड नॆञ्जे ! ॥४॥	हे निर्बल मन ! भयानक राक्षसी पूतना का जहरीला स्तन पीने के लिये निर्णय करने वाले एवं स्वछंद राक्षसी ताड़का का अग्नि बाण से नाश करने वाले प्रभु मालिरूञ्जोलै के मंदिर में रहते हैं जो वेंगै एवं कोंगु के लंबे वृक्षों से भरे घने बागों से घिरा है और जहां पहाड़ी फूल के मधु बहते रहते हैं। आओ हम यहां पूजा अर्पित करें। **1821**

वणङ्गलिल् अरक्कन् शॅरुक्कळत्तविय॰ मणि मुडि ऑरुपदुम् पुरळ॰ अणॅङ्गळुन्दवन् तन् कवन्दम् निन्राड॰ अमर् शॅय्द अडिगळ् तम् कोयिल्॰ पिणङ्गलिल् नॅडु वेय् नुदि मुगम् किळिप्प॰ प्पिरशम् वन्दिळिदर पॅरुन् तेन्॰ मणङ्गमळ् शारल् मालिरुञ्जोलै॰ वणङ्गुदुम् वा ! मड नॅञ्जे ! ॥५॥	हे निर्बल मन ! प्रभु ने मनमौजी राक्षस का सामना करते हुए उसके दस मुकुटधारी सिर काट गिराये जबकि उसका धड़ किसी दुष्टात्मा प्रेत से ग्रस्त की भांति तड़पता रहा। आप मालिरूञ्जोलै के मंदिर में रहते हैं जो ऊंचे बांस के घने बागों से घिरा है एवं जिसके शिखर मधु के छत्ते से टकरा कर सर्वत्र सुगंधित मधु बहाते रहते हैं। आओ हम यहां पूजा अर्पित करें। **1822**
विडङ्गलन्दमरन्द अरवणै त्तुयिन्रु॰ विळङ्गनिक्किळङ्गन्रु विशिरि॰ कुडङ्गलन्दाडि क्कुरवै मुन् कोत्त॰ कूत्त एम् अडिगळ् तम् कोयिल्॰ तडङ्गडल् मुगन्दु विशुम्बिडै प्पिळिर॰ त्तडवरै क्कळिरॅन्रु मुनिन्दु॰ मडङ्गल् निन्रदिरुम् मालिरुञ्जोलै॰ वणङ्गुदुम् वा ! मड नॅञ्जे ! ॥६॥	हे निर्बल मन ! विष वमन करते नाग की शय्या पर शयन करने वाले प्रभु गोपकिशोर के रूप में आये एवं राक्षसी बछड़े को ताड़ के पेड़ पर पटक मारे तथा पात्र पर नृत्य कर गोपियों के साथ उनके कुरूवै नृत्य में सरीक हो गये। आप मालिरूञ्जोलै में रहते हैं जहां समुद्र से जल लेकर उठने वाले काले बादल आकाश में गर्जन करते हैं जिसे सुनकर सिंह हाथी की आवाज समझ गुस्सा में प्रति गर्जन करते हैं। आओ हम यहां पूजा अर्पित करें। **1823**
तेनुगन् आवि पोयुग॰ अङ्गोर् शॅळुन् तिरळ् पनङ्गनि उदिर॰ तान् उगन्दॅरिन्द तडङ्गडल् वण्णर्॰ एण्णिमुन् इडम् कॉण्ड कोयिल्॰ वानग च्चोलै मरगद च्चायल्॰ मा मणि क्कल्लदर् निरैन्दु॰ मानुगर् शारल् मालिरुञ्जोलै॰ वणङ्गुदुम् वा ! मड नॅञ्जे ! ॥७॥	हे निर्बल मन ! सागर सा सलोने प्रभु कृष्ण के रूप में आये एवं धेनुकासर को ताड़ पेड़ पर पटक कर तुरत मार दिया। बहुत पहले आपने मालिरूञ्जोलै में रहने का निर्णय लिया जहां मृग नीले रत्न के पहाड़ के रास्ते पन्ना समान हरित जंगल में चौकड़ी भरते हैं। आओ हम यहां पूजा अर्पित करें। **1824**
पुदमिगु विशुम्बिल् पुणरि शॅन्रणव॰ प्पॉरु कडल् अरवणै त्तुयिन्रु॰ पदमिगु परियिन् मिगु शिनम् तविर्त्त॰ पनि मुगिल् वण्णर् तम् कोयिल्॰ कदमिगु शिनत्त कड तड क्कळिट्रिन्॰ कवुळ् वळि क्कळिवण्डु परुग॰ मदमिगु शारल् मालिरुञ्जोलै॰ वणङ्गुदुम् वा ! मड नॅञ्जे ! ॥८॥	हे निर्बल मन ! प्रभु गहरे सागर में सोते हैं जिसकी तरंगे बादल को छूती हैं। आप कृष्ण के रूप में आये एवं आक्रामक श्वेत केशिन घोड़ा का जबड़ा चीर डाले। आप बागों से घिरे मालिरूञ्जोलै में रहते हैं जहां हाथी के मत्त के मधुर प्रवाह को पीने के लिये मधुमक्खी उनके गालों पर मंड़राते हैं। आओ हम यहां पूजा अर्पित करें। **1825**
पुन्दियिल् शमणर् पुत्तर् एन्रिवर्गळ्॰ ऑत्तन पेशवुम् उगन्दिट्टु॰ एन्दै पॅम्मानार् इमैयवर् तलैवर्॰ एण्णिमुन् इडम् कॉण्ड कोयिल्॰ शन्दन प्पॉळिलिन् ताळ् शिनै नीळल्॰ ताळ्वरै मगळिर्गळ् नाळुम्॰ मन्दिरत्तिरैञ्जुम् मालिरुञ्जोलै॰ वणङ्गुदुम् वा ! मड नॅञ्जे ! ॥९॥	हे निर्बल मन ! देवों के प्रभु हमारे परंपरागत देव बौद्धों एवं श्रमणों के बेतुकी बातों से भी प्रसन्न रहते हैं। बहुत पहले आपने चंदन बागों से घिरे मालिरूञ्जोलै में रहने का निर्णय लिया जहां पहाड़ियों की लड़कियां छोटी छतरी में जाकर आपके नाम का गान हर दिन करती हैं। आओ हम यहां पूजा अर्पित करें। **1826**

वण्डमर् शार्ल् मालिरुञ्जोलै* मा मणि वण्णरै वणङ्गुम्* तोंण्डरै प्परवुम् शुडर् ऑळि नेंडुवेल्* शूळ् वयल् आलि नल् नाडन्* कण्डल् नल् वेलि मङ्गैयर् तलैवन्* कलियन् वाय् ऑलि शेंय्द पनुवल्* कोंण्डिवै पाडुम् तवम् उडैयार्गळ्* आळ्वर् इक्कुरै कडल् उलगे॥१०॥	इस गीतमाला में खजूर पेड़ो से घिरे उपजाऊ खेतों वाले मंगै के तीक्ष्ण भाला धारी राजा कलियन ने उन भक्तों की प्रशस्ति गायी है जो मालिरूञ्जोलै के मधु मंड़राते बागों वाले मणिवर्णा प्रभु की पूजा करते हैं। जो इसे गाने के लिये सीखेंगे वे सागर से घिरे पृथ्वी के राजा होंगे। **1827** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

89 मूवरिल् (1828 - 1837)

तिरूमालैरूञ्जोलै 2 Ramesh vol 4 pp 227

परकाल नायिका की मां की चिंता

मूवरिल् मुन् मुदल्वन्⋆ मुळङ्गार् कडलुळ् किडन्दु⋆ पूवलरुन्दि तन्नुळ्⋆ बुवनम् पडैत्तुण्डुमिळन्द⋆ देवर्गळ् नायगनै⋆ तिरुमालिरुञ्जोलै निन्र⋆ कोवलर् गोविन्दनै⋆ क्कॉडियेर् इडै कूडुङ्गॉलो॥१॥	त्रिमूर्ति के आदिकारण, सागर में शयन करनेवाले, अपने नाभिकमल पर ब्रह्मांड को बनाकर निगल गये एवं पुनः बना देनेवाले, देवों के देव, गोपकुमार गोवंदा तिरूमालिरूञ्जोलै में रहते हैं। क्या लता सी पतली कमर वाली हमारी बेटी आज उनसे घुल मिल जायेगी ? आश्चर्य ! **1828**
पुनै वळर् पूम् पॉळिलार्⋆ पॉन्नि शूळ् अरङ्ग नगरुळ् मुनैवनै⋆ मूवुलगुम् पडैत्त⋆ मुदल् मूर्त्ति तन्नै⋆ शिनै वळर् पूम् पॉळिल् शूळ्⋆ तिरुमालिरुञ्जोलै निन्रान्⋆ कनै कळल् काणुङ्गॉलो⋆ कयल् कण्णि एम् कारिगैये॥२॥	पुन्नै पेड़ों के शीतल बागों से गुजरने वाली कावेरी नदी से घिरे अरंगम के निवासी आदि कारण तथा तीनों लोकों को बनाने वाले प्रभु घने सुगंधित बागों से घिरे तिरूमालिरूञ्जोलै में रहते हैं। क्या मीन नयना हमारी बेटी आज उनके नुपूर ध्वनि करते चरणों को देखेगी ? आश्चर्य ! **1829**
उण्डुलगेळिनैयुम्⋆ ऑरु बालगन् आलिलैमेल्⋆ कण् तुयिल् कॉण्डुगन्द⋆ करु माणिक्क मामलैयै⋆ तिण् तिरल् मागरि शेर्⋆ तिरुमालिरुञ्जोलै निन्र⋆ अण्डर् तम् कोविनै इन्रु⋆ अणुगुम्गॉल् एन्नायिळैये॥३॥	सातों लोक को निगल कर बटपत्र पर शिशु की तरह सोने वाले देवों के प्रभु हैं। आप श्याम मणि के पर्वत हैं तथा जंगली हाथियों से घिरे तिरूमालिरूञ्जोलै में रहते हैं। क्या पसंदीदा गहनों से आभूषित हमारी बेटी आज उनके पास पहुंच जायेगी ? आश्चर्य ! **1830**
शिङ्गमदाय् अवुणन्⋆ तिरल् आगम् मुन् कीण्डुगन्द⋆ पङ्गय मामलर् क्कण्⋆ परनै एम् परञ्जुडरै⋆ तिङ्गळ् नल् मामुगिल् शेर्⋆ तिरुमालिरुञ्जोलै निन्र⋆ नङ्गळ् पिरानै इन्रु⋆ नणुगुम्गॉल् एन्नन्नुदले॥४॥	सुन्दर राजीव नयन हमारे प्रभु पुरा काल में केशरी रूप में आकर शक्तिशाली हिरण्य की छाती आनंद से चीर डाले। तेजोमय प्रभु तिरूमालिरूञ्जोलै में रहते हैं जो चांद छूते ऊंचाई वाला है। क्या उज्जवल ललाट वाली हमारी बेटी आज उनको प्राप्त कर लेगी ? आश्चर्य ! **1831**
तानवन् वेळ्वि तन्निल्⋆ तनिये कुरळाय् निमिर्न्दु⋆ वानमुम् मण्णगमुम्⋆ अळन्द तिरिविक्किरमन्⋆ तेन् अमर् पूम् पॉळिल् शूळ्⋆ तिरुमालिरुञ्जोलै निन्र⋆ वानवर् कोनैय् इन्रु⋆ वणङ्गि तॉळ वल्लळ् कॉलो॥५॥	माबली असुर के यज्ञ में प्रभु वामन बन के आये एवं त्रिविक्रम का रूप धारण कर धरा एवं आकाश को माप दिया। देवों के देव प्रभु मधु बहते फूल के बागों वाले तिरूमालिरूञ्जोलै में रहते हैं। क्या हमारी बेटी आज उनकी पूजा झुककर कर लेगी ? आश्चर्य ! **1832**

नेशम् इलादवर्क्कुम्⋆ निनैयादवर्क्कुम् अरियान्⋆ वाश मलर् प्पॉळिल् शूऴ्⋆ वड मामदुरै प्पिरन्दान्⋆ देशम् एल्लाम् वणङ्गुम्⋆ तिरुमालिरुञ्जोलै निन्र्⋆ केशव नम्बि तन्नै⋆ क्कॅण्डै ऑण् कण्णि काणुम्गॉलो॥ ६ ॥	न तो प्रेम करते और न ध्यान धरते, ऐसे लोगों से अगम्य प्रभु ने सुगंधित बागों वाले उत्तर मथुरा में जन्म लिया।समस्त जगत से पूजित आप केशव हैं और तिरूमालिरूञ्जोलै में रहते हैं। क्या मीन नयना हमारी बेटी आज उनका दर्शन कर लेगी ? आश्चर्य ! **1833**
पुळ्ळिनै वाय् पिळन्दु⋆ पॉरुमा करि कॉम्बॉशित्तु⋆ कळ्ळ च्चगडुदैत्त⋆ करु माणिक्क मामलैयै⋆ तॅळ्ळरुवि कॉऴिक्कुम्⋆ तिरुमालिरुञ्जोलै निन्र्⋆ वळ्ळलै वाळ् नुदलाळ्⋆ वणङ्गि त्तॉऴ वल्लळ्गॉलो॥ ७ ॥	मणि के पर्वत कृष्ण प्रभु ने असुर पक्षी बक का चोंच चीर दिया तथा मदमत्त हाथी कुवडयापीठ के दांत उखाड़ लिये। आप ने दुष्ट गाड़ी को पैरों से चकनाचूर कर दिया। उदारमना प्रभु तिरूमालिरूञ्जोलै में रहते हैं। क्या उज्जवल ललाट वाली हमारी बेटी आज उनकी पूजा कर लेगी ? आश्चर्य ! **1834**
पार्त्तनुक्कन्ररुळि⋆ प्पारदत्तॉरु तेर् मुन्निन्रु⋆ कात्तवन् तन्नै⋆ विण्णोर् करु माणिक्क मामलैयै⋆ तीर्त्तनै प्पूम् पॉऴिल् शूऴ्⋆ तिरुमालिरुञ्जोलै निन्र्⋆ मूर्त्तियैक्कै तॉऴवुम्⋆ मुडियुम्गॉलॅन्मॉय् कुऴर्के॥ ८ ॥	प्रभु आप देवों के मणि के पर्वत हैं एवं पुरा काल में भारत के युद्ध में आपने अर्जुन का रथ हांका। फूल बागों से घिरे तिरूमालिरूञ्जोलै के आप पावन प्रतीक हैं। क्या अच्छे जूड़े वाली हमारी बेटी आज उनकी पूजा के लिये अपने को करबद्ध कर लेगी ? आश्चर्य ! **1835**
वलम्बुरि आऴियनै⋆ वरैयार् तिरळ् तोळन् तन्नै⋆ पुलम्बुरि नूलवनै⋆ प्पॉऴिल् वेङ्गड वेदियनै⋆ शिलम्बियल् आरुडैय⋆ तिरुमालिरुञ्जोलै निन्र्⋆ नलम् तिगऴ् नारणनै⋆ नणुगुम्गॉल् एन् नल् नुदले॥ ९ ॥	पर्वत की तरह शक्तिशाली भुजाओं वाले प्रभु दक्षिणावर्ती शंख एवं कंधों पर पवित्र आकर्षक यज्ञोपवीत धारण किये हुए वेंकटम के वैदिक प्रभु हैं। आप सौम्य नारायण शिलम्बरू तथा नुपूर गंगा से प्रवाहित तिरूमालिरूञ्जोलै में रहते हैं। क्या उज्जवल ललाट वाली हमारी बेटी आज कम से कम उनके नजदीक तो हो लेगी ? आश्चर्य ! **1836**
तेडर्करियवनै⋆ त्तिरुमालिरुञ्जोलै निन्र्⋆ आडल् परवैयनै⋆ अणियायिऴै काणुम् एन्रु⋆ माड क्कॉडि मदिळ् शूऴ्⋆ मङ्गैयार् कलिगन्रि शॉन्न⋆ पाडल् पनुवल् पत्तुम्⋆ पयिल्वार्क्किल्लै पावङ्गळे॥ १० ॥	पताकों फहरते महलों वाले मंगै क्षेत्र के राजा कलकन्रि के ये दस मधुर गीत की माला मां की इच्छा को चित्रित करती है जो अपनी आभूषित बेटी को गरूड़ पर चलने वाले तथा जिज्ञासुओं को मुश्किल से मिलने वाले तिरूमालिरूञ्जोलै के प्रभु से समागम चाहती है। इसे याद करने वालों के कर्म नहीं रहेंगे। **1837** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

<table>
<tr><td colspan="2">

श्रीमते रामानुजाय नमः

90 एङ्गल (1838-1847)

तिरूक्कोट्टियूर Ramesh vol 4 pp 169

</td></tr>
<tr><td>
एङ्गळ् एम्मिरै एम्बिरान्*
इमैयोर्क्कु नायगन्* एत्तडियवर्
तङ्गळ् तम् मनत्तु* प्पिरियादरुळ् पुरिवान्*
पॊङ्गु तण्णरुवि पुदम् शॆय्य*
पॊन्गळे शिदरुम् इलङ्गॊळि*
शॆङ्गमलम् मलरुम्* तिरुक्कोट्टियूराने॥१॥
</td><td>
हमारे प्रिय प्रभु देवों के प्रभु हैं। जो आपकी पूजा करते हैं उनके हृदय में आप निरंतर बसते हैं। आप तिरूक्कोट्टियूर में रहते हैं जहां बादल की वर्षा से सोना के नाले निकलते हैं जिनसे प्रकाशित स्थलों में कमल खिल पड़ते हैं। **1838**
</td></tr>
<tr><td>
एव्वनोय् तविर्प्पान्* एमक्किरै
इन्नगै त्तुवर् वाय्* निल मगळ्
शॆव्वि तोय वल्लान्* तिरुमा मगट्किनियान्*
मौवल् मालै वण्डाडुम्* मल्लिगै
मालैयॊडु मणन्दु* मारुदम्
दॆय्वम् नार् वरुम्* तिरुक्कोट्टियूराने॥२॥
</td><td>
हमारे प्रभु व्याधि के दुख से त्राण दिलाते हैं। आप भूदेवी की मुस्कान से आनंद लेते हैं तथा कमल वाली लक्ष्मी श्री के प्रति सदा मधुर व्यहार रखते हैं। आपके चमेली एवं जाजी के फूल मालाओं से चलने वाली हवा तिरूक्कोट्टियूर में स्वर्गिक सुगंध विखेरते हैं। **1839**
</td></tr>
<tr><td>
वॆळ्ळियान् करियान्* मणि निर् वण्णन्
विण्णवर् तमक्किरै* एम-
क्कॊळ्ळियान् उयर्न्दान्* उलगेळुम् उण्डुमिळ्न्दान्*
तुळ्ळु नीर् मॊण्डु कॊण्डु* शामरै क्कट्टै
शन्दनम् उन्दि वन्दशै*
तॆळ्ळु नीर् प्पुरविल्* तिरुक्कोट्टियूराने॥३॥
</td><td>
निष्कलंक, श्यामल, मणि के वर्णवाले, स्वर्गिकों के देव, अगम्य प्रभु हमलोगों के सामने प्रकट हुए हैं। आपने सातों लोक को निगलकर बाहर निकाल दिया। आप तिरूक्कोट्टियूर में रहते हैं जहां नाले बागों में चंदन लकड़ी तथा चंवर के बाल वहा कर लाते हैं। **1840**
</td></tr>
<tr><td>
एरुम् एरि इलङ्गुम् ऑण् मळु प्पट्टम्* ईशर्-
किशैन्दु* उडम्बिल् ओर्
कूरु तान् कॊडुत्तान्* कुल मामगट्किनियान्*
नारु शण्बग मल्लिगै मलर् पुल्गि*
इन्निळ वण्डु* नल् नरुन्
तेरल् वाय् मडुक्कुम्* तिरुक्कोट्टियूराने॥४॥
</td><td>
जैसे आपने कमल वाली लक्ष्मी को अपने वदन पर स्थान दिया है उसी तरह से कृतज्ञता पूर्वक फरसा धारी बैल की सवारी करने वाले शिव को भी अपने वदन पर रखा है। आप तिरूक्कोट्टियूर में रहते हैं जहां यौवनपूर्ण मधुमक्खियां सुगंधित शणवकम एवं चमेली के रजपूर्ण फूलों का अमृत पीकर नाचते हैं। **1841**
</td></tr>
</table>

वङ्ग मा कडल् वण्णन्⋆ मा मणि वण्णन् विण्णवर् कोन्⋆ मदु मलर् तॊङ्गल् नीळ् मुडियान्⋆ नॆडियान् पडि कडन्दान्⋆ मङ्गुल् तोय् मणि माड वॆण् कॊडि⋆ मागमीदुयर्न्देरि⋆ वान् उयर् तिङ्गळ् तान् अणवुम्⋆ तिरुक्कोट्टियूराने॥५॥	गहरे सागर सा सलोने, श्यामल मणि जैसे, स्वर्गिकों के देव, अमृतमयी तुलसी की माला पहने पुराकाल के धरा मापने वाले प्रभु तिरूक्कोट्टियूर में रहते हैं जहां महलें ऊंचे उठकर बादल छूते हैं तथा उनके ऊपर के श्वेत पताका आकाश में चांद से खेलते हैं। **1842**
कावलन् इलङ्गैक्किरै कलङ्ग⋆ शरम् शॆल्ल उय्त्तु⋆ मट्रवन् एवलम् तविर्त्तान्⋆ एन्नै आळुडै एम्बिरान्⋆ नावलम् पुवि मन्नर् वन्दु वणङ्ग⋆ माल् उरैगिन्रदिङ्गॆन⋆ देवर् वन्दिरैञ्जुम्⋆ तिरुक्कोट्टियूराने॥६॥	मेरे प्रभु, नाथ, एवं पूज्य मल ने बाणों से लंकापति रावण के अत्याचार का अंत किया। जंबु द्वीप के सारे राजा तिरूक्कोट्टियूर में जमा होकर कहते हैं 'यहां प्रभु का निवास है' तथा झुककर पूजा करते हैं एवं स्वर्गिक जन पधारकर प्रशस्ति गाते हैं। **1843**
कन्रु कॊण्डु विळङ्गनि एरिन्दु⋆ आनिरै– क्कळिवॆन्रु⋆ मा मळै निन्रु कात्तुगन्दान्⋆ निल मामगट्किनियान्⋆ कुन्रिन् मुल्लैयिन् वाशमुम्⋆ कुळिर् मल्लिगै मणमुम् अळैन्दु⋆ इळन् तॆन्रल् वन्दुलवुम्⋆ तिरुक्कोट्टियूराने॥७॥	भू देवी के मधुर नाथ पुरा काल में कृष्ण बन कर आये, आसुरी बछड़े को ताड़ पेड़ पर घुमाकर पटका, तथा वर्षा से गायों की रक्षा के लिये पर्वत को ऊपर उठाया। आप तिरूक्कोट्टियूर में रहते हैं जहां शीतल मन्द वायु पर्वतीय मूल्लै एवं शीतल चमेली के फूलो से वहकर सर्वत्र सुगंध विखेरती है। **1844**
पूङ्गुरुन्दॊशित्तानै कायन्दु⋆ अरिमा च्चॆगुत्तु⋆ अडियेनै आळ् उगन्दु ईङ्गनुळ् पुगुन्दान्⋆ इमैयोर्गळ् तम् पॆरुमान्⋆ तूङ्गु तण् पलविन् कनि⋆ तॊंगु वाळैयिन् कनियॊडु माङ्गनि⋆ तेङ्गु तण् पुनल् शूळ्⋆ तिरुक्कोट्टियूराने॥८॥	स्वर्गिकों के देव मुझे सेवक स्वीकार कर मुझमें बस गये। आप पुरा काल में कृष्ण बन कर आये, मरूदु के पेड़ों को उखाड़ा, हाथी का बध किया एवं घोड़े के जबड़े को चीर दिया। आप तिरूक्कोट्टियूर में रहते हैं जहां शीतल नाले के बागों में आम कटहल एवं केला की बहुतायत है। **1845**
कोवैयिन् तमिळ् पाडुवार्⋆ कुडम् आडुवार् तड मा मलर्मिशै⋆ मेवु नान्मुगनिल्⋆ विळङ्गु पुरि नूलर्⋆ मेवु नान्मरै वाणर्⋆ ऐवगै वेळ्वि आरङ्गम् वल्लवर् तॊळुम्⋆ देव देवपिरान्⋆ तिरुक्कोट्टियूराने॥९॥	प्रभु की खोज में मधुर तमिल गायक, पात्र नर्तक, एवं कमल से उत्पन्न ब्रह्मा के यज्ञोपवीत से भी उज्जवल यज्ञोपवीत धारण करने वाले वैदिक ऋषिगण लगे रहते हैं। आप देवदेवपिरान हैं , देवों के प्रभु हैं, एवं चारों वेद पांचों यज्ञ एवं छः आगमों में निष्णात ऋषियों द्वारा तिरूक्कोट्टियूर में पूजित हैं। **1846**

‡आलुमा वलवन् कलिगन्रि* मङ्गैयर् तलैवन्* अणि पॉळिल् शेल्गळ् पाय् कळनि* त्तिरुक्कोट्टियूरानै* नील मामुगिल् वण्णनै* नॅडुमालै इन् तमिळाल् निनैन्द* इन् नालुम् आरुम् वल्लार्क्कु* इडम् आगुम् वान् उलगे॥१०॥	निपुण अश्व आरोही मंगै के राजा कलकन्रि ने मछली नाचती नालों एवं बागों वाले तिरूक्कोट्टियूर के प्रभु की प्रशस्ति में मधुर तमिल पदों की यह माला रची है। जो इसे याद कर लेंगे वे स्वर्गिकों के लोक में प्रवेश कर जायेंगे। **1847** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

91 ओरूनल् शुट्रम् (1848 – 1857)

पल तिरूप्पदिगळ्

अनेकों दिव्य देश

निर्मलै (Ramesh 1।139) तिरूतनकल (Ramesh 4।200)

कन्नामंगै (Ramesh 3।92) तिरूनवै (Ramesh 7।51)

‡ऑरुनल् शुट्रम्⋆ एनक्कुयिर् ऑण् पॅारुळ्⋆ वरुनल् तॅाल्गदि⋆ आगिय मैन्दनै⋆ नॆरुनल् कण्डदु⋆ नीर्मलै इन्रु पोय्⋆ करुनॆल् शूळ्⋆ कण्ण मङ्गैयुळ् काण्डुमे॥१॥	मेरे प्रभु, राजकुमार, मेरे सर्वोत्तम मित्र, मेरे एकमात्र जीवन एवं लक्ष्य, आनेवाले शाश्वत निवास, कल हमलोगों ने आपके श्रीचरणों का दर्शन निर्मलै (Ramesh 1।139) में किया था। आज हमलोग धान के खेतों से घिरे आपके दर्शन के लिये कन्नामंगै (Ramesh 3।92) जायेंगे। **1848**
‡पॅान्नै मा मणियै⋆ अणि आरन्ददोर् मिन्नै⋆ वेङ्गडत्तुच्चियिल् कण्डु पोय्⋆ एन्नै आळुडै ईशनै⋆ एम्बिरान् तन्नै⋆ याम् शॅन्रु काण्डुम्⋆ तण्गाविल्ले॥२॥	मेरे स्वर्ण, मेरे रत्न, मेरे सुन्दर तड़ित, मेरे प्रभु, मेरे नाथ, हमलोगों ने आपके श्रीचरणों का दर्शन वेंकटम में किया था। आज हमलोग जाकर आपका दर्शन तिरूत्तनका में करेंगे। **1849**
वेलै आलिलै⋆ प्पळ्ळि विरुम्बिय⋆ पालै आर् अमुदत्तिनै⋆ प्पैन्दुळाय्⋆ मालै आलियिल्⋆ कण्डु मगिळ्न्दु पोय्⋆ ञालम् उन्नियै क्काण्डुम्⋆ नाङ्गूरिल्ले॥३॥	शिशु के रूप में सागर पर तैरते बट पत्र पर सोने वाले प्रभु, मेरे बहुमूल्य अमृत, शीतल तुलसी माला वाले प्रभु, आपके दर्शन का आनन्द तिरूवलै में लिया। आज हमलोग जाकर आपका दर्शन जगप्रसिद्ध तिरूनांगुर में करेंगे। **1850**
तुळक्कमिल् शुडरै⋆ अवुणन् उडल्⋆ पिळक्कुम् मैन्दनै⋆ प्पेरिल् वणङ्गि प्पोय्⋆ अळप्पिल् आरमुदै⋆ अमरर्क्करुळ् विळक्किनै⋆ शॅन्रु वॅळ्ळरै क्काण्डुमे॥४॥	शाश्वत ज्योति, राजकुमार जिन्होंने हिरण्य की छाती चीरा, मेरे अमृत, स्वर्गिकों की ज्योति, अप्रतिम कृपा तिरूप्पेर में पूजा कर लिया। आज हमलोग जाकर आपका दर्शन तिरूवल्लरै में करेंगे। **1851**
शुडलैयिल्⋆ शुडु नीरन् अमरन्ददोर्⋆ नडलै तीरत्तवनै⋆ नरैयूर् कण्डु⋆ एन् उडलैयुळ् पुगुन्दु⋆ उळ्ळम् उरुक्कियुण्⋆ विडलैयै च्चॅन्रु काण्डुम्⋆ मॅय्यत्तुळे॥५॥	श्मसान से भभूत लगाने वाले शिव के दुख का अंत करने वाले प्रभु ने तिरूनरैयूर में दर्शन दिया। निपुणता से मुझमें प्रवेश कर आप हमारे हृदय को द्रवित करते हैं एवं उसे पीते हैं।आज हमलोग जाकर आपका दर्शन तिरूमेय्यम में करेंगे। **1852**

वानै आर् अमुदम्⋆ तन्द वळ्ळलै⋆ तेनै नीळ् वयल्⋆ शेरैयिल् कण्डु पोय्⋆ आनै वाट्टि अरुळुम्⋆ अमरर् तम् कोनै⋆ याम् कुडन्दै च्चॆन्ऱु काण्डुमे॥६॥	देवों को अमृत देनेवाले उदार प्रभु, भक्तों के अमृत ने उपजाऊ खेतों से घिरे तिरूच्चेरै में दर्शन दिया। आप देवों के प्रभु हैं, हाथी को आसानी से मारने वाले हैं। आज हमलोग जाकर आपका दर्शन तिरूकुडन्दै में करेंगे। **1853**
कून्दलार् मगिळ⋆ कोवलनाय्⋆ वॆण्णॆय् मान्दळुन्दैयिल्⋆ कण्डु मगिळन्दु पोय्⋆ पान्दळ् पाळियिल्⋆ पळ्ळि विरुम्बिय⋆ वेन्दनै च्चॆन्ऱु काण्डुम्⋆ वॆग्कावुळे॥७॥	गोपाल के रूप में जूड़े वाली गोपियों के नयनाभिराम मक्खन खाये। आपने तिरूवलून्दूर में दर्शन दिया। आज हमलोग जाकर आपका दर्श न तिरूवेक्का में करेंगे जहां आप शेषशायी हैं। **1854**
पत्तर् आवियै⋆ प्पाल् मदियै⋆ अणि तॊत्तै⋆ मालिरुञ्जोलै तॊळुदु पोय्⋆ मुत्तिनै मणियै⋆ मणि माणिक्क वित्तिनै⋆ शॆन्ऱु विण्णगर् काण्डुमे॥८॥	भक्तों के प्राणवायु , आकाशगंगा के चांद की तरह शीतल, रत्नजड़ित माला की तरह सुन्दर, हमलोगों ने प्रभु की पूजा तिरूमालिरूञ्जोलै में की। आज हमलोग जाकर मोती रत्न एवं पन्ना की तरह बहुमूल्य प्रभु का दर्शन तिरूविण्णगर में करेंगे। **1855**
कम्ब मा कळिऱु⋆ अञ्जि क्कलङ्ग⋆ ओर् कॊम्बु कॊण्ड⋆ कुरै कळल् कूत्तनै⋆ कॊम्बुलाम् पॊळिल्⋆ कोट्टियूर् क्कण्डु पोय्⋆ नम्बनै च्चॆन्ऱु काण्डुम्⋆ नावायुळे॥९॥	नुपूर बजते नृत्य करते चरणों से प्रभु ने हाथी के दांत उखाड़कर उसका बध कर दिया।फूलों के बाग से घिरे तिरूकोट्टियूर में आपने दर्शन दिया। आज हमलोग जाकर अपने प्रभु का दर्शन तिरूनवै में करेंगे। **1856**
पेट्रम् आळियै⋆ प्पेरिल् मणाळनै⋆ कट्ट नूल्⋆ कलिगन्ऱि उरै शॆय्द⋆ शॊल् तिरम् इवै⋆ शॊल्लिय तॊण्डर्गट्कु⋆ अट्रम् इल्लै⋆ अण्डम् अवर्क्काट्चिये॥१०॥	गीतों की यह माला गाय चराने वाले तिरूप्पेर के दूलहा प्रभु की प्रशस्ति में महान विद्वान कलकन्रि ने रचे हैं। जो इसे याद कर लेंगे वे कभी निराश नहीं होंगे तथा आकाश पर राज्य करेंगे।**1857** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्

श्रीमते रामानुजाय नमः

92 इरक्कमिन्ऱि (1858 - 1867)

पोङ्गत्तम् पोङ्गो

रामावतार की कथा 1 ः राम से पराजित होकर असुर ने समर्पण किया एवं नाचा

Ramesh Vol. 3 pp 110

इरक्कम् इन्ऱि एङ्गोन् शॅय्द तीमै॰ इम्मैये एमक्कॅय्दिट्ट क्काणीर्॰ परक्क याम् इन्ऱैत्तॅन् इरावणन्॰ पट्टनन् इनि यावरक्कुरैक्कोम्॰ कुरक्कु नायगर् काळ्! इळङ्गोवे॰ कोल वल्लिल् इरामविराने॰ अरक्कर् आडळैप्पार् इल्लै॰ नाङ्गळ् अञ्जिनोम् तडम् पॉङ्गत्तम् पॉङ्गो॥१॥	स्वामी ! हमारे हृदयहीन राजा ने अनेकों भूलें की और वे सब अब हम लोगों पर बरस रहे हैं। रावण मारा गया किसको बतायें ? इन बातों को खोदने से क्या लाभ ? महान बन्दर जातियों के राजाओं, राजकुमार लक्ष्मण, धर्नुधारी राम। हाय ! हमलोगों पर दया के लिये विनती करने वाला यहां कोई नहीं है मित्रों। युद्ध के नगाड़े की आवाज पर हम भयाकुल हो नाचते हैं। पोंगत्तम पोंगो।**1858**
पत्तु नीळ् मुडियुम् अवट्रिरट्टि॰ प्पाळि तोळुम् पडैत्तवन् शॅल्वम्॰ शित्तम् मङ्गैयर् पाल्वैत्तु क्कॅट्टान्॰ शॅय्वदोन्ऱरिया अडियोङ्गळ्॰ ऑत्त तोळ् इरण्डुम् ऑरु मुडियुम्॰ ऑरुवर् तम् तिरत्तोम् अन्ऱि वाळन्दोम्॰ अत्त! एम्बॅरुमान्! एम्मैक्कॉल्लेल्॰ अञ्जिनोम् तडम् पॉङ्गत्तम् पॉङ्गो॥२॥	स्वामी ! किरीटधारी दस सिर एवं उसके दोगुने शक्तिशाली भुजाओं वाले हमारे राजा ने अपना मन नारियों पर लगा कर सर्वस्व गंवा दिया। क्या करना चाहिये, इससे अनभिज्ञ, हम सेवक जन, दो भुजा वाले एवं एक सिर के राम प्रभु की बिना भक्ति के पाले पोसे गये। विनती है, हमें नहीं मारे। युद्ध के नगाड़े की आवाज पर हम भयाकुल हो नाचते हैं। पोंगत्तम पोंगो।**1859**
दण्डकारणियम् पुगुन्दु॰ अन्ऱु तैयलै त्तगविलि एम् कोमान्॰ कॉण्डु पोन्दु कॅट्टान्॰ एमक्किङ्गोर् कुट्रम् इल्लै कॉल्लेल् कुल वेन्दे॰ पॅण्डिराल् कॅडुम् इक्कुडि तन्नै॰ प्पेशुगिन्ऱदॅन् दाशरदी॰ उन् अण्ड वाणर् उगप्पदे शॅय्दाय्॰ अञ्जिनोम् तडम् पॉङ्गत्तम् पॉङ्गो॥३॥	अभिभावक राजा दशरथ ! जिस दिन हमारा निर्दयी राजा रावण दंडक में प्रवेश किया एवं सीता को उठा लाया उसी दिन उसने सर्वनाश कर लिया। हमलोगों का इसमें कोई हाथ नहीं है। विनती है, हमें नहीं मारे। हाय ! यह कुल नारी लोभ में नष्ट हुआ, क्या कहें ? आपके कार्यकलाप देवताओं के लिये सुखद है। युद्ध के नगाड़े की आवाज पर हम भयाकुल हो नाचते हैं। पोंगत्तम पोंगो।**1860**

ए्ञ्जलिल् इलङ्गैक्किरै⋆ एङ्गोन् तन्नै मुन् पणिन्देङ्गळ् कण्मुगप्पे⋆ नञ्जु तान् अरक्कर् कुडिक्केन्रु⋆ नङ्गैयै अवन् तम्बिये शॊन्नान्⋆ विञ्जै वानवर् वेण्डिट्टे पट्टोम्⋆ वेरि वार् पॊळिल् मा मयिल् अन्न⋆ अञ्जलोदियै क्कॊण्डु नडमिन्⋆ अञ्जिनोम् तडम् पॊङ्गत्तम् पॊङ्गो॥८॥	राम प्रभु ! लंका के हमारे मनमौजी राजा का एक छोटा भाई था जो हमलोगों की आंखो के सामने जमीन पर साष्टांग कर परामर्श दिया 'यह नारी हमारे राक्षस कुल के लिये विष है' जैसा स्वर्गिकों ने चाहा हम नष्ट हो गये। कृपया मोरनी समान सुन्दर जूड़े वाली अपनी नारी को लेकर लौट जाइये। युद्ध के नगाड़े की आवाज पर हम भयाकुल हो नाचते हैं। पोंगत्तम पोंगो।**1861**
शॆम्पॊन् नीळ् मुडि एङ्गळ् इरावणन्⋆ शीदै एन्बदोर् देय्वम् कॊणर्न्दु⋆ वम्बुलाम् कडि काविल् शिरैया वैत्तदे⋆ कुट्रम् आयिट्रु क्काणीर्⋆ कुम्बनोडु निगुम्बनुम् पट्टान्⋆ कूट्रम् मानिडमाय् वन्दु तोन्रि⋆ अम्बिनाल् एम्मै क्कॊन्रिडुगिन्रदु⋆ अञ्जिनोम् तडम् पॊङ्गत्तम् पॊङ्गो॥५॥	सुवर्ण के ऊंचे किरीटधारी राजा रावण ने सीता नाम की देवी को लाकर सुगंधित बागों वाले अशोक वन में कैद कर रख दिया। हाय ! हमारे कर्तव्यहीनता को देखो। कुंभ एवं निकुंभ मारे गये।स्वयं मृत्यु का देवता ही धनुष बाण चलाते साक्षात आदमी का रूप धारण कर हम लोगों को ले जाने के लिये आया है।युद्ध के नगाड़े की आवाज पर हम भयाकुल हो नाचते हैं। पोंगत्तम पोंगो।**1862**
ओद मा कडलै क्कडन्देरि⋆ उयर्गॊळ् मा क्कडि कावै इरुत्तु⋆ कादल् मक्कळुम् शुट्रमुम् कॊन्रु⋆ कडि इलङ्गै मलङ्ग एरित्तु⋆ तूदु वन्द कुरङ्गुक्के⋆ उङ्गळ् तोन्रल् देवियै विट्टु कॊडादे⋆ आदर् निन्रु पडुगिन्रदन्दो !⋆ अञ्जिनोम् तडम् पॊङ्गत्तम् पॊङ्गो॥६॥	स्वामी ! बन्दर दूत हनुमान समुद्र पर छलांग लगा कर हमलोगों के नगर में घुसा।फल के ऊंचे बागों को नष्ट भ्रष्ट करते हुए राक्षसों के बेटों एवं संबंधियों का बध कर उसने नगर में आग लगा दी। तब हमलोगों को स्वयं प्रभु को नारी लौटा देना चाहिये था। हाय ! कठिन प्रयत्न जो अब हमें करना पड़ रहा है ! युद्ध के नगाड़े की आवाज पर हम भयाकुल हो नाचते हैं। पोंगत्तम पोंगो।**1863**
ताळम् इन्रि मुन्नीरै अञ्जान्रु⋆ तगैन्ददे कण्डु वञ्जि नुण् मरुङ्गुल्⋆ माळै मान् मड नोक्कियै विट्टु⋆ वाळिला मदियिल् मनत्तानै⋆ एळैयै इलङ्गैक्किरै तन्नै⋆ एङ्गळै ऑळिय क्कॊलैयवनै⋆ शूळुमा निनै मा मणि वण्णा !⋆ शॊल्लिनोम् तडम् पॊङ्गत्तम् पॊङ्गो॥७।	मणि के वर्ण वाले स्वामी ! यह देखकर कि आपने सेतु बना दिया है एवं सागर को पार कर रहे हैं बुद्धिहीन मनमौजी रावण ने लता सी कटि वाली मृगनयनी सीता को नहीं छोड़ा। विनती है, हम लोगों की जान छोड़ दीजिये, दूसरों को पकड़ने का हमलोग उपाय बतायेंगे। युद्ध के नगाड़े की आवाज पर हम भयाकुल हो नाचते हैं। पोंगत्तम पोंगो।**1864**

मनम् कॊण्डेरुम् मण्डोदरि मुदला⋆ अङ्गयर् कण्णिनार्गळ् इरुप्प⋆ तनङ्गॊळ् मॆन् मुलै नोक्कम् ऒ̆ळिन्दु⋆ तञ्जमे शिल तापदर् एन्रु⋆ पुनङ्गॊळ् मॆन् मयिलै च्चिरै वैत्त⋆ पुन्मैयाळन् नॆञ्जिल् पुग एय्द⋆ अनङ्गन् अन्न तिण्तोळ् एम्मिरामर्कु⋆ अञ्जिनोम् तडम् पॊङ्गत्तम् पॊङ्गो॥८॥	अपने हृदय की धड़कन के समान प्रिय मंदोदरी एवं अन्य सुन्दर मृगनयनी रानियों के कोमल उरोजों से आनंद न लेकर हमारा नीच राजा जंगल से मोरनी सीता को अपहरण कर ले आया। प्रेम के देवता मदन के समान सुन्दर भुजाओं वाले राम प्रभु ने उसकी छाती में बाणों का प्रहार किया। युद्ध के नगाड़े की आवाज पर हम भयाकुल हो नाचते हैं। पोंगत्तम पोंगो।**1865**
पुरङ्गळ् मून्रुमोर् मात्तिरै प्पोदिल्⋆ पॊङ्गरिक्किरै कण्डवन् अम्बिन्⋆ शरङ्गळे कॊडिदाय् अडुगिन्र⋆ जाम्बवान् उडन् निर्क तॊळुदोम्⋆ इरङ्गु नी एमक्कॆन्दै पिराने !⋆ इलङ्गु वॆङ्गदिरोन् तन् शिरुवा⋆ कुरङ्गुगट्करशे ! एम्मै क्कॊल्लेल् !⋆ कूरिनोम् तडम् पॊङ्गत्तम् पॊङ्गो॥९॥	राम बाण से हम भय खाते हैं जो शिव के उन बाणों से ज्यादा तप्त है जिसने पलक झपकते तीन नगरों को भस्म कर दिया था। जाम्बवान के साथ हे सूर्यपुत्र सुग्रीव के पुत्र, बन्दरों के राजा, हमारे नाथ ! विनती है, दया करें एवं हम लोगों का बध न करें। युद्ध के नगाड़े की आवाज पर हम भयाकुल हो नाचते हैं। पोंगत्तम पोंगो।**1866**
अङ्गव् वानवर्क्कागुलम् तीर⋆ अणि इलङ्गै अळित्तवन् तन्नै⋆ पॊङ्गु मा वलवन् कलिगन्रि⋆ पुगन्र पॊङ्गत्तम् कॊण्डु⋆ इव्वुलगिल् एङ्गुम् पाडि निन्राडुमिन् तॊण्डीर् !⋆ इम्मैये इडर् इल्लै⋆ इरन्दाल् तङ्गुमूर् अण्डमे कण्डु कॊण्मिन्⋆ शाट्रिनोम् तडम् पॊङ्गत्तम् पॊङ्गो॥१०॥	भक्तों ! पुरा काल में प्रभु ने लंका नगर को नष्ट कर देवताओं को कष्ट से त्राण दिलाया था। निपुण अश्वारोही कलकन्रि के इन पोंगत्तम पदों को गाओ एवं नाचो। इस जन्म की यातनायें लुप्त हो जायेंगी।शरीर छोड़ने के पश्चात् तुम बैकुंठ में रहोगे। यह हमारा निश्चित कहना है। पोंगत्तम पोंगो। **1867** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः **93 एत्तुगिन्रोम् (1868 - 1877)** **कुळमणि दूरम्** **रामावतार की कथा 2 ः असुरों का बन्दर सेना से प्रार्थना**	
एत्तुगिन्रोम् ना त्तळुम्ब⋆ इरामन् तिरुनामम्⋆ शोत्त नम्बी ! शुक्किरीवा !⋆ उम्मै त्तॊळुगिन्रोम्⋆ वार्त्तै पेशीर् एम्मै⋆ उङ्गळ् वानरम् कॊल्लामे⋆ कूत्तर् पोल आडुगिन्रोम्⋆ कुळमणि दूरमे॥१॥	सुग्रीव प्रभु ! हम नमस्कार करते हैं। जय हो ! राम का नाम हम तब तक गायेंगे जबतक हमारे जीभ सूज नहीं जाते। विनती है, आप अपने बन्दरों को हमारी जान लेने से मना करें। मनोरंजकों की तरह हम कुलमणि दूरम नृत्य करते हैं। **1868**
एम्पिराने ! एन्नै आळ्वाय्⋆ एन्रॆन्रलट्राते⋆ अम्बिन् वाय्प्पट्टाट्रगिल्लादु⋆ इन्दिरशित्तळिन्दान्⋆ नम्बि अनुमा ! शुक्किरीव !⋆ अङ्गदने ! नळने⋆ कुम्बकर्णन् पट्टुप्पोनान्⋆ कुळमणि दूरमे॥२॥	हाय ! इन्द्रजीत ने नहीं कहा 'हे प्रभु ! हे नाथ!' और अभेद्द बाण से मारा गया। हे प्रभु हनुमान सुग्रीव अंगद एवं नल ! कुंभकर्ण भी मारा गया। हम कुलमणि दूरम नृत्य करते हैं। **1869**
ञालम् आळुम् उङ्गळ् कोमान्⋆ एङ्गळ् इरावणर्कु⋆ कालन् आगि वन्दवा⋆ कण्डञ्जि क्करु मुगिल् पोल्⋆ नीलन् वाळ्ग ! शुडेणन् वाळ्क⋆ अङ्गदन् वाळ्गॆन्रु⋆ कोलम् आग आडुगिन्रोम्⋆ कुळमणि दूरमे॥३॥	आपके जगत के राजा हमारे राजा रावण के लिये मृत्यु के देवता हो गये। नील दीर्घायु हों। सुषेण दीर्घायु हों।अंगद दीर्घायु हों। हम उनसे भयातुर हैं। हम कुलमणि दूरम नृत्य करते हैं। **1870**
मणङ्गळ् नारुम् वार् कुळलार्⋆ मादर्कळ् आदरत्तै⋆ पुणरन्द शिन्दै प्पुन्मैयाळन्⋆ पॊन्र वरि शिलैयाल्⋆ कणङ्गळ् उण्ण वाळियाण्ड⋆ कावलनुक्किळैयोन्⋆ गुणङ्गळ् पाडि आडुगिन्रोम्⋆ कुळमणि दूरमे॥४॥	हमारे नीच राजा रावण सुगंधित जूड़ेवाली से समागम के दुराग्रह के कारण महान धनुर्धारी राम के बाणों से तत्वों में विलीन कर दिये गये। हम छोटे भाई लक्ष्मण की प्रशंसा करते हैं। हम कुलमणि दूरम नृत्य करते हैं। **1871**
वॆन्रि तन्दोम् मानम् वेण्डोम्⋆ तानम् एमक्काग⋆ इन्रु तम्मिन् एङ्गळ् वाणाळ्⋆ एम्पॆरुमान् तमर्गाळ्⋆ निन्रु काणीर् कण्गळ् आर⋆ नीर् एम्मै क्कॊल्लादे⋆ कुन्रु पोल आडुगिन्रोम्⋆ कुळमणि दूरमे॥५॥	राम के भक्तों ! हम आपकी विजय स्वीकार करते हैं। हमें कोई सम्मान नहीं चाहिए। हमें नयी जिन्दगी दें। विनती है, हमारा वध न करें। आप मन की पूरी संतुष्टि तक रहें। हम कुलमणि दूरम नृत्य करते हैं। **1872**

कल्लिन् मुन्नीर् माढ़ि वन्दु⋆ कावल् कडन्दु⋆ इलङ्गै अल्लल् शैय्दान् उङ्गळ् कोमान्⋆ एम्मै अमरक्कळत्तु⋆ वॆल्लगिल्लादञ्जिनोङ्गाण⋆ वॆङ्गदिरोन् शिऱुवा⋆ कॊल्ल वेण्डा आडुगिन्ऱोम्⋆ कुळमणि दूरमे॥६॥	आपके प्रभु ने पत्थरों से सेतु बनाया एवं सागर पार करके किलाओं को ध्वस्त करते हुए लंका में आ गये। युद्ध करके हम लोगों को धराशायी कर दिये। सूर्य पुत्र सुग्रीव ! हम हार मान गये हैं । विनती है, हमारा बध न करें। हम भयातुर हैं। हम कुलमणि दूरम नृत्य करते हैं। **1873**
माढ़म् आवदित्तनैये⋆ वम्मिन् अरक्कर् उळ्ळीर्⋆ शीढ़म् नुम्मेल् तीर वेण्डिल्⋆ शेवगम् पेशादे⋆ आढ़ल् शान्ऱ तॊल् पिऱप्पिल्⋆ अनुमनै वाळ्गवॆन्ऱु⋆ कूढ़म् अन्नार् काण आडीर्⋆ कुळमणि दूरमे॥७॥	राक्षस कुल के जनों यहां जमा हो। अगर उनके गुस्से को शांत करना चाहते हो तो घमंड की बात न कर तुम कहो 'जय हो हनुमान की' जो जन्म से ही शक्तिवान हैं। मृत्यु देनवालों को बैठने दो एवं देखनो दो और तुम नाचो कुलमणि दूरम । **1874**
कवळ यानै पाय् पुरवि⋆ त्तेरोडरक्कर् एल्लाम् तुवळ⋆ वॆन्ऱ वॆन्ऱियाळन्⋆ तन् तमर् कॊल्लामे⋆ तवळ माडम् नीळयोत्ति⋆ क्कावलन् तन् शिऱुवन्⋆ कुवळै वण्णन् काण आडीर्⋆ कुळमणि दूरमे॥८॥	विजयी श्याम कमल वदन प्रभु श्वेत महलों वाले अयोध्या के राजकुमार हैं। उनकी बानरी सेना ने लंका पर चढ़कर युद्ध में हाथियों, आक्रामक घोड़ों, ऊंचे रथों, तथा किरीटधारी राजाओं का अंत कर दिया। ऐसा न कि वे हमारा बध कर दें उनके लिये नाचो कुलमणि दूरम । **1875**
एडॊत्तेन्दुम् नीळ् इलैवेल्⋆ एङ्गळ् इरावणनार् ओडिप्पोनार्⋆ नाङ्गळ् एय्दोम्⋆ उय्वदोर् कारणत्ताल्⋆ शूडि प्पोन्दोम् उङ्गळ् कोमन् आणै⋆ तॊडरेन्मिन्⋆ कूडि क्कूडि आडुगिन्ऱोम्⋆ कुळमणि दूरमे॥९॥	लंबे भाला एवं चौड़े खड्ग लिये हमारा राजा रावण भाग निकला जबकि हम थक चुके थे। विनती है, हमारा पीछा न करें। हम आपके राजा के सामने आत्म समर्पण करते हैं। समूह में जमा होकर हम नाचते हैं कुलमणि दूरम । **1876**
वॆन्ऱ तॊल् शीर् तॆन्निलङ्गै⋆ वॆञ्जमत्तु⋆ अन्ऱरक्कर् कुन्ऱ मन्नार् आडि उयन्द⋆ कुळमणि दूरत्तै⋆ कन्ऱि नॆय्न् नीर् निन्ऱ वेल् कै⋆ क्कलियन् ऑलिमालै⋆ ऑन्ऱुम् ऑन्ऱुम् ऐन्दुम् मून्ऱुम्⋆ पाडि निन्ऱाडुमिने॥१०॥	चमकाये हुए भाला धारण करने वाले कलियन के यह दस 'कुलमणि दूरम' पद की माला पुरा काल के लंका के विजयी युद्ध में राक्षसों के भारी संख्या में आत्म समर्पण नृत्य को चित्रित करते हैं। भक्तगनों ! इन पदों को गाओ एवं नाचो। **1877** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

94 शन्दमलर् क्कुऴल् (1878 - 1887)

अशोदै कण्णनै अम्ममुण्ण अळै़त्तल्

कृष्णावतार 1 ः दूध पीने के लिये बुलाना

शन्द मलर् कुळल् ताळ* त्तान् उगन्दोडि त्तनिये वन्दु* एन् मुलैत्तडम् तन्नै वाङ्गि* निन् वायिल् मडुत्तु* नन्दन् पॅर् पॅट्र् नम्बी !* नान् उगन्दुण्णुम् अमुदे* एन्दै पॅरुमने ! उण्णाय्* एन् अम्मम् शेमम् उण्णाये॥१॥	नंदगोप के लाड़ले! मेरे अमृत ! मेरे प्रभु ! फूल की नीचे लटकती लटें ! अकेले यहां आओ और मेरे फूले हुए स्तनों को लो। अपने पावन होंठ रखकर चूसो, चूसो। **1878**
वङ्ग मरि कडल् वण्णा !* मा मुगिले ऑक्कुम् नम्बी* शॅङ्गण् नॅडिय तिरुवे* शॅङ्गमलम् पुरै वाया* कॉङ्गै शुरन्दिड उन्नै* क्कूवियुम् काणादिरुन्देन्* एङ्गिरुन्दायर्गळोडुम्* एन् विळैयाडुगिन्राये॥२॥	सागर सा सलोने प्रभु ! वर्षा के मेघ सा प्रभु ! अरूणाभ नयन ! कमल समान होंठ वाले शिशु ! मेरे स्तन दूध से फूल चुके हैं।मैं बुलाती जा रही हूं लकिन तुम नहीं आते। पता नहीं गोप बालकों के साथ कौन सी घटना की योजना बन रही है। **1879**
तिरुविल् पॉलिन्द एळिलार्* आयर् तम् पिळ्ळैगळोडु* तॅरुविल् तिळैक्किन्र् नम्बी* शॅय्गिन्र् तीमैगळ् कण्डिट्टु* उरुगि एन् कॉङ्गैयिन् तीम् पाल्* ओट्टन्दु पायन्दिडुगिन्र्* मरुवि क्कुडङ्गाल् इरुन्दु* वाय्मुलै उण्ण नी वाराय्॥३॥	सुन्दर गोप बालकों के साथ गली में खेलने वाले प्रभु ! आपके नटखट भाव देखकर हमारे स्तन मीठे दूध से फूलकर स्राव कर रहे हैं। आकर मेरी गोद में बैठो और अपने पावन होंठों से चूसो। **1880**
मक्कळ् पॅरु तवम् पोलुम्* वैयत्तु वाळुम् मडवार्* मक्कळ् पिरर् कण्णुक्कॉक्कुम्* मुदल्वा मद क्कळिरन्नाय्* शॅक्कर् इळम्बिरै तन्नै वाङ्गि* निन् कैयिल् तरुवन्* ऑक्कलैमेल् इरुन्दम्मम् उगन्दु* इनिदुण्ण नी वाराय्॥४॥	हे नाथ ! महान तपस्या के फल के प्रतीक जो संसार के पुरूष एवं नारी आपके जैसे शिशु की प्राप्ति हेतु करते हैं।हे मदमत्त हाथी ! मैं आकाश से चांद लाकर तुम्हारे हाथों में दे दूंगी।हमारी गोद में आकर आनंद से चूसो। **1881**
मैत्त करुङ्गुञ्जि मैन्दा !* मा मरुदूडु नडन्दाय्* वित्तगने विरैयाते* वॅण्णॅय् विळुङ्गुम् विगिर्दा* इत्तनै पोदन्रि एन्रन्* कॉङ्गै शुरन्दिरुक्कगिल्ला* उत्तमने ! अम्ममुण्णाय्* उलगळन्दाय् ! अम्ममुण्णाय्॥५॥	हे काली लटों वाले प्रभु ! आप युगल मरूदु के वृक्षों के बीच से पार किये। सदा मक्खन खाने वाले नटखट बालक। हमारे स्तन इतनी देर तक वजन नहीं सह सकेंगे। हे शुद्ध प्रभु ! चूसो। हे धरा के मापने वाले ! चूसो।**1882**

पिळ्ळैगळ् शेय्वन शेय्याय्* पेशिन् पॆरिदुम् वलियै* कळ्ळम् मनत्तिल् उडैयै* काणवे तीमैगळ् शेय्दि* उळ्ळम् उरुगि एन् कोङ्गै* ओट्टन्दु पायन्दिडुगिन्र* पळ्ळि क्कुरिप्पु च्चेय्यादे* पाल् अमुदुण्ण नी वाराय्॥६॥	आप साधारण शिशु की तरह व्यहवार नहीं करते। आप दूसरे बच्चों से कहीं अधिक शक्तिवान हैं एवं शरारती हैं।हमारी आंखों के सामने ऐसी ऐसी घटनायें की हैं। हमारा हृदय आपके लिये द्रवित हो रहा है तथा स्तन दूध स्राव कर रहे हैं। सोने का स्वांग न करो। आओ और चूसो। शक्तिशाली प्रभु ! चूसो। **1883**
तन् मगनाग वन् पेय्च्चि* तान् मुलै उण्ण क्कोडुक्क* वन् मगनाय् अवळ् आवि वाङ्गि* मुलैयुण्ड नम्बि* नन्मगळ् आय्मगळोडु* नानिल मङ्ङै मणाळा* एन्मगने ! अम्मम् उणाय्* एन् अम्मम् शेमम् उणाये॥७॥	जब भयानक राक्षसी ने मां के रूप में आकर स्तन दिया तो आपने विषैला स्तन चूसा एवं उसके प्राण भी चूस लिये। नप्पिनाय एवं भू देवी के दूलहा।मेरे शिशु ! चूसो। मंगलमय प्रभु ! चूसो। **1884**
उन्दम् अडिगळ् मुनिवर्* उन्नै नान् एन् कैयिल् कोलाल्* नॊन्दिड मोदवुङ्गिल्लेन्* नुङ्गळ् तम् आनिरै एल्लाम्* वन्दु पुगुदरुम् पोदु* वानिडै तॆय्वङ्गळ् काण* अन्दियम् पोदङ्गु निल्लेल्* आळियम् कैयने ! वाराय्॥८॥	चक्रधारी प्रभु ! आपके पिता क्रोध करेंगे। हाय ! हमारा मन नहीं करता कि अपनी छड़ी से आपको पीटूं। जब आपकी गायें शाम में लौटेगीं तो देवगन आकाश से आपको देखेंगे। कृपया वहां खड़ा न रहो। आओ, चूसो। **1885**
पॆट्र त्तलैवन् एम् कोमान्* पेररुळाळन् मदलाय्* शुट्र क्कुळात्तिळङ्गोवे !* तोन्रिय तॊल् पुगळाळा* कट्रिनन् तोरुम् मरित्तु* क्कानम् तिरिन्द कळिरे* एट्रुक्कॆन् अम्मम् उण्णादे* एम्पॆरुमान् इरुन्दाये॥९॥	चरवाहों के प्रमुख ! मेरे सार्वभौम नाथ ! उदार नंदगोप के पुत्र ! कुटुंबियों में शिरमौर राजकुमार ! शाश्वत यशवाले प्रभु ! प्रत्येक वनों में गायों के साथ घूमने वाले हाथी रत्न ! मेरे नाथ आकर चूसने में इतना समय कहां लग गया ? **1886**
इम्मै इडरॆकॆड वेण्डि* एन्दॆळिल् तोळ् कलिगन्रि* शेम्मै प्पनुवल् नूल् कॊण्डु* शेङ्गण् नॆडियवन् तन्नै* अम्मम् उण्णॆन्ररैक्किन्र* पाडल् इवै ऐन्दुम् ऐन्दुम्* मॆय्म्मै मनत्तु वैत्तत्त* विण्णवर् आगलुमामे॥१०॥	शक्तिशाली भुजा वाले कलकन्रि का यह तमिल गीतमाला अरूणाभ नयन प्रभु को आकर दूध पीने के आमंत्रण को चित्रित करता है। जो इसे आर्त्त हृदय से गायेंगे वे स्वर्गिक हो जायेंगे। **1887** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

95 पूङ्गोदै (1888 - 1897)

शप्पाणि प्परूवम्

कृष्णावतार 2 ः ताली बजाकर खेलने के लिये बुलाना

‡पूङ्गोदै आयच्चि⋆ कडै वेंण्णै पुक्कुण्ण⋆ आङ्गवळ् आर्त्तु⋆ प्पुडैक्क प्पुडैयुण्डु⋆ एङ्गि इरुन्दु⋆ शिणुङ्गि विळैयाडुम्⋆ ओङ्गोद वण्णने ! शप्पाणि⋆ ऑलि मणि वण्णने ! शप्पाणि॥१॥	गहरे सागर सा सलोना ! जब फूल जूड़े वाली यशोदा बैठी दही मथ रही थी आप आये और मक्खन खा गये। आपको उसने बांधी पीटी रूलायी एवं फिर सांत्वना दी। अब आप खेल रहे हैं। शप्पाणि ताली बजाओ। मणि सा रंग वाले प्रभु ! शप्पाणि ताली बजाओ। **1888**
तायर् मनङ्गळ् तडिप्प⋆ त्तयिर् नेंय्युण्– डेय् एम्बिराक्कळ्⋆ इरु निलत्तेंङ्गळ् तम्⋆ आयर् अळग⋆ अडिगळ्⋆ अरविन्द वायवने ! कोंट्टाय् शप्पाणि !⋆ माल् वण्णने ! कोंट्टाय् शप्पाणि॥२॥	गोपवंश के राजा ब्रह्मांड के सुन्दर प्रभु ! गोपियों के हृदय को कंपाते हुए आप हमेशा उनके दही एवं घी खा जाते हैं। कमल समान चरण एवं कमल समान होंठ वाले ! शप्पाणि ताली बजाओ।श्यामल प्रभु ! शप्पाणि ताली बजाओ। **1889**
ताम्मोर् उरुट्टि⋆ त्तयिर् नेंय् विळुङ्गिट्टु⋆ तामो तवळ्वर् एन्रु⋆ आयच्चियर् ताम्बिनाल्⋆ तामोदिर क्कैयाल्⋆ आरक्क त्तळुम् पिरुन्द⋆ दामोदरा ! कोंट्टाय् शप्पाणि !⋆ तामरै क्कण्णने ! शप्पाणि॥३॥	उदर पर रस्सी वाले दामोदर ! आपने मक्खन का घड़ा उलट दिया, दही एवं घी खा गये और गोप नारियों के कोपभाजन हुए।उनलोगों ने कहा 'यह सरकने वाला' एवं आपके हाथ बांधकर पिटाई की। शप्पाणि ताली बजाओ।राजीवनयन प्रभु ! शप्पाणि ताली बजाओ। **1890**
पेंट्रार् तळै कळल⋆ प्पेरन्दङ्गयल् इडत्तु⋆ उट्रार् ऑरुवरुम् इन्रि⋆ उलगिनिल्⋆ मट्रारुम् अञ्ज प्पोय्⋆ वञ्ज प्पेंण् नञ्जुण्ड⋆ कट्टायने ! कोंट्टाय् शप्पाणि !⋆ कार् वण्णने ! कोंट्टाय् शप्पाणि॥४॥	गाय चराने वाले प्रभु अपने जन्म से आप ने अपने माता पिता को बेड़ी से मुक्त कराया। वहां कोई संबंधी नहीं रहने से आप मित्रों के बीच चले आये। जब आप राक्षसी पूतना के विषैले स्तन पान कर रहे थे वे डर गये। शप्पाणि ताली बजाओ।घनश्याम प्रभु ! शप्पाणि ताली बजाओ। **1891**
शोत्तेंन निन्नै⋆ त्तोंळुवन् वरम् तर⋆ पेयच्चि मुलैयुण्ड पिळ्ळाय्⋆ पेंरियन आयच्चियर्⋆ अप्पम् तरुवर्⋆ अवरक्काग च्चाट्रियोर् आयिरम् शप्पाणि !⋆ तडङ्कैगळाल् कोंट्टाय् शप्पाणि॥५॥	राक्षसी के स्तन पीने वाले शिशु करबद्ध प्रार्थना है एक काम करो। गोप नारियां बड़ी अप्पम तथा मीठे चावल की रोटी देंगी। कम से कम उनके लिये हजार शप्पाणि ताली बजाओ।सुन्दर हाथों से शप्पाणि ताली बजाओ। **1892**

केवलम् अन्ऱन् वयिऱु वयिट्रुक्कु⋆ नान् अवल् अप्पम् तरुवन्⋆ करुविळै प्पूवलर् नीळ् मुडि⋆ नन्दन् तन् पोर् एऱेइ⋆ कोवलने ! कॊट्टाय् शप्पाणि ! ⋆ कुडं आडी कॊट्टाय् शप्पाणि ॥ ६ ॥	ऊंचे किरीटधारी नन्दगोप कुल के योद्धा वृषभ ! श्यामल गोप कुमार ! आपका उदर साधारण नहीं है। भूख के लिये मैं आपको चूड़ा एवं अप्पम दूंगी। शप्पाणि ताली बजाओ।पात्र नर्तक, शप्पाणि ताली बजाओ। **1893**
पुळ्ळिनै वाय् पिळन्दु⋆ पूङ्गुरुन्दम् शायत्तु⋆ तुळ्ळि विळैयाडित्त् तूङ्गुरि वॆण्णॆयै⋆ अळ्ळिय कैयाल्⋆ अडियेन् मुलै नॆरुडुम्⋆ पिळ्ळै प्पिरान् ! कॊट्टाय् शप्पाणि ! ⋆ पेय् मुलै उण्डाने ! शप्पाणि ॥ ७ ॥	हे शिशु, मेरे प्रभु ! आप घोड़ा का जबड़ा फाड़ते हैं, मरून्दु वृक्षों का नाश करते हैं, भाग कर खेलते हैं, रस्सी के छींके पर पहुंच कर मक्खन निगल जाते हैं तब उन्हीं हाथों से हमारे स्तनों से खेलते हैं। शप्पाणि ताली बजाओ।राक्षसी का स्तन पीने वाले प्रभु, शप्पाणि ताली बजाओ। **1894**
यायुम् पिऱरुम्⋆ अऱियाद यामत्तु⋆ माय वलवै⋆ पॆण् वन्दु मुलै तर⋆ पेय् एन्ऱवळै⋆ प्पिडित्तुयिरै उण्ड⋆ वायवने ! कॊट्टाय् शप्पाणि ! ⋆ माल् वण्णने ! कॊट्टाय् शप्पाणि ॥ ८ ॥	अर्द्धरात्रि में न तो आपकी मां और न मित्र गण देख रहे थे एक सुन्दर अजनवी आयी और अपना स्तन आपको दिया। आप समझ गये कि वो राक्षसी थी एवं आप ने अपने मुंह से उसके प्राण हर लिये। शप्पाणि ताली बजाओ।आनन्द प्रदान करने वाले, शप्पाणि ताली बजाओ। **1895**
कळ्ळ क्कुळवियाय्⋆ क्कालाल् शगडत्तै⋆ तळ्ळि उदैत्तिट्टु⋆ त्तायाय् वरुवाळै⋆ मॆळ्ळ त्तॊडरन्दु⋆ पिडित्ताऱुयिर् उण्ड⋆ वळ्ळले ! कॊट्टाय् शप्पाणि ! ⋆ माल् वण्णने ! कॊट्टाय् शप्पाणि ॥ ९ ॥	उदार प्रभु, चमत्कारिक शिशु ! आपने दुष्ट गाड़ी को अपने पैरों से तोड़ डाला। जब एक नारी स्तन पिलाने आयी आपने उसे पकड़ कर चुपके से उसके प्राण ले लिये। शप्पाणि ताली बजाओ।पूज्य प्रभु, शप्पाणि ताली बजाओ। **1896**
‡कारार् पुयल् कै⋆ क्कलिगन्ऱि मङ्गैयर् कोन्⋆ पेराळन् नॆञ्जिल्⋆ पिरियादिडम् कॊण्ड शीराळा⋆ शॆन्दामरै क्कण्णा ! ⋆ तण्तुळाय्⋆ ताराळा कॊट्टाय् शप्पाणि ! ⋆ तड मार्वा कॊट्टाय् शप्पाणि ॥ १० ॥	राजीवनयन कृष्ण ! उदार एवं दयालु राजा कलकन्रि के हृदय में बसने वाले ! शप्पाणि ताली बजाओ।शीतल तुलसी माला से सुसज्जित विस्तृत वक्षस्थल वाले प्रभु, शप्पाणि ताली बजाओ।**1897** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

96 एङ्गानुम् (1898 - 1907)

मट्र अवतारङ्गळिन् मेन्मैयोडु किरूष्णावतारत्तिन् एळिमैयै अनुबवित्तल्

कृष्णावतार 3 ः कृष्णावतार का सुलभ आनंद

एङ्गानुम् ईदॊप्पदोर् मायम् उण्डे नर नारणनाय् उलगत्तरनूल् शिङ्गामै विरित्तवन् एम् पॆरुमान् अदुवन्रियुम् शॆञ्जुडरुम् निलनुम् पॊङ्गार् कडलुम् पॊरुप्पुम् नॆरुप्पुम् नॆरुक्कि प्पुग पॊन् मिडरत्तनै पोदु अङ्गान्दवन् काण्मिन् इन्रायच्चियराल् अळै वॆण्णॆय् उण्डाप्पुण्डिरुन्दवने॥१॥	हमारे प्रभु नर नारायण के रूप में आकर रहस्य मंत्रों के बारे में बताये। आप ने अपने उदर में दोनों ज्योति पुंज, धरा, सागर, पर्वत एवं अग्नि को समेट लिया। देखो, गोप नारी का मक्खन चुराने के लिये अब आप ऊखल में बंधे एक शिशु हैं। क्या कहीं भी इससे बड़ा आश्चर्य हो सकता है ? **1898**
कुन्रॊन्रु मत्ता अरवम् अळवि कुरै मा कडलै क्कडैन्दिट्टु ऒरुगाल् निन्रुण्डै कॊण्डोट्टि वङ्गून् निमिर निनैन्द पॆरुमान् अदन्रियुम् मुन् नन्रुण्ड तॊल् शीर् मगर क्कडलेळ् मलैयेळ् उलगेळ् ऒळियामै नम्बि अन्रुण्डवन् काण्मिन् इन्रायच्चियराल् अळै वॆण्णॆय् उण्डाप्पुण्डिरुन्दवने॥२॥	बासुकी सांप की रस्सी से मंदराचल पर्वत की मथानी चलाकर प्रभु ने सागर में अमृत मथा। गोप किशोर के रूप में आकर आपने कुब्जे को उदारता पूर्वक सीधा कर दिया। आप ने एक क्षण में सात लोक सात सागर सात पर्वत को निगल लिया। देखो, गोप नारी का मक्खन चुराने के लिये अब आप ऊखल में बंधे हैं। **1899**
उळैन्दिट्टॆळुन्द मदु कैडवर्गळ् उलप्पिल् वलियार् अवर्पाल् वयिरम् विळैन्दिट्टदॆन्रॆण्णि विण्णोर् परव अवर् नाळ् ऒळित्त पॆरुमान् मुन नाळ् वळैन्दिट्ट विल्लाळि वल् वाळ् एयिट्र मलै पोल् अवुणन् उडल् वळ्ळुगिराल् अळैन्दिट्टवन् काण्मिन् इन्रायच्चियराल् अळै वॆण्णॆय् उण्डाप्पुण्डिरुन्दवने॥३॥	जब देवगन मधु कैटभ की असीमित शक्ति से चिंतित होकर प्रभु के पास आये तो आपने असुरों का अंत कर दिया। आप बलवान धर्नु धारी भयानक हिरण्य के विरोध में आकर उसकी छाती चीर दिये। देखो, गोप नारी का मक्खन चुराने के लिये अब आप ऊखल में बंधे हैं। **1900**
तळरन्दिट्टिमैयोर् शरण तॊवॆन त्तान् शरणाय् मुरण् आयवनै उगिराल् पिळन्दिट्टमरर्क्करुळ् शॆय्दुगन्द पॆरुमान् तिरुमाल् विरि नीर् उलगै वळरन्दिट्ट तॊल् शीर् विरल् मावलियै मण् कॊळ्ळ वञ्जित्तॊरु माण् कुरळाय् अळन्दिट्टवन् काण्मिन् इन्रायच्चियराल् अळै वॆण्णॆय् उण्डाप्पुण्डिरुन्दवने॥४॥	जब देवगन निराश होकर प्रभु के आश्रय में आये तो उनलोगों को त्राण दिलाते हुए आपने अपने नखों से हिरण्य का अंत किया। आप श्री पति हैं तथा प्रगतिशील मावली से वामन बनकर जमीन का उपहार मांगा एवं बढ़कर सागर से घिरे धरा को ले लिया। देखो, गोप नारी का मक्खन चुराने के लिये अब आप ऊखल में बंधे हैं। **1901**

नीण्डान् कुऱळाय् नॆडु वान् अळवुम्* अडियार् पडुम् आऴ् तुयराय एल्लाम्* तीण्डामै निनैन्दिमैयोर् अळवुम्* शॆल्ल वैत्त पिरान् अदुवन्ऱियुम् मुन्* वेण्डामै नमन् तमर् एन् तमरै* विनव प्पॆऱुवार् अल्लॆन्ऱु* उलगेऴ् आण्डान् अवन् काण्मिन् इन्ऱायच्चियराल्* अळै वॆण्णॆय् उण्डाप्पुण्डिरुन्दवने॥५॥	वामन आये और बढ़ कर अपना चरण आकाश में ले गये जिससे कि भक्तगण निराश न रहें। आप ने कर्म के नियम को शिथिल करते हुए बताया 'यम दूत हमारे भक्तों को छू नहीं सकते' और सात लोकों में साम्राज्य बनाया। देखो, गोप नारी का मक्खन चुराने के लिये अब आप ऊखल में बंधे हैं। **1902**
पऴित्तिट्ट इन्ब प्पयन् पऱ्ऱुत्तु* पणिन्देत्त वल्लार् तुयरायवॆल्लाम्* ऑऴित्तिट्टवरै त्तनक्काक्क वल्ल* पॆरुमान् तिरुमाल् अदुवन्ऱियुम् मुन्* तॆऴित्तिट्टॆऴुन्दे एदिर् निन्ऱ मन्नन्* शिनत्तोळ् अवै आयिरमुम् मऴुवाल्* अऴित्तिट्टवन् काण्मिन् इन्ऱायच्चियराल्* अळै वॆण्णॆय् उण्डाप्पुण्डिरुन्दवने॥६॥	भक्तगण सांसारिक सुख की जिन्दगी से सबंध विच्छेद करते हुए तिरूमल प्रभु के चरणों में पूजा अर्पित करते हैं वे आपकी कृपा से कर्मो से मुक्त हो जाते हैं और आप उनलोगों को अपने में ले लेते हैं। आप प्रशुराम बनकर आये और कीर्तिवीर्य अर्जुन के हजार हाथों को अपने फरसा से काट दिया। देखो, गोप नारी का मक्खन चुराने के लिये अब आप ऊखल में बंधे हैं। **1903**
पडैत्तिट्टदिव्वैयम् उय्य मुन नाळ्* पणिन्देत्त वल्लार् तुयरायवॆल्लाम्* तुडैत्तिट्टवरै त्तनक्काक्क वॆन्न* तॆळिया अरक्कर् तिऱल् पोय् अविय* मिडैत्तिट्टॆऴुन्द कुरङ्ग प्पडैया* विलङ्गल् पुग प्पायच्चि विम्म* कडलै अडैत्तिट्टवन् काण्मिन् इन्ऱायच्चियराल्* अळै वॆण्णॆय् उण्डाप्पुण्डिरुन्दवने॥७॥	राक्षसलोग इस बात को नहीं समझ सके कि प्रभु समस्त जगत की यातना को दूर कर अपने में ले लेते हैं। प्रभु ने बन्दरों की सेना एकत्र कर सागर पर पत्थरों से सेतु बनाकर उनलोगों का नाश किया। देखो, गोप नारी का मक्खन चुराने के लिये अब आप ऊखल में बंधे हैं। **1904**
नॆरित्तिट्ट मॆन्गूऴै नल् नेर् इऴैयोडु* उडनाय विल्लॆन्न वल्ले अदनै* इऱुत्तिट्टवळिन्पम् अन्पोडु अणैन्दिट्टु* इळङ्गोद्वनाय् तुळङ्गाद मुन्नीर्* शॆरित्तिट्टिलङ्गै मलङ्ग अरक्कन्* शॆऴु नीळ् मुडि तोळॊडु ताळ् तुणिय* अऱुत्तिट्टवन् काण्मिन् इन्ऱायच्चियराल्* अळै वॆण्णॆय् उण्डाप्पुण्डिरुन्दवने॥८॥	महान धनुष को तोड़कर प्रभु ने कोमल जूड़े एवं सुन्दर आभूषणों वाली सीता का मधुर समागम पाया तथा राजतिलक के राजकुमार बने।आप सागर पार कर लंका का नाश करते हुए राक्षसराज रावण के सिर एवं बाहें काट डाले। देखो, गोप नारी का मक्खन चुराने के लिये अब आप ऊखल में बंधे हैं। **1905**
शुरिन्दिट्ट शॆङ्गेऴ् उळै प्पॊङ्गरिमा* तॊलैय प्पिरियादु शॆन्ऱॆय्दि एय्दादु* इरिन्दिट्टिडङ्गॊण्डडङ्गाद तन् वाय्* इरु कूऱु शॆय्द पॆरुमान् मुन नाळ्* वरिन्दिट्ट विल्लाल् मरम् एऴुम् एय्दु* मलै पोल् उरुवत्तोर् इराक्कदि मूक्कु* अरिन्दिट्टवन् काण्मिन् इन्ऱायच्चियराल्* अळै वॆण्णॆय् उण्डाप्पुण्डिरुन्दवने॥९॥	लाल गर्दन का केश वाले आक्रामक केशिन का आते देख प्रभु ने उसका सामना करते हुए उसका जबड़ा चीर दिया एवं स्थायी रूप से उससे मुक्त हुए। आपने बाण से सात वृक्षों को बेधा तथा पर्वत के समान सूर्पनखा का नाक काट लिया। देखो, गोप नारी का मक्खन चुराने के लिये अब आप ऊखल में बंधे हैं। **1906**

‡निन्रार् मुगप्पु च्चिरिदुम् निनैयान्⋆
    वयिट्रै निरैप्पान् उरिप्पाल् तयिर् नैय्⋆
अन्रायच्चियर् वैण्णैय् विळुङ्गि⋆ उरलोडु
    आप्पुण्डिरुन्द पॆरुमान् अडिमेल्⋆
नन्राय तॊल् शीर् वयल् मङ्गैयर् कोन्⋆
    कलियन् ऑलिशैय् तमिळ् मालै वल्लार्⋆
एन्रानुम् एय्दार् इडर् इन्बम् एय्दि⋆
    इमैयोरक्कुम् अप्पाल् शैलवॆय्दुवारे ॥१०॥
	उपजाऊ खेतों वाले मंगै के राजा कलियन के तमिल पदों की माला प्रभु के चरणों में अर्पित है जिन्होंने अपने आसपास के लोगों को अनदेखा करते हुए गोप नारियों के पात्रों से दूध दही मक्खन एवं घी से अपना उदर पूर्ति किया तथा ऊखल में बांधे गये। जो इन पदों को याद कर लेंगे वे कभी निराश नहीं होंगे एवं यहां अच्छे जीवन का आनंद लेते हुए स्वर्गिकों के लोक से भी ऊपर चले जायेंगे। **1807**
	तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

97 तन्दैताय् (1908 - 1921)

कण्णनदु शेय्दियै क्कुऱित्तु यशोदै पणित्तलुम् आय्च्चियर् मुऱैयिड्डुदलुम्

कृष्णावतार 4 ः गोप नारियों का कृष्ण के कार्यकलाप पर यशोदा से शिकायत

मानम् उडैत्तुङ्गळ् आयर् कुलम् अदनाल्⋆ पिऱर् मक्कळ् तम्मै⋆ ऊनम् उडैयन शेय्य प्पॆराय् एन्ऱु⋆ इरप्पन् उरप्पगिल्लेन्⋆ नानुम् उरैत्तिलेन् नन्दन् पणित्तिलन्⋆ नङ्गैगाळ्! नान् एन् शेय्गेन्⋆ तानुम् ओर् कन्नियुम् कीऴै अगत्तु⋆ तयिर् कडैगिन्ऱान् पोलुम्॥१॥	संभ्रान्त नारियों ! मैंने समझा कर उससे कहा है 'तुम्हारे सब गोपजन सम्मानीय व्यक्ति हैं कृपा करके पड़ोस की बेटियों को क्षति नहीं पहुचाओ'। मैं उसे डांट नहीं सकी और न नंदगोप ही कुछ कर सके। लगता है वह और कोई किशोरी बाहर के मकान में दही मथ रहे हैं। ओह ! मैं क्या कर सकती हूं ? **1908**
कालै एऴुन्दु कडैन्द इम्मोर् विर्क प्पोगिन्ऱेन्⋆ कण्डे पोनेन्⋆ मालै नऱुङ्गुञ्जि नन्दन् मगन् अल्लाल्⋆ मट्रु वन्दारुम् इल्लै⋆ मेलै अगत्तु नङ्गाय्! वन्दु काण्मिन्गाळ्⋆ वॆण्णॆये अन्ऱिरुन्द⋆ पालुम् पदिन् कुडम् कण्डिलेन्⋆ पावियेन् एन् शेय्गेन् एन् शेय्गेनो॥२॥	मुख्य घर की संभ्रान्त सजनी यशोदा ! फूल से सजे काली लटों वाले नंद के पुत्र कृष्ण के सिवा दूसरा यहां कोई नहीं आया। आज प्रातः के मथे हुए छांछ को बेचने के लिय जब मैं बाहर आई तो उनको देखा। आओ देखो केवल मक्खन ही नहीं दस घड़े दूध भी जो मैंने जमा किये थे वे भी खाली हैं। ओह ! मैं क्या करूं ? मैं क्या करूं ? **1909**
तॆळ्ळिय वाय् च्चिऱियान् नङ्गैगाळ्!⋆ उऱि मेलै त्तडा निऱैन्द⋆ वॆळ्ळि मलैयिरुन्दाल् ऒत्त वॆण्णॆयै⋆ वारि विऴुङ्गियिट्टु⋆ कळ्ळन् उऱङ्गुगिन्ऱान् वन्दु काण्मिन्गाळ्⋆ कैयॆल्लाम् नॆय्⋆ वयिऱु पिळ्ळै परम् अन्ऱिव्वेऴुलगुम् कॊळ्ळुम्⋆ पेदैयेन् एन् शेय्गेनो॥३॥	संभ्रान्त नारियों ! गोपवंश का मनमौजी बालक छत से लटकते रस्सी के छींके पर सजे घड़ा पर घड़ा मक्खन को श्वेत पहाड़ की तरह ढेर कर चट कर जाता है एवं एक निर्दोष की तरह सो जाता है। इसके हाथ मक्खन से लिपटे रहते हैं। इसका पेट साधारण बालक का नहीं है इसमे सातों समुद्र आराम से आ जायेगा। प्यारी मैं ! मैं क्या करूं ? मैं क्या करूं ? **1910**
मैन्नम्बु वेल् कण् नल्लाळ्⋆ मुन्नम् पॆट्र वळै वण्ण नल् मा मेनि⋆ तन् नम्बि नम्बियुम् इङ्गु वळर्न्ददु⋆ अवन् इवै शॆय्दऱियान्⋆ पॊय्न्नम्बि पुळ्ळुवन् कळ्वम्⋆ पॊदियऱै पोगिन्ऱवा तवऴ्न्दिट्टु⋆ इन्नम्बि नम्बिया आय्च्चियर्क्कुय्विल्लै⋆ एन् शेय्गेन् एन् शेय्गेनो॥४॥	काजल नयनी कटाक्ष नजरोंवाली ! संभ्रांत देवकी का श्वेत शंख जैसा दूसरा पुत्र भी है जो यहीं पला लेकिन उसने कभी ऐसा कुछ नहीं किया। देखो, शरारत का खजाना यह बदमाश, कैसे एक दूसरे लड़के के नीचे से सरक रहा है। जबतक यह रहेगा गोपनारियों को त्राण नहीं मिलेगा। ओह ! मैं क्या करूं ? मैं क्या करूं ? **1911**
तन्दै पुगुन्दिलन् नान् इङ्गिरुन्दिलेन्⋆ तोऴिमार् आरुम् इल्लै⋆ शन्द मलर् क्कुऴलाळ्⋆ तनिये विळैयाडुम् इडम् कुऱुगि⋆ पन्दु पऱित्तु तुगिल् पट्रि क्कीऱि⋆ प्पडिऱन् पडिऱु शॆय्युम्⋆ नन्दन् मदलैक्किङ्गॊन् कडवोम् नङ्गाय्!⋆ एन् शेय्गेन् एन् शेय्गेनो॥५॥	सजनी यशोदा ! मेरी फूल जूड़ेवाली बेटी स्वयं खेल रही थी। उसके पिता लौटे नहीं थे, मै भी नहीं थी। उसका कोई साथी भी नहीं था। नंद का यह नटखट लड़का वहां गया उसके गेंद छीन लिये तथा कपड़े फाड़ दिये। हम लोग इसको रोकने के लिय क्या कर सकते हैं ? ओह ! मैं क्या करूं ? मैं क्या करूं ? **1912**

मण्मगळ् केळ्वन् मलर् मङ्गै नायगन्॰ नन्दन् पॆट्र मदलै॰ अण्णल् इलै क्कुळल् ऊदि नम् शेरिक्के॰ अल्लिल् तान् वन्द पिन्नै॰ कण्मलर् शोरन्दु मुलैवन्दु विम्मि॰ क्कमल च्चॆव्वाय् वॆळुप्प॰ एन्मगळ् वण्णम् इरुक्किन्रवा नङ्गाय्!॰ एन् शॆय्गेन् एन् शॆय्गेनो॥६॥	सजनी यशोदा ! नंद का यहा बालक भूदेवी एवं कमल वाली लक्ष्मी का दूलहा है। रात को बांस की मुरली बजाते हमलोगों के घर में चला आया। इसके बाद हमारी बेटी की फूल जैसी आंख नीची हो गयी, उसके उरोज कड़े हो गये, कमल जैसी होंठ पीली हो गयी, गाल के रंग उड़ गये। ओह ! मैं क्या करूं ? मैं क्या करूं ? **1913**
आयिरम् कण्णुडै इन्दिरनारुक्कॆन्रु॰ आयर् विळवॆडुप्प॰ पाशनम् नल्लन पण्डिगळाल्॰ पुग पॆय्द अदनै एल्लाम्॰ पोयिरुन्दङ्गोरु पूद वडिवु कॊण्डु॰ उन् मगन् इन्रु नङ्गाय्॰ मायन् अदनै एल्लाम् मुट्र॰ वारि वळैत्तुण्डिरुन्दान् पोलुम्॥७॥	सजनी यशोदा ! पुराकाल से गोप जन गाड़ी भरे भोज्य पदार्थ से हजार आंख वाले इन्द्र का पर्वत के पास उत्सव मनाया करते थे। लगता है आपका यह चमत्कारिक पुत्र आज वहां गया एवं एक विकराल रूप धारण कर सब भोजन एक ही बार में चट कर गया। **1914**
तोयत्त तयिरुम् नरु नॆय्युम् पालुम्॰ ओर् ओर् कुडम् तुट्रिडुम् एन्रु॰ आयच्चियर् कूडि अळैक्कवुम्॰ नान् इदर्कॆळ्गि इवनै नङ्गाय्॰ शोत्तम् पिरान्! इवै शॆय्य प्पॆराय् एन्रु॰ इरप्पन् उरप्पगिल्लेन्॰ पेय्च्चि मुलैयुण्ड पिन्नै॰ इप्पिळ्ळैयै प्पेशुवदञ्जुवेने॥८॥	सजनी यशोदा ! सभी गोप नारियों ने मुझे सावधान किया था कि यह आदमी दूध दही मक्खन एवं घी का प्रत्येक वर्तन खाली कर देगा। मैं इसको बुलायी और डांटा नहीं, निवेदन किया 'प्रभु, भीख मांगती हूं, ऐसा न करना' । जब से इसने राक्षसी के स्तन पिये हैं इससे बात करने में भी घबराती हूं। **1915**
ईडुम् वलियुम् उडैय॰ इन्नम्बि पिरन्द एळु तिङ्गळिल्॰ एडलर् कण्णियिनानै वळर्त्ति॰ यमुनै नीराड प्पोनेन्॰ शेडन् तिरुमरु मार्वन्॰ किडन्दु तिरुवडियाल्॰ मलै पोल ओडुम् शगडत्तै च्चाडिय पिन्नै॰ उरप्पुवदञ्जुवेने॥९॥	शक्तिवान एवं फूलमाला वाले इस बालक प्रभु के जन्म के सातवें महीने में इसे सुलाकर स्नान के लिये मैं यमुना नदी में गयी। श्रीवक्ष वाले यह प्रभु वैसे ही सोये रहे एवं अपने कोमल चरणों से एक तेज रफ्तार से अपनी तरफ आती गाड़ी को चकनाचूर कर दिये। इसके बाद से इन्हें डांटने में मैं भी घबराती हूं। **1916**
अञ्जुवन् शॊल्लि अळैत्तिड नङ्गैगाळ्!॰ आयिर नाळि नॆय्यै॰ पञ्जियल् मॆल्लडि प्पिळ्ळैगळ् उण्गिन्र॰ पागम् तान् वैयार्गळे॰ कञ्जन् कडियन् करवॆट्टु नाळिल्॰ एन् कै वलत्तादुम् इल्लै॰ नॆञ्जत्तिरुप्पन शॆय्दु वैत्ताय् नम्बी!॰ एन् शॆय्गेन् एन् शॆय्गेनो॥१०॥	संभ्रान्त नारियों ! यह कहने में भी डरती हूं। हे प्रभु ! आपके कोमल चरण वाले मित्रगण हमारे हजार घड़े एकत्रित घी में से आधा भी नहीं छोड़े हैं। हाय ! कंस क्रूर है एवं हमें एक सप्ताह में उसे कर का भुगतान करना है। हमारे पास कोई बचत है नहीं। आपके इस काम से हमारा हृदय टूट गया है। ओह ! मैं क्या करूं ? मैं क्या करूं ? **1917**
अडुनम् तीमैगळ् शॆय्वर्गळो नम्बी !॰ आयर् मड मक्कळै॰ पङ्गय नीर् कुडैन्दाडुगिन्रार्गळ्॰ पिन्ने शॆन्रॊळित्तिरुन्दु॰ अङ्गवर् पून् तुगिल् वारिक्कॊण्डिट्टरवेर् इडैयार् इरप्प॰ मङ्गै नल्लीर्! वन्दु कॊण्मिन् एन्रु॰ मरम् एरि इरुन्दाय् पोलुम्॥११॥	प्रभु ! सरल गोप बालाओं के साथ कैसे यह सब आप करते हैं ? कमल सरोवर तक आपने उनलोगों का पीछा किया। जब वे नहा रही थीं आपने छिप करउनके कपड़े ले लिये।जब वे अपने कपड़े मांग रही थीं तो आप पेड़ पर चढ़ कर बोले 'आओ अपने कपड़े ले लो'। **1918**

अच्चम् तिनैत्तनै इल्लै इप्पिळ्ळैक्कु* आण्मैयुम् शेवगमुम्* उच्चियिल् मुत्ति वळर्त्तॆडुत्तेनुक्कु* उरैत्तिलन् तान् इन्ऱु पोय्* पच्चिलै प्पूङ्गडम्बेरि* विशै कॊण्डु पायन्दु पुक्कु आयिर वाय् नच्चळल् पॊय्गैयिल् नागत्तिनोडु* पिणङ्गि नी वन्दाय् पोलुम्॥१२॥	इस लड़के में लेश मात्र भी डर नहीं है, केवल शैतान साहसी है। बड़े स्नेह से इसके माथे सूंघकर हमने इसको पाला। कभी नहीं यह बताता है कि यह है कौन। बालक ! लगता है आज कदंब पेड़ पर चढ़कर ताल में कूद गया एवं हजारों फन वाले विष वमन करते सांप से युद्ध किया। **1919**
तम्बरम् अल्लन आण्मैगळै* त्तनिये निन्ऱु ताम् शॆय्वारो ऎम्पॆरुमान्! उन्नै प्पॆट्र वयिऱुडैयेन्* इनि यान् ऎन् शॆय्गोन्* अम्बरम् एळुम् अदिरुम् इडि कुरल्* अङ्गनल् शॆङ्गण् उडै* वम्पविळ् कानत्तु माल् विडैयोडु* पिणङ्गि नी वन्दाय् पोलुम्॥१३॥	लाड़ले प्रभु ! अगर कोई चीज किसी की शक्ति से परे हो तो दूसरे की सहायता लेनी चाहिये। आपने यह अकेले क्यों किया ? ओह ! मैंने आपको गर्भ में रखा, मैं क्या करूं ? लाल आंखें एवं तप्त हूंकार वाले काले वृषभ के दहाड़ से सातों लोक कांपता है। लगता है आप सुगंधित बागों में जाकर उनसे विजयपूर्वक युद्ध किया। **1920**
अन्न नडै मड आय्च्चि वयिऱडित्तु अञ्ज* अरुवरै पोल्* मन्नु करुङ्गळिट्रारुयिर् वव्विय* मैन्दनै मा कडल् शूळ्* कन्नि नल् मा मदिळ् मङ्गैयर् कावलन्* कामरु शीर् क्कलिगन्ऱि* इन्निशै मालैगळ् ईरेळुम् वल्लवर्क्कु* एदुम् इडर् इल्लैये॥१४॥	सागर किनारे दीवारों से संरिक्षत मंगै क्षेत्र के पूज्य राजा कलकन्रि के चौदह गीतों की यह माला उस राजकुमार की प्रशस्ति में है जिसने पर्वत सा काले मदमत्त हाथी का अंत किया जबकि हंसगमिनी गोप मां यशोदा पेट पीट रही थीं और डरी हुई थीं। जो इसे याद कर लेंगे वे निराशा से मुक्त हो जायेंगे। **1921** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः **98 कादिल् कडिप्पु (1922 - 1931)** **आय्च्चियिन् ऊडल् तिऱम्** **कृष्णावतार 5 ः कृष्ण से नाराज गोप किशोरी**	
कादिल् कडिप्पिट्टु* क्कलिङ्गम् उडुत्तु* तादु नल्ल* तण्णन् तुळाय् कॊंडणिन्दु* पोदु मरुत्तु* प्पुरमे वन्दु निन्ऱीर्* एदुक्किदुवॆन्* इदुवॆन् इदुवॆन्नो॥१॥	सुन्दर कुंडल, काला कमीज एवं मुकुट के उपर शीतल सुगंधित तुलसी माला पहने देर रात पीछे के दरवाजे स आते हो। हे ! यह क्या है ? यह क्या है ? यह क्या है ? **1922**
तुवराडै उडुत्तु* ऑरु शॆण्डु शिलुप्पि* कवराग मुडित्तु* क्कलि क्कच्चु क्कट्टि* शुवरार् कदविन् पुरमे* वन्दु निन्ऱीर्* इवरार् इदुवॆन्* इदुवॆन् इदुवॆन्नो॥२॥	शरीर पर लाल वस्त्र, हाथ में कभी कभी गेंद उछलाते, ढ़ीला जूड़ा, धारीदार पगड़ी बांधे आप आधे खुले दरवाजे के पास खड़ा होते हो। आप कौन हो ? हे ! यह क्या है ? यह क्या है ? यह क्या है ? **1923**
करुळ क्कॊंडि ऑन्ऱुडैयीर् !* तनि प्पागीर्* उरुळ च्चगडम् अदु* उऱक्किल् निमिर्त्तीर्* मरुळै क्कॊंडु पाडि वन्दु* इल्लम् पुगुन्दीर्* इरुळत्तिदुवॆन्* इदुवॆन् इदुवॆन्नो॥३॥	अनेकों नाम वाले हे नारायण ! तुलसी की मंजर से सुगंधित, प्रेम का देवता, मदन का गीत गाते आप घर में प्रवेश करते हो। हे ! यह क्या है ? यह क्या है ? यह क्या है ? **1924**
नामम् पलवुम् उडै* नारण नम्बी* ताम त्तुळवम्* मिग नाऱिडुगिन्ऱीर्* कामन् एनप्पाडि वन्दु* इल्लम् पुगुन्दीर्* एमत्तिदुवॆन्* इदुवॆन् इदुवॆन्नो॥४॥	गरूड़ ध्वज वाले, निपुण सवार, अपनी नींद में आपने पैरों से गाड़ी को तोड़ दिया। अर्द्धरात्रि में प्रेम गीत गाते आप इस घर में प्रवेश किये। हे ! यह क्या है ? यह क्या है ? यह क्या है ? **1925**
शुट्टम् कुळल् ताळ* च्चुरिगै अणैत्तु* मट्टम् पल* मा मणि पॊन् कॊंडणिन्दु* मुट्टम् पुगुन्दु* मुऱुवल् शॆय्दु निन्ऱीर्* एट्टुक्किदुवॆन्* इदुवॆन् इदुवॆन्नो॥५॥	मुखमंडल पर लटकती घुंघराली लटें, तलवार लटकाये, अनेकों स्वर्णाभूषणों से सज्जित, आप आंगन में प्रवेश किये एवं मुस्कराते खड़े रहे। हे ! यह क्या है ? यह क्या है ? यह क्या है ? **1926**

आन् आयरुम्⋆ आ निरैयुम् अङ्गॊळिय⋆ कून् आयदोर्⋆ कॊट्ट् विल्लॊन्ऱ् कैयेन्दि⋆ पोनार् इरुन्दारैयुम्⋆ पारत्तु प्पुगुदीर्⋆ एनोर्कळ् मुन्नॆन्⋆ इदुवॆन् इदुवॆन्नो॥६॥	गोपमित्रों को उनकी गायों के साथ काफी पीछे छोड़ते हुए हाथ में धनुष लिये राहगीरों को देखते रहे और तब धीरे से देवताओं के सामने प्रवेश किये। हे ! यह क्या है ? यह क्या है ? यह क्या है ? **1927**
मल्ले पॊरुद तिरळ् तोळ्⋆ मणवाळीर्⋆ अल्ले अरिन्दोम्नुम्⋆ मनत्तिन् करुत्तै⋆ शॊल्लातॊळियीर्⋆ शॊन्न पोदिनाल् वारीर् एल्ले इदुवॆन्⋆ इदुवॆन् इदुवॆन्नो॥७॥	दूलहा प्रभु, सुन्दर मजबूत मल्ल युद्ध वाली भुजाएं, कल ही रात हम आपकी मंशा समझ गये। बिना बताये आप छोड़ गये और वचन के अनुसार कभी लौटे नहीं। हे ! यह क्या है ? यह क्या है ? यह क्या है ? **1928**
पुक्काडरवम्⋆ पिडित्ताट्टुम् पुनिदीर्⋆ इक्कालङ्गळ्⋆ याम् उमक्केदॊन्ऱुम् अल्लोम्⋆ तक्कार् पलर्⋆ देविमार् शालवुडैयीर्⋆ एक्के ! इदुवॆन्⋆ इदुवॆन् इदुवॆन्नो॥८॥	शद्ध प्रभु, ताल में प्रवेश कर नाचते नाग को दहला दिया। यह सब आपके लिये कुछ नहीं है। आपके प्रभाव में अनेकों सुन्दिरियां हैं। हे ! यह क्या है ? यह क्या है ? यह क्या है ? **1929**
आडि अशैन्दु⋆ आय् मडवारॊडु नी पोय्⋆ कूडि क्कुरवै पिणै⋆ कोमळ प्पिळ्ळाय्⋆ तेडि त्तिरुमामगळ्⋆ मण्मगळ् निर्प⋆ एडि ! इदुवॆन्⋆ इदुवॆन् इदुवॆन्नो॥९॥	जबकि कमल वाली लक्ष्मी तथा भू देवी प्रतीक्षा में थीं आप गोप किशोरियों के साथ झूमते कुरूवै नृत्य में थे। मृदु एवं प्यारे ! हे ! यह क्या है ? यह क्या है ? यह क्या है ? **1930**
अल्लि क्कमल क्कण्णनै⋆ अङ्गोर् आयच्चि⋆ एल्लि प्पॊळुदूडिय⋆ ऊडल् तिरत्तै⋆ कल्लिन् मलि तोळ्⋆ कलियन् शॊन्न मालै⋆ शॊल्लि त्तुदिप्पार् अवर्⋆ दुक्कम् इलरे॥१०॥	शक्तिशाली भुजाओं वाले कलियन के गीतों की यह माला गोप कुमारियों के प्रेमी से रात के नोक झोंक को याद दिलाते हैं। जो इसे प्रभु की प्रशस्ति में गाते हैं उनकी यातनायें दूर हो जायेंगी। **1931** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

99 पुळळुरूवागि (1932 - 1941)

पळमोळियार पणिन्दुरैत्त पाट्टु

कृष्णावतार 6 ः कृष्ण से विछुड़े किशोरी की मां का निवेदन

पुळ्ळुरुवागि नळ्ळिरुळ् वन्द⋆ पूदनै माळ⋆ इलङ्गै ऑळ्ळॅरि मण्डि उण्ण प्पणित्त⋆ ऊक्कम् अदनै निनैन्दो⋆ कळ्ळविळ् कोदै कादलुम्⋆ एङ्गळ् कारिगै मादर् करुत्तुम्⋆ पिळ्ळै तन् कैयिल् किण्णमे ऑक्क⋆ प्पेशुवॅदन्दै पिराने ! ॥१॥	प्रभु ! आप हमलोगों की जूड़ो वाली बेटियों का आपके प्रति प्रेम एवं नारियों के अपशब्द को बहुत ही हल्के तरीके से लेते हैं। लगता है उसके टूटे हृदय को ठीक करना उतना ही आसान है जितना मुहावरे वाले बच्चे के हाथ का प्याला। क्या यह इसलिये कि आपने आसानी से पूतना राक्षसी का अंत किया तथा लंका नगर को जला दिया ? **1932**
मन्ऱिल् मलिन्दु कूत्तु वन्दाडि⋆ माल् विडै एळुम् अडर्त्तु⋆ आयर् अन्ऱु नडुङ्ग आनिरै कात्त⋆ आण्मै कॉलो अरियेन् नान्⋆ निन्ऱ पिराने ! नीळ् कडल् वण्णा ! ⋆ नी इवळ् तन्नै निन् कोयिल्⋆ मुन्ऱिल् एळुन्द मुरुङ्गैयिल् तेना⋆ मुन् कै वळै कवर्न्दाये ॥२॥	वेंकटम के प्रभु ! गहरे सागर सा सलोने ! चौराहे पर खड़े होकर आपने आनंद में नृत्य किया, सात काले वृषभों का शमन किया एवं आपदा में गायों की रक्षा की। क्या यह पुरूषार्थ है ? आपने इस किशोरी के कंगन चुरा लिये उतनी ही आसानी से जितना मुहावरे वाला मुरूंगै पेड़ का मधु। मुझे नहीं पता। **1933**
आर् मलि याळि शङ्गॉडु पढ़ि⋆ आढ़लै आढ़ल् मिगुत्तु⋆ कार् मुगिल् वण्णा ! कञ्जनै मुन्नम्⋆ कडन्द निन् कडुन्दिरल् तानो⋆ नेरिळै मादै निन्तिल तॉत्तै⋆ नॅडुङ्गडल् अमुदनैयाळै⋆ आरॅळिल् वण्णा ! अङ्गैयिल् वट्टाम्⋆ इवळ् एन क्करुदुगिन्राये ॥३॥	घनश्याम सुन्दर प्रभु ! आपने पुराकाल में शंख एवं चक्र धारण किया। गहने से आभूषित एवं मोती की माला यह किशोरी अमृत की तरह प्यारी है। आपने महान कंस का आसानी से अंत किया। अपने उसी शक्ति से इसे आप इतना आसान लेते हैं जैसे कि मुहावरे वाला उसके हाथ की मिश्री। **1934**
मल्लिगय तोळुम् मान् उरियदळुम्⋆ उडैयवर् तमक्कुमोर् पागम्⋆ नल्लिगय नलमो नरगनै तॉलैत्त⋆ करदलत्तमैदियिन् करुत्तो⋆ अल्लियङ्गोदै अणि निरम् कॉण्डु वन्दु⋆ मुन्ने निन्ऱु पोगाय्⋆ शॉल्लियॅन् नम्बी ! इवळै नी उङ्गळ्⋆ तॉण्डर् कै त्तण्डॅन्रवारे ॥४॥	प्रभु ! मृगछाला पहने शिव को अपने वदन पर रखने में तथा खाली हाथों से नरकासुर का अंत करने में विजयी महसूस करते हैं। इस जूड़ेवाले किशोरी को आकर देखना आप आवश्यक नहीं समझते जिसका सौंदर्य प्रसाधन आपने तब छीन लिया था। ऐसा नहीं सोचिये कि इसको पुनः प्राप्त करना उतना आसान है जितना मुहावरे वाला नौकर के हाथ का धनुष। हाय ! कहने से क्या लाभ ? **1935**

शॆरुवळियाद मन्नर्गळ् माळ⋆ त्तेर् वलङ्गॊण्डवर् शॆल्लुम्⋆ अरुवळि वानम् अदर्पड क्कण्ड⋆ आण्मै कॊल्लो अरियेन् नान्⋆ तिरुमॊळि एङ्गळ् तेमलर् क्कोदै⋆ शीमैयै निनैन्दिलै अन्दो⋆ पॆरु वळि नावल् कनियिनुम् एळियळ्⋆ इवळ् एन प्पेशुगिन्राये॥५॥	भारत के महान युद्ध में रथ चलाते हुए अनेकों प्रतापी राजाओं को मृत्यु के रास्ते आकाश गामी बना दिया। यह क्या आपका पुरूषेय अभिमान है कि हमारी मृदु भाषिणी बेटी के गुणों को नहीं सोंचते ? मुझे नहीं पता। आप उसे मुहावरे वाला रास्ते के किनारे गिरे जामुन का फल समझते हैं। **1936**
अरक्कियर् आगम् पुल्लॆन विल्लाल्⋆ अणि मदिळ् इलङ्गैयर् कोनै⋆ शॆरुक्कळित्तमरर् पणिय मुन्निन्र्⋆ शेवगमो शॆय्ददिन्रु⋆ मुरुक्किदळ् वायच्चि मुन् कै वॆण् शङ्गम्⋆ कॊण्डु मुन्ने निन्रु पोगाय्⋆ एरुक्किलैक्काग एरि मळुवोच्चल्⋆ एन् शॆय्वदॆन्दै पिराने ! ॥६॥	मेरे नाथ एवं प्रभु ! संरक्षित लंका में प्रवेश कर आपने बलशाली राक्षसराज का अंत कर उसकी पत्नियों का सुहाग उजाड़ दिया। देवगन आकाश में आकर आपकी तब पूजा किये। क्या इसी तरह आप अपना शौर्य अब दिखा रहे हो ? आपने लाल बैर जैसी होंठ वाली हमारी बेटी के हाथीदांत के कंगन उसके कलाई से ले लिये और उसके बाद अपने आप को उसे कभी दिखाया तक नहीं। 'अकवन की पत्ती पर कुल्हाड़ी' का मुहावरे की तरह। **1937**
आळियन् तिण् तेर् अरशर् वन्दिरैञ्ज⋆ अलै कडल् उलगम् मुन् आण्ड⋆ पाळियन् तोळ् ओर् आयिरम् वीळ⋆ प्पडै मळु प्पढ़िय वल्लियो⋆ माळैमॆन् नोक्कि मणि निरम् कॊण्डु वन्दु⋆ मुन्ने निन्रु पोगाय्⋆ कोळिवॆण् मुट्टैक्कॆन् शॆय्वदॆन्दाय् !⋆ कुरुन्दडि नॆडुङ्गडल् वण्णा ! ॥७॥	गहरे सागर सा सलोने प्रभु ! पुराकाल में महान राजा कीर्तिवीर्य अर्जुन ने धरा पर रथों वाले अनेकों राजाओं से पूजित हो शासन किया। आपने अपना युद्ध का फरसा चलाकर उसके हजारों हाथों को काट डाला। क्या यह आपकी शक्ति का परिचय है कि हमारी मृगनयनी बेटी के सौंदर्य प्रसाधन चुराकर उसके सामने कभी प्रकट भी नहीं हुए ? 'मुर्गी के अंडे फोड़ने के लिये छड़ी' का मुहावरे की तरह। **1938**
पॊरुन्दलन् आगम् पुळ्ळुवन्देर्⋆ वळ्ळुगिराल् पिळन्दु⋆ अन्रु पॆरुन् तगैक्किरङ्गि वालियै मुनिन्द⋆ पॆरुमैगॊलो शॆय्ददिन्रु⋆ पॆरुन् तडङ्गण्णि शुरुम्बुरु कोदै⋆ पॆरुमैयै निनैन्दिलै पेशिल्⋆ करुङ्गडल् वण्णा ! कवुळ् कॊण्ड नीराम्⋆ इवळ् एन क्करुदुगिन्राये॥८॥	घने मेघ सा श्यामल प्रभु ! छिपे हुए आप प्रकट हुए एवं हिरण्य की बलशाली छाती को अपने नखों से नष्ट कर दिया। छिपे हुए आप अपने तीक्ष्ण बाणों से वाली की छाती बेध डाले। क्या यह आपकी ऊंची कीर्ति का द्योतक है कि आप हमारी मधुमक्खी लिपटे फूल के जूड़े एवं बड़ी बड़ी आंखों वाली प्यारी बेटी के सामने नहीं आते ? आप उसे इतना आसान समझते हैं जैसे मुहावरे का 'मुंह का पानी चाहें उसे निगलें या उगल दें'। **1939**

नीरळल् वानाय् नॅडु निलम् कालाय्* निन्ऱ निन् नीर्मैयै निनैन्दो* शीरॅकॅळु कोदै एन्नलदिलळ् एन्ऱु* अन्नदोर् तेट्रन्मै तानो* पार्गॅळु पव्वत्तार् अमुदनैय* पावैयै प्पावम् शॅय्देनुक्कु* आर् अळल् ओम्बुम् अन्दणन् तोट्टमाग* निन् मनत्तु वैत्ताये॥९॥	धरा से घिरे सागर के अमृत के समान हमारी बेटी मधुर है। हाय ! मैं पापिनी हूं। आपका व्यवहार उसके साथ मुहावरे के वैदिक ऋषियों वाला है जो वे अग्नि की तुलना में बागों का करते हैं। क्या यह इसलिये है कि आप जल अग्नि आकाश पृथ्वी एवं वायु के रूप में प्रकट हो सकते हैं ? या क्या संतोषप्रद इस कारण से तो नहीं है कि इस पावन किशोरी का आपके अलावे कोई आश्रय नहीं है ? **1940**
वेट्टत्तै क्करुदादडियिणै वणङ्गि* मॅय्म्मैये निन्ऱॅम्पॅरुमानै* वाळ् तिरल् तानै मङ्गैयर् तलैवन्* मान वेल् कलियन् वाय् ऑलिगळ्* तोट्टलर् पैन्दार् च्चुडर् मुडियानै* प्पळ मॉळियाल् पणिन्दुरैत्त* पाट्टिवै पाड प्पत्तिमै पॅरुगि* च्चित्तमुम् तिरुवोडु मिगुमे॥१०॥	मंगै के भालाधारी राजा कलियन के मुहावरेदार गीत की यह माला तुलसी माला धारी प्रभु के चरणों की प्रशस्ति में बिना कोई सद्यः लाभ की आशा से समर्पित है। इसके गान से हृदय भक्ति तथा आनंद के धन से भर जायेगा। **1941** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

100 तिरूत्ताय् (1942-1951)

पऱवैगळै नोक्कि मायनै अऴैक्क एनल्

तिरुत्ताय् शॆम्बोत्ते !* तिरुमा मगळ् तन् कणवन्* मरुत्तार् तॊल् पुगळ्* मादवनै वर* त्तिरुत्ताय् शॆम्बोत्ते ! ॥१॥	पुकारो हे लाल......! श्रीपति प्रभु प्रसिद्ध हैं। सुगंधित तुलसी धारण किये हुए माधवन । उनका आगमन ......। **1942**
करैयाय् काक्कै प्पिळ्ळाय्* करु मा मुगिल् पोल् निऱत्तन्* उरैयार् तॊल् पुगळ्* उत्तमनै वर* क्करैयाय् काक्कै प्पिळ्ळाय् ! ॥२॥	कांव कांव अच्छे काग ! घने मेघ के समान। आपने कहा जैसे पूर्णता ने स्वरूप धारण कर लिया हो। उनका आगमन ...कांव...। **1943**
कूवाय् पूङ्गुयिले* कुळिर् मारि तडुत्तुगन्द* मावाय् कीण्ड* मणि वण्णनै वर* क्कूवाय् पूङ्गुयिले ! ॥३॥	कुहू कुहू अच्छे कोयल ! तूफान को बन्द करते हुए आपने बलशाली घोड़े का जबड़ा फाडा। रत्न प्रभु ! उनका आगमन ... कुहू ...। **1944**
कॊट्टाय् पल्लि क्कुट्टि* कुडम् आडि उलगळन्द* मट्टार् पूङ्गुळल्* मादवनै वर* क्कॊट्टाय् पल्लि क्कुट्टि ! ॥४॥	तुत तुत छोटी छिपकिली ! पात्र पर नाचते हुए आपने ब्रह्मांड मापा। फूल जूड़ा धारण करते माधवन ! उनका आगमन ... तुत ...। **1945**
शॊल्लाय् पैङ्गिळिये* शुडराळि वलन् उयर्त्त* मल्लार् तोळ्* वड वेङ्गडवन् वर* शॊल्लाय् पैङ्गिळिये ! ॥५॥	हरा सुग्गा बोलो ! तेजोमय चक्र धारण किये हुए शक्तिशाली भुजाओं वाले प्रभु उत्तर वेंकटम में रहते हैं। उनका आगमन ... बोलो...। **1946**
कोळि कूवॆन्नुमाल्* तोळि ! नानॆन् शॆय्गेन्* आळि वण्णर्* वरुम् पॊळुदायिट्रु* कोळि कूवॆन्नुमाल् ॥६॥	मुर्गा बोल रहा है। हे बहन ! मैं क्या कर सकती हूं ? श्यामा का अब हमारे पास आने का समय हो गया है। मुर्गा बोल रहा है। अहो ! **1947**
कामऱ्कॆन् कडवेन्* करु मामुगिल् वण्णर्कल्लाल्* पूमेल् ऐङ्गणै* कोत्तु प्पुगुन्दॆय्य* कामऱ्कॆन् कडवेन् ॥७॥	काम को मैं क्या दे सकती हूं ? गन्ने का धनुष चलानेवाला काम के जनक श्याम प्रभु की सेवा छोड़कर काम को मैं क्या दे सकती हूं ? **1948**
इङ्गे पोदुङ्गॊलो* इन वेल् नॆडुङ्गण् कळिप्प* कॊङ्गार् शोलै* क्कुडन्दै क्किडन्द माल्* इङ्गे पोदुङ्गॊलो ॥८॥	क्या आप इस रास्ते आयेंगे ? हमारी वेल मछली जैसी गहरे रंग की आंखों को प्रसन्न करते हुए अमृतमय बागों से घिरे कुडन्दै के प्रभु ! क्या आप इस रास्ते आयेंगे ? **1949**
इन्नार् एन्ऱऱियेन्* अन्ने ! आळियॊडुम्* पॊन्नार् शारङ्गम् उडैय अडिगळै* इन्नार् एन्ऱऱियेन् ॥९॥	मैंने आपकी चितवन को नहीं देखी । वृहत बाहों में शंख चक्र शारंग धनुष धारण करने वाले प्रभु ! मैंने आपकी चितवन को नहीं देखी। **1950**

तॊण्डीर्! पाडुमिनो॰ शुरुम्बार् पॊऴिल् मङ्गैयर् कोन्॰ ऒण् तार् वेल् कलियन् ऒलि मालैगळ्॰ तॊण्डीर्! पाडुमिनो॥१०॥	भक्तजन ! इन गीतों का गान करो। मधुमक्खी वाले सुगंधित बाग के मंगै के भालाधारी राजा कलकन्रि के गीतों का भक्तजन गान करो। **1951** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

101 कुन्ऱमोन्ऱेडुत्तु (1952 – 1961)

तलैवियिरिङ्गल् 1 ः विछोह की वेदना

कुन्ऱम् ऒन्ऱॆडुत्तेन्दि* मा मऴै अन्ऱु कात्त अम्मान्* अरक्करै वॆन्ऱ विल्लियार्* वीरमे कॊलो* तॆन्ऱल् वन्दु* ती वीशुम् ऎन् शॆय्गेन्॥१॥	प्रभु ने पर्वत उठाकर वर्षा बन्द करा दी। आप राक्षसों का नाश करने वाले धनुर्धारी हैं। मंद वायु हमारी प्रेमाग्नि को हवा दे रही है। यह क्या आपके शौर्य का द्योतक है ? मुझे नहीं पता। **1952**
कारुम् वार् पनि* क्कडलुम् अन्नवन्* तारुम् मार्वमुम्* कण्ड तण्डमो* शोरु मामुगिल्* तुळियिन् ऊडु वन्दु* ईर वाडै तान्* ईरुम् ऎन्नैये॥२॥	मेघ एवं गहरे सागर की तरह प्रभु श्याम हैं। मैंने तुलसी से सुशोभित आपके वक्षस्थल की चाह की थी। उसी की सजा है क्या ? वर्षा के मेघ की तरफ से आनेवाली जलकणों से अभिसिक्त हवा मेरे हृदय को छेद दे रही है। **1953**
शङ्गुम् मामैयुम्* तळरुम् मेनिमेल्* तिङ्गळ् वॆङ्गदिर्* शीऱुम् ऎन्शॆय्गेन्* पॊङ्गु वॆण् तिरै* प्पुणरि वण्णनार्* कॊङ्गलारन्द तार्* कूवुम् ऎन्नैये॥३॥	हमारे कंगन खिसक गये एवं हमारा रंग बह गया है। चंद्रकिरणें क्रोध में हमें दग्ध कर रही हैं। मै क्या करू ? सागर से सलोने प्रभु सुगंधित तुलसी की माला पहनते हैं जो हमें बुलाती रहती है। **1954**
अङ्गोर् आय्क्कुलत्तुळ्* वळर्न्दु शॆन्ऱु* अङ्गोर् ताय् उरुवागि वन्दवळ्* कॊङ्गै नञ्जुण्ड* कोयिन्मै कॊलो* तिङ्गळ् वॆङ्गदिर्* शीऱुगिन्ऱदे॥४॥	आप वही हैं जो दूसरे के घर में जाकर पाले पोसे गये। आपने राक्षसी का विषैला स्तन पिया जो मां बनकर आयी थी। ओह विसंगति ! चंद्रकिरणें हमें दग्ध कर रही हैं। **1955**
अङ्गोर् आळ् अरियाय्* अवुणनै प्पङ्गमा* इरु कूऱु शॆय्दवन्* मङ्गुल् मा मदि* वाङ्गवे कॊलो* पॊङ्गु मा कडल्* पुलम्बुगिन्ऱदे॥५॥	एक बार आप नरसिंह रूप में आये और हिरण्य की छाती चीर दिये। आप वही हैं जो दूसरे के घर में जाकर पाले पोसे गये। चंद्रमा के आकाश में चले जाने के कारण सागर गर्जता है क्या ? **1956**
शॆन्ऱु वार्* शिलै वळैत्तु* इलङ्गैयै वॆन्ऱ विल्लियार्* वीरमे कॊलो* मुन्ऱिल् पॆण्णैमेल्* मुळरि क्कूट्टगत्तु* अन्ऱिलिन् कुरल्* अडरुम् ऎन्नैये॥६॥	धनुष का प्रयोग कर प्रभु लंका नगर पर विजय प्राप्त किये। क्या आपके शौर्य का बखान करने के लिये अन्रिल पक्षी कमल का घोसला छोड़कर सामने के आंगन वाले ताड़ पेड़ की चोटी से निरंतर ध्वनि करती हुई हमें दुखी कर रही है ? **1957**
पूवै वण्णनार्* पुळ्ळिन्मेल् वर* मेवि निन्ऱु नान्* कण्ड तण्डमो* वीविल् ऐङ्गणै* विल्लि अम्बु कोत्तु* आविये इलक्काक ऎय्वदे॥७॥	उत्साह से खड़ी होकर कया फूल के रंग वाले प्रभु को गरूड़ पर आते देखी। यह क्या मेरे लिय दंड है कि प्रेम का देवता मदन अपने पुष्प के बाणों से हमारे हृदय को बेधते रहते हैं ? **1958**
माल् इनन् तुळाय्* वरुम् ऎन् नॆञ्जगम्* मालिन् अन्दुळाय्* वन्दॆन्नुळ्पुग* कोल वाडैयुम्* कॊण्डु वन्ददोर्* आलि वन्ददाल्* अरिदु कावले॥८॥	जब आपकी तुलसी की माला सुगंधित हवा के साथ आकर मुझमें घर कर गयी तो मेरा मन चारों तरफ आपको खोजने लगा। उसका एक छोटा टुकड़ा हमारे हृदय में कांटे की तरह घुस गया है। हाय ! अब अपने आप की रक्षा असंभव है। **1959**

कॆण्डै ऑण् कणुम् तुयिलुम्⋆ एन् निऱम् पण्डु पण्डु पोल्ॊक्कुम्⋆ मिक्क शीर् तॊण्डर् इट्ट⋆ पून् तुळविन् वाशमे⋆ वण्डु कॊण्डु वन्दु⋆ ऊदुमागिल्॥ ९ ॥	माननीय भक्तों द्वारा बनाये गये तुलसी की माला का सुगंध अगर भौंरा लाकर मुझपर वर्षायेगा तब शायद हमारी मीनवत नयनों में नींद आये एवं हमारा मूल रंग वापस आ जाये। **1960**
‡अन्ऱु बारदत्तु⋆ ऐवर् तूदनाय्⋆ शॆन्ऱ मायनै⋆ च्चॆङ्गण् मालिनै⋆ मन्ऱिल्लार् पुगळ्⋆ मङ्गै वाळ् कलि– गन्ऱि⋆ शॊल् वल्लारक्कु⋆ अल्लल् इल्लैये॥ १० ॥	प्रसिद्ध मंगै के राजा कलकन्रि के ये गीत भारत के युद्ध में पांच पांडवों के दूत बनने वाले प्रभु की प्रशस्ति में है। जो इसे याद कर लेंगे वे कभी निराश नहीं होंगे। **1961** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्

श्रीमते रामानुजाय नमः **102 कुऩ्ऱमेडुत्तु (1962 - 1971)** **तलैवियिरिङ्गल् 2 ः विछोह की वेदना**	
कुऩ्ऱम् एडुत्तु मऴै तडुत्तु* इळैयारॊडुम्* मऩ्ऱिल् कुरवै पिणैन्द माल्* एऩ्ऩै माल्शॆय्दान्* मुऩ्ऱिल् तनि निऩ्ऱ पॆण्णै मेल्* किडन्दीर्गिऩ्ऱ* अऩ्ऱिलिन् कूट्टै* प्पिरिक्ककिर्पवर् आर्गॊलो॥१॥	पर्वत उठाकर वर्षा बंद कराने वाले एवं गोप किशोरियों के साथ गलियों में रास नृत्य करने वाले प्रभु ने हमें मोह लिया है। सामने के आंगन में अकेला ताड़ के पेड़ पर अन्रिल पक्षी की जोड़ी के मैथुन की ध्वनि हमारे हृदय को बेधती है।हाय ! कोई है जो उनलोगों का वियोग करा दे ? **1962**
पूङ्गुरुन्दॊशित्तु आनै कायन्दु* अरि माच्चॆगुत्तु* आङ्गु वेऴत्तिन् कॊम्बु कॊण्डु* वन् पेय् मुलै वाङ्गि उण्ड* अव्वायन् निर्क* इव्वायन् वाय्* एङ्गु वेय्ङ्गुऴल्* एऩ्ऩोडाडुम् इळमैये॥२॥	प्रभु ने मरूदु के वृक्षों को तोड़ा, वृषभों का वध किया, घोड़ा का जबड़ा फाड़ा, हाथी के दांतों को खींचा, एवं राक्षसी का स्तन अपने होठों से पिया। हाय ! गोप किशोर की वंशी का धुन हमारे हृदय को तड़पा रहा है। **1963**
मल्लॊडु कञ्जनुम्* तुञ्ज वॆऩ्ऱ मणिवण्णन्* अल्लि मलर् त्तण् तुऴाय्* निनैन्दिरुन्देनैये* एल्लियिल् मारुदम्* वन्दडुम् अदुवऩ्ऱियुम्* कॊल्लै वल्लेऱ्ऱिन् मणियुम्* कोयिन्मै शॆय्युमे॥३॥	मणिवर्ण वाले प्रभु ने मल्लयोद्धाओं को जीत कर कंस का बध किया। मेरा मन आपकी शीतल तुलसी माला पर लगी रहती है। संध्या की हवा हमारा बध करने आने आती है। अकेले नहीं ! शक्तिवान वृषभ के गले की घंटी भी हमारी मृत्युकालीन की घंटी है। **1964**
पॊरुन्दु मा मरम्* एऴुम् एय्द पुनिदनार्* तिरुन्दु शेवडि* एन् मनत्तु निनैदॊऱुम्* करुन् तण् मा कडल्* कङ्गुल् आर्क्कुम् अदुवऩ्ऱियुम्* वरुन्द वाडै वरुम्* इदर्किनि एन् शॆय्गोन्॥४॥	परात्पर प्रभु ने सात वृक्षों को वाण से बेधा। जबकभी भी हमारा हृदय आपके चरणों का ध्यान करता है तो शीतल सागर सारी रात गर्जते रहता है एवं जलविन्दु अभिसिक्त हवा हमें उदास करती है।हाय ! अब मैं इसके लिये क्या कर सकती हूं ? **1965**
अऩ्ऩै मुनिवदुम्* अऩ्ऱिलिन् कुरल् ईर्वदुम्* मऩ्ऩु मऱि कडल् आर्प्पदुम्* वळै शोर्वदुम्* पॊऩ्ऩङ्गलैयल्गुल्* अऩ्ऩ मॆऩ्ऩडै प्पूङ्गुऴल्* पिऩ्ऩै मणाळर्* तिऱत्तवायिन पिऩ्ऩैये॥५॥	मां की गुस्सा भरी बातें, अन्रिल के हृदय बेधी पुकार, समुद्र का गर्जन, कंगनों का खिसकना, यह सब तब शुरू हुआ जब हमलोग प्रभु की कीड़ा में अभिरूचि लेने लगे जो नप्पिनाय के दूलहा हैं जिनका सुन्दर पीत वस्त्र है, हंस के समान चाल है, एवं सुन्दर फूल का जूड़ा है। **1966**

आळियुम् शङ्गुम् उडैय⋆ नङ्गळ् अडिगळ् ताम्⋆ पाळिमैयान कनविल्⋆ नम्मै प्पगर्वित्तार्⋆ तोळियुम् नानुम् ऑळिय⋆ वैयम् तुयिन्ऱ्दु⋆ कोळियुम् कूगिन्ऱदिल्लै⋆ क्कूर् इरुळ् आयिट्ऱे॥६॥	चक्र एवं शंख धारण करने वाले हमारे नाथ एवं प्रभु ने हमें एक अंतहीन स्वप्न में निमंत्रित किया। हम एवं हमारी सखी को छोड़कर सारा जगत गहरी नींद सो रहा है। हाय ! काग की भी आवाज नहीं एवं घोर अंधेरा है। **1967**
कामन् तनक्कु मुऱैयल्लेन्⋆ कडल् वण्णनार्⋆ मा मणवाळर्⋆ एनक्कु त्तानुम् मगन् शॊल्लिल्⋆ यामङ्गळ् तोऱुम् एरि वीशुम्⋆ एन्निळङ्गॊङ्गैगळ्⋆ मामणि वण्णर्⋆ तिऱत्तवाय् वळर्गिन्ऱवे॥७॥	प्रेम का देवता मदन हमारा कोई संबंधी नहीं है। सागर सा सलोने प्रभु का हमारा दूलहा होने के कारण वह मेरा पुत्र है।लेकिन हाय ! दिन के हर घंटे में इस तरह से कामाग्नि को प्रदीप्त करता है ! मणिवर्ण वाले प्रभु के कारण हमारे कोमल उरोज दर्द के साथ रहने के आदि हो गये हैं। **1968**
मञ्जुऱु मालिरुञ्जोलै⋆ निन्ऱ मणाळनार्⋆ नॆञ्जम् निऱै कॊण्डु पोयिनार्⋆ निनैगिन्ऱिलर्⋆ वॆञ्जुडर् पोय् विडियामल्⋆ एव्विडम् पुक्कदो⋆ नञ्जुडलम् तुयिन्ऱाल्⋆ नमक्किनि नल्लदे॥८॥	बिना कोई विचार किये रहस्यमयी मालिरूञ्जोलै के दूलहा प्रभु ने हमारे चित्त का चैन लूट लिया। उदय न लेकर निष्ठुर सूर्य कहां जाकर छिप गया ? अब हमलोगों के लिये यह अच्छा होगा कि यह शरीर सूखकर खतम हो जाये। **1969**
कामन् कणैक्कोर् इलक्कमाय्⋆ नलत्तिन् मिगु⋆ पू मरु कोलम्⋆ नम् पॆण्मै शिन्दित्तिरातु पोय्⋆ तूमलर् नीर् कॊंडु⋆ तोळि ! नाम् तॊळुदेत्तिनाल्⋆ कार् मुगिल् वण्णरै⋆ क्कण्गळाल् काणलाम् कॊलो॥९॥	बहनों ! अपना फूल समान सौंदर्य एवं नारीपन का ध्यान छोडकर ः जो मदन का लक्ष्य बेध है, हम चलें, मेघ समान श्याम प्रभु का शुद्ध जल एवं नूतन पुष्प से पूजा करें। तब कम से कम हम अपनी आंखों से प्रभु को देखेंगे तो सही। **1970**
वॆन्ऱि विडैयुडन्⋆ एळ् अडर्त्त अडिगळै⋆ मन्ऱिल् मलि पुगळ्⋆ मङ्गै मन् कलिगन्ऱि शॊल्⋆ ऑन्ऱु निन्ऱ ऑन्बदुम्⋆ उरैप्पवर् तङ्गळ्मेल्⋆ एन्ऱुम् निल्ला विनै⋆ ऑन्ऱुम् शॊल्लिल् उलगिले॥१०॥	इन दस गीतों में जगविख्यात कलकन्रि ने सात वृषभों पर विजय पाने वाले प्रभु की प्रशस्ति गायी है। जो इसका गान करेंगे वे कर्मो से मुक्त हो जायेंगे। बल्कि संसार भी कर्मो से मुक्त हो जायेगा। **1971** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

103 मन्निलङ्गु (1972 - 1981)

तलैवियिरिङ्गल् 3 ः विछोह की वेदना

मन्निलङ्गु बारदत्तु॰ त्तेर् ऊरन्दु॰ मावलियै प्पॉन्निलङ्गु तिण् विलङ्गिल् वैत्तु॰ प्पॉरु कडल् शूळ्॰ तॅन्निलङ्गै ईडळित्त॰ देवर्क्किदु काणीर्॰ एन्निलङ्गु शङ्गोडु॰ एळिल् तोट्रिरुन्देन॥१॥	महान भारत के युद्ध में प्रभु ने अर्जुन का रथ हांका। आपने बलशाली मावली को बड़े से सोने के पिंजरा में कैद कर रखा। आपने सागर से घिरे लंका को नष्ट कर दिया। यह देखो ! हमने कंगना एवं सौंदर्य प्रसाधन उनके पास गंवा दिया। **1972**
इरुन्दान् एन्नुळ्ळत्तु॰ इरैवन् करै शेर्॰ परुन् ताळ् कळिट्रुक्कु॰ अरुळ् शॅय्द शॅङ्गण्॰ पॅरुन् तोळ् नॅडुमालै॰ प्पेर् पाडि आड॰ वरुन्दार्देन् कॉङ्गै॰ ऑळि मन्नुम् अन्ने॥२॥	प्यारी सखियां ! पुरा काल में भारी पैर वाले आपदाग्रस्त गजेन्द्र पर कृपा करनेवाले शक्तिशाली भुजाओं वाले अरूणाभ नयन हमारे हृदय के प्रभु हैं। आपकी प्रशस्ति गाने एवं नाचने से हमारे उरोज अब मुर्झाये हुए नहीं हैं बल्कि अपने पहले के रंग में आने लगे हैं। **1973**
अन्ने ! इवरै॰ अरिवन् मरै नान्गुम्॰ मुन्ने उरैत्त॰ मुनिवर् इवर् वन्दु॰ पॉन्नेय् वळै कवर्न्दु॰ पोगार् मनम् पुगुन्दु॰ एन्ने इवर् एण्णुम्॰ एण्णम् अरियोमे॥३॥	प्यारी सखियां ! मैं इस व्यक्ति को जानती हूं। आप पुरा काल में ऋषि के रूप में आकर चारों वेद पर व्याख्यान दिये। आज आप हमलोगों के कंगन चुरान आते हैं। हमारे हृदय में घर कर जाते हैं तथा जाते नहीं हैं। हाय ! हमलोग जानते नहीं हैं कि आपके मन में क्या है ? **1974**
अरियोमे एन्रु॰ उरैक्कलामे एमक्कु॰ वॅरियार् पॉळिल् शूळ्॰ वियन् कुडन्दै मेवि॰ शिरियान् ओर् पिळ्ळैयाय्॰ मॅळ्ळ नडन्दिट्टु॰ उरियार् नरु वॅण्णॅय्॰ उण्डुगन्दार् तम्मैये॥४॥	आप सुगंधित बागों से घिरे कुडन्दै में रहते हैं। छोटे शिशु के रूप में जल्दी से रस्सी वाले छींके तक जाकर मक्खन लेकर बड़े आनंद से खाया। हम कैसे कहते हैं कि आपको नहीं जानते ? **1975**
तम्मैये नाळुम्॰ वणङ्गि त्तॉळुवार्क्कु॰ तम्मैये ऑक्क॰ अरुळ् शॅय्वर् आदलाल्॰ तम्मैये नाळुम्॰ वणङ्गि त्तॉळुदिरैञ्जि॰ तम्मैये पट्रा॰ मनत्तॅन्रुम् वैत्तोमे॥५॥	जो केवल आपकी पूजा करते हैं उनको आप अपने स्वयं के गुणों से विभूषित करते हैं। अतः हमलोग हमेशा केवल आपकी प्रशस्ति गायेंगी तथा अपने हृदय को आप तक जाने के लिये प्रशिक्षित करूंगी। **1976**

वैत्तार् अडियार्⋆ मनत्तिनिल् वैत्तु⋆ इन्वम् उद़ार् ऑळि विशुम्बिल्⋆ ओर् अडि वैत्तु⋆ ओर् अडिक्कुम् एय्त्तादु मण्णॆन्ऱ⋆ इमैयोर् तॊळुदेत्ति⋆ कैत्तामरै कुविक्कुम्⋆ कण्णन् एन् कण्णनैये॥६॥	जब प्रभु ने उज्जवल आकाश में अपना पहला कदम रखा तो देवगन एकत्रित होकर कहने लगे 'दूसरे कदम के लिये धरा पर्याप्त नहीं है।' उनलोगों ने आंखों से प्यारे कृष्ण के सामने हाथ जोड़ लिये। भक्तगण हमेशा आपको हृदय में रखकर विजयी महसूस करते हैं। **1977**
कण्णन् मनत्तुळ्ळे⋆ निर्कवुम् कैवळैगळ्⋆ एन्नो कळन्ऱ⋆ इवैयॆन्न मायङ्गळ्⋆ पॆण्णानोम् पॆण्मैयोम् निर्क⋆ अवन् मेय अण्णल् मलैयुम्⋆ अरङ्गमुम् पाडोमे॥७॥	हम कृष्ण को अपने हृदय में रख लिये हैं फिर भी हमारे कंगन हाथ पर नहीं टिकते। क्या रहस्य है इसमें ? अच्छा, क्या हम सभी किशोरियों ने अपने नारीत्व का ख्याल रखा है ? तव भी हम आपके निवास वेंकटम एवं अरंगम कि प्रशस्ति गाने से चूकेंगे नहीं। **1978**
पाडोमे⋆ एन्दै पॆरुमानै⋆ पाडि निन्ऱ् आडोमे⋆ आयिरम् पेरानै⋆ पेर्निनैन्दु शूडोमे⋆ शूडुम् तुळाय् अलङ्गल् शूडि⋆ नाम् कूडोमे कूड⋆ क्कुरिप्पाकिल् नल् नॆञ्जे ! ॥८॥	हे मन ! क्या हम प्रभु की प्रशस्ति नहीं गाते ? क्या हम आपके हजार नाम वोलकर नहीं नाचते ? क्या आपका नाम लेकर आपके धारण किये हुए तुलसी को हम धारण नहीं करते ? इसे पहन कर, अगर आप चाहेंगे तो, क्या हम आप में मिल नहीं जायेंगे ? **1979**
नल् नॆञ्जे ! नम् पॆरुमान्⋆ नाळुम् इनिदमरुम्⋆ अन्नम् शेर् कानल्⋆ अणियालि कै तॊळुदु⋆ मुन्नम् शेर् वल्विनैगळ् पोग⋆ मुगिल् वण्णन्⋆ पॊन्नम् शेर् शेवडि मेल्⋆ पोदणिय प्पॆद्रोमे॥९॥	हे मन ! प्रभु स्थायी रूप से हंसो के सरोवर एवं उपजाऊ खेतों से घिरे तिरूवाली में रहते हैं। मेघ के समान रंग वाले प्रभु के सुनहले चरणों पर फूल अर्पित कर हम अपने युग युगांतर के पूर्व कर्मों से मुक्त हो गये हैं। **1980**
‡पॆद्रारार्⋆ आयिरम् पेरानै⋆ प्पेर्पाड प्पॆद्रान्⋆ कलियन् ऑलिशॆय् तमिळ् मालै⋆ कद्रारो ! मुट्रुलगाळ्वर्⋆ इवै केट्गल् उद्रार्क्कु⋆ उऱुदुयर् इल्लै उलगत्ते॥१०॥	मधुर तमिल गीतों की माला प्रभु के हजारनाम गाने वाले सौभाग्यशाली कलियन के हैं। जो इसे गाने के लिये सीखेंगे वे कभी संतुष्ट नहीं होंगे। अहा ! वे सारी धरा पर राज्य करेंगे। इसके सुनने वाले भी दुःखों से मुक्त हो जायेंगे। **1981** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

<table>
<tr><td colspan="2">श्रीमते रामानुजाय नमः
104 निलैयिडम् (1982 - 1991)
तिरूमालिन् तिरूववतारङ्गळिल् ईडुपडुदल्
मछली कछुआ सूकर नरसिंह वामन प्रशुराम राम कृष्ण अवतारों की गौरव गाथा</td></tr>
<tr><td>निलैयिडम् एङ्गुम् इन्रि नेडुवॆळ्ळम् उम्बर्* वळ नाडु मूड इमैयोर्*
तलैयिड मट्रॆमक्कोर् शरण् इल्लै एन्न* अरण् आवन् एन्नुम् अरुळाल्*
अलै कडल् नीर् कुळम्ब अगडाड ओडि* अगल् वान् उरिञ्ज* मुदुगिल्
मलैगळै मीदु कॊण्डु वरु मीनै माल्लै* मरवादिरॆञ्जॆन् मनने ! ॥१॥</td><td>जब संसार प्रलय जल में डूबा था तो देवगन भी डर गये थे। उनलोगों ने विनती की 'हमारे नाथ! एक मात्र आश्रय ! स्रष्टा ! हमलोगों को स्थान प्रदान कीजिये'। प्रभु गहरे सागर में मछली के रूप में आनंद से तैरते एवं अपने उदर पर सरकते पर्वत के समान पत्थर खींचते आये।हे मन ! अवतार की प्रशस्ति गाओ, रूको नहीं। 1982</td></tr>
<tr><td>शॆरु मिगु वाळ् एयिट्र अरवॊन्रु शुट्रि* त्तिशै मण्णुम् विण्णुम् उडने*
वॆरुवर वॆळ्ळै वॆळ्ळम् मुळुदुम् कुळम्ब* इमैयोर्गळ् निन्रु कडैय*
परु वरै ऒन्रु निन्रु मुदुगिल् परन्दु* शुळल क्किडन्दु तुयिलुम्*
अरुवरै अन्न तन्मै अडल् आमैयान* तिरुमाल् नमक्कोर् अरणे॥२॥</td><td>वृहत मंदर पर्वत पर श्वेत फन वाले मजबूत वासुकी को लपेट कर देव एवं असुर ने श्वेत क्षीर सागर का मंथन किया जिससे धरा एवं आकाश को डराने वाले चारों तरफ ऊंचे तरंग उत्पन्न हुए।तब प्रभु तिरूमल शक्तिशाली कच्छप के रूप में आये और अपने पीठ पर पर्वत को धारण कर लिये। यह अवतार हमारे रक्षक एवं राजा हैं। 1983</td></tr>
<tr><td>तीदरु तिङ्गळ् पॊङ्गु शुडर् उम्बर् उम्बर्* उलगेळिनोडुम् उडने*
मादिर मण् शुमन्दु वड कुन्रम् निन्र* मलैयारुम् एळु कडलुम्*
पादमर् शूळ् कुळम्बिन् अग मण्डलत्तिन्* ऒरुपाल् ऒडुङ्ग वळर् शेर्*
आदि मुन् एनमागि अरणाय मूर्त्ति* अदु नम्मै आळुम् अरशे॥३॥</td><td>प्रारंभ में प्रभु वराह बन कर आये और वृहत होते गये। निष्कलंक चांद, उज्जवल सूर्य, देवगन एवं सात स्वर्गिक लोक, आठ दिशा, मेरू पर्वत एवं अन्य छ पर्वत, सात सागर सभी आपके पैर के खूर के अन्दर आ गये। यह अवतार हमारे रक्षक एवं राजा हैं। 1984</td></tr>
<tr><td>तळैयविळ् कोदै माल्लै इरुबाल् तयङ्ग* एरि कान्रिरण्डु तरु कण्*
अळवॆळ वॆम्मै मिक्क अरियागि अन्रु* परियोन् शिनङ्गळ् अविळ*
वळै उगिर् आळि मॊय्म्बिल् मरवोनदागम्* मदियादु शॆन्रॊर् उगिराल्*
पिळवॆळ विट्ट कुट्टम् अदुवैय मूडु* पॆरु नीरिन् मुम्मै पॆरिदे॥४॥</td><td>पुरा काल में प्रभु शक्तिवान नरसिंह बनकर आये। फूल एवं रत्न के माला आपक दोनों ओर झूल रहे थे। आपकी अंगारों की तरह लाल आंखें बाहर उभरी हुई थी। घमंडी राजा हिरण्य के आतंक राज का अंत हुआ।घुमावदार तीक्ष्ण पंजों को आपने बलशाली असुर की छाती में घुसा दिया। इससे खून का फव्वारा प्रलय जल से तीन गुना ऊंचा निकला। 1985</td></tr>
</table>

वॆन्दिरल् वाणन् वेळ्वि इडम् एय्दि* अङ्-गोर् कुरळागि मॆय्म्मै उणर* शॆन् तॊळिल् वेद नाविन् मुनियागि वैयम्* अडि मून्ऱिरन्दु पॆरिनुम्* मन्दरमीदु पोगि मदि निन्ऱिरैञ्ज* मलरोन् वणङ्ग वळर् शेर्* अन्दरम् एळिनूडु शॆल्वुयर्त्त पादम्* अदु नम्मै आळुम् अरशे॥५॥	एक बार प्रभु ज्ञान एवं वेद मंत्रों से परिपूर्ण वामन बन कर आये एवं तीन पग जमीन मांगी। मिलते ही आपने अपना विस्तार कर चरण को सातों लोक के ऊपर आकाश में रख दिया। चांद खड़ा होकर प्रशस्ति गाने लगे तथा पद्मयोनि ब्रह्मा सम्मान में झुक गये। यह अवतार हमारे रक्षक एवं राजा हैं। **1986**
इरु निल मन्नर् तम्मै इरु नालुम् एट्टुम्* ऑरु नालुम् ऑन्ऱुम् उडने* शॆरु नुदलूडु पोगि अवर् आवि मङ्ग* मळुवाळिल् वॆन्ऱ तिरलोन्* पॆरु निल मङ्गै मन्नर् मलर् मङ्गै नादर्* पुलमङ्गै केळ्वर् पुगळ् शेर्* पॆरु निलम् उण्डुमिळ्न्द पॆरु वायरागि* अवर् नम्मै आळ्वर् पॆरिदे॥६॥	श्रीदेवी भूदेवी एवं नीला के नाथ एक बार फरसा लेकर आये एवं इक्कीस किरीटधारी राजाओं का अंत कर दिया। आप वही हैं जो ब्रह्मांड को निगल कर उसे पुनः अपने उदर से बनाया। यह अवतार हमारे रक्षक एवं राजा हैं। **1987**
इलै मलि पळ्ळि एय्दि इदु मायम् एन्न* इनमाय मान् पिन् एळिल् शेर्* अलै मलि वेल्कणाळै अगल्विप्पदर्कु* ओर् उरुवाय मानै अमैया* कॊलै मलि एय्दुवित्त कॊडियोन् इलङ्गै* पॊडियाग वॆन्ऱि अमरुळ्* शिलै मलि शॆञ्जरङ्गळ् शॆल्वुयर्त्त नङ्गळ्* तिरुमाल् नमक्कोर् अरणे॥७॥	दुष्ट रावण जंगल के आश्रम में आया जब सीता अकेली थीं एवं उनका अपहरण कर लिया। तिरूमल प्रभु ने जानवरों के समूह में से जादुई मृग को अलग करते हुए उसका अंत कर दिया। तब आपने राक्षसों के लंका पर अग्नि वमन करते बाणों की वर्षा कर नगर को तहस नहस कर दिया। यह अवतार हमारे रक्षक एवं राजा हैं। **1988**
मुन् उलगङ्गळ् एळुम् इरुळ्मण्डि उण्ण* मुदलोडु वीडुम् अऱियादु* एन्निदु वन्ददेन्न इमैयोर् तिगैप्प* एळिल् वेदम् इन्ऱि मऱैय* पिन्नैयुम् वानवर्क्कुम् मुनिवर्क्कुम् नल्गि* इरुळ् तीरन्दिव्वैयम् मगिळ* अन्नमदाय् इरुन्दङ्गरनूल् उरैत्त* अदु नम्मै आळुम् अरशे॥८॥	सुदूर पूर्व में जब सभी लोकों में घोर अंधकार छा गया तब स्वर्गि कों को इसका आदि एवं अंत समझ में न आया। निराश हो वे बोले 'हमलोगों को क्या हो गया? वेद भी लुप्त हो गये।देवों एवं ऋषियों की प्रार्थना पर प्रभु ने हंस रूप में पवित्र शास्त्रों को प्रकट किया तथा संसार से अंधकार दूर करते हुए सब को प्रसन्न कर दिया। यह अवतार हमारे रक्षक एवं राजा हैं। **1989**
तुणै निलै मऱ्ऱॆमक्कोर् उळदॆन्ऱिरादु* तॊळुमिङ्गळ् तॊण्डर्! तॊलैय* उण मुलै मुन् कॊडुत्त उरवोळदावि* उगवुण्डु वॆण्णॆय् मरुवि* पणै मुलै आयर् मादर् उरलोडु कट्ट* अदनोडुम् ओडि अडल् शेर्* इणै मरुदिऱ्ऱु वीळ नडैगऱ्ऱ तॆऱ्ऱल्* विनै प्पऱ्ऱरुक्कुम् विदिये॥९॥	भक्तलोग प्रभु की पूजा एकमात्र आश्रय के रूप में करते हैं। बहुत पहले जब एक राक्षसी कृष्ण की हत्या करने आई तो शिशु ने विषैले स्तन को पीते हुए उसके प्राण भी पी गये। आपने मक्खन चुराया एवं सजनी यशोदा ने आपको ऊखल में बांध दी।सरकते हुए ऊखल को पीछे से खींचते दो सटे हुए मरूदु पेड़ों के बीच जाकर आपने उन दोनों पेड़ों को तोड़ दिया। अनेकों तरह से प्रभु हमें हमारे कर्मों से मुक्त करते हैं। **1990**

कॊलै कॆळु शॆम्मुगत्त कळिऱॊन्ऱु कॊन्ऱु॰ कॊडियोन् इलङ्गै पॊडिया॰ शिलै कॆळु शॆञ्जरङ्गळ् शॆलवुयत्त नङ्गळ्॰ तिरुमालै वेलै पुडै शूळ्॰ कलि कॆळु माड वीदि वयल् मङ्गै मन्नु॰ कलिगन्ऱि शॊन्न पनुवल्॰ ऒलि कॆळु पाडल् पाडि उळल्गिन्ऱ तॊण्डर्॰ अवराळ्वर् उम्बरुलगे॥१०॥	मधुर तमिल गीतों की यह माला सुन्दर आकृति वाले मंगै नगर के राजा कलकन्रि ने प्रभु की प्रशस्ति में गाये हैं जिन्होंने भयावह मदमत्त हाथी का अंत किया एवं दुष्ट राजा के लंका में घुसकर अपने अग्नि बाणों से भस्मीभूत कर दिया। जो भक्तगण इसको गाते हुए चलेंगे वे स्वर्गिकों पर शासन करेंगे। **1991** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

105 मानमरूम् (1992 - 2001)

तिरूच्चाळल्

दो नारियों के बीच का संवाद ः प्रभु सुलभ होते हुए अगम्य हैं

मान् अमरु मॅन् नोक्कि⋆ वैदेवियिन् तुणैया⋆ कान् अमरुम् कल्लदर् पोय्⋆ क्काडुरैन्दान् काणेडी⋆ कान् अमरुम् कल्लदर् पोय्⋆ क्काडुरैन्द पॉन्नडिगळ्⋆ वानवर् तम् शॅन्नि⋆ मलर् कण्डाय् शाळ्ले॥१॥	बहन ! आपके नेता मृगनयनी सीता के साथ पत्थरीले जंगली रास्तों से चलते हुए सुनसान जगहों में रहे। देखो ! हां, लेकिन पत्थरीले रास्तों पर चलने वाले वे दिव्य चरण स्वर्गिकों के सिर के पुष्प हो गये। यह भी देखो ! **1992**
तन्दै तळै कळल्⋆ त्तोन्रि प्पोय्⋆ आय्प्पाडि नन्दन् कुल मदलैयाय्⋆ वळर्न्दान् काणेडी⋆ नन्दन् कुल मदलैयाय्⋆ वळर्न्दान् नान्मुगर्कु⋆ तन्दै काण् एन्दै⋆ पॅरुमान् काण् शाळ्ले॥२॥	बहन ! जिसने अपने पिता के पैर की बेड़ियों को हटाने के लिये जन्म लिया वह नंदगोप के दत्तक पुत्र के रूप में आयप्पादी में पाला गया। देखो ! हां, लेकिन जो नंदगोप के दत्तक पुत्र के रूप में पाले गये वे ब्रह्मा के जनक हैं तथा मेरे अपने प्रभु हैं। यह भी देखो ! **1993**
आळ् कडल् शूळ् वैयगत्तार्⋆ एश प्पोय्⋆ आय्प्पाडि त्ताळ् कुळलार् वैत्त⋆ तयिर् उण्डान् काणेडी⋆ ताळ् कुळलार् वैत्त⋆ तयिर् उण्ड पॉन् वयिरु⋆ इव- वेळुलगुम् उण्डुम्⋆ इडम् उडैत्ताल् शाळ्ले॥३॥	बहन ! सारे संसार के अपशब्दों के साथ आयप्पादी के कुमार ने चोटी वाली नारियों के संजोगे दही खा गये। देखो ! हां, लेकिन चोटी वाली नारियों के दही से दिव्य उदर को भरने वाले सातों लोकों को निगल गये फिर भी उदर में जगह खाली है। यह भी देखो ! **1994**
अरियातार्क्कु⋆ आनायन् आगि प्पोय्⋆ आय्प्पाडि उरियार् नरु वॅण्णॅय्⋆ उण्डुगन्दान् काणेडी⋆ उरियार् नरु वॅण्णॅय्⋆ उण्डुगन्द पॉन् वयिट्रुक्कु⋆ एरि नीर् उलगनैत्तुम्⋆ एय्दादाल् शाळ्ले॥४॥	बहन ! आयप्पादी में आकर सीधे लोगों के बीच गाय चराये तथा रस्सी के छीकें से चोरी करके मक्खन खाने में खुश रहे। देखो ! हां, लेकिन सात लोक एवं सात समुद्र भी उस दिव्य उदर को नहीं भर सके जो रस्सी के छीकें से मक्खन खाये। यह भी देखो ! **1995**
वण्ण क्करुङ्गुळल्⋆ आय्च्चियाल् मॊत्तुण्डु⋆ कण्णि क्कुरुङ्गयिट्राल्⋆ कट्टुण्डान् काणेडी⋆ कण्णि क्कुरुङ्गयिट्राल्⋆ कट्टुण्डान् आगिलुम्⋆ एण्णर्करियन्⋆ इमैयोर्क्कुम् शाळ्ले॥५॥	बहन ! काली जूड़े वाली गोप नारी ने छोटी गांठ वाली रस्सी से बांध कर मक्खन चुरानेके लिये पीटाई की। देखो ! हां, लेकिन छोटी गांठदार रस्सी से बांधे जाने वाले स्वर्गिकों के लिये भी ध्यान से अगम्य हैं। यह भी देखो ! **1996**

कन्ऱ प्पऱै करङ्ग⋆ क्कण्डवर् तम् कण् कळिप्प⋆ मन्ऱिल् मरक्काल्⋆ कूत्ताडिनान् काणेडी⋆ मन्ऱिल् मरक्काल्⋆ कूत्ताडिनान् आगिलुम्⋆ एन्ऱुम् अरियन्⋆ इमैयोर्क्कुम् शाळले॥६॥	बहन ! जंगली की तरह ऊंची रस्सी पर नगाड़ों की आवाज पर वे चौराहों पर पथिकों के आनंद के लिये नृत्य किये। देखो ! हां, लेकिन ऊंची रस्सी पर चौराहों पर नृत्य करने वाले देवों के लिये भी अगम्य हैं। यह भी देखो ! **1997**
कोदै वेल् ऐवर्क्काय्⋆ मण्णगलम् कूऱिडुवान्⋆ तूदनाय् मन्नवनाल्⋆ शॊल्लुण्डान् काणेडी⋆ तूदनाय् मन्नवनाल्⋆ शॊल्लुण्डान् आगिलुम्⋆ ओद नीर् वैयगम्⋆ मुन् उण्डुमिळ्न्दान् शाळले॥७॥	बहन ! पांच पांडवों के लिये दूत बनकर जमीन का टुकड़ा मांगने गये और दुर्योधन के दुर्वचनों को पी गये। देखो ! यद्यपि वे राजा के दुर्वचनों को पी गये उन्होंने ही सागर से घिरे संसार को प्रलय में पी लिया तथा उसे फिर निकाल दिया। यह भी देखो ! **1998**
पार् मन्नर् मङ्ग⋆ प्पडैदॊट्टु वॆञ्जमत्तु⋆ तेर् मन्नर्क्काय्⋆ अन्ऱु तेर् ऊर्न्दान् काणेडी⋆ तेर् मन्नर्क्काय्⋆ अन्ऱु तेरूर्न्दान् आगिलुम्⋆ तार् मन्नर् तङ्गळ्⋆ तलैमेलान् शाळले॥८॥	बहन ! जब रथ पर सवार शस्त्रवाले राजा गन युद्ध कर रहे थे उन्होनें घमंडी राजाओं का घोर युद्ध में बध रथ हंकाने वाला का काम करके किया। देखो ! यद्यपि वे रथी राजाओं के रथवान बने परंतु विजयी लोगों ने उनके चरण अपने सिर पर रख कर पूजा की। यह भी देखो ! **1999**
कण्डार् इरङ्ग⋆ क्कळिय क्कुऱळ् उरुवाय्⋆ वण् तारान् वेळ्वियिल्⋆ मण् इरन्दान् काणेडी⋆ वण् तारान् वेळ्वियिल्⋆ मण् इरन्दान् आगिलुम्⋆ विण्डेळ् उलगुक्कुम्⋆ मिक्कान् काण् शाळले॥९॥	बहन ! कितना दयनीय दृश्य था जव वे छोटे वामन बनके उदार मावली के यज्ञ में जमीन के एक टुकड़ा के लिये भिक्षा मांगे। देखो ! यद्यपि वे उदार मावली के यज्ञ में जमीन के एक टुकड़ा के लिये भिक्षा मांगे तव भी वे सातों लोकों से संभाले नहीं जा सके। यह भी देखो ! **2000**
कळ्ळत्ताल् मावलियै⋆ मूवडि मण् कॊण्डळन्दान्⋆ वॆळ्ळत्तान् वेङ्कडत्तान्⋆ एन्बराल् काणेडी⋆ वॆळ्ळत्तान्⋆ वेङ्कडत्तानेलुम्⋆ कलिगन्ऱि उळ्ळत्तिन् उळ्ळे⋆ उळन् कण्डाय् शाळले॥१०॥	बहन ! तीन पग जमीन मापने में उन्होंने छल का प्रयोग किया। लोग कहते हैं वे क्षीर समुद्र में तथा वेंकटम में रहते हैं। देखो ! यद्यपि वे क्षीर समुद्र तथा वेंकटम में रहते हैं वे स्थायी रूप से कलकन्रि के हृदय में भी रहते हैं। यह भी देखो ! **2001** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः **106 मैन्निऱ् (2002 - 2011)** **उलकै प्पिरळयत्तिलिरून्दु एम्बेरूमान् उय्वित्तमै कूरि उलगिर्कु उपदेशित्तल्** **प्रलय काल में सबको बचा के रखने वाले के प्रति समपर्ण का परामर्श**	
मैन् निन्ऱ करुङ्गडल्वाय् उलगिन्ऱि* वानवरुम् यामुम् एल्लाम्* नेय्न् निन्ऱ शक्करत्तन् तिरुवयिद्रिल्* नेंडुङ्गालम् किडन्ददोरीर्* एन्नन्ऱि शेय्दारा* एदिलोर् देय्वत्तै एत्तुगिन्ऱीर्* शेय्न्नन्ऱि कुन्ऱेन्मिन्* तोंण्डर्गाळ् ! अण्डनैये एत्तीर्गळे॥१॥	भक्तों ! आपलोग यह नहीं समझते कि तीक्ष्ण चक्र वाले प्रभु धरा देवगन आदमी एवं अन्य सभी को अपने उदर में रखकर गहरे सागर में बहुत ही लंबी अवधि तक रहते हैं। किस उद्देश्य से आपलोग जाकर छोटे देवताओं की प्रशंसा करते हो, क्या मिलेगा ? अपने अच्छे कर्त्तव्यों का अपव्यय नहीं करो। मात्र सार्वभौम प्रभु की प्रशस्ति गाओ। **2002**
निल्लात पेरु वेंळ्ळम्* नेंडु विशुम्बिन् मीदोडि निमिऱ्न्द कालम्* मल्लाण्ड तड क्कैयाल्* बगिरण्डम् अगप्पडुत्त कालत्तु* अन्- ऱेल्लारुम् अरियारो* एम्पेरुमान् उण्डुमिळ्न्द एच्चिल् देवर्* अल्लादार् ताम् उळरे* अवन् अरुळे उलगावदरियीर्गळे॥२॥	जब व्यग्र सागर का जल आकाश तक उठकर सब चीजों को जलमग्न कर देता है उस समय प्रभु अपने युद्धवाली भुजाओं उसके ऊपर के व्योाम को धारण किये रहते हैं। क्या उस दिन का कोई नहीं स्मरण करता ? क्या ऐसा कोई एक भी देवता है जिसे प्रभु ने निगलकर फिर बाहर मुंह में न लाया हो ? क्या नहीं देखते कि समस्त जगत प्रभु की कृपाकांक्षी है ? **2003**
नेंद्रिमेल् कण्णानुम्* निऱै मोंळि वाय् नान्मुगनुम् नीण्ड नाल् वाय्* ओंट्रै क्कै वेंण् पगट्टिन्* ओंरुवनैयुम् उळ्ळिट्ट अमररोडुम्* वेंद्रि प्पोर् क्कडल् अरैयन्* विळुङ्गामल् तान् विळुङ्गि उय्यक्कोंण्ड* कोंट्र प्पोर् आळियान्* गुणम् परवा च्चिऱुदोंण्डर् कोंडियवारे ! ॥३॥	ललाट के नेत्रवाले शिव, मंत्रोच्चार करते जीभ वाले ब्रह्मा, एवं श्वेत हाथी चढ़ने वाले इंद्र, तथा अन्य सभी देवों को प्रलय के विनाशकारी मुंह से रक्षाकर प्रभु निगल जाते हैं। तब भी वे हमारे उदार चक्रधारी प्रभु की प्रशस्ति नहीं गाते। ओह, छोटे देवों की धूर्त्तता ! **2004**
पनि प्परवै त्तिरै तदुम्ब* प्पार् एल्लाम् नेंडुङ्गडले आन कालम्* इनि क्कळैगण् इवर्क्किल्लै एन्रु* उलगम् एळिनैयुम् ऊळिल् वाङ्गि* मुनि त्तलैवन् मुळङ्गोळि शेर्* तिरु वयिद्रिल् वैत्तुम्मै उय्यक्कोंण्ड* कनि क्कळव त्तिरुवुरुवत्तोंरुवनैये* कळल् तोंळुमा कल्लीर्गळे॥४॥	जब समस्त धरा एक सागर के उछलते ठंढ़े जल से ढ़क गयी तब प्रभु प्रकट होकर कहते हैं 'इनलोगों का अब त्राण नहीं है' एवं समस्त ब्रह्मांड को अपने दिव्य उदर में ले लेते हैं। पके हुए कलक्कै फल के रंग वाले प्रभु ऋषियों के नाथ हैं तथा तुम्हारे रक्षक हैं। तब भी एकाग्र मन से तुम उनकी पूजा करने के लिये नहीं सीखते हो। **2005**
पार् आरुम् काणामे* परवै मा नेंडुङ्गडले आन कालम्* आरानुम् अवनुडैय तिरुवयिद्रिल्* नेंडुङ्गालम् किडन्ददु* उळ्ळ- त्तोराद उणर्विलीर् ! उणरुदिरेल्* उलगळन्द उम्बर् कोमान्* पेराळन् पेरान्* पेर्गळ् आयिरङ्गळुमे पेशीर्गळे॥५॥	मूर्खो ! यह क्यों नहीं समझते कि जब भूमंडल का कोई भी अंश नहीं दिख रहा था और समस्त जगत एक वृहत सागर बन गया था सबकोई बहुत ही लंबे समय तक प्रभु के दिव्य उदर में थे ? समझो एवं धरा मापने वाले देवों के नाथ के हजार नामों को बोलो। **2006**

पेय् इरुक्कुम् नेंडु वेंळ्ळम्* पेंरु विशुम्बिन् मीदोडि प्पेंरुगु कालम्* ताय् इरुक्कुम् वण्णमे* उम्मै त्तन् वयिट्रिरुत्ति उय्यक्कोंण्डान्* पोय् इरुक्क मट्रिङ्गोर्* पुदुत्तेंय्वम् कोंण्डाडुम् तोंण्डीर्* पेंट्र ताय् इरुक्क मणै वेंन्नीर् आट्टुदिरो* माट्टाद तगवट्रीरे ! ॥६॥	भक्तों ! जब राक्षसनुमा प्रलय धरा को जलप्लावित कर दिया प्रभु ने तुमको अपने उदर में उसी तरह रक्षा की जैसे तुम्हारी मां ने तुम्हें अपने गर्भ में रखा था। प्रभु को छोड़कर तुम नये देवता के उत्सव मे जाते हो जैसे गाय को छोड़कर नवजात बछड़े को नहाते हो। कितना हृदय हीन हो तुम ! **2007**
मण्णाडुम् विण्णाडुम्* वानवरुम् दानवरुम् मट्रुम् एल्लाम्* उण्णाद पेंरु वेंळ्ळम्* उण्णामल् तान् विळुङ्गि उय्यक्कोंण्ड* कण्णाळन् कण्णमङ्गै नगराळन्* कळल् शूडि अवनै उळ्ळत्तु* एण्णाद मानिडत्तै* एण्णाद पोदेंल्लाम् इनियवारे॥७॥	सर्वविनाशकारी प्रलय से प्रभु ने स्वर्ग एवं पृथ्वी, देव एवं दानव एवं अन्य सबों को निगलकर रक्षा की। आप कन्नामंगै नगर के हमारे उदार प्रभु हैं। जो आपके चरणों की पूजा नहीं करता एवं अपने हृदय में आपको नहीं रखता वे आदमी नहीं। जिस क्षण में ऐसे लोगों का तिरस्कार किया जाय वह क्षण मधुर है। **2008**
मरम् किळरन्दु करुङ्गडल् नीर्* उरम् तुरन्दु परन्देरि अण्डत्तप्पाल्* पुरम् किळरन्द कालत्तु* प्पोंन्नुलगम् एळिनैयुम् ऊळिल् वाङ्गि* अरम् किळरन्द तिरु वयिट्रिन्* अगम् पडियिल् वैत्तुम्मै उय्यक्कोंण्ड* निरम् किळरन्द करुञ्जोदि* नेंडुन्दगैयै निनैयादार् नीशर् तामे॥८॥	जब भयंकर अंधकार वाला प्रलय तेजी से बढ़ता आया एवं विनाश करते हुए धरा के ऊपर छा गया प्रभु ने दिव्य लोकों को अपने उदर में धारण कर लिये। जो श्यामल तेजोमय रक्षक प्रभु का ध्यान नहीं करता वह सच में नीच है। **2009**
अण्डत्तिन् मुगडळुन्द* अलै मुन्नीर् त्तिरै तदुम्ब आ ! आ ! एन्रु* तोंण्डरुक्कुम् अमररुक्कुम्* मुनिवरुक्कुम् तान् अरुळि* उलगम् एळुम् उण्डोंत्त तिरुवयिट्रिन्* अगम् पडियिल् वैत्तुम्मै उय्यक्कोंण्ड* कोंण्डलै मणि वण्णन्* तण् कुडन्दै नगर् पाडि आडीर्गळे॥९॥	जब प्रलय जल में ब्रह्मांड का आधार लुप्त हो गया तब दया से भरे प्रभु यह कहते आये ‘ओह ! ओह !’ एवं अपने भक्तों, देवगनों तथा स्वर्गिकों को उदर में रखते हुए सबों की रक्षा की । मणिवर्ण वाले उदार प्रभु कुडन्दै नगर में रहते हैं। आपका नाम गाओ एवं नाचो। **2010**
देवरैयुम् अशुररैयुम्* दिशैगळैयुम् कडल्गळैयुम् मट्रुम् मुट्रुम्* यावरैयुम् ओंळियामे* एम्पेरुमान् उण्डुमिळ्न्ददरिन्दु शोंन्न* का वळरुम् पोंळिल् मङ्गै* क्कलिगन्रि ओंलिमालै कट्रु वल्लार्* पू वळरुम् तिरुमगळाल् अरुळ् पेंट्रु* प्पोंन्नुलगिल् पोंलिवर् तामे॥१०॥	गीतों की इस माला को सुगंधित बागों वाले मंगै के राजा कलकन्रि ने प्रभु की प्रशस्ति में बनाये हैं जो देव, दानव, दिशा, समुद्र एवं कुछ भी बाहर नहीं छोड़ते हुए सबकुछ निगल गये एवं पुनः सब को वापस बाहर ले आये। जो इसे याद कर लेंगे वे कमल वाली लक्ष्मी के दया पात्र होंगे तथा स्वर्ग पर राज्य करेंगे। **2011** तिरूमङगैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः **107 नीणागम् (2012 – 2021)** **कण्णनै क्काणा क्कण् मुदलियन पयनिल एनल्** **शरीर का जो अंग प्रभु की सेवा में अर्पित नहीं है वह बेकार है**	
नीणागम् शुट्रि॰ नॆडु वरै नट्टु॰ आळ् कडलै प्पेणान् कडैन्दु॰ अमुदम् कॊण्डुगन्द पॆम्मानै॰ पूणार मार्वनै॰ प्पुळ्ळूरुम् पॊन् मलैयै॰ काणादार् कण् एन्रुम्॰ कण्णल्ल कण्डामे॥१॥	गहरे सागर में थमे हुए ऊंचे पर्वत को लंबे नाग से लपेट कर प्रभु ने महान मंथन किया एवं आनन्द से देवों को अमृत प्रदान किया। आप वक्षस्थल पर सुन्दर माला पहनते हैं तथा गरूड़ की सवारी करते हैं। आप सुवर्ण के पर्वत हैं। इतना निश्चित है कि जो आपका दर्शन नहीं करते वे विना आंख के हैं। **2012**
नीळ्वान् कुरळ् उरुवाय्॰ निन्रिरन्दु मावलि मण्॰ ताळाल् अळविट्ट॰ तक्कणैक्कु मिक्कानै॰ तोळाद मामणियै॰ त्तॊण्डर्क्किनियानै॰ केळा च्चॆविगळ्॰ शॆवियल्ल केट्टामे॥२॥	मावली से मांगने वाले वामन ने बढ़कर अपने पगों से पृथ्वी को मापा एवं अपना उपहार नहीं पा सके। आप हमारे विना तराशे गये पूर्ण रत्न हैं एवं भक्तों के मधु हैं। ऐसा हमने सुना है कि जो आपके बारे में श्रवण नहीं करते वे विना कान के हैं यानी बहरे हैं। **2013**
तूयानै॰ तूय मरैयानै॰ तॆन्नालि मेयानै॰ मेवाळ् उयिरुण्डमुदुण्ड वायानै॰ मालै वणङ्गि॰ अवन् पॆरुमै पेशादार्॰ पेच्चॆन्रुम्॰ पेच्चल्ल केट्टामे॥३॥	शुद्ध एवं वेदों के प्रभु सुन्दर तिरूवाली में रहने वाले पूतना के विषैले स्तन पीकर उसके प्राण पीने वाले हमारे पूज्य मल प्रभु हैं। ऐसा हमने सुना है कि जो आपकी पूजा नहीं करते एवं आपके बारे में बखान नहीं करते वे कुछ नहीं बोलते यानी गूंगे हैं। **2014**
कूडा इरणियनै॰ क्कूरुगिराल् मार्विडन्द॰ ओडा अडल् अरियै॰ उम्बरार् कोमनै॰ तोडार् नरुन् तुळाय् मार्वनै॰ आर्वत्ताल् पाडादार् पाट्टॆन्रुम्॰ पाट्टल्ल केट्टामे॥७८॥	भयानक नरसिंह स्वरूप में अपने पंजो से दिग्भ्रमित हिरण्य की छाती चीरने वाले प्रभु देवों के नाथ हैं। आप शीतल तुलसी की माला पहनते हैं। ऐसा हमने सुना है कि जो गीत आपकी प्रेम पूर्ण प्रशस्ति नहीं गाती वह गीत है ही नहीं। **2015**
मैयार् कडलुम्॰ मणि वरैयुम् मा मुगिलुम्॰ कॊय्यार् कुवळैयुम् कायावुम्॰ पोन्रिरुण्ड मॆय्यानै॰ मॆय्य मलैयानै॰ च्चङ्गेन्दुम् कैयानै॰ कै तॊळा॰ कैयल्ल कण्डामे॥५॥	गहरे सागर, मणि पर्वत, मेघ, नीला कमल, एवं काया फूल की तरह प्रभु का वदन है। आप अपने हाथ में शंख धारण करते हैं तथा तिरूमेय्यम में रहते हैं। हम जानते हैं कि जो पूजा में हाथ नहीं जोड़ते वे हाथ वाले नहीं हैं। **2016**
कळ्ळार् तुळायुम्॰ कणवलरुम् कूविळैयुम्॰ मुळ्ळार् मुळरियुम्॰ आम्बलुमुन् कण्डक्काल्॰ पुळ्ळाय् ओर् एनमाय्॰ प्पुक्किडन्दान् पॊन्नडिक्कॆन्रु॰ उळ्ळादार् उळ्ळत्तै॰ उळ्ळमा क्कॊळ्ळोमे॥६॥	प्रभु हंस की तरह आये एवं सूकर रूप में धरा को ऊपर उठाया। जब कभी भी तुलसी पत्ता, बेल पत्र, अलारी पुष्प, गुलाव, एवं कमल देखकर अगर हृदय यह नहीं कहता 'अहा ! ये सब प्रभु के दिव्य चरणों के लिये हैं' तो हम कहते हैं कि वे हृदय नहीं हैं। **2017**

कनैयार् कडल्लुम्⋆ करुविळैयुम् कायावुम्⋆ अनैयानै⋆ अन्बिनाल् आर्वत्ताल्⋆ एन्रुम् शुनैयार् मलर् इट्टु⋆ तॊण्डराय् निन्रु⋆ निनैयादार् नॆञ्जॆन्रुम्⋆ नॆञ्जल्ल कण्डामे॥७॥	प्रभु का वर्ण गरजते सागर का, कुरूविलै एवं काया फूल का है। जो सरोवरों से नवीन पुष्प चुनकर प्रभु की पूजा प्रेम एवं उमंग से नहीं करते या ऐसा करने का सोंचते भी नहीं, हम जानते हैं कि वे संवेदनहीन हैं। **2018**
वॆरियार् करुङ्गून्दल्⋆ आय्च्चियर् वैत्त⋆ उरियार् नरु वॆण्णॆय्⋆ तानुगन्दुण्ड शिरियानै⋆ शॆङ्गण् नॆडियानै⋆ च्चिन्दित्तु⋆ अरियादार्⋆ एन्रुम् अरियादार् कण्डामे॥७८॥	राजीव नयन शेंकणमल प्रभु शिशु के रूप में सुगंधित जूड़ो वाली नारियों के रस्सी के छींके पर संजोगे सुगंधित मक्खन आनंद से खा गये। हम जानते हैं कि जो आपका सोंचते नहीं एवं अनुभव नहीं करते वे सदा के लिये अनभिज्ञ रहते हैं। **2019**
तेनोडु वण्डाल्लुम्⋆ तिरुमालिरुञ्जोलै⋆ तान् इडमा क्कॊण्डान्⋆ तड मलर् क्कण्णिक्काय्⋆ आन् विडै एळ् अन्रडर्त्तार्कु⋆ आळ् आनार् अल्लादार्⋆ मानिडवर् अल्लर् एन्रु⋆ एन् मनत्ते वैत्तेने॥९॥	प्रभु मधुमत्त मधुमक्खियों से मंड़राते तिरूमालिरूञ्जोलै में रहते हैं। गहरे रंग की कमल समान बड़ी आंखोंवाली नप्पिनाय के लिये आपने महान वृषभों का शमन किया। जो आपके भक्त नहीं बनते वे आदमी नहीं हैं ऐसा हमने अपने मन में मान रखा है। **2020**
मॆय्न् निन्र⋆ पावम् अगल⋆ तिरुमालै कैन् निन्र आळियान्⋆ शूळुम् कळल् शूडि⋆ कैन् निन्र वेकै⋆ क्कलियन् ऒलि मालै⋆ ऐयॊन्रुम् ऐन्दुम्⋆ इवै पाडि आडुमिने॥१०॥	दस गीतों की यह माला तेज भालाधारी कलियन ने चक्रधारी प्रभु तिरूमल के चरणों में अर्पित किये हैं। भक्तों गाओ एवं नाचो तुम्हारे शारीरिक कर्मो का अंत हो जायेगा। **2021** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्।

<table>
<tr><td colspan="2">श्रीमते रामानुजाय नमः
108 माट्रमुळ (2022 - 2031)
नम्बियै नोक्कि उय्युम् वगैयरूळ् एनल्
मरणशील शरीर से संबंध विच्छेद</td></tr>
<tr><td>माट्रम् उळ⋆ आगिल्लुम् शॊल्लुवन्⋆ मक्कळ्
तोट्र क्कुळि⋆ तोट्रुविप्पाय्यॊल् एन्रिन्नम्⋆
आट्रङ्गरै वाळ् मरम्पोल्⋆ अञ्जुगिन्रेन्⋆
नाट्र च्चुवै⋆ ऊरॊलियागिय नम्बी ! ॥१॥</td><td>सुगंध स्वाद स्पर्श एवं शब्द के रूप में दिखने वाले नांबी प्रभु ! सब कहने के बाद भी हमें कुछ और कहना है ‘नदी के तट पर बढ़ने वाले मुहावरे के वृक्ष की तरह हम इस बात से निरंतर भयभीत हैं कि आप हमें जन्म एवं सांसारिक जीवन के कठिन कारागार में पुनः डाल दे सकते हैं।’ 2022</td></tr>
<tr><td>शीट्रम् उळ⋆ आगिल्लुम् शॆप्पुवन्⋆ मक्कळ्
तोट्र क्कुळि⋆ तोट्रुविप्पाय्यॊल् एन्रञ्जि⋆
काट्रत्तिडैप्पट्टु⋆ कलवर् मनम्पोल⋆
आट्र त्तुळङ्गा निर्पन्⋆ आळि वल्लवा ! ॥२॥</td><td>प्रवीण चक्रधारी ! यह आपको चिढ़ा सकता है परंतु मैं जरूर बताउंगा। समुद्र का (नाव या जहाज) सैर करने वाले की तरह हमारा हृदय कांपता है। हम इस बात से निरंतर भयभीत हैं कि आप हमें जन्म एवं सांसारिक जीवन के कठिन कारागार में पुनः डाल दे सकते हैं। 2023</td></tr>
<tr><td>तूङ्गार् पिरविक्कळ्⋆ इन्नम् पुगप्पॆय्दु⋆
वाङ्गाय् एन्रु शिन्दित्तु⋆ नान् अदर्कञ्जि⋆
पाम्बोडॊरु कूरैयिले⋆ पयिन्रार्पोल्⋆
ताङ्गादुळ्ळम् तळ्ळुम्⋆ एन् तामरै क्कण्णा ! ॥३॥</td><td>आदि नाथ ! हमें इस बात का डर है कि आप हमें समाप्त न होने वाले कर्मो के गर्भ में ठेल दे सकते हैं। अचानक बाढ़ में फंसे लोमड़ी गिरोह की तरह हमारा हृदय दहलते रहता है। 2024</td></tr>
<tr><td>उरुवार् पिरविक्कळ्⋆ इन्नम् पुगप्पॆय्दु⋆
तिरिवाय् एन्रु शिन्दित्ति⋆ एन्रदर्कञ्जि⋆
इरुपाडॆरिगॊळ्ळियिन्⋆ उळ् एरुम्बे पोल्⋆
उरुगानिर्कुम्⋆ एन्नुळ्ळम् ऊळि मुदल्वा ! ॥४॥</td><td>राजीव नयन नाथ ! हमें इस बात का डर है कि आप हमें छोटे जन्मों में डालकर कभी भी हमारा उद्धार नहीं कर सकते हैं। सांप वाले मड़ई में सोने की तरह हमारा हृदय असहनीय रूप से कांपते रहता है। 2025</td></tr>
<tr><td>कॊळ्ळ क्कुरैयाद⋆ इडुम्बै क्कुळियिल्⋆
तळ्ळि पुग प्पॆय्दि कॊल्⋆ एन्रदर्कञ्जि⋆
वॆळ्ळत्तिडैप्पट्टु⋆ नरियिनम् पोले⋆
उळ्ळम् तुळङ्गा निर्पन्⋆ ऊळि मुदल्वा ! ॥५॥</td><td>राजीव नयन नाथ ! एक भयावनी कल्पना कि आप हमें अनेकों अन्य जन्मों में भ्रमण करा सकते हैं। दीमक की तरह जो दोनों ओर से जलती लकड़ी में फंस जाती है हमारा हृदय कांपता एवं दहलता रहता है। 2026</td></tr>
</table>

पडै निन्ऱ⋆ पैन् तामरैयोडु⋆ अणि नील्लम् मडै निन्ऱलरुम्⋆ वयलालि मणाळा⋆ इडैयन् एरिन्द मरमे⋆ ऑत्तिरामे⋆ अडैय अरुळाय्⋆ एनक्कुन्दन् अरुळे॥६॥	उपजाऊ सरोवरों से घिरे तिरूवाली के दूलहा प्रभु जहां लाल कमल एवं नीले कुमुद बहुतायत में उत्पन्न होते हैं। चरते पशुओं के हेतु छांटे गये वृक्ष की तरह हम नहीं होना चाहते। केवल आपकी कृपाकांक्षी हैं हम। **2027**
वेम्बिन् पुळु⋆ वेम्बिन्ऱि उण्णादु⋆ अडियेन् नान् पिन्नुम्⋆ उन् शेवडियन्ऱि नयवेन्⋆ तेम्बल् इळन् तिङ्गळ्⋆ शिऱैविडुत्तु⋆ ऐवाय् प्पाम्बिन् अणै⋆ प्पळ्ळि कॉण्डाय् परञ्जोदी ! ॥७॥	क्षय होते चांद को कष्ट से त्राण दिलाने वाले प्रभु ! पांच फन के सर्प पर शयन करने वाले ज्योतिर्मय प्रभु ! नीम वृक्ष पर पलने वाला कीड़ा केवल नीम हीं खाता है। हम आपके चरण का आश्रय के अलावे कुछ नहीं मांगते। **2028**
अणियार् पॉळिल् शूळ्⋆ अरङ्ग नगर् अप्पा⋆ तुणियेन् इनि⋆ निन् अरुळ् अल्लदेनक्कु⋆ मणिये ! मणि माणिक्कमे !⋆ मदुशूदा⋆ पणियाय् एनक्कुय्युम् वगै⋆ परञ्जोदी ! ॥८॥	फूलबागों से घिरे अरंगमानगर के प्रभु ! आपकी दया के अलावे हमारी कोई मांग नहीं है। कीमती रत्न ! रत्न प्रभु ! मधुसूदन ! जगमग ज्योति ! विनती है, हमें रास्ता दिखाइये। **2029**
नन्दा नरगत्तळुन्दा वगै⋆ नाळुम् एन्दाय् ! तॉण्डर् आनवर्क्कु⋆ इन्नरुळ् शॅय्वाय्⋆ शन्दोगा ! तलैवने !⋆ तामरै क्कण्णा⋆ अन्दो ! अडियेर्कु⋆ अरुळाय् उन्नरुळे॥९॥	मेरे प्रभु ! भक्तों की मधुर दया ! छांदोग्य उपनिषद के प्रभु ! नाथ ! कमलनयन कृष्ण ! विनती है, नरक की शाश्वत याताना से निकलने का हमें रास्ता दिखाइये । **2030**
कुन्ऱम् एडुत्तु⋆ आनिरै कात्तवन् तन्नै⋆ मन्निरल् पुगळ्⋆ मङ्गै मन् कलिगन्ऱि शॊल्⋆ ऑन्ऱ निन्ऱ ऑन्पदुम्⋆ वल्लवर् तम्मेल्⋆ एन्ऱुम् विनैयायिन⋆ शारगिल्लावे॥१०॥	प्रसिद्ध चौराहों वाले मंगै के राजा कलकन्रि के दस गीतों की यह माला गायों की रक्षा के लिये पर्वत उठाने वाले प्रभु की प्रशस्ति है। जो इसे याद कर लेंगे वे कभी कर्मो का संचय नहीं करेंगे। **2031** तिरुमङ्गैयाळवार तिरुवडिगळे शरणम्।

श्रीमते रामानुजाय नमः

तिरूक्कुरून्दाण्डगम् (2032 – 2051)

अरूशिर् क्कळिनेडिलडि आशिरिय विरूत्तम् मालै क्कण्डु कोण्डेन् इनि विडुगिलेन्

निदियिनै प्पवळ त्तूणै⋆ नॆऱिमैयाल् निनैय वल्लार्⋆ कदियिनै क्कञ्जन् माळ⋆ क्कण्डु मुन् अण्डम् आळुम्⋆ मदियिनै मालै वाळ्त्ति⋆ वणङ्गि एन् मनत्तु वन्द⋆ विदियिनै क्कण्डु कॊण्ड⋆ तॊण्डनेन् विडुगिलेने॥१॥	मुझे मेरा कोष मिल गया है। मेरा मूंगा का खंभा ! जो आपको पूजा से प्राप्त करना चाहता है उसके एकमात्र आश्रय ! कंस का नाश करने वाले ! पुराकाल से ब्रह्मांड के शासक ! पूज्य ! आप हमारे हृदय में प्रवेश करने वाले ईश्वरीय शक्ति हैं। हम आपकी पूजा करते हैं। अब कभी आपको मैं छोड़ूंगा नहीं। **2032**
काऱ्ऱिनै प्पुनलै त्तीयै⋆ क्कडि मदिळ् इलङ्गै शॆऱ्ऱ एऱ्ऱिनै⋆ इमयम् मेय⋆ एळिल् मणि त्तिरळै⋆ इन्ब आऱ्ऱिनै अमुदम् तन्नै⋆ अवुणन् आर् उयिरै उण्ड कूऱ्ऱिनै⋆ गुणङ्गॊण्डुळ्ळम्⋆ कूऱु नी कूऱुमाऱे॥२॥	प्रभु जो वायु जल एवं अग्नि हैं। शक्तिवान, जिन्होंने संरक्षित लंका का नाश किया। पर्वत की तरह सुन्दर रत्न के ढ़ेर।अमृत के मधुर प्रवाह जो हिरण्य के मृत्य के रूप में आये। हम आपकी कैसे पर्याप्त प्रार्थना करें ? हे मन ! बताओ। **2033**
पायिरुम् परवै तन्नुळ्⋆ परु वरै तिरित्तु⋆ वानोर्– क्कायिरुन्दमुदम् कॊण्ड⋆ अप्पनै एम् पिरानै⋆ वेयिरुञ्जोलै शूळ्न्दु⋆ विरि कदिर् इरिय निन्ऱ⋆ मायिरुञ्जोलै मेय⋆ मैन्दनै वणङ्गिनेने॥३॥	प्रभु की पूजा करें जिन्होंने गहरे सागर में पर्वत को स्थापित कर उसे मथा एवं देवों को अमृत दिया। आप बांस के झुरमुटों से घिरे मालिरूञ्जोलै के हमारे प्रभु हैं। **2034**
केट्क यान् उऱ्ऱदुण्डु⋆ केळलाय् उलगम् कॊण्ड⋆ पू क्कॆळु वण्णनारै⋆ प्पोदर क्कनविल् कण्डु⋆ वाक्किनाल् करुमम् तन्नाल्⋆ मनत्तिनाल् शिरत्तै तन्नाल्⋆ वेट्कै मीदूर वाङ्गि⋆ विळुङ्गिनेर्किनियवाऱे॥४॥	पंखुड़ी सा कोमल प्रभु स्वप्न में वराह बन कर आये और धरा को ऊपर उठाया। आपसे कुछ पूछने की हमारी ईच्छा थी 'विचार शब्द कर्म एवं विश्वास से हमने आपको प्रेमपूर्वक निगला है। आप कितने प्यारे हैं मुझे।' **2035**
इरुम्बनन्ऱुण्ड नीर् पोल्⋆ एम् पॆरुमानुक्कॆन्दन्⋆ अरुम् पॆरल् अन्बु पुक्किट्टु⋆ अडिमै पूण्डुयन्दु पोनेन्⋆ वरुम् पुयल् वण्णनारै⋆ मरुवि एन् मनत्तु वैत्तु⋆ करुम्बिन् इन् शाऱु पोल⋆ प्परुगिनेर्किनियवाऱे॥५॥	गरम लोहा जैसे पानी पीता है उसी तरह प्रेम से मैं फूल गया। इसे प्रभु को समर्पित कर मैं भक्त गया और मुझे आश्रय मिल गया। मेघ सा श्याम प्रभु को हृदय में रखकर आपको मैं गन्ने रस की तरह पीता हूं। अहा! कितना मीठा हैं आप ! **2036**
मूवरिल् मुदल्वन् आय⋆ ऒरुवनै उलगम् कॊण्ड⋆ कोविनै क्कुडन्दै मेय⋆ कुरु मणि त्तिरळै⋆ इन्ब प्पाविनै प्पच्चै त्तेनै⋆ प्पैम् पॊन्नै अमरर् शॆन्नि प्पूविनै⋆ पुगळुम् तॊण्डर्⋆ एन् शॊल्लि प्पुगळ्वर् तामे॥६॥	त्रिमूर्ति में प्रथम प्रभु ने पृथ्वी को अपना लिया। कुडन्दै में रहने वाले आप हमारे राजा हैं।आप रत्न की ढेर की तरह मूल्यवान हैं।संगीत एवं शुद्ध मधु की तरह मीठे हैं। देवों से धारण किये जाने वाले उनके सिर के पुष्प हैं। अहा ! कौन से शब्दों से भक्तगण आपकी प्रशस्ति गा सकते हैं ? **2037**

इम्मैयै मरुमै तन्नै⋆ एमक्कु वीडागि निन्र⋆ मेय्म्मैयै विरिन्द शोलै⋆ वियन् तिरुवरङ्गम् मेय⋆ शेम्मैयै क्करुमै तन्नै⋆ त्तिरुमलै ऑरुमैयानै⋆ तन्मैयै निनैवार् एन्रन्⋆ तलैमिशै मन्नुवारे॥७॥	अरंगम के प्रभु इस लोक एवं दूसरे लोक के लिये मुक्ति हैं।उपजाऊ बागों वाले अरंगम के आप श्याम हैं। आप वेंकटम के श्याम पर्वत हैं। जो आपकी पूजा करते हैं वे हमारे नाथ हैं। **2038**
वानिडै प्पुयलै मालै⋆ वरैयिडै प्पिरशम् ईन्र⋆ तेनिडै क्करुम्बिन् शाट्रै⋆ त्तिरुविनै मरुवि वाळार्⋆ मानिड प्पिरवि अन्दो !⋆ मदिक्किलर् कॊळ्ळ⋆ तम् तम्⋆ ऊनिडै क्कुरम्बै वाळ्क्कैक्कु⋆ उरुदिये वेण्डिनारे॥८॥	पूज्य मेघ सा श्याम प्रभु गन्ने का रस एवं पर्वतीय मधु जैसे मीठे हैं। जो आपके मंगलमय गुणों की गिनती नहीं करते, समझ लो, वे कीमती जीवन को नष्ट कर रहे हैं।वे अपने शारीरिक जीवन के दुःख को बढ़ा रहे हैं। **2039**
उळ्ळमो ऑन्रिनिल्लादु⋆ ओशैयिन् एरि निन्रुण्णुम्⋆ कॊळ्ळिमेल् एरुम्बु पोल⋆ क्कुळैयुमाल् एन्रन् उळ्ळम्⋆ तॆळ्ळियीर् ! देवर्क्कॆल्लाम्⋆ देवराय् उलगम् कॊण्ड ऑळ्ळियीर्⋆ उम्मै अल्लाल्⋆ एळुमैयुम् तुणै इलोमे॥९॥	हाय ! मेरा मन एक जगह नहीं रहता। दोनों ओर से जलती लकड़ी की चींटी की तरह मैं डरता हूं। शुद्ध, देवों के देव, धरा उठाने वाले, प्रकाशमय, सात जन्मों से आप हमारे आश्रय हैं। **2040**
शित्तमुम् शॆव्वै निल्लादु⋆ एन् शॆय्गेन् तीविनैयेन्⋆ पत्तिमैक्कन्बुडैयेन् आवदे⋆ पणियाय् एन्दाय्⋆ मुत्तॊळि मरगदमे !⋆ मुळङ्गॊळि मुगिल् वण्णा⋆ एन् अत्त ! निन् अडिमै अल्लाल्⋆ यादुम् ऑन्ररिगिलेने॥१०॥	शीतल मोती, पन्ना, सागर सा सलोने ! हाय ! मेरा मन स्थिरपूर्वक आप पर नहीं टिकता।मैं दुष्ट क्या करूं ? भक्तिपूर्वक अपने चरणों में प्रेम दीजिये। मेरे नाथ ! आपकी सेवा छोड़कर मैं कुछ अन्य चीज जानता भी नहीं। **2041**
तॊण्डॆल्लाम् परवि निन्नै⋆ त्तॊळुदडि पणियुमारु कण्डु⋆ तान् कवलै तीर्प्पान्⋆ आवदे पणिया एन्दाय्⋆ अण्डमाय् एण् तिशैक्कुम्⋆ आदियाय् नीदि आन⋆ पण्डमाम् परम शोदि !⋆ निन्नैये परवुवेने॥११॥	मेरे प्रभु आप ब्रह्मांड हैं। आठों दिशाओं के आप ही कारण एवं कार्य हैं। आप संपन्नता हैं, जाजवल्यमान प्रकाश हैं।आपके चरणों की सेवा मांगते हुए मैं आपकी पूजा करता हूं। केवल इसीलिये मैं आपकी प्रशस्ति गाता हूं कि आप मुझे दास बना लीजिये और मुझे चिन्ताओं से मुक्त कर दीजिये। **2042**
आवियै अरङ्ग मालै⋆ अळु क्कुडम्बॆच्चिल् वायाल्⋆ तूय्मै इल् तॊण्डनेन् नान्⋆ शॊल्लिनेन् तॊल्लै नामम्⋆ पावियेन् पिळैत्तवारॆन्रु⋆ अञ्जिनेर्कञ्जल् एन्रु⋆ काविपोल् वण्णर् वन्दु⋆ एन् कण्णुळे तोन्रिनारे॥१२॥	पूज्य प्रभु अरंगम के प्राण वायु हैं।मैं एक गंदा भक्त गंदगी भरे शरीर एवं थूक से दूषित मुंह से पावन मंत्र नारायण का उच्चारण किया हूं।मैं सदा भीतर से कांप रहा था लेकिन आप एक कमल पुष्प की तरह आये और कहा ‘डरो मत’ एवं हमारी आंखों में टिक गये। **2043**

इरुम्बनन्रुण्ड नीरुम्* पोदरुम् कॊळ्ग* एन्रन् अरुम्बिणि पावम् एल्लाम्* अगन्रन एन्नै विट्टु* शुरुम्बमर् शोलै शूळ्न्द* अरङ्ग मा कोयिल् कॊण्ड* करुम्बिनै क्कण्डु कॊण्डु* एन् कण् इणै कळिक्कुमारे॥१३॥	ऐसा समझो कि गरम लोहा से खींचा हुआ पानी भी काम का होता है। मेरे सभी भयानक कर्म मुझे छोड़ चुके हैं। सदा के लिये आनंदित रहने के लिये मेरी आंखें गन्ने की तरह मीठे अरंगम के प्रभु को खोजती हैं जिनका अपना मंदिर एवं मधुमक्खी मड़राते बाग है। **2044**
काविये वॆन्र् कण्णार्* कलविये करुदि* नाळुम् पाविये्न् आग एण्णि* अदनुळ्ळे पळुत्तॊळिन्देन्* तूवि शेर् अन्नम् मन्नुम्* शूळ् पुनल् कुडन्दै यानै* पाविये्न् पावियादु* पाविये्न् आयिनेने ! ॥१४॥	हाय ! मैं कितना पापी हूं। दिन प्रति दिन हमने कमलनयनी नारी के आलिंगन में लगा रह कर अपने जीवन शक्ति का नाश किया। हाय ! शुद्ध जल एवं हंस की जोड़ियों से घिरे कुडन्दै के प्रभु का बिना कोई विचार किये मैं भारी दुख में पड़ कर एक पापी हो गया। **2045**
मुन् पॊला इरावणन् तन्* मुदु मदिळ् इलङ्गै वेवित्तु* अन्बिनाल् अनुमन् वन्दु* आङ्गडि इणै पणिय निन्रार्क्कु* एन्बॆल्लाम् उरुगि उक्किट्टु* एन्नुडै नॆञ्जम् एन्नुम्* अन्बिनाल् ञाननीर् कॊण्डु* आट्टुवन् अडियनेने॥१५॥	पुरा काल में हनुमान ने संपन्न एवं दीवारों से संरक्षित लंका में जाकर उसे जलाकर राख कर दिया एवं तब राम के चरणों की सेवा के लिये लौट आये। यह भक्त मैं, अपने को हड्डियों तक गला दूंगा, तब स्नान कर, प्रभु को अपने प्रेमासिक्त हृदय से निकले ज्ञान जल से तिरूमंजन कराऊंगा। **2046**
माय मान् माय च्चॆट्रु* मरुदिर् नडन्दु* वैयम् तायमा परवै पॊङ्ग* त्तड वरै तिरित्तु वानोर्क्कु* ईयुमाल् एम् पिरानार्क्कु* एन्नुडै च्चॊर्कळ् एन्नुम्* तूयमा मालै कॊण्डु* शूट्टुवन् तॊण्डनेने॥१६॥	यह भक्त मैं, अपने शुद्ध तमिल गीतों की माला से प्रभु की पूजा अर्पित करूंगा जिन्होंने जादुई मृग का अंत किया, मरूदु के पेड़ों के बीच से पार किया, धरा को मापा, सागर को पर्वत से मथकर अमृत देवों को दिया। आप हमारे नाथ हैं। **2047**
पेशिनार् पिरवि नीत्तार्* पेरुळान् पॆरुमै पेशि* एशिनार् उय्न्दु पोनार्* एन्बदिव् उलगिन् वण्णम्* पेशिनेन् एश माट्टेन्* पेदैयेन् पिरवि नीत्तर्कु* आशैयो पॆरिदु कॊळ्ग* अलै कडल् वण्णर् पाले॥१७॥	जिनलोगों ने तिरूप्पेर के प्रभु की प्रशस्ति गायी वे मुक्त हो गये। जैसा इतिहास बताता है कि अपशब्द कहने वाले भी मुक्त हो गये। मैं भी एक मूर्ख हूं और अपशब्द का प्रयोग तो नहीं करूंगा बल्कि सागर सा सलोने प्रभु की प्रशस्ति ही गाउंगा। हाय ! विदित हो कि आप के लिये हम अपार प्रेम रखते हैं। **2048**
इळैप्पिनै इयक्कम् नीक्कि* इरुन्दुमुन् इमैयै क्कूट्टि* अळप्पिल् ऐम्बुलन् अडक्कि* अन्बवर् कण्णे वैत्तु* तुळक्कमिल् शिन्दै शॆय्दु* तोन्रलुम् शुडर्विट्टु* आङ्गे विळक्किनै विदियिन् काण्बार्* मॆय्म्मैये काण्गिर्पारे॥१८॥	बिना थकावट एवं घबराहट के स्थिर पूर्वक बैठकर आंख के ऊपर के पलक को नीचे के पलक के पास लाओ। पांचो इन्द्रियों का शमन करते हुए हृदय को मात्र प्रभु के प्रेम से भर दो। प्रभु से संबंधित सारे विचारों का स्वछंद प्रवाह होने दो। तब प्रकाशमय प्रभु के ज्योर्ति स्वरूप का दर्शन करोगे।जो ऐसा देखते हैं वे निश्चित रूप से सत्य का साक्षात्कार करते हैं। **2049**
पिण्डियार् मण्डै एन्दि* प्पिरर् मनै तिरिदन्दुण्णुम् उण्डियान्* शापम् तीर्त्त ऑरुवन् ऊर्* उलग मेत्तुम्* कण्डियूर् अरङ्गम् मॆय्यम्* कच्चि पेर् मल्लै एन्रु मण्डिनार्* उय्यल् अल्लाल्* मट्रै आर्क्कुय्यल् आमे॥१९॥	ब्रह्मा का कपाल लिये सर्वत्र भिक्षा मांगते शिव को आपने शाप से विमुक्त किया। आप जगविख्यात कंडियूर, अरंगम, मेय्यम, कांची, तिरूप्पेर, मल्ले एवं अन्य स्थलों में रहते हैं। आपकी पूजा छोड़कर कोई मुक्ति का ऊपाय है क्या ? **2050**

‡वानवर् तङ्गळ् कोनुम्⋆ मलर्मिशै अयनुम्⋆ नाळुम् ते मलर् तूवि एत्तुम्⋆ शेवडि च्चेंङ्गण् मालै⋆ मान वेल् कलियन् शॊन्न⋆ वण् तमिळ् मालै नालैन्दुम्⋆ ऊनम् अदिन्रि वल्लार्⋆ ऒळि विशुम्बाळ्वर् तामे॥ २०॥	भालाधारी कलियन के तमिल गीतों की यह सुगंधित माला राजीव नयन एवं कमल समान चरण वाले प्रभु की प्रशस्ति है जिनकी पूजा ब्रह्मा तथा इन्द्र अमृतमय पुष्पों से करते हैं। जो इसका पूर्णतया सिद्धि कर लेंगे वे ज्योतिर्मय आकाश जगत पर राज्य करेंगे। **2051** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्

श्रीमते रामानुजाय नमः

तिरूनेडुन्दाण्डगम् (2052 – 2081)

एनशिर् क्कळिनेडिलडि आशिरिय विरूत्तम् एन्दैयिन् तिरूवडिगळ् एन् तलैमेलुळळन

2062 से 2071 तक नायकी की मां अपने बेटी के लिये चिंतित है। **2072 से 2080** तक नायकी स्वयं अपनी गाथा प्रस्तुत करती है।

पाशुर	अर्थ
‡मिन् उरुवाय् मुन् उरुविल् वेदम् नान्गाय्* विळक्कॊळियाय् मुळैत्तॆळुन्द तिङ्गळ् तानाय्* पिन् उरुवाय् मुन् उरुविल् पिणि मूप्पिल्ला* पिऱप्पिलियाय् इऱप्पदऱ्के एण्णादु* एण्णुम् पॊन् उरुवाय् मणि उरुविल् बूदम् ऐन्दाय्* पुनल् उरुवाय् अनल् उरुविल् तिगऴुम् जोदि* तन् उरुवाय् एन् उरुविल् निन्ऱ एन्दै* तळिर् पुरैयुम् तिरुवडि एन् तलै मेलवे॥१॥	प्रभु के कोमल चरण हमारे सिर पर हैं। आप इन स्वरूपों के सूक्ष्म सार हैं ः चारों वेद, ज्योतिपुंज का प्रकाश, उदयकालीन चंद, अधिक सौम्य, कालातीत, निरोग, अजन्मा, अमरणशील, दिव्य स्वरूप, रत्न, पांच तत्व, तरल द्रव्य, आग्नेय, एवं मेरे भीतर के तेजोमय स्वरूप। **2052**
पार् उरुविल् नीर् एरिगाल् विशुम्बुमागि* पल्वेऱु शमयमुमाय् प्परन्दु निन्ऱ* एर् उरुविल् मूवरुमे एन निन्ऱ* इमैयवर् तम् तिरुवुरु वेऱ्ॆणुम् पोदु* ओर् उरुवम् पॊन् उरुवम् ऑन्ऱु शॆन्दी* ऑन्ऱु मा कडल् उरुवम् ऑत्तु निन्ऱ* मूवुरुवुम् कण्ड पोदॊन्ऱाम् जोदि* मुगिल् उरुवम् एम् अडिगळ् उरुवम् ताने॥२॥	ध्यान करने पर प्रभु इस ब्रह्मांड के त्रिमूर्ति, देवगन, सूर्य, चंद्र, महान सागर, स्वरूपहीन तत्व धरा अग्नि जल वायु एवं आकाश, एवं अन्य सिद्धांतों की विचारधारा की तरह दर्शन देते हैं। सर्वव्याप्त प्रभु हमारे नाथ हैं। आप मेघ सा श्याम हैं। **2053**
तिरुवडिविल् करु नॆडुमाल् शेयन् एन्ऱुम्* तिरेदैक्कण् वळै उरुवाय् त्तिगऴ्न्दान् एन्ऱुम्* पॆरु वडिविल् कडल् अमुदम् कॊण्ड कालम्* पॆरुमानै क्करु नील वण्णन् तन्नै* ऑरु वडिवत्तोर् उरुवॆन्ऱुणरल् आगादु* ऊऴिदोऱुऴि निन्ऱेत्तल् अल्लाल्* करु वडिविल् शॆङ्गण्ण वण्णन् तन्नै* कट्टुरैये यार् ऑरुवर् काण्गिर्पारे॥३॥	श्यामल प्रभु मंगलमय हैं। हर युग में उस युग के योग्य आप विभिन्न स्वरूपों में आते हैं। त्रेता में आपने सागर से अमृत मंथन के लिये वृहत कच्छप का रूप धारण किया। श्याम वदन एवं राजीव नयन कह करके प्रशस्ति करने के अलावे क्या कोई आपका संपूर्ण व्याख्यान करते हुए गाथा गा सकता है ? **2054**

इन्दिरर्कुम् पिरमर्कुम् मुदल्वन् तन्नै⋆ इरु निलम् काल् ती नीर् विण् बूदम् ऐन्दाय्⋆ शॅन्दिरत्त तमिऴ् ओशै वडशॊल् आगि⋆ तिशै नान्गुमाय् त्तिङ्गळ् ञायिरागि⋆ अन्दरत्तिल् देवरक्कुम् अरियल् आगा अन्दणनै⋆ अन्दणर् माट्टन्दि वैत्त मन्दिरत्तै⋆ मन्दिरत्ताल् मऱवादॆन्ऱुम्⋆ वाऴुदियेल् वाऴलाम् मड नॆञ्जमे ॥ ४ ॥	इन्द्र एवं ब्रह्मा के नाथ, पांच तत्व धरा अग्नि जल वायु एवं आकाश, तमिल गीत एवं संस्कृत वेद के रूप में प्रकट होते हैं। आप चारों दिशा चंद्र एवं सूर्य आकाश के देवगन अदृष्ट वेद पुरूष एवं उपनिषद के रहस्य हैं। हे मन अगर आपको मंत्र से याद रख सकते हो तो हमलोग शाश्वत हो जायेंगे। **2055**
ऑण् मिदियिल् पुनल् उरुवि ऑरु काल् निर्प⋆ ऑरु कालुम् कामरु शीर् अवुणन् उळ्ळत्तु⋆ एण् मदियुम् कडन्दण्ड मीदु पोगि⋆ इरु विशुम्बिनूडु पोय् एऴुन्दु⋆ मेलै त्तण् मदियुम् कदिरवनुम् तविर ओडि⋆ तारकैयिन् पुऱम् तडवि अप्पाल् मिक्कु⋆ मण् मुऴुदुम् अगप्पडुत्तु निन्ऱ एन्दै⋆ मलर् पुरैयुम् तिरुवडिये वणङ्गिनेने ॥ ५ ॥	एक चरण सागर की लहरों से पूजित एवं दूसरा चरण धरा के ऊपर विस्तृत आकाश में उठा हुआ सूर्य एवं चांद को पीछे छोड़ते हुए नक्षत्रों के समूह की पहुंच से आगे सौम्य असुर के कल्पना से परे। प्रभु ने पग से ब्रह्मांड को पार कर लिया। आपके चरणारविंद की हम पूजा करते हैं। **2056**
अलम्बुरिन्द नॆडुन् तडक्कै अमरर् वेन्दन्⋆ अञ्जिरै प्पुळ् तनि प्पागन् अवुणर्क्कॆन्ऱुम्⋆ शलम् पुरिन्दङ्गरुळ् इल्ला त्तन्मै याळन्⋆ तान उगन्द ऊर् एल्लाम तन ताळ पाडि⋆ निलम् परन्दु वरुम् कलुऴि प्पॆण्णै ईर्त्त⋆ नॆडु वेय्गळ् पडु मुत्तम् उन्द उन्दि⋆ पुलम् परन्दु पॊन् विळैक्कुम् पॊय्गै वेलि⋆ पूङ्गोवलूर् तॊऴुदुम् पोदु नॆञ्जे ! ॥ ६ ॥	स्वर्गिकों के राजा प्रभु की शक्तिशाली भुजायें अत्यंत उदार हैं।आप सुन्दर गरूड़ पर सवारी करते हैं। असुरों पर निरंतर निष्ठुर एवं गुस्सैल प्रभु के निवास वाले सभी नगरों में प्रशस्ति गायी जाती है।हे मन चलो आपकी पूजा तिरूकोईलूर करें जो सिंचित उपजाऊ खेतों से घिरा है एवं जहां पण्णै नदी बांस के झुरमुटों से बहती हुई सोना एवं मोती के दाने संग्रहीत कर लाती है। **2057**
वर्पुडैय वरै नॆडुन् तोळ् मन्नर् माळ⋆ वडि वाय मऴुवेन्दि उलगम् आण्डु⋆ वॆर्पुडैय नॆडुङ्गडलुळ् तनि वेल् उयर्त्त⋆ वेळ् मुदला वॆन्ऱान् ऊर् विन्दम् मेय⋆ कर्पुडैय मड क्कन्नि कावल् पूण्ड⋆ कडि पॊऴिल् शूऴ् नॆडु मऱुगिल् कमल वेलि⋆ पॊर्पुडैय मलै अरैयन् पणिय निन्ऱ⋆ पूङ्गोवलूर् तॊऴुदुम् पोदु नॆञ्जे ! ॥ ७ ॥	प्रभु ने युद्ध में शक्तिशाली असुर राजाओं पर फरसा चलाकर धरा पर राज्य किया एवं भालाधारी सुब्रह्मणियम आदि को जीतकर आप पूंकोवलूर में विंध्य पर्वत की निवासिनी पार्वती से संरिक्षत एवं पर्वतों के राजा मलै अरियन से पूजित रहते हैं। **2058**
नीरगत्ताय् ! नॆडुवरैयिन् उच्चि मेलाय् !⋆ निलात्तिङ्गळ् तुण्डगत्ताय् ! निऱैन्द कच्चि ऊरगत्ताय्⋆ ऑण् तुऱै नीर् वॆग्का उळ्ळाय् !⋆ उळ्ळुवार् उळ्ळत्ताय्⋆ उलगम् एत्तुम् कारगत्ताय् ! कार्वानत्तुळ्ळाय् ! कळ्वा !⋆ कामरु पूङ्गाविरियिन् तॆन्बाल् मन्नु पेरगत्ताय्⋆ पेरादॆन् नॆञ्जिन् उळ्ळाय् !⋆ पॆरुमान् उन् तिरुवडिये पेणिनेने ॥ ८ ॥	जल में, ऊंचे शिखरों पर, नीला तिंगल तुण्डम में, प्रगतिशील कांची में, तटीय वेग्का नगर में, भक्तों के हृदय में, कारवनम में, सुन्दर कावेरी के दक्षिणी तट के पेराकम में एवं सदा के लिये हमारे हृदय में प्रभु रहते हैं। हे तिकड़मवाज ! हमें आपका चरणारविंद चाहिये। **2059**

<table>
<tr><td>वङ्गत्ताल् मा मणि वन्दुन्दु मुन्नीर्
मल्लैयाय् !⋆ मदिळ् कच्चि ऊराय् ! पेराय्⋆
कॊङ्गत्तार् वळङ्गॊन्रै अलङ्गल् मार्वन्⋆
कुलवरैयन् मड प्पावै इडप्पाल् कॊण्डान्⋆
पङ्गत्ताय् ! पार्कडलाय् ! पारिन् मेलाय् !⋆
पनि वरैयिन् उच्चियाय् ! पवळ वण्णा⋆
एङ्गुट्टाय् एम् पॆरुमान् ! उन्नै नाडि⋆
एळैयेन् इङ्ङनमे उळिदरुगेने ! ॥९॥</td><td>मल्लै के प्रभु जहां सागर तट पर रत्न जमा करता है, ऊंची दीवारो से घिरे कांची के प्रभु, पेरनगर के प्रभु, पर्वतराज मलय की बेटी पार्वती के पति शिव आपके पास खड़े रहते हैं। क्षीरसागर में सोने वाले प्रभु, धरा के प्रभु, ऊंची बर्फ शिखरों पर खड़ा होने वाले प्रभु। आप कहां हैं ? आर्तभाव से घूमते आपको खोज रहे हैं। **2060**</td></tr>
<tr><td>पॊन् आनाय् ! पॊळिल् एळुम् कावल् पूण्ड
पुगळ् आनाय् !⋆ इगळ्वाय तॊण्डनेन् नान्⋆
एन् आनाय् एन् आनाय् एन्नल् अल्लाल्⋆
एन् अरिवन् एळैयेन्⋆ उलगम् एत्तुम्
तॆन् आनाय् वड आनाय् कुडबाल् आनाय्⋆
गुणबाल् तायिनाय् इमैयोर्क्कॆन्रुम्
मुन् आनाय्⋆ पिन् आनार् वणङ्गुम् शोदि !⋆
तिरुमूळि क्कळत्तानाय् मुदल् आनाये ! ॥१०॥</td><td>आदिनाथ, सुनहले प्रभु, सातों लोकों के प्रहरी, सिवाय यह पुकारने के कि 'आपको क्या हुआ? आप कहां हैं?' यह नीच तिरस्कार योग्य भक्तात्मा कुछ जानता भी नहीं। दक्षिण के प्रभु, उत्तर के प्रभु, पश्चिम एवं पूर्व के प्रभु, मदमत्त हाथी, स्वर्गिकों के प्रथम प्रभु। तिरूमुड़ीकड़म के प्रभु, जहां भावी पीढ़ी सदा आपकी पूजा करेगी। **2061**</td></tr>
<tr><td>पट्टुडुक्कुम् अयरन्दिरङ्गुम् पावै पेणाळ्⋆
पनि नॆडुङ्गण् नीर् तदुम्ब प्पळ्ळि कॊळ्ळाळ्⋆
एट्टुणै प्पोदॆन् कुडङ्गाल् इरुक्कगिल्लाळ्⋆
एम् पॆरुमान् तिरुवरङ्गम् एङ्गे एन्नुम्⋆
मट्टु विक्कि मणि वण्डु मुरल्लुम् कून्दल्⋆
मड मानै इदु शॆय्दार् तम्मै⋆ मॆय्ये
कट्टुविच्चि शॊल् एन्न च्चॊन्नाळ् नङ्गाय् !⋆
कडल् वण्णर् इदुशॆय्दार् काप्पार् आरे ॥११॥</td><td>नारियों ! हमारी मृगनयनी बेटी मधुमक्खी लिपटे फूल का जूड़ा बनाकर रेशमी वस्त्र से सजकर अचेत हो जाती है। अपनी गुड़ियों को तो चाहती ही नहीं। अश्रुपूरित सूजी आंखों से शायद ही कभी सोती है। हमारे गोद में खिलाने के लिये एक क्षण भी नहीं बैठती। पूछती है 'हमारे तिरूवरंगम के प्रभु कहां हैं ?' मैंने ज्योतिषी से पूछा 'उसके साथ किसने ऐसा किया है ? ' वह स्वयं बोली 'सागर सा सलोने प्रभु ने'। अब कौन हमारी बेटी को बचा सकता है ? **2062**</td></tr>
<tr><td>नॆञ्जुरुगि क्कण् पनिप्प निर्कुम् शोरुम्⋆
नॆडिदुयिर्क्कुम् उण्डरियाळ् उरक्कम् पेणाळ्⋆
नञ्जरविल् तुयिल् अमरन्द नम्बी ! एन्नुम्⋆
वम्बार् पूम् वयल् आलि मैन्दा एन्नुम्⋆
अञ्जिरैय पुट्कॊडिये आडुम् पाडुम्⋆
अणि अरङ्गम् आडुदुमो तोळी एन्नुम्⋆
एन् शिरगिन् कीळ् अडङ्गा प्पॆण्णै प्पॆट्रेन्⋆
इरु निलत्तोर् पळि पडैत्तेन् ए पावम्मे ! ॥१२॥</td><td>उसका हृदय पिघलता है, आंखें सूज गयी हैं, खड़ी होती है एवं गिर जाती है। अपनी नींद गंवा चुकी है, एवं खाना भूल गयी है। 'शेषशायी प्रभु सुगंधित बागो से घिरे तिरूवाली के राजकुमार' बोलकर गाती एवं नाचती है। गरूड़ के पंखों की तरह उसकी भावना उमड़ती है। कहती है 'सखियों ! क्या हम तिरूवरंगम जाकर नाचेंगे ?' हमारे नियंत्रण से बाहर, हाय ! मुझे जगत से अपयश मिला। **2063**</td></tr>
<tr><td>कल् एडुत्तु क्कल् मारि कात्ताय् ! एन्रुम्⋆
कामरु पूङ्गच्चि ऊरगत्ताय् ! एन्रुम्⋆
विल् इरुत्तु मॆल्लियल् तोळ् तोयन्दाय् ! एन्रुम्⋆
वॆग्काविल् तुयिल् अमरन्द वेन्दे ! एन्रुम्⋆
मल् अडरत्तु मल्लरै अन्रट्टाय् ! एन्रुम्⋆
मा कीण्ड कैत्तलत्तॆन् मैन्दा ! एन्रुम्⋆
शॊल् एडुत्तु तन् किळियै च्चॊल्ले एन्रु⋆
तुणैमुलै मेल् तुळिशोर च्चोर्किन्राळे ! ॥१३॥</td><td>बोलेगी 'पर्वत उठाये तूफान रोकने वाले प्रभु' तब 'सुगंधित बागों से घिरे कांची के उरकम प्रभु' तब फिर 'धनुषभंग के बाद पतली सीता को आलिंगन करने वाले प्रभु, वेक्का के मंदिर में सोने वाले हमारे राजा, बलवान मलयोद्धाओं को जीतने वाले योद्धा, शक्तिशाली भुजाओं से केशिन घोड़े के जबड़ा फाड़ने वाले' सुग्गे को शब्दशः बोलने के लिये सिखायेगी, तब अपने कड़े उरोजों पर रोयेगी। **2064**</td></tr>
</table>

मुळै क्कदिरै क्कुऱुङ्गुडियुळ् मुगिलै॰ मूवा मूवुलगुम् कडन्दप्पाल् मुदलाय् निन्ऱ॰ अळप्परिय आरमुदै अरङ्गम् मेय अन्दणनै॰ अन्दणर् तम् शिन्दै यानै॰ विळक्कॊळियै मरगदत्तै त्तिरुत्तण्गाविल्॰ वॆग्काविल् तिरुमालै प्पाड क्केट्टु॰ वळर्त्तदनाल् पयन् पॆऱ्ऱेन् वरुग! एन्ऱु॰ मड क्किळियै क्कै कूप्पि वणङ्गिनाळे॥१४॥	अपने सुग्गे को बोलते सुनी 'उदयमान सूर्य, वर्षा के मेघ, स्थायी, प्रथम, तीनों लोकों से ऊपर, अगम्य, अमृत, अरंगम के नाथ, वेदांतियों के मन में सदा बसने वाले, तिरूतन्का के प्रकाश पुंज, वेग्का के पन्ना, तिरूमल प्रभु' कमजोर जीव के प्रति करबद्ध हो बोलेगी 'स्वागत है आपका श्रीमान, हमारा श्रम पुरस्कृत हुआ।' **2065**
कल् उयर्न्द नॆडु मदिळ् शूळ् कच्चि मेय कळिऱॆन्ऱुम्॰ कडल् किडन्द कनिये! एन्ऱुम्॰ अल्लियम् पू मलर् प्पॊय्गै प्पळन वेल्लि॰ अणि अळुन्दूर् निन्ऱुगन्द अम्मान् एन्ऱुम्॰ शॊल् उयर्न्द नॆडु वीणै मुलै मेल् ताङ्गि॰ तू मुऱुवल् नगै इऱैये तोन्ऱनक्कु॰ मॆल् विरल्गाळ् शिवप्पॆय्द त्तडवि आङ्गे॰ मॆन् किळिपोल् मिग मिळऱ्ऱुम् एन् पेदैये॥१५॥	अपने सुन्दर वीणा को वक्षस्थल पर रखकर चमेली जैसे श्वेत दांतों के साथ मेरी बेटी मुस्कराती है । तारों पर अंगुलियों को लाल होने तक सुग्गा के मृदु राग में गायेगी 'ऊंची दीवारों से घिरे कांची के हाथी' 'सागर में सोने वाले मीठे फल' 'कुमुद खिले सरोवरों से घिरे अलंदूर के खड़े प्रभु' । **2066**
कन्ऱु मेयत्तिनिदुगन्द काळाय्! एन्ऱुम्॰ कडि पॊळिल् शूळ् कणबुरत्तॆन् कनिये! एन्ऱुम्॰ मन्ऱमर क्कूत्ताडि मगिळ्न्दाय्! एन्ऱुम्॰ वड तिरुवेङ्गडम् मेय मैन्दा! एन्ऱुम्॰ वॆन्ऱशुरर् कुलम् कळैन्द वेन्दे! एन्ऱुम्॰ विरि पॊळिल् शूळ् तिरुनऱैयूर् निन्ऱाय्! एन्ऱुम्॰ तुन्ऱु कुळल् करुनिऱत्तॆन् तुणैये एन्ऱुम्॰ तुणै मुलैमेल् तुळि शोर च्चोर्गिन्ऱाळे! ॥१६॥	'चरती गायों से आनंदित होने वाले वृषभ, सुगंधित बागों से घिरे कन्नपुरम के मीठे फल, दर्शकों से खचाखच पात्र नृत्य का आनंद देने वाले, उत्तर वेंकटम के प्रभु, युद्ध में असुर कुल को जीतने वाले राजा, विशाल बागों से घिरे तिरूनरैयूर के प्रभु, घने घुंघराले काले वाले मधुर सखा' कड़े उरोजों पर अश्रु बहाते गाती हुई अचेत हो जायेगी। **2067**
पॊङ्गार् मॆल् इळङ्गॊङ्गै पॊन्ने पूप्प॰ पॊरुगयल्कण् नीर् अरुम्ब प्पोन्दु निन्ऱु॰ शॆङ्गाल मड प्पुऱवम् पॆडैक्कु प्पेशुम्॰ शिऱु कुरलुक्कुडल् उरुगि च्चिन्दित्तु॰ आङ्गे तण् काल्नुम् तण् कुडन्दै नगरुम् पाडि॰ तण् कोवलूर् पाडि आड क्केट्टु॰ नङ्गाय्! नम् कुडिक्किदुवो नन्मै एन्न॰ नऱैयूरुम् पाडुवाळ् नविल्गिन्ऱाळे! ॥१७॥	उभरते उरोज पीले पड़ गये हैं। चंचल मीन आंखों से अश्रुधार चलती है। नर कबूतर को अपने लाल चंगुल वाली मादा साथी से धीरे से बोलते सुनकर गहरी सोंच में पड़ जाती है। तिरूतन्का, तिरूकुडन्दै, एवं तिरूकोवलूर के प्रभु को याद कर गायी एवं नाची। हमने पूछा 'प्यारी बेटी क्या यह अपने कुल को शोभा देती है ?' बोली 'तब मैं तिरूनरैयूर पर गाउंगी। **2068**
कार् वण्णम् तिरुमेनि कण्णुम् वायुम्॰ कैत्तलमुम् अडि इणैयुम् कमल वण्णम्॰ पार् वण्ण मड मङ्गै पत्तर् पित्तर्॰ पनि मलर् मेल् पावैक्कु प्पावम् शॆय्देन्॰ एर् वण्ण एन् पेदै एन्शॊल् केळाळ्॰ एम् पॆरुमान् तिरुवरङ्गम् एङ्गे एन्नुम्॰ नीर् वण्णन् नीर्मलैक्के पोवेन् एन्नुम्॰ इदुवन्ऱो निऱै अळिन्दार् निर्कुमाऱे॥१८॥	मैंने पाप किये हैं, हमारी बेटी नहीं सुनती। वह गाती है 'हमारे श्यामल के प्रभु की आंखें होंठ हाथ एवं चरण कमल की पंखुड़ी हैं। आप अपने पार्श्व के भूदेवी के प्रति समर्पित हैं तथा नूतन कमल सी लक्ष्मी से मोहित हैं। आप श्रीरंगम में रहते हैं'। पूछती है 'यह कहां है ?' तब बोलती है 'मैं आपके निवास तिरूमलै जा रही हूं ।' क्या यह इसका प्रमाण नहीं है कि वह अपनी संतुलन गंवा चुकी है ? **2069**

मुट्टारा वन मुलैयाळ् पावै⋆ मायन् मॉय् अगलत्तुळ् इरुप्पाळ्⋆ अग्तुम् कण्डुम् अट्टाळ्⋆ तन् निरै अळिन्दाळ् आविक्किन्राळ्⋆ अणि अरङ्गम् आडुदुमो तोळी ! एन्नुम्⋆ पॅट्रेन् वाय् च्चॉल् इरैयुम् पेश क्केळाळ्⋆ पेर् पाडि त्तण् कुडन्दै नगरुम् पाडि⋆ पॉट्टामरै क्कयम् नीराड प्पोनाळ्⋆ पॉरुवट्टाळ् एन् मगळ् उम् पॉन्नुम् अग्ते॥१९॥	यह जानते हुए कि उसके प्रेमी का वक्षस्थल खिले हुये कमल सी लक्ष्मी से सुशोभित है मेरी अनोखी बेटी अपनी मर्यादा खो बैठी है।उसांसे लेते हुए शायद वह हमारी बातों को सुनती है। तिरूप्पेर एवं तिरूकुडन्दै प्रभु के बारे में गाती हुई सुन्दर कमल सरोवर में डुबकी लेने गयी। क्या तुम्हारी लाड़ली भी इसकी तरह करती है ? **2070**
तेराळुम् वाळ् अरक्कन् शॅल्वम् माळ⋆ तॅन् इलङ्गै मुन् मलङ्ग च्चॅन्दी ऑल्गि⋆ पेराळन् आयिरन् तोळ् वाणन् माळ⋆ पॉरु कडलै अरण् कडन्दु पुक्कु मिक्क पाराळन्⋆ पार् इडन्दु पारै उण्डु⋆ पार् उमिळ्न्दु पार् अळन्दु⋆ पारै आण्ड पेराळन्⋆ पेर् ओदुम् पॅण्णै मण्मेल्⋆ पॅरुन् तवत्तळ् एन्रल्लाल् पेशलामे॥२०॥	शस्त्र से सुसज्जित लंका के राक्षस राज के साथ प्रभु ने घोर युद्ध छेड़ा।समुद्र पार करके किला की दीवारों पर चढ़ते हुए आपने उसके धन एवं वैभव को नष्ट किया तथा नगर को जलाकर धूल में मिला दिया। हजार हाथों वाले बानासुर को नाश करने वाले आप सार्वभौम प्रभु हैं। आपने धरा को प्रलय जल से निकाला, धरा को निगल गये एवं पुनः उगल कर बाहर निकाला, धरा को दो कदमों में माप दिया, एवं धरा पर शासन भी किया। मेरी बेटी को आपका हजार नाम बोलते सुन संसारवाले हमारे सौभाग्य की सराहना करेंगे। **2071**
मै वण्ण नरुङ्गुञ्जि क्कुळल् पिन् ताळ⋆ मगरम् शेर् कुळै इरुपाडिलङ्गि आड⋆ एय् वण्ण वॅञ्जिलैये तुणैया⋆ इङ्गे इरुवराय् वन्दार् एन् मुन्ने निन्रार्⋆ कै वण्णम् तामरै वाय् कमलम् पोलुम्⋆ कण् इणैयुम् अरविन्दम् अडियुम् अग्ते⋆ अव् वण्णत्तवर् निलैमै कण्डुम् तोळी !⋆ अवरै नाम् देवर् एन्रञ्जिनोमे ! ॥२१॥	**2062 से 2071** तक नायकी की मां अपने बेटी के लिये चिंतित है। **2072 से 2080** तक नायकी स्वयं अपनी गाथा प्रस्तुत करती है। हे बहन ! सम्मानीय युगल की तरह धनुष को अपना साथी बनाये हमारे सामने प्रभु खड़े हो गये। आपकी सुगंधित काली लटें दोनों तरफ कंधों तक लटक रही थी। दोनों कान के मीन की तरह मकराकृत कुण्डल चमकते हुए लटक रहे थे।आपके हाथ लाल कमल के समान थे एवं होंठ आंखें तथा चरण भी उसी तरह के थे। आपको देखकर हमलोग डर गये कि धरा पर कोई देवता पधारे हैं। **2072**
नैवळम् ऑन्राराया नम्मै नोक्का⋆ नाणिनार् पोल् इरैये नयङ्गळ् पिन्नुम्⋆ शॅय्वळविल् एन् मनमुम् कण्णुम् ओडि एम् पॅरुमान् तिरुवडिक्कीळ् अणैय⋆ इप्पाल् कैवळैयुम् मेगलैयुम् काणेन्⋆ कण्डेन् कन मगर क्कुळै इरण्डुम् नान्गु तोळुम्⋆ एव्वळवुण्डॅम् पॅरुमान् कोयिल् एन्रेर्कु⋆ इदुवन्रो एळिल् आलि एन्रार् तामे॥२२॥	हमलोगों पर चुपके से देखते हुए आप मृदु पन्न नैवलम तथा राग मध्यमावती प्रस्तुत कर रहे थे।तब लज्जा दिखाते हुए गीत गाते रहे।एक क्षण में हमारी आंख एवं मन दोनों आपके चरण पर जा टिके।मेरे कंगन ढ़ीले पड़ गये एवं कमरबन्द गिर गया। आपके कान के मीन की तरह कुण्डल एवं चारों कंधे मेरे सामने विशाल दिख रहे थे। मैं पूछी 'हमारे प्रभु का घर कितनी दूर है ? ' आपने उत्तर में कहा 'यह क्या मेरा सुन्दर तिरूवाली नहीं है ?' **2073**

<table>
<tr><td>उळ्ळूरुम् शिन्दै नोय् ऎनक्के तन्दु⋆ ऎन्
ऑळि वळैयुम् मा निरमुम् कॉण्डार् इङ्ग⋆
तॆळ्ळूरुम् इळन् तॆङ्गिन् तेरल् मान्दि⋆
शेल् उगळुम् तिरुवरङ्गम् नम् ऊर् ऎन्न⋆
कळ्ळूरुम् पैन् तुळाय् मालै यानै⋆
कनविडत्तिल् यान् काण्बन् कण्ड पोदु⋆
पुळ्ळूरुम् कळ्वा नी पोगेल् ऎन्बन्⋆
ऎन्राल्म इद नमक्कोर पल्लवि ताने॥२३॥</td><td>अमृत बहाते तुलसी की माला पहने प्रभु के साथ का साक्षात्कार स्वप्न की तरह लुप्त हो गया। आप हमारे कंगन एवं सौंदर्य प्रसाधन लेकर चले गये और छोड़ गये वेदना ग्रस्त हृदय तथा कहते गये ‘तिरूवरंगम हमलोगों का नगर है जहां मछलियां ताड़ का अमृत पीकर मस्त हो नाचती हैं’। देखते देखते मैं बोली ‘पक्षी की सवारी करने वाले चोर मत जाइये’। तब भी आप चले गये, यही तो हमलोगों की वेदना है। **2074**</td></tr>
<tr><td>इरु कैयिल् शङ्गिवै निल्ला ऎल्ले पावम्!⋆
इलङ्गॉलि नीर् पॆरुम् पौवम् मण्डि उण्ड⋆
पॆरु वयिट्र करु मुगिले ऑप्पर् वण्णम्⋆
पॆरुन् तवत्तर् अरुन् तवत्तु मुनिवर् शूळ⋆
ऑरु कैयिल् शङ्गॊरु कै मट्राळि एन्दि⋆
उलगुण्ड पॆरु वायर् इङ्ग वन्दु⋆ ऎन्
पॊरु कयल् कण् नीर् अरुम्ब प्पुलवि तन्दु⋆
पुनल् अरङ्गम् ऊर् ऎन्रु पोयिनारे! ॥२४॥</td><td>संसार को खा जाने वाली भूख वाले प्रभु, गरजते सागर को एक घूंट में पी जाने वाले प्रभु, मेघ के समान श्याम प्रभु, यहां आये एवं हमें आंसुओं से उलझने के लिये छोड़कर श्रीरंगम के टापू पर एक हाथ में शंख एवं दूसरे में चक्र लिये रहने के लिये चले गये जहां आप ऊंची मेधा के संतों एवं ऋषियों से घिरे रहते हैं। हाय ! ये बाजूबंद बाहों पर टिकते नहीं। **2075**</td></tr>
<tr><td>मिन् इलङ्गु तिरुवुरुवुम् पॆरिय तोळुम्⋆
करि मुनिन्द कैत्तलमुम् कण्णुम् वायुम्⋆
तन् अलरन्द नरुन् तुळाय् मलरिन् कीळे⋆
ताळन्दिलङ्गुम् मगरम् शेर् कुळैयुम् काट्टि⋆
ऎन् नलनुम् ऎन् निरैयुम् ऎन् शिन्दैयुम्⋆
ऎन् वळैयुम् कॉण्डॆन्नै आळुम् कॉण्डु⋆
पॊन् अलरन्द नरुञ्जॆरुन्दि प्पॊळिलिनूडे⋆
पुनल् अरङ्गम् ऊर् ऎन्रु पोयिनारे! ॥२५॥</td><td>घने बादल पर आपका मुखमंडल बिजली की तरह चमक रहा था। चौड़े कंधे, लाल होंठ आंखें एवं हाथ, एवं कान का मीन सा सुन्दर कुंडल जो मीठे सुगंधित तुलसी की माला से छिपा था, दिखाते हुए आपने मेरा मन, मेरी कुशलता एवं मेरी शांति हर ली एवं दासी बनाते हुए यह कहते हुए छोड़ गये कि आप खिलते हुए सेरन्दु वृक्षों से घिरे उपजाऊ बागों वाले श्रीरंगम में रहते हैं। **2076**</td></tr>
<tr><td>ते मरुवु पॊळिलिडत्तु मलरन्द पोदै⋆
तेन् अदनै वाय्मडुत्तुन् पॆडैयुम् नीयुम्⋆
पू मरुवि इनिदमरन्दु पॊरियिल् आरन्द⋆
अरु काल शिरु वण्डे! तॊळुदेन् उन्नै⋆
आ मरुवि निरै मेय्त्त अमरर् कोमान्⋆
अणि अळुन्दूर् निन्रानुक्किन्रे शॆन्रु⋆
नी मरुवि अञ्जादे निन्रोर् मादु⋆
निन् नयन् ताळ ऎन्रिरैये इयम्बि क्काणे॥२६॥</td><td>सुगंधित बागों में अपने प्रेयसी के साथ प्रस्फुटित फूलों में बैठ कर साथ अमृत पीने वाले छः पैरों वाले भौंरा ! सुन्दर अलन्दूर में रहने वाले चरवाहे प्रभु के पास बिना किसी भय के जाकर बताओ कि एक लड़की आपसे प्रेम करती है। कुछ छण रूक कर आपके हावभाव को देख लेना। **2077**</td></tr>
<tr><td>शॆङ्गाल मड नाराय्! इन्रे शॆन्रु⋆
तिरु क्कण्णपुरम् पुक्कॆन् शॆङ्गण् मालुक्कु⋆
ऎन् कादल् ऎन् तुणैवरक्कुरैत्ति आगिल्⋆
इदुवॊप्पदॆमक्किन्बम् इल्लै⋆ नाळुम्
पैङ्गानम् ईदॆल्लाम् उनदे आग⋆
पळन मीन् कवरन्दुण्ण त्तरुवन्⋆ तन्दाल्
इङ्ग वन्दिनिदिरुन्दुन् पॆडैयुम् नीयुम्⋆
इरु निलत्तिल् इनिदिन्बम् ऎय्दलामे॥२७॥</td><td>हे लाल चंगुलों वाले प्यारे सारस ! कन्नपुरम के साथी राजीव नयन प्रभु के पास जाकर मेरे प्रेम के बारे में बताओ। अगर तुम ऐसा करते हो तो यह सारा संपन्न क्षेत्र सदा के लिये तुम्हारा होगा और तुम अपनी ई च्छा की मछली यहां पकड़ते रहना। तुम अपने प्रेयसी के साथ आकर यहां रहोगे तो उससे ज्यादा संतुष्टी हमें और किसी अन्य चीज से नहीं मिलेगी। **2078**</td></tr>
</table>

तॆन् इलङ्गै अरण् शिदरि अवुणन् माळ⋆ शॆन्रुलगम् मून्रिनैयुम् तिरिन्दोर् तेराल्⋆ मन् इलङ्गु बारदत्तै माळ ऊरन्द⋆ वरै उरुविन् मा कळिट्रै त्तोळी⋆ एन्रन् पॊन् इलङ्गु मुलै क्कुवट्टिल् पूट्टि क्कॊण्डु⋆ पोगामै वल्लेनाय् प्पुलवि एय्दि⋆ एन्निल् अङ्गम् एल्लाम् वन्दिन्बम् एय्द⋆ एप्पॊळुदुम् निनैन्दुरुगि इरुप्पन् नाने॥२८॥	लंका के किला का नाश करके राक्षस राज का बध करने वाले प्रभु, धरा को मापने वाले प्रभु, राजकीय रथ हंका कर भारत युद्ध कराने वाले प्रभु ! आप एक घने पर्वत की तरह एवं विशाल हाथी की तरह हैं। हे बहन ! उस दिन के आगमन के बारे में उत्सुकता पूर्वक सोंचते हुए मैं प्रभु के लिये हमेशा के लिये प्रतीक्षा करूंगी कि मैं उनको अपने मुर्झाये हुये उरोजों से बांध कर अपने दुखी अंगों को आनंद मनाने दे रही हूं । **2079**
‡अन्रायर् कुलमगळुक्करैयन् तन्नै⋆ अलै कडलै क्कडैन्दडैत्त अम्मान् तन्नै⋆ कुन्राद वलि अरक्कर् कोनै माळ⋆ कॊडुम् शिलैवाय् च्चरम् तुरन्दु कुलम् कळैन्दु वॆन्रानै⋆ कुन्रॆडुत्त तोळिनानै⋆ विरि तिरै नीर् विण्णगरम् मरुवि नाळुम् निन्रानै⋆ तण् कुडन्दै क्किडन्द मालै⋆ नॆडियानै अडि नायेन् निनैन्दिट्टेने॥२९॥	गोपकिशोरी नप्पिनाय के प्रभु जिन्होंने सागर को मथा एवं सागर पर सेतु का निर्माण किया आप मेरे प्रभु हैं। आपने राक्षस राज एवं उसके सभी जनों को महान धनुष से छोड़े गये बाणों से बध किया। आपने गोवर्द्धन पर्वत उठाया। आप ताजा जल वाले तिरूविण्णकरम में रहते हैं। आप शीतल तिरूकुडन्दै के प्रभु हैं। आप शाश्वत हैं। मैं नीच पशु सा जीव सदा आपके लिये हीं केवल सोचती रहूंगी। **2080**
‡मिन्नु मा मळै तवळुम् मेग वण्णा !⋆ विण्णवर् तम् पॆरुमाने ! अरुळाय् एन्रु⋆ अन्नमाय् मुनिवरोडमरर् एत्त⋆ अरुमरैयै वॆळिप्पडुत्त अम्मान् तन्नै⋆ मन्नु मा मणि माड मङ्गै वेन्दन्⋆ मान वेल् पर कालन् कलियन् शॊन्न⋆ पन्निय नूल् तमिळ् मालै वल्लार्⋆ तॊल्लै प्पळविनैयै मुदल् अरिय वल्लार् तामे॥३०॥	उज्ज्वल किलों से घिरे तिरूमंगै के प्रमुख कलियन एवं भालाधारी परकालन के तमिल गीतों की यह साहित्यिक माला ऋषि के रूप में आकर वेद की रचना करने वाले एवं मेघ समान वर्ण वाले प्रभु को आश्रय की इच्छा से समर्पित है।जो इसमें निपुण हो जायेंगे वे अपने युगों के कर्मों का मूलोच्छेदन कर देंगे। **2081** तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्